राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत. राजस्थान-प्रदेशीय पुरातनकालीन
सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निवद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रवन्ध सम्पादक
जितेन्द्रकुमार जैन, एम ए
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १२८

राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची
भाग ४

प्रकाशक
राजस्थान-राज्य-संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राज०)

मुद्रक हिमालय प्रिण्टर्स, कुम्हारिया कुआ, जोधपुर

वि स. २०३५ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १९००

अनुक्रम

पृष्ठाङ्क

प्रकाशकीय

प्रतिष्ठान की 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत विविध विषयों के महत्वपूर्ण शोधोपयोगी ग्रन्थों के प्रकाशनों के साथ ही साथ प्रतिष्ठान में संगृहीत ग्रन्थों के सूचीपत्रों का भी प्रकाशन किया जाता है।

अब तक इस ग्रन्थमाला में १२७ प्रकाशन हो चुके हैं और हिन्दी राजस्थानी ग्रन्थों के सूची पत्र भाग-४ को शोध विद्वानों के लिये प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है।

प्रतिष्ठान के मुख्यालय, जोधपुर में संगृहीत ग्रन्थों में से ग्रन्थ सं. १२६१३ से ग्रन्थ सं. १५६७२ तक के ग्रन्थों का यह सूची पत्र तैयार किया गया है और गुटकों में लिखित कृतियों का विवरण भी इसमें दिया गया है।

इस संकलन में कुछ ऐतिहासिक ग्रन्थ भी आये हैं, जिनके अध्ययन से तत्कालीन धार्मिक, आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का परिचय प्राप्त हो सकता है।

सूचीपत्र के निर्माण-कार्य में सम्पादक श्री ओंकारलाल मेनारिया एवं विभाग के प्रतिलिपिकर्ता श्री गिरधरवल्लभ दाधीच ने पूर्ण सहयोग दिया है जो सराहनीय है।

आशा है, इस प्रकाशन से शोधजगत् को अपेक्षित लाभ होगा।

१३ सितम्बर, १९७८

जे. के. जैन
निदेशक
रा. प्रा. वि. प्र., जोधपुर

सम्पादकीय निवेदन

जोधपुर, मुख्यालय मे सगृहीत राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थो के तीन सूची पत्र प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित किए जा चुके है। तीसरे भाग के आगे ग्रन्थाङ्क 12613 से 15672 तक प्राप्त हिन्दी-राजस्थानी ग्रन्थो की 2603 कृतियो का प्रस्तुत सूची-पत्र विद्वानो एव शोधार्थियो के उपयोगार्थ सादर प्रस्तुत है।

यह सूचीपत्र पिछले प्रकाशित सूचीपत्रो से थोडी-सी अपनी विशेषता रखता है, और वह है इसका विषय विभाजन युक्त अकाराद्यनुक्रम। प्रस्तुत सूचीपत्र मे सस्कृत-प्राकृत ग्रन्थो की भाँति निर्धारित प्रमुख विषयो मे से विषयो को चुनकर प्रत्येक कृति को सबन्धित विषय के अतर्गत रखने का प्रयत्न किया गया है। मुख्य विषयो के उपाङ्गो को यहाँ छोड दिया गया है।

मान्य पद्धति के अनुसार निर्धारित विषयो की तालिका सलग्न प्रस्तुत की जा रही है, जिससे स्पष्ट हो सकेगा कि किस-किस विधा के ग्रन्थो को कौन-कौन से विषय मे स्थान दिया गया है।

प्राप्त एव सगृहीत ग्रन्थो मे जैन ग्रन्थो की बहुलता के कारण "जैन साहित्य" को एक प्रमुख विषय के अन्तर्गत रखते हुए उसे 6 छ उप शीर्षको मे बाँट दिया गया है जिससे कि समस्त जैन साहित्य के भाषा-ग्रन्थो को एक साथ प्रस्तुत किया जा सके।

प्रस्तुत सूचीपत्र मे सगृहीत कृतियो मे भू. पू जोधपुर रियासत के 'महक्मा तवारीख' के लिए प्राप्त की गई उन समस्त ख्यात, बात, तवारीख, हाल सज्ञक कृतियो का समावेश हो गया है जो प्रतिष्ठान को पुरातत्व एवं सग्रहालय विभाग जोधपुर से स्थानान्तरित होकर प्राप्त हुई थी। इस सग्रह मे अनेक मूल ख्याते व अनेक ख्यातो के पडित श्यामकरण दाधीच कृत तर्जुमे है। इसी सामग्री के आधार पर पडित विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने अपना "मारवाड का इतिहास" लिखा था, **किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसी विपुल सामग्री तब भी उपयोग मे आने से रह गई थी क्योकि उनके उपयोग का इतिहास मे उपयुक्त अवसर नहीं था।** इसी सामग्री की ओर आकृष्ट होकर राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० रघुवीरसिंह, सीतामऊ एक **"मुंदियाड की ख्यात"** का प्रकाशन कार्य हाथ मे ले चुके हैं। मुझे आशा ही नही पूरा विश्वास है कि इतिहास के विद्वानो का ध्यान इस सामग्री की ओर अवश्य आकृष्ट होगा तथा वे इसका यथा अवसर उपयोग करने से न चूकेंगे।

प्रस्तुत जिल्द मे सकलित अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थो के बारे मे बहुत कुछ लिखा जा सकता है, किन्तु ऐसा करने का यहा उपयुक्त अवसर नही होने से मैं उक्त कार्य सूचीपत्र के पाठको एव विद्वानो के लिए छोडकर इस लोभ का सवरण करना उपयुक्त समझता हूँ।

सूचीपत्र के अन्त मे परिशिष्ट 1 मे कतिपय विशिष्ट ग्रन्थो के आद्यन्त दिए गए हैं उनमे से एक ग्रन्थ "हफत गुलशन नामा तारीख की सक्षेप भाषा" का आद्यन्त छपने से रह गया है। इस ग्रन्थ के मूल लेखक का पूरा नाम 'कामरखाँ मुहम्मद हादी' था जिसने चकत्ता-वश का वृहद् इतिहास भी अलग से फारसी भाषा मे लिखा था। प्रस्तुत कृति उसी का सक्षिप्त रूप-सा है, जिसमे भारतवर्ष के मुस्लिम शासको का इतिहास दिया गया है। लेखक की मूल पाण्डुलिपि "इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी" मे सुरक्षित होने की सूचना उपलब्ध है।

तवारीख की भाषा लिखवाने का श्रेय जयपुर के सस्थापक एव विद्या प्रेमी राजा सवाई जयसिह को है। भाषाकार ने यद्यपि अपना नाम नही दिया है फिर भी ग्रन्थ मे जयपुरी भाषा के प्रयोग से लेखक व्यक्ति कोई स्थानीय विद्वान् रहा होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

उक्त भाषा ग्रन्थ की जोधपुर सग्रहालय मे दो प्रतिया उपलब्ध हैं। प्रथम का प्रारम्भिक अश अप्राप्त होने से प्रारम्भिक अश ग्रन्थाङ्क 25679 से तथा अतिमाश सूचीपत्र मे वर्णित प्रति से दिया जा रहा है। (देखे शुद्धिपत्र के बाद)

परिशिष्ट 2 मे ग्रन्थ-कर्त्तानुक्रमणिका दी गई है। आशा है विद्वानो एव शोधार्थियो के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी।

सूची-पत्र का मूल अश काफी समय पूर्व मुद्रित हो चुका था, किन्तु विशेष परिस्थितियो के कारण परिशिष्टभाग का मुद्रण मेरे जोधपुर से जयपुर स्थानान्तरण के बाद ही मुद्रित हो सका। इसके मुद्रण एव प्रूफ सशोधन में प्रकाशन अनुभाग मे कार्यरत मेरे सहयोगी श्री गिरधरवल्लभ दाधीच का पूरा सहयोग रहा, उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

मुद्रण मे प्रूफ-सशोधन मे यद्यपि पूर्ण सतर्कता रखी गई है फिर भी दृष्टिदोष से जो त्रुटियाँ रह गई है उनके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

अत मे मैं विभाग के निदेशक महोदय श्री जे के जैन का भी आभार स्वीकार करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होने प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत सूचीपत्रो के मुद्रण-कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की नीति अगीकार कर इसे प्रकाशित करवाया।

हिमालय प्रेस के व्यवस्थापक श्री आर एम माहेश्वरी का भी मैं आभार स्वीकार करता हूँ जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी इस कार्य को चालू रखा और इसके मुद्रण-कार्य को अतिम रूप प्रदान किया।

आशा है विद्वान् पाठक एव शोधार्थीजन त्रुटियो की ओर ध्यान आकर्षित कर मुझे उपकृत करेंगे।

निवेदक

दिनाक 9 अगस्त 1978

ओकारलाल मेनारिया

विषय-तालिका

शुद्धि-पत्र

(विवरण-तालिका)

क्रमाङ्क	पृ० सं०	कोष्ठक स०	अशुद्ध	शुद्ध
56	10	3	गीता महामात्य भाषा	गीता-भाषा
64	12	9	ओपधी	ओषधी
102	18	8	1915	1951
136	24	3	सोमवती-अमावस्यारी क	सोमवती अमावस्यारी कथा
224	38	1	इतिहास	ज्योतिष विषय
224	39	9	की प्रमुख घटनाएँ	(कुछ नहीं) मे क्रमाक 1754 पर्य
311	54	3	गीत नागोर "आपरा" घेरारो	गीत नागोर "आपारा" घेरारो
327	58	3	गीत मेहता राव महेश-दास दिल्ली नति रा	गीत मेहता राव महेशदास दिल्ली पति रो
343	62	3	(29) जगतसिंह मानसिंघीतरा (32) रणवटरा	जगतसिंह मानसिंघोतरा रणवटरा
394	71	4	माधवदास घधवाडिया	माधवदास दधवाडिया
408	74	4	विहारीदास	बिहारीदास
475	84	9	तलवार ते ।	तलवार
653	114	6	64 वां	69 वा
671	116	3	उपदेश चितोवण	उपदेश चितावणी
773	134	3	प्राणभात्रा	प्राणमात्रा
782	136	4	चापरनाथ	चरपटनाथ
789	136	3	ज्ञानमिक गुणविलास	ज्ञानरसिक गुणविलास
1036	176	3	पदसग्रह गुरुभक्ति	पदसग्रह गुरुभक्ति के
1115	190	3	पदसग्रह-भाईदूज	पदसग्रह-भाई दूज के
1135	194	3	,, -राग गरवी	,, -राग गरवी के

1247	218	3	स्फुट पदसग्रह होरी के (घमाल)	स्फुट पदसग्रह होरी के (घमाल)
1336	234	3	योएपावडी	योगपावडी
1386	242	9	लि. क मयाचन्द श्वेताम्वर, लि. स्था योधपु	लि. क. मयाचन्द श्वेताम्बर, लि स्था. योधपुर
1402	244	4	हरिराम	हरिराय
1403	244	3	शिक्षापत्री साग्रर्थ	शिक्षापत्री स-ग्रर्थ
1469	254	3	स्यम-सगाई	स्याम-सगाई
1580	272	3	वीरमदे सोनारारी वार्त्ता	वीरमदे सोनगरारी वार्त्ता
1590	274	4	मेघजा	मेघजी
1613	278	3	छन्द-ग्रलकार लक्षण	छन्द विभूषण
1615	278	6	1-105	2-105 प्रथम पत्र ग्रप्राप्त
1623	280	4	टी. उदैचन्द भण्डारी	कर्त्ता-उदैचन्द भण्डारी
1644	284	3	रसिकप्रिया सवालाव-वोघ	रसिकप्रिया सवालाववोध
1676	290	1	1676	13 ग्रायुर्वेद
1697	292	9	ग्रोपधी-सग्रह	ग्रौषधी-सग्रह
1698	294	4	नयनसुख शिष्य केशवराज	नेयनसुख पुत्र केशवराज
1961	336	4	वा केसरविमल गणि	वा. केसरविमल गणि
2004	344	3	पारण-विध्रि ग्रा	पारण-विधि ग्रादि
2015	346	3	ग्रजना सुन्दरी-चउ	ग्रंजना सुन्दरी-चउपई
2105	360	3	निमनाथ-विवाहलू	नेमिनाथ विवाहलू

॥ श्रीगणेशाय नम ॥

प्रारम; ग्रन्थाङ्क 25679 से उद्धृत

ई ग्रन्थ मै दिल्ली वा ओर देस हिंदुस्थान का राजा वा पातस्याह को वृतात कामरखा नै पारसी सग्रह कीयो छै सो सरामद राज हाय हिंदुस्थान रा राजेद्र श्री महारा (जा) धिराज श्री सवाई जैसिंहजी की आज्ञा सौ सक्षेप भाषा लिपी। अर ई का सात विभाग छै। **प्रथम विभाग** का तीन षंड, प्रथम षड मै दिल्ली का वा ओर देसां का राजा वा पातस्याहा को प्रसग। दूसरा षड मै जोनपुर का पातस्याहा-तीसरा षड मै मालवा का पातस्याह।

दूसरा विभाग का २ षड ॥

प्रथम षड मे षानदेस का पातस्याह। दूसरा षड मे गुजरात का पातस्या **३ रा विभाग** मे वगाल का पातस्याह ।४। मै छह पड ॥ प्रथम दक्षरग का पातस्याह। दूजा मे वीजापुर का पातस्याह। ( ) तीसरा मे अहमदनगर का (पात) पातस्याह। हूज मे बीजापुर का पातस्याह। (.) चोथा मे हेदराबाद का पातस्याह। पाचमा मे वरार देस का पातस्या-६ मे (..) अहमदाबाद वदर का पातस्याह ॥ **पाचमा विभा (–)ग का २ षंड**—प्रथम मे मेठढ का पातस्याह विष्यात, जामे सज्ञा करि दूसरा मे मूलतांन रा पातस्याह।

छठा विभाग मे काश्मीर का मिरजाई। सातमे विभाग मै पेगंवर वा उमका मित्रा को प्रसग सो वो ग्रन्थ भिन्नहि लिष्यो छै।

अंतिमांश...... युसफ खा अकबर पातशाह कनै आय सेना सहाय मागी। तदि अकवर पातशाह श्री महाराजा मानसिंघ कछवाहा नै वा युसुफ खा मसहदी नै वेकी साथ सहाय नै विदा वौ। स्यालकोट की राह होय लोहरचक वै जाय माग्चौ। अर श्री महाराजा मानसिंघ स्यालकोट रह्या। कितनाक दिना मै काविल जाय छा युसफखा नै हजूर बुलायौ। अमीरा वेनें हजूर वुलायो। अमीरां वेंने हजूर आवा नही दीयौ। जदि पातशाह क्रोध करी साहकुलीखा वा राजा भगवानदास नै कश्मीर लेवा ने वीदा कीया। राजा भगवानदास युसफखा ने समझाय प्रतिवर्ष वेंकै माथै पेसकस ठहराय अटक ऊपर पातशाह की मुलाजमत करी। मनसब अमीरी को पाय पूर्व मै जागीर पाई। फेर कितनाएक वर्ष पाछै। कासिम खा मीर वहरवा और अमीर कश्मीर नै विदा [किया] सो बरस ताई परस्पर राड होवो करी। ती पाछै पातशाही अमीरा ने मुल्क मै अमल कीयौ। वेंका सिरदार नें हजूर भेज्यौ। यूसफखा मसहदी वेठा को सूवो [सूबेदार] पातशाह की तरफ सौं हुवौ। जदि सौं वो मुल्क चगत्ता ही का अमल मै छै।

इति छठो वीभाग समाप्तं।

सातवा विभाग मै पेगवर को वा वेका मित्रा को प्रसग सो भीन्न ही लीख्यौ छौ।

इति हफत गुलशननामा, तारीख की सक्षेप भाषा सक्षेप हुई। संवत १८७६ प्रमाणे शाके १७८१ प्रवर्त्तमाने। मिति चैत्र कृष्णे पक्षै षष्टयां ६ तीथौ चन्द्रवासरे द्वितीय प्रहरे लिपिकृतं। श्री रस्तु। श्री।

राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग ४

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,

(जोधपुर-संग्रह)

क्रमाक एव विषय	ग्रन्याक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1 दर्शन 1	14712 (1)	अध्यात्मप्रकाश-भाषा	सुखदेव मिश्र
2	14200 (1)	अनभैप्रकाश (उदैराय-केसोराय-सवाद)	
3	14362 (5)	अनुभव हुलास (उल्हास)	भगवानदास निरजनी
4	14478 (7)	,,	,,
5	14078 (4)	अनुभवप्रकाश	जसवतसिंह
6	14478 (1)	अपरोक्ष-अनुभव-भाषा	मू शकराचार्य टी ज्ञानदास
7	14960 (2)	अमृतधारा	भगवानदास निरजनी
8	14478 (8)	अष्टावक्र-भाषा	
9	14390 (1)	ज्ञानगुटकी सारासार विवेक सिद्धान्त-निरूपण	
10	15098 (2)	ज्ञानतिलक	रामानन्द
11	14391 (3)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास
12	14200 (2)	,,	
13	14048 (3)	,,	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल	विशेष ज्ञातव्य
21.5×19 15, 17	1–26	पूर्ण	1890	लि क नथसागर, लि स्था जोधपुर र का 1752
21 5×15 13, 18	9–25	अपूर्ण	1838	पत्राङ्क 1–8 अप्राप्त; जलसिक्त, आसन एव 24 मुद्राविचार
16×11 11, 16	80–96	पूर्ण	गु 1741	
12 5×9 5 9, 15	445–463	"	1914	लि क सदासुख
15 5×15 13, 14	24–31	"	1729	32 वे पत्र पर स्फुट कवित्त है। आगे "इतिहाससार-समुच्चय" के स्फुट पत्र हैं।
12×9 5 9, 15	429–445	"	20 वी श	
17×15 22, 22	57–87	"	गु 1867–1871	जीर्ण, र का 1728 र. स्था क्षेत्रदास
12 5×9 5 9, 15	463–506	"	1914	
12 5×8 5 6, 12	1–89	"	20 वी श	पत्राङ्क 89–95 पर "निज स्वरूप निश्चैज्ञान" परक 27 पद्य है।
16×11 5 10, 18	1–7	"	19 वी श	
12×10 10, 12	1–106	"	1811	लि क लछीराम सुत गोपालदास लि स्था बीकानेर
21 5×15 14, 18	26–69	"	1838	
15 5×10 11, 26	1–33	अपूर्ण	19 वी श	जीर्ण एव अस्त-व्यस्त लि. क ग्याँनदास, लि स्था सौभरि

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
14	13749 (2)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास
15	14078 (3)	ब्रह्मज्ञान जोगशास्त्र	
16	13117	मनोविलापनसार-भाषा	भगवानदास
17	14417 (2)	विचारमाला	अनाथदास
18	14388 (9)	,, (द्वितीय अध्याय)	,,
19	14478 (9)	,,	,,
20	15251	,,	,,
21	13339 (3)	,,	,,
22	13959 (1)	,,	,,
23	14372	,,	,,
24	14960 (9)	,, (तृतीयविश्राम पर्यन्त)	,,
25	14716 (10)	,,	,,
26	14383 (5)	विचारसागर (शारीरिकसूत्र-भाष्य)	निश्चलदास

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल	विशेष ज्ञातव्य
16 5×10.5 11; 24	346-500	पूर्ण	1847	लि क साध माणकदास जीर्ण
15 5×15 13; 14	1–24	,,	1729	लि क रामदास शिष्य हरिदास लि. स्था जोधपुर
22 5×16 5 13; 24	1–20	,,	20 वी श.	"बाई किल्याणबाई ना गुरु नी कृति छे" 'ए ग्रन्थ को कर्त्ता भीणा जानी भगवान"
14×10 10; 20	35–80	,,	19 वी श	र का. 1726, पत्र स 31-35 पर "तीन भोमका निर्णय" है।
12 5×11.5 12, 14	28–31	,,	20 वी श.	
12.5×9.5 9, 15	506–534	,,	1914	र का. 1726
22×11 5 10; 26	1–17	,,	1909	,, ,,
20×14 12; 27	1–15	,,	20 वी श.	,, ,,
17×10.5 9, 20	2–25	,,	,,	,, ,,लि क. बुधरदास
20 5×17 9, 18	1–26	,,	1929	लि. क हरिदास वैराग
17×15 21, 19	563–567	,,	सु 1871	पत्राङ्क 562–563 पर जवूसर की गया है।
21×14.5 25; 22	546–554	,,	सु 1826	
16×12.5 9, 18	29-109	,,	1934	र. स्था. [illegible] दिल्ली के पश्चिम में 18 कोस पर [illegible]

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एवं टीकाकार
27	14416 (9)	शिवपच्चीसी	बनारसी
28	14080	षट्प्रश्नीनिरनै-भाषा	मनोहरदास निरंजनी
29	14477 (2)	सर्वसार	अनाथदास
2 धर्म-शास्त्र			
30	14383 (4)	वज्रसूची-भाषा	
31	14475 (1)	विधवाविचार	सेवगराम शिष्य परसराम
32	13157	शिवहवन-विधि	
3 पुराण			
33	14473 (4)	अर्जुनमहिमा एवं अर्जुनगीता	हरिदास
34	14756 (2)	अमावस्यारी कथा	
35	14753	अश्वमेध-भाषा (महाभारतगत)	
36	14896 (5	इतिहाससारसमुच्चय-भाषा	लालदास सुत ऊधोदास
37	14007	,,	

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल	विशेष ज्ञातव्य
12×11 5 12, 12	43–46	पूर्ण	गु 1819	र का 1750, शिव का आध्यात्मिक विवेचन
20×12 11, 34	1–77	,,	1881	
16 5×11.5 10, 18	121	,,	1886	र का 1726, लि क मोतीरामजी शिष्य, लि स्था देसणोक पुष्पिका मे रामानुजीय सम्प्रदाय की परम्परा दी गई है।
16×12 5 9, 20	30–33	,,	20 वी श	
19×15 5 14, 18	1–6	,,	,,	प्रथम पत्र पर स्फुट गीत है।
42×10 5 34, 12	1	,,	19 वी श	
22 5×12 5 22, 10	40–45	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 42 वा अप्राप्त
24×15 35, 24	40–42	पूर्ण	गु 1811	गुटके के प्रारम्भिक पत्रो पर वर्गमूल, घन-मूल निकालने का सवैया, सूरजरो छन्द एव सवत् 1801 का वर्षफल आदि है।
27×15 15; 35	1–66	पूर्ण	1889	लि क जैतराम, लि स्था पीपाड
16×11 11, 22	147–252	अपूर्ण	1845	पत्राङ्क 165-170 अप्राप्त
21 5×11 11, 28	1–31	,,	20 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
38	14923	इतिहाससारसमुच्चय-भाषा	लालदास सुत ऊधोदास
39	14928	,,	,,
40	14960 (1)	,,	,,
41	15099 (7)	,,	,,
42	13765 (9)	एकादशीरी कथा	
43	14376 (2)	एकादशीरी कथा सटीक	
44	14307	एकादशी-माहात्म्य कथा (पद्मपुराणगत)	
45	14294	एकादशी-माहात्म्य कथा	ध्यानदास
46	14066 (7)	एकादशी-माहात्म्य-भाषा	
47	13493	कार्तिक-माहात्म्य-भाषा	भगवानदास निरंजनी
48	14268	,,	,,
49	14275	,,	,,
50	14316	,,	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30 5×14 5 17, 48	10–31	अपूर्ण	1854	जीर्ण, प्रारम्भ अप्राप्त, लि क साधु मेघदास, लि स्था खाटू
23×12 10; 28	1–72	,,	19 वी श	जीर्ण एव खडित
17×15 18, 22	2–57	,,	गु 1867–1871	जीर्ण एव प्रारभ के 9 पत्र खडित
18×12 11; 18	184–312	पूर्ण	गु 1898	र का 1643 अकबर कालीन
22×16 22, 24	1–72	अपूर्ण	1771	अतिम अश पत्राङ्क 16 पर है।
21 5×15 5 20, 18	1–28	पूर्ण	1755	लि क स्वामी सेवादास
26×12 11, 26	1–38	,,	20 वी श	
30×14 13, 36	1–39	,,	1949	लि क मथुरादास निरजनी; लि स्था नागोर अत मे वखतसिहजी विषयक कवित्त है।
22×16 16, 16	1–14	अपूर्ण	18 वी श	पत्र अस्त-व्यस्त हैं।
20×16 9, 16	1–12	,,	19 वी श	र का 1743
23 5×12 5 11, 28	1–68	पूर्ण	1898	र का 1743 लि क रामसुख व्यास
20×13 9, 24	1–125	,,	1875	र का 1743
25×12 10, 26	1–34	,,	19 वी श	गद्य मे है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
51	14078 (1)	कुण्डारो व्योरो	
52	14081 (5)	केरडावाली चोथ- गरोशजी री कथा	
53	12704 (2)	केरडावाली चोथ-मातारी कथा	
54	14418 (5)	गरोशचोथरी वात	
55	13972 (1)	गरोशजीरी कथा-भापा	
56	14352 (11)	गीतामहामात्य-भाषा	भगवानदास निरजनी
57	14474 (2)	,,	
58	14081 (9)	चन्द्रउगाली चोथरी कथा (सकष्ट-चतुर्थी)	
59	14418 (7)	चित्रगुप्तरी कथा नैं पूजा-विधि	
60	12704 (3)	चोथमातारी कथा	
61	14927 (1)	चौवीस एकादशीरी कथा	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×15 13, 16	1–7	अपूर्ण	गु 1729	जीर्ण एव खडित
16×12 11, 19	44–52	पूर्ण	गु 890	
15×14.5 9, 14	1–18	पूर्ण	गु 1901	"पोथी ऊतावली मे लिखी छै" लि क अगरचन्द
12 5×11 8, 15	56–74	,,	1887	पत्राङ्क 52-55 पर माताजीरी आरती द्वय है।
21×16 18, 18	1–16	,,	1887	प्रारम्भ मे गणेशजी का चित्र है। लि क तिवाडी खीमजी छगनजी लि स्था भुजनगर
13 5×10 5 9, 18	112–195	,,	1934	लि क गोपालदास रामसनेही
19 5×14 5 17, 13	1–56	,,	1845	पत्राङ्क 57–59 परगीतापाठमाहात्म्य है। लि क. चेतनदास लि स्था. समेलाग्राम (मेडता)
16×12 11, 20	27–31	,,	1890	लि क जोशी छोटमल (साचोरी) लि स्था जोधपुर
12 5×11 8, 15	104–114	,,	19 वी श	लि क भडारी इम्रतराज
15×14 5 9, 13	1–5	अपूर्ण	20 वी श	
18 5×14 16, 14	19–68	,,	1800	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
62	14362 (4)	चौवीस एकादशीरी व्रत कथा	
63	15227	चौवीस एकादशीरी व्रत कथा	
64	13514 (8)	जन्माष्टमीरी कथा	
65	14081 (11)	"	
66	14075 (2)	दश अवतार (भागवत दशम-स्कन्ध पर आधारित)	
67	14388 (3)	धर्मसंवाद (भीम-चंडाल संवाद)	
68	14081 (12)	नरसिंघ-चतुरदशीरी कथा	
69	14756 (3)	नवरात्ररी कथा	
70	14960 (5)	नारदपुराण-भाषा (हरिभक्ति सुधोदय)	माधव शिष्य दामोदर
71	13498 (6)	नारायण-अवताररी कथा	
72	15097 (1)	नासिकेतु ऋषिरी कथा	जनदयाल शिष्य जगन्नाथ
73	13511 (4)	"	
74	15099 (3)	नासिकेतुपुराण	

माप से मी में, पक्ति प्रति प्रत्र, ग्रक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ ग्रपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेप ज्ञातव्य
16×11 10, 15	49–79	पूर्ण	1741	लि क. गगाराम शिष्य केमोदास
29.5×14 13, 54	3–28	ग्रपूर्ण	19 वी श	
16×12 5 16, 12	65–74	पूर्ण	20 वी श	पत्राङ्क 75-80 पर ग्रोपधो मग्रह है ।
16×12 11, 19	45–54	,,	1890	
15 5×11 5 10, 20	1–28	,,	18 वी श	लि. क गोवर्द्धन-ब्रह्मचारी लि स्था खीवसर
12 5×11 5 11, 13	1–17	,,	1920	लि. क. साध भरतदास
16×12 13, 22	55–60	,,	गु 1890	
24×15 35, 24	42–44	,,	गु 1811	
17×15 21, 19	334–409	,,	1871	
14 5×12 9, 18	134–167	,,	गु 1670	
16×10 5 6, 13	1–82	पूर्ण	1925	लि क ग्रम्वालाल चोईसा लि स्था बूँदी
17×12 14, 25	6–21	,,	1849	लि क सेवग विग्धीचद लि स्था जालोर
18×12 10, 18	44–132	,,	गु 1898	र का 1734

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	र्त्ता प्त टोकाकार
75	15073 (2)	नासिकेतुपुराण-भापा	नददास
76	14340 (3)	,,	
77	14477 (1)	,	जनदयाल शिष्य जगन्नाथ
78	14408 (7)	,,	
79	14960 (3)	,,	जनदयाल
80	12703	नासिकेत-राजारी कथा	
81	14257	नासिकेतोपाख्यान-भापा	जनदयाल
82	14468	नासिकेतोपाख्यान-भापा	,,
83	14436	नासिकेतोपाख्यान-भापा सचित्र	,,
84	14493 (2)	पाडवजग्य-भापा	

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×10 5 13, 22	1–46	पूर्ण	1859	पत्राङ्क 47 पर साकेतिक लिपि की कुजी है।
24×14 10, 14	66–101	,,	19 वी श	
16 5×11 5 10, 18	1–90	,,	881	र का 1734, लि क पुरुषोत्तमदास लि स्था. देमणोक "साध श्री मोतीरामजी ने अरपण करी"
15×10 11, 15	78–94	अपूर्ण	गु 1781	
17×15 22, 22	158–202	पूर्ण	गु 1867–1871	पत्राङ्क 202–203 पर गोविन्दाष्टक, पत्राङ्क 203–204 पर कबीरदास की रमेणियां तथा नैनोदास का पद है।
17 5×13 12, 22	2–24	अपूर्ण	19 वी श	लि क किसनराम दवे, लि स्था जालोर, अतिम 5 पत्र जलसिक्त
30 5×14 14, 38	1–33	पूर्ण	1878	र का 1734, लि क मथुरादास लि स्था नागोर-वखतसागर
25×12 5 11, 32	1–51	,,	1840	लि क सन्तदास, लि स्था नागपुर
33×20 8–14, 18	1–111	अपूर्ण	1917	चित्र स 268 पत्राङ्क 81 वा अप्राप्त लि क ब्राह्मण जानकीलाल
22 5×12 5 22, 10	20–24	पूर्ण	19 वी श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
85	14297	पुरुषोत्तममास एकादशीरी कथा	
86	13765 (3)	बुधाष्टमीरी कथा	
87	12732 (1)	भगीपुराण (शिवपुराण)	हरदास
88	14066 (6)	भगवतगीतारी टीका	
प. 89	14376 (1)	भगवतगीता दोहानुवाद	मलूकचन्द "लाहोरी"
90	14360 (3)	,, ,, सटीक	
91	14901	,, भाषानुवाद	
92	14387 (1)	,, भाषानुवाद (कृष्णगीता)	
93	13801	भागवत-एकादशस्कन्ध-भाषा	चतुरदास शिष्य संतदास
94	14481 (1)	,, ,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
27×13 12, 24	2–64	अपूर्ण	1934	प्रथम पत्र अप्राप्त
22×16 24, 20	3–9	पूर्ण	1780	लि क हरजी गौड लि स्था मेडता
21×16 17, 35	1–16	,,	1857	लि क लक्ष्मीविजय लि स्था लोहिया, जलसिक्त पत्राङ्क 9–10 पर सोलह सतियो के नाम, 12 महादेवजी के लिंग, 14 रत्न, 12 चक्रवर्ति, 18 पुराण आदि नाम-सग्रह है।
22×16 19, 20	1–43	,,	1751	लि क हरजी लि स्था जुगतारण (जैतारण)
21 5×15 5 20, 21	1–46	,,	1794	र का. 1751, लि क अखैराम तिवाडी लि स्था मूँडवा, नागोर
15 5×10 10, 18	155–287	,,	19 वी श	
15×10 7, 16	1–95	,,	1913	लि क शिवनन्द ब्राह्मण लि स्था दुर्गापुरा पत्राङ्क 95–96 पर दादू तथा सुन्दरदास के सबद हैं।
13×11 5 9, 16	1–87	,,	1883	लि क माणकजी लालाणी गुटके के प्रारम्भ मे हनुमत्कवच आदि सस्कृत कृतियाँ तथा अत मे कु भनदास का पद एव गोपालसहस्रनाम हैं।
28×11 5 10, 32	1–167	,,	19 वी श	र का 1692
14×9 5 10, 17	1–306	,,	1836	लि क माहेश्वर तिवाडी लि स्था नागपुरी

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
95	14742 (3)	भागवत-एकादश-स्कन्ध-भापा	चतुरदास शिष्य सतदास
96	14960 (8)	,, ,,	,,
97	15094	,, ,,	,,
98	15247	,, ,,	,,
99	14478 (1)	,, ,,	,,
100	14044 (2)	,, ,, अनुक्रम-आख्यान-भाषा	हरिदास
101	13783	भागवत-एकादशार्थ-दीपिका	भावनादास शिष्य दामोदर
प: 102	14259	भागवत-दशम-स्कन्ध-भापा	नारायणदास
103	13763	,, ,,	रसजानि शिष्य प्रियादास
104	13750	,, ,,	
105	13764	भागवन-भापा (प्रथम, अप्टम, नवम अध्याय)	हरिवल्लभ
106	13479	भागवत-भापा	रसजानि
107	14249	भागवत-भापा (प्रथम से तृतीय स्कन्ध)	व्रजदासी

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 11, 19	270–473	पूर्ण	1833	लि क तुलसीदास लि. स्था नौलगढ
17×15 21, 19	415–561	अपूर्ण	1871	पत्र अस्त-व्यस्त
25 5×15 13, 28	1–145	पूर्ण	1774	लि क मथेन कुशला, लि स्था शाकभरी अत मे श्रीकृष्ण सबधी पद है ।
21 5×13 16, 34	1–96	अपूर्ण	19 वी श	
15×9 5 9, 15–19	3–351	,,	20 वी श	प्रति जीर्ण
22×13 5 26, 14	60–84	पूर्ण	19 वी श	
20×17 10, 22	1–189	,,	1921	लि स्था जोधपुर
31×15 5 15, 40	1–159	,,	1915	कृष्णगढ के मुहणोत उग्रसेन की आज्ञा से रचित
29×15 11, 28	1–144 1–81	अपूर्ण	19 वी श	उत्तरार्द्ध का 46 वा पत्र दो बार तथा पत्राङ्क 82–123 अप्राप्त
27×14 12, 33	1–248	पूर्ण	1907	सुवाच्य प्रति
31×13 5 11, 47	1–26 1–37 1–31	,,	1828	लि क. वैष्णव किशोरदास लि स्था अहिपुर
30 5×15 5 15, 45	1–518 कुल	अपूर्ण	1935	लि स्था जोधपुर सप्तम अध्याय मे 22 वा पत्र अप्राप्त
33×17 12, 30	1–55 1–29 1–29	पूर्ण	19 वी श	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
108	14288	भागवतमाहात्म्य-भाषा	
109	15229 (2)	भागवत-सार पच्चीसी	चदलाल
110	13781 (1)	भागौत-दर्पण	रतनू वीरभाण
111	14741 (26)	भारत की महिमा (पाडवजग्य)	
112	15093 (1)	भोगलपुराण	
113	14081 (1)	"	
114	14081 (6)	मनसावाचारी कथा	
115	14418 (6)	"	
116	14290	माघमाहात्म्य कथा	
117	14960 (4)	मारकंडेयपुराण-भापा	दामोदर
118	15248	"	
119	14388 (7)	रामनवमीरी कथा	
120	15613 (8)	रासपचाध्यायी-भापा	नददास

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सम्वत्)	विशेष ज्ञातव्य
33 5×17 12, 35	1–36	पूर्ण	1880	पद्मपुराण-उत्तरखण्डगत
26 5×12 5 9, 30	1–7	,,	1880	र. का 1854
27×18 5 29, 18	1–139	अपूर्ण	20 वी श.	पत्राङ्क 2 अप्राप्त, जीर्ण एव त्रुटित 27 वे अध्याय तक
13 5×10 5 12, 20	492–497	पूर्ण	19 वी श	
17×16 13, 16	2–12	अपूर्ण	,,	प्रथम पत्र अप्राप्त
16×12 10, 19	1–24	पूर्ण	गु 1890	
16×12 11, 20	1–14	,,	,,	
12×11 8, 15	75–103	,,	19 वी श	
31×13 5 15, 48	1–12	,,	19 वी श	पद्मपुराणगत
17×15 22, 22	87–158	अपूर्ण	गु 1867 1871	र का 1688, जीर्ण पत्राङ्क 136, 138–157 अप्राप्त
21 5×12 5 16, 32	1–68	पूर्ण	19 वी श	प्रारभ मे वाजीद कृत 'गुनराज-कीरत कथा' है।
12 5×11 5 10, 12	12–22	,,	1936	लि क भरतदास
17 5×13 24, 34	11–16	,,	18 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
121	14283	रासपंचाध्यायी-भाषा	नंददास
122	13339 (2)	वासिष्ठसार गीता-भाषा	नरहरिदास बारठ
123	14370 (5)	शनीश्चरजीरी कथा	जोरावरमल सुत हुकमराय
124	14365 (3)	,,	,,
125	13508 (3)	,,	आसकरण
126	14081 (4)	,,	जोरावरमल
127	14342 (1)	,,	
128	14365 (3)	,,	,,
	14404 (8)	,,	
129			
130	14418 (4)	शनिश्चरजीरी कथा	
131	14424 (3)	,,	जोरावरमल

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, ग्रक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ ग्रपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10 5×9 9, 14	1–49	पूर्ण	20 वी श	
20×14 12, 27	1–52	,,	19 वी श	र का. 1677
21×15 11, 16	110–126	,,	1927	र का 1824 लि क मथुरादास पत्राङ्क 127 से 132 पर पहाडे तथा सतदास ग्रादि की साखियाँ है।
15×10 5 10, 15	1–22	,,	1888	र का 1824
12×16 6, 13	2–79	ग्रपूर्ण	1905	लि क नथमल सुखदानोत लि स्था छावनी-ब्यावर
16×12 11, 19	30–43	,,	गु 1890	पत्राङ्क 27–29 ग्रप्राप्त
21×14 5 14, 15	1–10	पूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 10–11 पर स्फुट कवित्त तथा 12–19 पर ग्रौषधि सग्रह है।
15×10 5 10, 15	83–104 (1–22)	,,	20 वी श.	
15×11 9; 11	219–226	,,	1950	लि क पूनमचद पत्राङ्क 226–227 पर सवत् 1955 मे मुनिमहाराज के ग्रागमन की टीप है।
12 5×11 8, 15	42–51	,,	1855	
13×10 5 7, 12	22–67	,,	1925	लि क दोलतराज सुधारकर्ता-लिछमरण

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
132	14676 (1)	शिवरात्रिरी कथा सचित्र	
133	14756 (4)	शिवरात्रिरी व्रत कथा	
134	13769 (8)	सकटचोथि कथा	
135	13492 (1)	सूरजपुराण-माहात्म्य	
136	14081 (7)	सोमवती-अमावस्यारी कथा	
137	14676 (6)	स्वर्गारोहण	
138	13762	स्वरूपनिर्णय	
139	13339 (1)	हस्तामल शिवगीता	
140	13765 (2)	होलीरी उतपतरी कथा	
4 इतिहास			
141	14079 (2)	अठारे-सूबारी विगत	
142	15637 (3)	ऊदाउगमणाउतरी वार्ता	
143	13976 (1)	ओसवालो के कुलगुरुओं की वही वापनागोत्र	

माप से मी. मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21 5×12 5 11, 24	1–27	पूर्ण	1848	चित्र सख्या-4
24×15 35, 24	44–46	,	1811	लि क आत्माराम भीमा पत्राङ्क 46–47 पर पचारव्यान के स्फुट श्लोको की भाषा है।
13.5×10 5 11, 20	59–66	,,	1707	लि स्था. केलवा एक ओर लिखित पत्र
19 5×18 14, 12	84–102	अपूर्ण	19 वी श	अध्याय 2 से 12 वें तक
16×12 11, 20	14–23	पूर्ण	गु 1890	
21 5×12 5 11, 24	69–83	,,	1848	सस्कृत मे है। चित्र स -2
27 5×19 5 16, 17	2–27	अपूर्ण	1918	तैलसिक्त, पत्राङ्क 1, 14 वा अप्राप्त लि क. आदिगौड ब्राह्मण लक्ष्मण
20×14 12, 26	1–35	,,	19 वीं श	अत मे सप्तश्लोकी-भागवत का एक सटीक श्लोक है।
22×16 19, 18	1–3	पूर्ण	1780	लि क गुलाल लि स्था मेडता
14×13 5 13,	1–6	,,	1790	लि क भडारी खीवराज वछराजोत
32×20 5 32, 26	337–345	,,	20 वी श	"नैणसी री ख्यात से"
88' 6"×13 5"	खरडा	,,	19 वी श	विद्याधर शाखा के रत्नप्रभसूरि की वदना से प्रारम्भ, दोनो ओर लिखित

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
144	13976 (2)	ओसवालो के कुल गुरुओ की वही ,, टेहगौत्र, अभडगौत्र	
145	13976 (3)	,, चोरडियागौत्र	
146	13976 (4)	,, कर्णावटगौत्र	
147	13976 (5)	,, वाघमारगौत्र	
148	13976 (6)	,, तातेड़गौत्रादि	
149	13976 (7)	, देसरलागौत्र, भटवरा-गौत्रादि	
150	13976 (8)	,, कुम्भटगौत्र, वाघचारगौत्र आदि	
151	13976 (9)	,, भाड्गौत्र चीचटगौत्र, भुरगौत्र, करणावट गौत्र एवं इनकी शाखाए	
152	13976 (10)	, तातेड एवं बापणा गौत्रादि	
153	15637 (9)	कछवाहारी तवारीख	
154	15650 (23)	कनौज के गहरवालो के दान पत्र—राजा मदनपाल का दानपत्र	
155	15637 (15) 5	क्यामखानियांरी उतपतिरी और जू भणू फतेपुर वसायो तिणरी विगत	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
71' 3"×12"	खरड़ा	पूर्ण	1820	सभी खरडो का माप फुट एव इचो मे है ।
149' 10"×11"	,,	,,	18 वी श.	जीर्ण
19'.10"×14"	,,	,,	19 वी श.	'बा मूलचदजी-खीवराजजी खीवसररा री छै'
12'.6"×13"	,	,,	1912	जीर्ण
79'.3"×15"	,,	,,	19 वी श	
64' 4"×13.5"	,,	,,	,,	जीर्ण
79'×11 5"	,,	,,	1785	लि. क हरकिशन शिष्य दयारत्न जीर्ण-खडित
100'×12" इ	,,	,,	18 वी श	अत्यन्त जीर्ण एव खडित
107'×12"	,,	,,	18 वी श	,,
32×20 5 32, 28	पृ० 1–19	,,	सन् 1916	लि क. सेवक देवराज इस ग्रन्थाङ्क की सम्पूर्ण कृतियो का पूर्वलिपिकर्ता सिहथल का वीठू पना है, तथा समस्त कृतिया 'नैणसी री ख्यात' से सगृहीत हैं ।
32 5×22 5 29, 22	65–67	,,	20 वी श	सस्कृत मे है। स 1153 का, वाराणसी मे प्राप्त, प्रकाशित ।
32×20 5 32, 26	पृ० 349–350	,,	20 वी श	'नैणसीरी ख्यात से' पृ 351–352 पर दौलताबाद के उमरावो की बात है ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
156	15644 (7)	खेतसी निम्बावतरी हकीकत	
157	15637 (14) 3	खेतसी-रतनसिंहोतरी अर सीसोदिया चूंडा-रतनसीहरी वात	
158	15637 (6)	गढ़बंधवरा धणियांरी वात	
159	15637 (14) 4	गुजरात देश-वर्णन	
160	15637 (14) 6	गोगादे-वीरमदेओतरी अर रावजी गागाजीरी वारता	
161	15637 (15) 2	चन्द्राउतारी वारता	
प. 162	13725 (1–10)	छत्तीस-राजकुली आदि संग्रह	
163	15648 (1)	जैतावतारी ख्यात— जैतावत भगवानदासोतरी विगत	
164	15648 (2)	,, जैतावत गोइंदासोतरी विगत	
165	15648 (3)	,, जैतावत जगनाथसिंघोतरी विगत	
166	15648 (4)	,, जैतावत कुंभकरणोतरी विगत	
167	15648 (5)	,, जैतावत देईदासोतरी विगत	
168	15649 (2)	जैतावतांरी ख्यात	

माप से मी मे, पक्ति प्रति प्रत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
33 5×20 5 35, 21	पृ० 272–273	पूर्ण	20 वी श.	
32×20 5 31, 28	पृ० 224–229	,,	,,	नैणसीरी ख्यात' से
32×20 5 35, 22	पृ० 79–81	,,	,,	,,
32×20 5 31, 28	पृ० 229–231	,,	,,	,, पृ० 232 पर "मकवाणाँ रजपूत झाला कहलाणा" री विगत है।
32×20 5 31, 26	पृ० 246–250	,,	,,	'नैणसीरी ख्यात' से
32×20 5 32, 26	पृ० 329–337	,,	,,	,, , प्रतिलिपि—रामकरण आसोपा की पुस्तक से
28×12 5 14, 44	पृ० 1–16	,,	1994	लि क वनमाली रामचन्द्र लि स्था नागोर
26 5×21 16, 12	पृ० 1–76	,,	सन् 1917	पूरी जिल्द महाजनी-लिपि मे है।
26 5×21 20, 15	पृ० 1–30	,,	,,	
26 5×12 20, 15	पृ० 31–53	,,	,,	
26 5×21 19, 18	पृ० 1–23	,	,,	
26 5×21 22, 18	पृ० 1–3 पृ० 1–80	,,	,,	
31 5×24 16, 24	पृ० 1–172	,	1950	राव रिडमल की वार्ता से प्रारम्भ

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
169	15637 (14) 2	जैसलमेररी वारता	
170	15637 (14) 9	जैमल-वीरमदेग्रोत ग्रर राव-माल्देवरी वारता	
171	15637 (14) 16	जोधपुर-राजावांरी तवारीख	
172	14462 (2)	जोधपुररा परगनारी विगत गाँव-रेख वार	
173	15637 (13)	झालांरी वशावली (मेवाड़रा झालारी ख्यात)	
प 174	15643	ठिकाँणा,झीयडा,परगना-सोजतरी ख्यात	नर्गसिहदास शिष्य भागवतदास
175	15647 (8)	तवारीख दिल्लीरी पातसाहीरे समैरी	
176	15647 (6)	तवारीख पडिहारारी	
177	15637 (4)	दहियारी वात	
178	15637 (2)	देवलियारे धणियाँरी वात	
179	15295 (4)	नरबदरी नै नरसिह-सीदलरी वात	
180	15637 (14) 12	नरवद-सतावत सुपियारदे नें लाया तिण समयरी वात, नरवद-सतावत राणाजी ने ग्राँख दीधी तिण समयरी वात	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
32×20 5 31, 28	पृ० 211–224	अपूर्ण	20 वी श.	दूदा-जोधाउतरी वात तक है। 'नैणसीरी ख्यात' से
32×20 5 32; 28	पृ० 270–274	पूर्ण	,,	'नैणसीरी ख्यात' से, खडित
32×20 5 32, 28	पृ० 319–322	,,	सन् 1914	'नैणसीरी ख्यात' से
35×26 29, 12–28	4–16	,,	20 वी श	'मारवाडरा-परगनारी विगत' मे
32×20 5 32, 28	पृ० 146–149	,,	सन् 1914	'नैणसीरी ख्यात' से, "सवत् 1722 मे आढा चारण महेशदास लिख मेल्ही"
25 5×17 18, 15	1–117	,,	सन् 1954	बोडा आसकरण की सहायता से निर्मित
33×20 32, 20	पृ० 335–356	,,	सन् 1914	'जहागीर सू राजा आय मिलिया तिण समयरी', 'नैणसीरी ख्यात' से
32×20 32; 26	पृ० 340–349	,,	सन् 1914	'नैणसीरी ख्यात' से
32×20 35, 22	पृ० 76–77	,,	20 वी श	,,
32×20 5 35, 25	पृ० 56–60	,,	,,	,,
25 5×23 24, 28	26–29	,,	19 वी श-	
32×20 32, 28	285–289, 289–291 पृ०	,,	20 वी श	,,

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
181	15637 (14) 8	नरा-सूजाउत राठौड ग्रर खीवसी पोकरणौरी वार्ता	
182	15644 (8)	परगनारी हकीकत (भडारी फोजचदजोरी वही)	
183	15647 (2)	पवाँरारी तवारीख	
184	15637 (11)	" ,	
185	15637 (14) 5	पावूजीरी वारता	
186	15656 (2)	पिरोयतजीरी तवारीखरी नकल (महाराजा गजसिंहजीरी ख्यात)	
प: 187	15644 (2) 1–54	पीढियांरी विगत तथा स्फुट गीत सग्रह	
188	15671	वाकीदासजीरी ख्यात का तर्जुमा	मू० वाकीदास त० श्यामकरण दाधीच
189	15644 (3)	वाहडमेररी वात	
190	15642	वीकानेररी ख्यात	
191	15637 (5)	वुन्देलारी वात	
192	15647 (7)	वू दीरी तवारीख	
193	15637 (3)	वू दीरा धणियारी ख्यात	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
32×20 5 31, 28	पृ० 261–270	पूर्ण	20 वी श	'नैणसीरी ख्यात' से
33 5×20 5 35, 12–12	पृ० 273–285	,,	,,	परगना-अमरसर, मानगढ, वैराट, बत्तीसा, मनोहरपुर, उदयपुर आदि ।
33×20 32, 26	पृ० 2–16	,,	सन् 1914	पूर्व लि क किशोरदान बारठ 'नैणसीरी ख्यात' से
32×20 5 32, 28	पृ० 2–15	,,	20 वी श	,,
32×20 5 31; 28	पृ० 232–246	,,	20 वी श.	,,
33×21 18, 16	पृ० 1–45	पूर्ण	19 वी श	सवत् 1676 से 1691 तक
33 5×20 5 35, 16	पृ० 173–192	,,	20 वी श	समग्र सूची परिशिष्ठ मे देखे
22 5×27 5 16, 18	पृ० 1–725	,,	,,	पृ०1–112 तक प्रारभ मे बृहत् सूची-पत्र है। जिसमे 1660 बातो का विवरण है।
22 5×27 5 35; 19	पृ० 253–260	,,	,,	
27×21 15, 14	पृ० 1–604	,,	,,	राव जोधाजी से अनूपसिहजी तक
32×20 5 35, 22	पृ० 77–79	,,	,,	'नैणसीरी ख्यात' से
32×20 32, 26	पृ० 350–354	,,	सन् 1914	'नैणसी री ख्यात' से पृ 354 पर क्यामखानी राजपूतो की वार्ता है।
32×20 5 35, 22	पृ० 60–74	पूर्ण	20 वी श	'नैणसीरी ख्यात से'

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
194	15637 (15) 4	बूंदीरी वारता	
195	15656 (3)	भंडारी फोजचंदजीरी तवारीखरी नकल (महाराजा रामसिंहजी री ख्यात)	
196	15637 (12)	भाटियारी ख्यात	
197	16647 (3)	„ तवारीख	
198	15636	भाद्राजणरी तवारीख	
199	14836 (3)	मारमल-कंवरसी साखलारी वात	
200	15637 (8)	भायला रजपूतारी ख्यात	
201	13737 (9)	भीनमाल माहे तर्था री विगत	
202	15662	महकमा तवारीख जोधपुररी मिसला रो व्यौरो	
203	15638	महाराजा अजीतसिंहजीरी ख्यात का हिन्दी तर्जुमा	
204	15663	„ „ प्रथम भाग	
205	15664	„ „ द्वितीय भाग	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
32×20 5 32, 26	345–349 पृ०	पूर्ण	20 वी श	'नैणसीरी ख्यात' से
33×21 22, 16	पृ० 1–81	,,	सन् 1924	ग्रन्थाङ्क 15644 पर भी भडारी फोज-चदजीरी तवारीख की पूरी नकल 310 पृष्ठो मे है ।
32×20 5 32, 28	पृ० 16–146	,,	20 वी श	'नैणसीरी ख्यात' से, 'जेसलमेर देशरी हकीकत वीठलदास लिखाई ।'
33×20 22, 26	पृ० 17–149	,,	सन् 1914	नैणसीरी ख्यात' से, पृ 145–149 पर झालाओ की तवारीख भी है ।
27×20 15, 15	पृ० 1–440	,,	20 वी श	
32×22 27, 22	1–41	,,	19 वी श	चित्र वनाने के लिए स्थान रिक्त
32×20 5 32, 28	पृ० 107–144	पूर्ण	सन् 1916	लि क सेवग देवराज 'नैणसीरी ख्यात' से
21 5×14 5 13, 24	1–2	,,	18 वी श	पत्राङ्क 3 पर अपूर्ण दुर्गाआख्यान तथा 4 पर बिच्छूरो झाडो है ।
32×24 5 19, 24	2–58	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 1, 57 अप्राप्त, क्रम सख्या 9 से 750 मिसलो की विगत है ।
32×24 5 20, 28	1–26	,,	20 वी श	संवत् 1735–36 तक का वर्णन है ।
27 5×21 5 15, 17	पृ० 1–220	पूर्ण	20 वी श	सवत् 1735–39 तक का वर्णन है ।
27×22 15, 12	पृ० 221–402	,,	सन् 1893	1740 से देवलिया आने तक का हाल है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
206	15665	महाराजा अजीतसिहजीरी ख्यात का हिन्दी तर्जुमा—तृतीय भाग	
207	15659	महाराजा अभयसिहजीरी ख्यात का हिन्दी तर्जुमा	
208	15632	महाराजा अभयसिहजीरे राजरी कार्यवाहीरी ख्यात	
209	15670	,, उदयसिहजी 'मोटाराजारी' ख्यातरो हिन्दी तर्जुमो	
210	15656 (4)	,, गजसिहजीरी ख्यात	
211	15633	,, गजसिहजीरी ख्यातरो हिन्दी तर्जुमो	
212	15666	,, ,, ,,	
213	15656 (1)	,, ,, , (माफीजरा खरडारी नकल)	
214	15654 (6)	,, जसवतसिहजीरी ख्यात	
215	15661	,, ,, (महक्मा-तवारीखरा खरड़ारो हिन्दी तर्जुमो)	
216	15634	महाराज: श्री जसवतसिहजी धाम पधारचा जठासु लगाय अर मान-सिहजी टीके बैठा जठा ताईरी फुटकर बातारी विगत	

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सम्वत्)	विशेष ज्ञातव्य
27×22 16, 13	पृ॰ 403–585	पूर्ण	सन् 1893	
27 5×21 15, 11	पृ॰1–317	,,	19 वी श	सवत् 1759 से 1805 तक
32 5×24 20, 26	1–60	,,	20 वी श	ठिकाणा नीवाजरी बहीरी नकल; सवत् 1759–1809 तक
27×22 13, 9	पृ॰ 441–512	,,	सन् 1892	संवत् 1594–1671 तक
33×21 21, 15	पृ॰1–28	,,	19 वी श	सवत् 1676-1694 तक
32 5×25 21, 34	1–76	,,	20 वी श.	सवत् 1652–1735 तक
27 5×22 5 17, 11	पृ॰1–211	,,	सन् 1891	
33×21 16, 15	पृ॰1–99	,,	19 वी श	सवत् 1652 से 1694 तक
33×21 30, 24	पृ॰ 107–121	,,	सन् 1911	अत मे आसोप ठाकुर महेशदासजी के युद्ध मे काम आने का एक गीत है।
27×22 5 18, 12	पृ॰1–210	,,	19 वी श	
26×21 5 16, 22	पृ॰ 46–335	,,	20 वी श	प्रथम 46 पृष्ठो मे 22 स्फुट विगतें हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
250	14370 (3)	राव रिणमलजीरी वार्ता	
251	15652	राव सीहाजी से राव कान्हडदेवजी तक तवारीखरा खरड़ारी नकला	
252	15637 (14) 13	राव लूणकरणजी (बीकानेर) री वार्ता	
प:253	15654 (9)	रूपक—सिवदानसिंह भारथसिंघोत जोधा केसरी सिंघोतरो	बारठ लालेजी
254	15637 (4)	वागडिया चहुआणारी ख्यात	
255	15693 (56)	वोडा वीरमदे के फरमान पत्र की नकल	
256	13682	श्रीमालियारा अवट-गोत्र	
257	15637 (15, 6	सयमराव राठोड़री वार्ता	
258	15647 (9)	” ” रै पुत्र मूलराज री वीरताईरी तवारीख	
259	15637 (7)	सीरोहीरा धणियारी ख्यात	
260	15637 (1)	सीसोदियारी ख्यात	

माप से. मी मे, पक्ति प्रति प्रत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×15 9, 16	88-106	पूर्ण	19 वी श	'नैणसी री ख्यात' से
33×21 21, 24	पृ॰1-164	"	सन् 1926	लि क बारठ नरहरदास 12 विभिन्न ग्रन्थो से सगृहीत
32×20.5 32, 28	पृ॰ 291-292	"	20 वी श	'नैणसीरी ख्यात' से
32×21 30, 24	145-168	"	सन् 1911	लि. क बारठ जैतदान
32×20 5 35, 22	पृ॰ 74-75	"	20 वी श	'नैणसीरी ख्यात' से
25.5×15 5 20, 38	199 वा	"	17 वी श	सवत् 1647 का
22×10.5 10, 26	1	"	20 वी श	
32×20 5 32, 26	पृ॰ 352-367	"	"	'नैणसीरी ख्यात' से
32×20 32, 26	356-365	"	सन् 1914	'नैणसी री ख्यात' से
32×20 5 32, 28	पृ॰81-106	"	20 वी श.	" "सवत 1721 मे भ्राढै महेसदास लिख मेल्ही"
32×20 5 35, 22	पृ॰ 1-54	"	सन् 1916	'नैणसी री ख्यात' से, पृ 54-55 पर गहलोत, पँवार, चहुआण, पडिहार व सोलकियो की शाखाओ के नाम हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
261	15647 (5)	सीसोदियांरी तवारीख	
262	15033 (2)	सीहाजीरी पीढियांरी विगत	
263	15637 (14) 10	सोहा सीवलरी वार्ता	
264	15649 (3)	सुजाणसिंहोतरी ख्यात	
265	15644 (6)	सेखावतां (कछवाहां) री हकीकत	
266	15637 (14) 15	सेतराम-वरदाईसेनोतरी वार्ता	
267	15644 (12)	स्फुट विगत संग्रह	
268	14462 (3)	हकीकत सग्रह	
प 269	15653	हफत-गुलशननामा तारीख की सक्षेप-भाषा	मू० कामरखां
270	15637 (14) 7	हरदास ऊहड आदिरी वार्ता	
271	15644 (9)	हुमायु अर कछवाहा जेता-दुरगावत नै रायमल-सेखावतरी वेढ हुई तिणरी विगत	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
33×20 32, 26	पृ० 334–340	पूर्ण	सन् 1914	'नैणसी री ख्यात' से
17×13 5 12, 16	8–10	,,	20 वी श.	पत्राङ्क 10–12 पर पातशाह के सूबो का ब्यौरा है।
32×20 5 32, 28	पृ० 274–278	,,	,,	'नैणसी री ख्यात' से
31 5×24 14, 19	पृ०1–73	,,	1950	सवत् 1732 से प्रारम्भ
33 5×20 5 35, 21	पृ० 266–271	,,	20 वी श	'नैणसी री ख्यात' से
32×20 5 32, 28	पृ० 311–318	,,	,,	,, पृ 318–319 पर बीकानेर के राजाओ के नाम तथा सतियो के नाम हैं।
33 5×20 5 35, 29	पृ० 300–304	,,	,,	विगत—गुसाईजीकी, किशनगढकी, साभरकी,गढ निर्माणकी मुहणोतो की
35×26 29, 28	16–31	,,	,,	पीढियाँ–मेवाडरी भाटियारी, देवडारी मोहिलाँरी, सीघलवाटीरी, सोलकियारी, अकबर रा प्रवाडा, औरगजेबरा प्रवाडा आदि।
21×16 19, 15	2–125	अपूर्ण	1876	फारसी से जयपुरी भाषा 'ढूँढाडी' मे अनूदित, प्रथम पत्र अप्राप्त
32×20 5 31, 26	पृ० 250–261	पूर्ण	20 वी श	राव मालदेवजी तथा वीरमदेवजीरी वार्त्ता भी है।
33 5×20 5 35, 21	पृ० 285–289	,,	,,	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
5 (1) ऐ० का०			
272	15654 (10)	अजीतग्रन्थ (पुष्कर-युद्ध-खण्ड)	ईसरदास बारठ
273	14463 (11)	अजीतसिंहजी रा दूहा	जगाजी
274	14079 (6)	अजीतसिंहजी रो छन्द	
275	13515 (3)	अभैविलास	पृथ्वीराज सादू
276	12709 (3)	उदयपुररी गजल	कवि खेतल
277	13518 (3)	कवित्त अभैसिंहजीरा (अहमदाबादरै युद्धरा)	वखता खडिया
278	15654	,, ,,	,,
279	13516 (2)	,, ,,	,,
280	13784 (20)	कवित्त किशोरसिंहजी के	कृपाराम
281	15644 (13)	कवित्त, गीत आदि	पीथल, चारण सिंभूदान
282	14437 (3) 9	कवित्त छत्तीस वश का	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
		पूर्ण		
33×21 26, 24	पृ० 171–198	,,	सन् 1911	र. का 1711,सग्रहकर्त्ता–बारठ किशोरदान अत मे सम्पूर्ण जिल्द का सूचीपत्र है।
20×16 5 19, 26	78–80	,,	19 वी श	
14×13 5 11, 18	15–16	अपूर्ण	1808	पत्राङ्क17–30 चारणो की देवी की स्तुति, राजावा रे जनमरी विगत, दिल्लीरा पातसाहारो व्योरो, गढ वणावारो ब्योरो है।
23×17 17; 16	20–29	पूर्ण	1860	लि क्र. सेवग मोतीराम, पत्राङ्क 17–19 अप्राप्त, प्रारम्भ के 17 छन्द नही हैं।
23×13 15, 38	38–41	अपूर्ण	गु 1828	
22×16 20,15	1–9	पूर्ण	19 वी श.	68 कवित्त हैं।
32×21 28, 20	पृ० 13–48	अपूर्ण	20 वी श	सवत् 1818 की प्रति से प्रतिलिपिकृत 166 कवित्त छप्पय हैं।
22 5×16 32; 28	12, 13, 15, 16, 18, 19		20 वी श	साथ के अन्य चार पत्रो पर वृन्द के दोहे तथा हरिनाम भजन माहात्य है।
17×13 9, 16	20–21	पूर्ण	20 वी श	ये महाराजा तखतसिंह के पुत्र थे ।
33.5×20 5 35, 15	304–310	,,	20 वी श	लगभग 20 कवित्त विभिन्न धटनाओ के हैं।
25×13 5 16, 17	169–171	,,	19 वी श.	लि क पदमसिंह खाखड

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
283	13784 (17)	कवित्त जैसलमेर महाराजा वैरीसालजीरा	कृपाराम
284	13784 (18)	कवित्त जसवर्तासहजीरा	"
285	13784 (19)	कवित्त जेमल छत्रसिंहजीरा	"
286	13784 (9)	कवित्त तखतसिंहजीरा	
287	13770 (4) 7	कवित्त वखतसिंहजीरो	
288	13517 (2)	कवित्त भीमसिंहजीरा	वीठू उम्मेद
289	13511 (23)	कवित्त मलाररावरो (मल्हारराव होल्कर)	
290	13784 (7)	, रीवाँ वाँदूगढ महाराज विश्वनाथ कुवर रघुनाथसिंहजी के	
291	13654 (7) 2	कवित्त—सतियारा (कुशालकँवरवाई)	वारठ एजनजी
292	13511 (18)	कवित्त सवैया (पृथ्वीराज चौहान आदि)	कवि चंद आदि
293	13784 (3)	कवित्त हरनाथ के	हरनाथ
294	13761 (28)	कुण्डलिया कल्याणदास रायमलोतरा	आसिया दूदा

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×13 9, 15	1–11	पूर्ण	20 वी श	20 छन्द हैं।
17×13 9, 15	12–17	,,	,	
17×13 9, 15	18–19	,,	,,	
17×13 11, 16	1–4	,,	20 वी श	
10×9 9, 12	1–28	,,	1861	पत्राङ्क 29 पर नव नाथो के नाम है
21×17 16, 14	1–4	अपूर्ण	19 वी श	16 छन्द हैं।, वि स 1860 मे महाराज भीमसिह केसाथ 26 रानियो के सती होने का उल्लेख है।
17×12 11, 19	78–83	पूर्ण	,,	
17×13 10, 18	1–8	,,	1916	
33×21 25, 18	पृ०. 127–139	,,	सन् 1911	कवि ग्राम–रूपावास, देखे पूर्व प्रकाशित रा हि ह लि. ग्रन्थ-सूची, भाग 3
17×12 9, 16	51–56	,,	19 वी श	
17×13 11, 15	1 4	,,	20 वी श	
16×22.5 24, 18	16–18	,,	1808	लि. क गुरुजी देदा, लि स्था जसोल

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
295	13778 (2)	केसरीसिह काधिलरी दवावैत	
296	13778 (9)	गजगुण रूपक-बन्ध	केशोदास गाडण
297	15641 (2)	गजसिंह गुणरूपक-वध	,,
298	13520 (1) 2	गीत—अजीतसिंहजीरो	
299	15060 (16-18)	,, आयसजी लाडूनाथरो	सेवग वालजी
300	13511 (2)	,, उदयपुर रा आसामियाँरो	
301	14412 (3)	,, करणीसिंहजीरो	चारण परमानद
302	14412 (7)	,, ,,	चारण पृथ्वीराज
303	13520 (1) 1	,, गजसिंहजीरो	
304	15060 (2)	,, जगतसिंहजीरो	आसिया बाँकीदास
305	14837 (1)	,, जगरामजीरो	
306	14418 (9)	,, ठाकुरां श्रीआलमचंदजीरो	आलमचद
307	13509 (4)	,, तखतसिंहजीरो	

माप से मी. मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
32×25 27, 24	3–4	पूर्ण	20 वी श	
32×25 30, 27	1–47	अपूर्ण	„	प्रारम्भ के 75 छन्द एव अन्तिमाश अप्राप्त
33×21 21, 18	1–50	पूर्ण	„	लेखन के बाद मे शुद्ध की गई प्रति ।
23×17 21, 20	1 ला,	„	19 वी श	
17 5×13 12, 15	16–17	„	20 वी श	जोधपुर वाले तीन गीत हैं
17×12 12; 14	2 रा	„	19 वी श	
14×11 7; 16	62–66	„	18 वी श.	बीकानेर वाले ।
14×11 7, 16	90–92	„	„	
23×17 21, 20	1 ला	„	19 वी श	जोधपुर वाले ।
17 5×13 10, 15	2–4	„	20 वी श	जयपुर के दो गीत
29 5×22 5 24, 22	1 ला	„	19 वी श	पत्र के आरम्भ मे मुगलो के सूबो की विगत है ।
12 5×11 10, 15	129 वा	„	„	पत्राङ्क 130–133 पर छत्तीस कारखानो, रागो और पुराणो के नाम हैं ।
24×17 13, 28	55 वा	पूर्ण	„	जोधपुर वाले, अन्त मे शिवलाल के कवित्त हैं ।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
308	15060 (10)	गीत तखतसिंहजीरो	
309	13519 (3)	„ देवीसिंहजी सामसिघोतरो	
310	13519 (5)	„ „	
311	13516 (1)	„ नागोर "आगरा" घेरारौ	
312	14463 (26)	„ नाहरखान राजसिंघोतरो	केशोदास गाडण
313	13511 (19)	„ बखतसिंहजीरो	
314	14432 (5)	„ „	
315	13520 (1) 4	„ विसनसिंहजीरो	
316	13519 (2)	„ भडारी भवानीदासजी दीवाणरो	
317	13511 (53)	„ भडारी मानमलरो	दौलतराम
318	13519 (4)	„ भाद्राजण वालारो	
319	12706 (3) 5	„ मानसिंहजीरो	

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सम्वत्)	विशेष ज्ञातव्य
17 5×13 11; 15	9–10	पूर्ण	20 वी श	जोधपुर वाले
22×17 18, 16	36 वा	,,	19 वी श	सीकर वाले
22×17 20, 18	38 वा	,,	,,	,,
25 5×16 17, 14	2, 5 वा	अपूर्ण	20 वी श	प्रारम्भ मे अमरसिंह के गीत का अतिमाश है ।
20×16 5 22, 22	238–240	पूर्ण	1763	लि क जोगीदास, पत्राङ्क 237 पर 'जोगा' कृत एक गीत तथा 239–240 पर म पृथ्वीराजकृत "दाता अर सूररो सवाद" है ।
17×12 9, 14	56–58	,,	19 वी श	जोधपुर–न.गोर वाले
12×9 5 11, 13	22–24	,,	1858	पत्राङ्क 25–27 पर पार्श्वनाथस्तवन तथा 27–30 पर ओपधादि सग्रह है ।
23×17 23, 21	2 रा	,,	19 वी श.	
22×17 18, 18	35 वा	,,	,,	इसी के वाद भडारी कल्याणदास के कवित्त हैं ।
17×12 9, 14	226–227	,,	,,	लि क सेवगराम, लि स्था जालोर
22×17 17, 16	37–38	,,	,,	आगे माधोसिहजी के गीत का प्रारम्भ मात्र है ।
15 5×11 5 7, 13	29–30	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
320	12706 (5)	गीत मानसिंहजीरो	
321	13509 (3)	,, ,,	
322	13670 (4) 1	,, ,,	
323	13770 (2)	,, विजयसिंहजीरो	
324	13511 (1)	,, ,,	
325	13511 (15)	, विजयसिंहजीरो	
326	13511 (12)	,, विषहर	न्यालचंद नावरिया
327	13549 (4)	गीत-संग्रह— (1) मरुधर छंद, (2) देईदासरी पाढगति रो छन्द (3) गीत भाटी रुघनाथसिंहरो-दिल्लीरी राडरो (4) गीत भैरवी सपखरो-भाटी तेजसी रामावतरो (5) गीत विधानीक दुरगदासरो (6) गीत अजवसिंहजीरो कह्यो- (7) गीत सावझडो अर्जुनरो (8) जेतसी कूपावतरी नीसाणी	कविखेतो
328	14412 (10)	गीत आदि संग्रह— (1) पातशाहरी नीसाणी (2) जयसिंहजीरो कवित्त (3) भाटी जोगीदासरी नीसाणी	

माप से मी. मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 5 7, 13	34–35	पूर्ण	19 वी श.	
24×17 13, 28	54 वां	,,	,,	
23 5×16 14, 32	18 वा	,,	,	
10×9 9, 12	5–6	,,	,,	पत्राङ्क 6 पर जेठमल कृत "चुगली" का कवित्त है।
17×12 10, 14	1–2	,,	,,	
17×12 9, 16	42–44	,,	,,	पत्राङ्क 44–46 पर स्फुट प्रास्ताविक छन्द हैं।
17×12 13; 25	35 वा	,,	,,	अन्त मे एक कवित्त है।
25×10 5 18, 50	11–12	,	18 वी श	र का 1749
14×11 7, 16	104–136	,,	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
	14412 (10)	(4) सवैयो पातसाह अकबररो (5) गीत सूरजसिंहजीरो (6) गीत मेहता आसकरणरो (7) ,, मेहता रायमलजीरो (8) ,, मेहता ठाकुरसिंहजीरो (9) ,, ,, राजसिंहजीरो (10) ,, ,, राव महेशदास दिल्लीपतिरी (11) ,, महाराजा रायसिंहजीरो (12) कवित्त मुहता श्री—ठाकुरसिंहजीरो गुण कथन (13) गीत–महाराजा श्री—सुजाणसिंहजीरो (14) गीत मेहता आसकरणरो (15) ,, जैमल मोहणोतरो (16) ,, चारण सूरताणरो कह्यो	 चारण खीवादाढाल चारण दयाल चारणदयाल चारण सुरताण
329	14412 (9)	गीतादि संग्रह— (1) महता ठाकुरसी रा दूहा (2) गीत महता पनैजीरो (3) गीत महता राजसीरो	
330	13511 (13)	गीतादि संग्रह— (1) दूहा हाथियांरा (2) गीत गजसिंहजीरो (3) ,, अभैसिंहजीरो (4) ,, बखतसिंहजीरो (5) ,, विजैसिंहजीरो	
331	15060 (14)	गीत सपखरो–रतनसिंह महेशदासोतरो	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×11 7, 16	104–136	पूर्ण	19 वी श	
14×11 7, 16	100–104	,,	,,	
17×12 9; 16	36–38	,,	,,	
	39 वा 39 वा 40 वा 40–41			
17 5×13 12, 16	13–14	,,	20 वी श	अंत मे दान विषयक गीत है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एवं टीकाकार
332	13511 (52)	गीत साणोर 'राजा मोहिलो आवैर नाम''	[illegible]
333	13520 (1) 3	गीत सावझड़ो-[illegible]सिंहजीरो, चूरा भाचरो	
334	15060 (5-7)	गीत छोटो साणोर 'धारा रूप नाहर धनह' गीत छोटो साणोर-रामसिंहजीरो	मैसण [illegible]
335	15060 (11-13)	गीत छोटो साणोर-मानसिंहजीरो (मरसिया)	
336	15641 (1)	गुण आठ नाथा निश श्रीराजसिंहजीरो	[illegible]
337	13769 (51)	गोरा-छन्द	
338	14656 (14)	गोरा-बादल री वार्त्ता	जटमल नाहर धर्मसी सुत
339	14470 (4)	” ”	”
340	13784 (12)	छन्द नाराच-महाराजा रामसिंहजीरो	सूरजमल मीसण
341	13511 (48)	छत्रसिंह रामसिंघोतरी दवावैत	चोये (चोथमल)
342	15654 (7)	छप्पय सतियारा (ऊमादे भटियाणीरा	

माप से. मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×12 14, 20	226 वा	पूर्ण	19 वी श	
23×17 23, 21	2 रा	,,	,,	
17 5×13 11, 15	5–9	,,	20 वी श.	
17 5×13 11; 15	10–12	,,	,,	
35.5×21 21, 18	1–49	,,	19 वी श	शुद्ध की गई प्रति
13.5×10 5 13, 20	245–246	अपूर्ण	18 वी श	13 छन्द हैं।
24×15 35, 24	68–73	पूर्ण	1814	र का 1775, लि क भीमराज लि स्था- कर्मावास, पत्राङ्क 73–77 पर उदयराज, मीरदान, खेम, कविगद, देवीदास आदि के कवित्त हैं।
20×16 18; 24	5–18	,,	1802	लि क दोलतगिरि लि स्था कालाउना
17×13 9, 14	1–9	,,	1930	28 छन्द हैं। लि क कृणराम
17×12 12, 20	211–217	,,	19 वी श	
33×21 26, 19	पृ०123–125	,,	सन् 1911	13 छप्पय हैं।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
343	14458	दूहा–सग्रह— (1) राणिगदे सोलकीरा (2) जसाह रिधमलऊतरा (3) ओढा रा (4) राव परमाररा (5) वणारऊतरा (6) जेसै चुगलऊतरा (7) गागै डू गरसीयोतरा (8) तेजसी डूंगसीयोतरा (9) काछिवा सोढारा (10) सूरै मेहाऊतरा (11) वीदै भाटी पूंगलीयैरा (12) राणा सागारा (13) राँणा प्रतापरा (14) राउल तेजसीयोतरा (15) विजैसीरा (16) गजैकुंवरऊतरा (17) सागा नगराजोतरा (18) मूलवा वोचऊतरा (19) विजै हरिराजोतरा (20) नगै भारमलोतरा (21) कापडियारा (22) वीजाणदरा (23) करन लाखाऊतरा (24) पावू धाधल आसथानोतरा (25) कान्हडदे सोनिगरा रा (26) ताजीमै गहलरा (27) राजा मानसिंधरा (28) आतमारा (29) जगतसिंह मानसिंघीतरा (30) राणा हमीररा (31) राणा मोकलरा (32) रणवटरा (33) राघोदास खीवाऊतरा	

माप से मी मे, पक्ति प्रति प्रत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30×18 25, 18	26 वा	पूर्ण	19 वी श	
	26–27			
	27 वा			
	28 वा			
	28 वा			
	29 वा			
	29 वा			
	32–33			
	33 वा			
	34 वा			
	35 वा			पत्राङ्क 36–37 अप्राप्त
	38 वा			
	38 वा			
	39 वा			
	39 वा			
	40 वा			
	40 वा			
	41 वा			पत्राङ्क 42–43 अप्राप्त
	44 वा			
	44 वा			
	45 वा			
	45 वा			
	46 वा			
	46 वा			
	47 वा			
	47 वा			पत्राङ्क 48–49 अप्राप्त
	50 वा			
	51 वा			
	51–52			पत्राङ्क 54–55 अप्राप्त
	53 वा			
	56 वा			
	59 वा			
	56–59			पत्राङ्क 61–77 पर अन्य स्फुट दोहे हैं। पत्र अस्त-व्यस्त है।

क्रमाक एव विपय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
344	14837 (6)	पावूजी रा छन्द	
345	13769 (60)	पावूजीरा छन्द	
346	15087	पृथ्वीराज रासो(महोवा खण्ड)	चदवरदाई
347	15090	पृथ्वीराजरासो (कनवजखण्ड)	चदवरदाई
348	15654 (5)	पोकरण ठाकुर देवीसिहजीरी झमाल	सवलाल लाळस
349	13784 (2)	मानसिहजीरा वसूरणा	चैनदान
350	13511 (45)	मैणा चवालीस साखारा छन्द	हरिराम
351	14079 (13)	रतनसिह महेशदासोतरी वचनिका	खिड़िया ज गा
352	14717 (3)	,, ,,	,,
353	14463 (5)	,, ,,	,,
354	15654 (4)	,, ,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
29 5×22 5 27, 18	52–54	पूर्ण	गु 1812	पत्राङ्क 56 पर नागोर की नीव लगाने का तथा बखतसिंह का गीत खिडिया केसरीसिह कृत है। पत्राङ्क 56 से 62 पर स्फुट पद, गीत, औषधादि हैं।
13 5×10.5 13, 20	267–272	,,	1704	लि क स्यामा, लि स्थान मेदपाट देश लाहा ग्राम। प्रति खण्डित
22×15 25, 18	1–44	,,	1862	लि. क गुसाई ग्यान भारथी लि स्था. दोलतपुरा-लालसोट प्रारम्भ के 4 पत्रो मे सूर्यस्तुति आदि तथा अत के 5 पत्रो में लहसुन प्रयोग, दोहा, सवैया, झमाल पद आदि है।
32×22 26, 20	1–130	,,	19 वी श	
33×21 28, 17	पृ०95–102	,,	सन् 1911	अराजणियाला के भाटियो से हुए युद्ध का वर्णन है।
17×13 9, 14	1–13	,,	20 वी श	
17×12 12, 18	204–206	,,	1850	लि क सेवगराम, लि स्थान सोजत
14×13 5 12, 22/15	85–125	,,	1795	लि क कृपाहस, लि स्था वेनातट
22×20 17, 26	1–10	अपूर्ण	गु 1838	127 छन्द
20×16 5 19, 26	45–58	,,	1763	र का 1715 लि. क. जोगीदास, लि स्था ग्राम भेड
33×21 30, 24	पृ० 65–94	पूर्ण	20 वी श	1822 की प्रति से प्रतिलिपिकृत

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
355	15654 (3)	रस-गुलजार	वदनजी मीसरण
356	15630	राजरूपक	रतनू वीरभांण
357	15631	"	"
358	13779 (11)	"	"
359	15654 (1)	राव अमरसिंह (नागोर) के झूलरणे	दुरमा आढा
प 360	13751	रूपग पार पोरसातन (पुरुपार्थ-प्रकाश)	आसिया मोडा
361	13784 (14)	वीरमायणरी नीसारिणया	ढाढी वादर
362	13511 (51)	वीसर-मूता मोकमसिंह चाणोद रा कामदाररो	दौलतराम
363	13513 (8)	वीसर-मोदी टीकमदासरो भाटी सूरजमलरो	
364	15655	शत्रुसल्य (शत्रुशल्ल) चरित्र का तर्जुमा	मू सूरजमल मीसरण
365	13779 (2)	सूरज प्रकास	कविया करणीदान
366	15651	"	"
367	15657	"	"

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सम्वत्)	विशेष ज्ञातव्य
33×21 30, 17	49–64	पूर्ण	20 वी श	
33 5×20 5 34, 21/24	1–133	"	सन् 1902	लि क रतनू जालो, लि स्था धडोईग्राम
33 5×20 5 25, 24	1–368	"	सन् 1910/1911	161 वे पत्र तक टिप्पणिया एव शब्दार्थ दिए हैं।
32 5×25 5 31, 32	1–89	"	1884	लि क. बोडा मगनदत्त लि स्था योधनगर
33×21 28, 14	पृ० 1–11	"	20 वी श	70 छन्द हैं। प्रारम्भ मे प्राचीन प्रति का सूचीपत्र है।
33×20 27, 26	1–94	"	1935	लि क किशनलाल बोहरा लि स्था. जोधपुर, र का 1916
17×13 9, 15	1–50	"	20 वी श.	
17×12 15, 24	223–225	"	19 वी श	225–226 पर कवित्त हैं।
24×16 22; 15	120–122	"	20 वी श	अंत मे कोडारियारो कवित्त है।
27 5×18 5 20; 17/20	पृ० 1–70	"	"	
32 5×25 5 31, 32	1–95	"	1884	र. का. 1787, लि क बोडा मगनदत्त लि स्था. योधनगर
33 5×20 5 26, 16	पृ० 1–322	"	सन् 1915	1832 की प्रति से प्रतिलिपिकृत
34×21 31; 24	पृ० 1–251	"	20 वी श	अतिम दो पत्र खण्डित

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
5(2) का 368	14549 (1)	अक्षर-बावनी	कविसार
369	13791 (2)	अवतार-चरित्र	नरहरिदास बारठ
370	13791 (1)	,,	,,
371	14682	,, के स्फुट सचित्र पत्र	,,
372	15004	,, (रामचरित्र)	,,
373	14470 (1)	उदयराज-बावनी	उदयराज
374	14549 (3)	,,	,,
375	14408 (2)	ऊषा-अनिरुद्ध-गुणवर्णन	
376	13511 (44)	कलजुगरी नीसाणी	अखैराम
377	13513 (10)	,, ,,	कवि सेवो
378	15055	कवितावली (कवित्त रामायण)	गो० तुलसीदास
379	15222 (3)	,,	,,
380	14252 (1)	,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×10 5 18, 48	1–4	पूर्ण	18 वी श.	
31 5×19 5 21; 18	129–619	अपूर्ण	20 वी श	र का 1733
31 5×19.5 21, 18	कुल 1–305	,,	1928	मूल पत्राङ्क 620 से हैं। दोनो गुटको मे कृति पूर्ण है।
36×24 31, 22	कुल 1–24	,,	19 वी श.	लि क पुरोहित बशीधर; चि सं 29
30 5×24 32, 25	कुल 63	,,	,,	बीच-बीच के अनेक पत्र अप्राप्त हैं।
20×16 15, 34	1–8	पूर्ण	1812	लि. क देवसागर लि स्था. धमोत्तरनगर (मालवा)
25×10.5 18, 48	7–10	,,	1761	र का 1676
15×10 16, 17	12–31	अपूर्ण	गु 1780	पत्राङ्क 31–58 पर प्राकृत मे स्तुति-स्तोत्र-सग्रह है।
17×12 11, 18	200–204	पूर्ण	19 वी श.	र का 1875
24×16 25, 18	126–127	अपूर्ण	20 वी श.	र का 1805, पत्राङ्क 130 पर जानीरासो 'वीसर' का प्रारम्भ है।
31.5×14 5 12, 34	1–50	पूर्ण	19 वी श.	पत्राङ्क 13 वा दो वार
29 5×14 5 13; 38	3–41	अपूर्ण	20 वी श.	पत्राङ्क 1, 2, 6, 29-31. 33 वा अप्राप्त
32×13 5 10; 40	1–16, 1–20	पूर्ण	1913	लि. क ब्राह्मण मूलप्रताप लि स्था. भागनगर, चूडी वाजार

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
381	14253	कवितावली (कवित्त रामायण)	गो० तुलसीदास
382	14254	"	"
383	14774	"	"
384	14412 (11)	कृष्णरुपमणि री वेलि	म० पृथ्वीराज राठौड़
385	14461 (1)	" सटीक	"
386	13778 (3)	" "	"
387	14756 (17)	" "	"
388	14463 (3)	" "	"
389	15070 (2)	" रो विर्जै-विवाह	सांयाजी झूला
390	13511 (21)	केशवबावनी	केशवदास
391	14306 (1)	"	"
392	13752 (2)	ख्याल	महाराजा बहादुरसिंह
393	14470 (2)	गजमोख (क्ष) री नीसाणी	माधवदास दधवाड़िया

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
29 5 × 14.5 12; 34	1–42	अपूर्ण	19 वी श.	231 छन्द तक
30 × 14 14, 40	1–12	,,	,,	प्रारम्भ मे रेखते तथा अत मे एकश्लोकी रामायण है।
30 5 × 15 5 16, 52	1–34	पूर्ण	1913	
14 × 11 8, 16	139–216	पूर्ण	1707	र. का 1644
22 5 × 13 11, 19	1–39	पूर्ण	1749	लि. क. कनकसोमगणि लि स्था अणहिलपुर
32 × 25 27, 24	1–28	पूर्ण	1918	
24 × 15 35, 24	84–95	अपूर्ण	गु 1814	74 वें द्वाले तक कीटविद्ध
20 × 16 5 19, 26	5–42	पूर्ण	1763	लि क मुनि जोगीदास
15 × 12 7, 14	1–2	अपूर्ण	19 वी श	पाच छन्द मात्र, र का 1638
17 × 12 13, 22	61–70	,,	19 वी श	
26 × 11 5 15, 32	1–6	,,	19 वी श	अत मे धर्मसी कृत सवैया त्रीवीसा है।
27 × 19 26, 21	1–6	,,	19 वी श	81 पद्य हैं।
20 × 16 15, 20	9–12	पूर्ण	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
394	14463 (8)	गजमोख (क्ष) री नीसाणी	माधवदास दधवाडिया
395	13765 (8)	,,	,,
396	12717 (9)	घोडा-कुतूहल	
397	14549 (2)	छीहलबावनी	छीहल सुत नाथा
398	13737 (7)	ढोला-मारूरा दूह सचित्र	
399	14934	दुष्टगजन पचाननी	सुजान (?)
400	14359 (1)	नागदमन	सायाजी झूला
401	14463 (7)	,,	,,
402	14470 (6)	,,	,,
403	15070 (3)	,,	,,
404	15101 (2)	,,	,,
405	12717 (5)	पंच सहेलीरा दूहा (री वात)	कवि छीहल

माप से, मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
20×16 5 19, 26	73–74	पूर्ण	1763	लि क जोगीदास, लि स्था भेडग्राम। पत्राङ्क 74–75 पर दशावतार-वर्णन है
22×16 17, 17	57–59	"	1771	लि क श्वेताम्वर मायाचद लि स्था जोधपुर
21 5×14 15, 20	73–74	"	19 वी श	22 दोहो मे घोडो की जाति (प्रकार) है।
25×10 5 18, 48	4–7	"	18 वी श	र का 1584
21.5×14 5 12, 24	1–26	अपूर्ण	"	चित्र पूरे पत्र पर बडे आकार के हैं। चित्र स 12, 161 दोहे हैं। पत्राङ्क 23 वा अप्राप्त, जीर्ण व खण्डित।
21×15 16, 20	1–14	"	1921	लि क नयनसुख, पत्राङ्क 2 रा अप्राप्त 112 छन्द हैं।
14.5×11 10, 18	36–54	पूर्ण	19 वी श	
20×16 5 19, 26	66–72	"	1763	अत मे सायाजी कृत एक गीत है।
20×16 18, 22	28–36	"	गु 1803	अत मे जसवतसिह कृत साखी है।
15×12 8, 14	2–41	"	1803	लि. क. सीताराम पडा, पत्र एक तरफ लिखे गए हैं।
23×14 16, 10	1–14	"	1813	पत्राङ्क 14–16 पर चार वेद, अठारह पुराण, चार युग आदि ज्ञातव्य हैं।
21.5×14 13, 28	62–66	,	1795	र का 1575, लि. क उत्तमराज लि स्था खेदरपुर (खेरवा) अगले पत्र पर 24 तीर्थङ्कर-नाम व प्रहेलिकाएं हैं।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
406	14412 (6)	पचसहेलीरा दूहा (री वात)	कवि छीहल
407	14463 (15)	,,	,,
408	14712 (3)	विहारी सतसई	विहारीदास
409	14904	,,	,,
410	14906	,,	,,
411	15071	,,	,,
412	13077	विहारी सतसई सटीक	विहारीदास
413	13510	,, ,,	,, टी राधाकृष्ण
414	13737 (1)	,,	,,
415	13784 (11)	,,	,,
416	13789 (1)	, ,	,, टी. राधाकृष्ण
417	13830 (5)	,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×11 7; 16	81–89	पूर्ण	18 वी श.	
20×16 5 25, 24	144–146	,,	,,	
21 5×19 15, 17	78–133	,,	1890	दोहो के प्रारम्भ मे शीर्षक दिए है।
14 5×12 5 16,17	9–55	अपूर्ण	1812	,, ,, पत्राङ्क 1–8, 31–44 अप्राप्त
14 5×12 5 15, 18	1–55	,,	,,	पत्राङ्क 1–8 अप्राप्त
17 5×13 9, 22	4–72	,,	1840	पत्राङ्क 1–3 अप्राप्त, 709 दोहे हैं। लि क उपाध्याय बिहारीलाल
25.5×11 5 17, 36	1–43	,,	19 वी श	224 दोहो तक
20×16 18, 26	1–143	,,	,,	टीका कवित्त बद्ध है। कुल 976 दोहे हैं। (?)
21 5×14 5 12; 24	17–38	,,	1799	पत्राङ्क 39–49 पर 'आदित्यहृदयस्त्रोत' है जिसके प्रारम्भ मे एक चित्र है।
17×13 9, 14	1–12	,,	20 वी श	65 दोहे हैं।
22×18 15, 21	1–153	पूर्ण	1814	टी र. का. 1780, र स्था आगरा लि क हेमराज, लि स्था सवाईजैपुर 745 दोहे हैं।
13×9 5 13, 14	23–27	अपूर्ण	18 वी श	30 दोहे हैं।

क्रमाक एव विपय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
418	14287	विहारी सतसई सटीक	विहारीदास
419	14767 (1)	महादेवजीरो व्यावलो	
420	15039	रामकथा (गद्य)	
421	13339 (8)	,,	युगजीवन (जगजीवन)
422	13670 (1)	रामचन्द्रिका	केशवदास
423	13788	,,	,,
424	13491	रामचरितमानस	गो० तुलसीदास
425	13891	,, (प्रथम सोपान)	,,
426	13666	,,	,,
427	14061	,,	,,
428	14100	,	,
429	14292	,,	,,

माप से मी. मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
35×16 5 17, 52	1–8	अपूर्ण	19 वी श	350 दोहे हैं।
27×17 15, 28	1–5	,,	,,	किनारे त्रुटित
27 5×18 19; 14	कुल 36	,,	,,	
20×14 11, 28	1–4	,,	,,	लि क लक्ष्मीराम बहेचर लि स्था धोलका
23 5×16 17, 30	12–35	,,	,,	प्रारम्भ के 11 पत्र अप्राप्त
28×19 22, 20	3–153	,,	,,	प्रारम्भ के 27 छन्द अप्राप्त, कीट विद्ध पत्राङ्क 144–153 तक पाठ क्षतिग्रस्त
21×15 17, 13	कुल 108	पूर्ण	20 वी श	
31 5×15 5 13, 48	1–95	,	1857	लि क रामनाथ, लि स्था फतेपुर जलसिक्त-त्रुटित
30 5×15 5, 36	1–7	अपूर्ण	20 वी श	सातो काण्डो मे सस्कृत के श्लोको के टिप्पण मात्र हैं।
30×14 12, 30	कुल 357	पूर्ण	1865	लि क. वैष्णु स्याम, लि. स्था वाघडी
22×10 5 9, 28	कुल 671	अपूर्ण	1811–1868	अनेक प्रतियो से ग्रन्थ पूरा करने का प्रयत्न किया गया है। बालकाण्ड मे पत्राङ्क 91, 92, 94, 96, 98 व 207 वा पत्र अप्राप्त।
32×16 13, 38	कुल 120	,,	19 वी श	लि क सदाराम, लि स्थान डीडपुर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
430	14322	रामचरितमानस	गो० तुलसीदास
431	14419	,,	,,
432	14896 (3)	,,	,,
433	14755	,,	,,
434	15100	,,	,,
435	15219	,,	,,
436	14293	,, (अयोध्याकाण्ड)	,,
437	14260	,, (बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड)	,,
438	14321	,, (उत्तरकाण्ड)	,,
439	14248	,, (बालकाण्ड)	,,
440	13672	,, (लवकुशकाण्ड)	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23 5×11 11, 34	कुल 275	पूर्ण	1856	
29×21 21, 22	2–324	अपूर्ण	1865	आद्यन्त पत्र अप्राप्त, जलसिक्त लि क ब्राह्मण चतुरभुज खडेलवाल
16×11 11, 20	1–125	"	1845	पत्राङ्क 39-44 अप्राप्त, 126–132 पर स्फुट पद हैं ।
24×13 5 15; 36	कुल 304	पूर्ण	1862–63	बालकाण्ड के पत्राङ्क 43–45 दो बार
28×13 5 11, 38	कुल 426	"	1899–1900	लि॰ क मनसाराम ब्राह्मण नौरग लि स्था बलारा (मालवा-रामपुरा)
29×14 13, 42	कुल 272	अपूर्ण	1841–1847	लि क लिछमणदास; लि स्था सवाई जयपुर, जीर्ण प्रति, अरण्यकाण्ड मे पत्राङ्क 14वा अप्राप्त, लकाकाण्ड मे पत्राङ्क 2रा अप्राप्त, अयो॰काण्डमे पत्राङ्क 3रा अप्राप्त, सुन्दरकाण्ड मे पत्राङ्क 2रा अप्राप्त, सुन्दरकाण्डकी दो प्रतिया हैं ।
30×16 14, 48	1–65	पूर्ण	1854	लि क नदराम
28 5×16 5 12, 38	1–132 1–101	"	1916 1903	लि क फतेराम लि. स्था सारोल्यानग्रे (अचरोल)
23×12 9, 30	6–77	अपूर्ण	1869	पत्राङ्क 7 वा अप्राप्त, लि स्था अयोध्य
34×16 12, 40	1–93	पूर्ण	1903	लि क गोरधन, लि स्था. श्रीपुरनगर
24×16 5 22, 16	1–33	"	1928	लि क डालचद, लि स्था परगना मेग्ठ

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
441	14286	रामचरितमानस (लंकाकाण्ड)	गो० तुलसीदास
442	13972 (2)	,, (अरण्यकाण्ड, लंकाकाण्ड)	,,
443	13770 (21)	रामदास वैरावतरी आखडियाँ (गद्य)	
444	14600 (4)	राम-बत्तीसी	कवि जगन पुष्करणां
445	14406 (1)	रामगुण-रासो	माधवदास दधवाडिया
446	14463 (17)	,,	,,
447	15101 (1)	,,	,,
448	14903	,,	,,
449	12810	रामविजय (वाल्मीकि नाटकाधार)	
450	13766	रामायण-भाषा (गद्य)	
451	14463 (24)	रुपमणीजीरी जति (नख-शिख)	मू० पृथ्वीराज, टी०सेवग मानोजी
452	15654 (8)	रूपादेजीरी वेल	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
30×15 10; 34	1–85	पूर्ण	1900	लि क फतेराम, लि स्था सरोल्या नगर (अचरोल)
21×16 19, 18	1–34 1–87	„	1887	चित्र स 4 (चित्रित पत्राङ्क 22,39, 43, 69) लि क तिवाडी खीमजी छगनजी लि स्था कच्छ देशे-भुजनगर
10×9 10; 12	68–74	„	1862	84 बाते नही करने का सकल्प है।
25×12 13; 38	36–37	अपूर्ण	17 वी श.	प्रारम्भ के 20 छन्द अप्राप्त
22×15 21, 15	1–59	पूर्ण	1733	जीर्ण–कीटविद्ध
20×16 5 20, 21	150–201	पूर्ण	1765	र स्था गाँव बलू दा वाल्मीकि रामायण पर आश्रित।
23×14 21, 18	1–73	पूर्ण	1812	लि क. गगाराम
15 5×11.5 11, 17	1–105	अपूर्ण	19 वी श	प्रारम्भके3 पत्रो पर बारखडी तथा पत्राङ्क 15 तक वाजीद, कबीर आदि के पद हैं।
26×14 10, 30	1–13	अपूर्ण	19 वी श	मराठी भाषा मे है। 38 वा अध्याय मात्र।
21.5×14 18, 16	12–217	„	19 वी श	प्रथम 11 पत्र एव अतिमाश अप्राप्त
20×16 5 22, 22	235–236	पूर्ण	18 वी श	प्रारम्भ मे जगनाथ के कवित्त हैं। पत्राङ्क 236 पर ही गीतारी जातिरो गीत है।
33×21 33, 30	पृ० 141–144	„	सन् 1911	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
453	14357 (6)	वागवत्तीसी	
454	13782	विनयपत्रिका	गो० तुलसीदास
455	14749	,,	,,
456	14379 (2)	वृन्द (विनोद) सतसई	वृन्दकवि
457	14712	,,	,,
458	15428	,,	,,
459	14471	,,	,,
460	12709 (18)	,,	,,
461	14045 (1)	,,	,,
462	14361	,,	,,
463	15063	,,	,,
464	14279 (1)	वैराग्यशतक-भाषा	कवि देव (देवदत्त)
465	15059	शतकत्रय-भाषा (नीति, शृङ्गार, वैराग्य मंजरी)	सवाई प्रतापसिंह

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16×12 5 14, 16	26-28	पूर्ण	1911	प्रारम्भ मे 78 फूलो की विगत है।
24×16 5 15, 15	1-183	"	1902	प्रथम पाच पत्रो पर विस्तृत सूचीपत्र हैं।
37 5×18 18; 52	1-39	"	19 वी श	लि क तरणदास निरजनी, जीर्ण
31 5×13 5 20, 22	1-22	अपूर्ण	19 वी श.	503 दोहे हैं।
21 5×19 15, 17	27-77	पूर्ण	1890	र. का 1761-ढाका; लि. क नथमल लि स्था. जोधपुर
22×16 5 18, 22	1-6	अपूर्ण	19 वी श	231 दोहे हैं।
20×14 5 17, 16	1-44	पूर्ण	"	र का. 1761-ढाका, लि क. हरिवश 715 दोहे है।
23×13 15, 34	29-52	"	"	707 दोहे हैं।
14×11 13, 16	1-52	"	1835	त्रुटित
15×11 8, 18	4-90	अपूर्ण	19 वी श	प्रारम्भ के 13 दोहे अप्राप्त
22×17 17, 18	पृ० 1-74	पूर्ण	1959	
15 5×10 8, 15	1-42	"	1857	लि क देवा माली, लि. स्था माचडी
23×16 17, 16	1-14	"	1888	र. का. 1852-जयपुर लि क गोरीलाल

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
466	14579	शृङ्गारशतक	
467	14434 (1)	शिवरीमगल	गो० तुलसीदास
468	14447	शिव-विवाहलो सचित्र	
469	13769 (59)	हस-बगुलारो झगडो	छीहल
5 (3) स्फुट काव्य	13511 (8)	कवित्त-करतार बावनीरा	
471	15096 (2)	कवित्त-कलजुगरा	कवि गद
472	13778 (8)	कवित्त-कृष्णचन्द्ररा आदि	
473	13513 (6)	कवित्त-गुसाईजीरा	
474	13520 (3)	कवित्त-घनानन्द के	घनानद
475	13511 (54)	कवित्त-घोडा आदिरे नामारा	कविदास; मीग्दान
476	13511 (20)	कवित्त-चवदैविद्या आदि के	
477	13784 (6)	कवित्त-जोगमायारा	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×10 5 13, 48	1–5	पूर्ण	18 वी श	
11×75 6, 12	1–7	,,	गु 1880	
24×16 5 18, 15	1–21	अपूर्ण	19 वी श	चित्र स 29, पत्राङ्क 3, 12 अप्राप्त पडदायतजी चपतरायजी पठनार्थ
13 5×10 5 13, 24	265–266	पूर्ण	18 वी श.	
17×12 13, 25	28–32	अपूर्ण	19 वी श	
20.5×15 5 16, 22	13–21	पूर्ण	1836	स्फुट सवैया दोहे भी हैं।
23×25 27, 26	21–29	,,	20 वी श.	बिहारी के दोहे भी हैं।
24×16 22, 15	114–116	,,	,,	
23×17 15/20,15/20	1–12	,,	19 वी श	91 छन्द हैं।
17×12 16, 24	228 वा	,,	,,	घोडा, वरछी, तलवार हैं। ढाल, कवाण आदि शोर्षक से हैं। पत्राङ्क 229 पर देवताओ के नाम उनके वाहन शत्रु आदि के नाम हैं।
17×12 9, 16	58–60	अपूर्ण	19 वी श.	षट्वश, राशि, जीव, ज्ञान, आदि के हैं।
17×13 10, 18	6–7	पूर्ण	20 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
478	13511 (14)	कवित्त-दानी को	
479	15033 (4)	कवित्त-देवीदास आदि के	देवीदास, केशव, दीनदरवेश
480	13830 (3)	कवित्त-नवरत्नरा	
481	13778 (7)	कवित्त-पेटरा	दुरसाआढा
482	13784 (4)	कवित्त-वसंत व होली के	
483	13511 (26)	कवित्त-ब्रह्माजीरा, सात दीपारा	
484	13797	कवित्त-भूषण के	भूषण
485	14475 (2)	कवित्त-राजनीति आदि के	देवीदास, केसोदास, सूरत, सुन्दरदास, बनारसी
486	13511 (33)	कवित्त-वल्लभकुलरा	
487	13513 (7)	कवित्त-श्रीमालप्रदेशरी उतपत्तीरा	
488	13511 (34)	कवित्त-सभासाररा	
489	15051 (2)	कवित्त-हाथियारा, घोड़ारा वखाणरा आदि	गंगादान सांदु
490	13511 (36)	कवित्त-कुण्डलियादि	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×12 9, 16	42 वां	पूर्ण	19 वी श.	
17×13 5 15, 18	18–23	,,	20 वी श	पत्राङ्क 18 पर महाराजा अभयसिंह का गीत व 22पर म०भीमसिंहजीका गीत है।
13×9.5 10, 14	15–18	,,	18 वी श	
32×25 27, 26	18–20	,,	20 वी श	म जसवंतसिंह परक कवित्त भी है।
17×13 11, 16	1–4	,,	,,	म तखतसिंह व स्वरूपसिंह से संबंधित
17×12 11, 19	88–90	,,	19 वी श	
24×11 5 22, 65	8–18	,,	18 वी श	पत्राङ्क 8–18 तक की फोटो कॉपी 11 प्लेटो मे हैं।
19×15 5 13, 20	1–18	अपूर्ण	20 वी श	सतो की वाणी के भी कवित्त है।
17×12 9, 16	105–108	पूर्ण	19 वी श	
24×16 22, 15	117–119	,,	20 वी श.	
17×12 8, 16	109–115	,,	19 वी श	
29×21 20, 22	3–5	,,	20 वी श	
17×12 10, 16	128–132	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 133 पर रागो के नामो का कवित्त है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
491	13511 (47)	कवित्त-कुण्डलियादि	केहरी, गुमान
492	15051 (7)	,, ,,	
493	13511 (25)	, ,,	केहरि
494	14914 (16)	कवित्त फुटकर	कवि सार
495	14914 (63)	,, (रावाकृष्णपरक)	जसराज (जिनहर्ष)
496	14379 (1)	,,	वहादर, कालिदास आदि
497	14424 (1)	,,	
498	14424 (4)	,,	
499	14437 (3) 3	,, साखी	विजयराम
500	13770 (24)	,,	केहरी
501	13784 (5)	,	पद्माकर
502	15051 (4)	,,	नाथ, केशव, कासीराम
503	13509 (6)	,,	मानसिंह, आदि

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×12 10, 16	209–211	पूर्ण	19 वी श	
29×21 22; 20	10–11	,,	20 वी श.	पत्राङ्क 11 वे पर गीत साणोर है।
17×12 11, 19	85–88	,,	19 वी श	
15 5×11 14, 30	122 वा	,,	18 वी श	पत्राङ्क 98–121 व 123 अप्राप्त
15 5×11 12; 22	227 वा	,	,,	
21 5×13 5 12, 10	1–3	,,	19 वी श	
13×10.5 7, 12	1–4	,,	20 वी श	
13×10.5 7; 12	68–72	,,	,,	
25×13 5 20, 18	70 वा	,,	1814	पत्राङ्क 71 पर टीपणा री पाटी' तिथि-फल विचार है।
10×9 10, 14	1–5	,,	19 वी श	
17×13 10, 18	5 वा	,,	20 वी श.	
29×21 26, 24	7–8	,,	20 वी श	
24×17 13; 28	73 वा	,,	19 वी श	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
504	13770	कवित्त फुटकर	हितराम
505	13511 (49)		कासीराम
506	15294 (3)	,,	चन्द्रभाण, गिरवरकविराय
507	14519 (8)	,,	वलभद्र आदि
508	14643 (4)	,,	रसखान, कविगद, कविलाल, वीरवल, मुन्दर
509	13515 (4)	,, सवैया, कुण्डलियादि	सूरज, वृन्द, मान, मंछ, देव, गंग जयकृष्ण, गिरवर जान, घनानद
510	13519 (1)	,,	वल्लभ, चिंतामनि, मछ, तोप, वृन्द. सूरज, किल्याणचद्
511	13670 (2)	,,	शिवनाथ
512	13670 (5)	,,	चद, कासीराम
513	13770 (4)	,,	
514	13511 (3)	,,	
515	13513 (3)	,	कवि छाजू, खेतसी

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×9 9, 12	22 वा	पूर्ण	19 वी श	
17×12 13,20	219–220	,,	,,	
9 5×9 7, 8	6–11	,	,,	पत्राङ्क 12–15 पर स्फुट शकुनविचार है।
22×17 19, 18	6–7	,,	,	
24 5×15 5 15; 34	17–20		1919	पत्राङ्क 22 पर पल्लीपतन विचार व 23 पर स्फुट गीत व दोहे है।
23×17 17, 16	2–20 2–3,3–4 5–6 8, 16, 18	,,	1860	रीतिवद्ध हैं।
22×17 16, 18	30–34	,,	19 वी श	प्रारम्भ के 29 पत्र अप्राप्त
23 5×16 12, 30	36 वा	,,	,,	37 वें पत्र पर दोहे व गीत हैं।
23 5×16 20, 38	19–21	पूर्ण	,,	
10×9 9, 12	25–27	पूर्ण	19 वी श	
17×12 12, 14	3–6	,,	,,	
24×16 23, 15	48–50	,,	20 वी श	खेतसी कृत वीसर ढूंढियारो' है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
516	12706 (2)	कवित्त फुटकर	पद्माकर
517	13770 (8)	,,	कवि देवी (?)
518	13520 (2)	,, रीतिवद्ध	
519	15033	,, दोहादि	
520	13511 (31)	,, ,,	उदैराज, कविरूप कविगद
521	14470 (3)	,,	कविगद
522	12706 (19)	,,	
523	14339 (15)	कवित्त दोहा रेखतादि	नवल, आनन्दघन, चेतन
524	14418 (2)	कवित्त सवैयादि	
525	13515 (2)	,,	भेरू कवि, नाथ, ठाकुर, सुन्दर, देव, गग, वृन्द, उदयराज
526	13511 (38)	,,	गिरधर, गग, उदैराज
527	13770 (19)	,,	कविगद, जगदीश, सूरत, कल्याण दलपत, वृन्द

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 5 6, 3	28 वा	पूर्ण	19 वी श	म प्रतापसिह विषयक, पत्राङ्क 1–23 पर अकपाटी है।
10×9 9, 12	42–43	,,	,,	पत्राङ्क 24–27 अप्राप्त
23×17 19, 18	3–4	,,	,,	प्रारम्भ के 44 कवित्त अप्राप्त
17×13 5 12, 16	4–7	,,	20 वी श.	पत्राङ्क 7–8 पर नगर बसाने की विगत है ।
17×12 9, 15	98–99 103–104	पूर्ण	19 वी श	
20×16 15, 20	1–5	,,	,,	लि क भाट खेमा लि स्था नागोर
15.5×11 5 9, 18	84–109	पूर्ण	,,	
12×13 5 15, 20	63–65	,,	1848	
12 5×11 10, 15	27–33	,,	19 वी श	पत्राङ्क 22 पर 'मुहूर्त विचार' एव पत्राङ्क 23–27 पर पर्वत, महादेव, रत्न, चक्रवर्तियो केनाम तथा औषधी सग्रह है। पत्राङ्क 34–35 अप्राप्त
23×17 16, 12	11–13 13–16	,,	1860	
17×12 10, 16	171–181	,,	19 वी श	
10×9 10, 14	40–59	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
528	13770 (22)	कवित्त सवैयादि	
529	15051 (1)	,,	बालकृष्ण, रसखान, बुधराय
530	13511 (28)	,,	गग आदि
531	12706 (17)	,,	वीरदराज, कविराय
532	13513 (1)	,,	गग, कविमान, कवि सुन्दर, कवि ठाकुर, आलम, वृन्द, वृजनिधि, कविगद, रसखान, रज्जब, गिरधर कविराय, देवीदास
533	14913 (6)	,,	
534	15052 (3)	,,	कविराम भूषण, ठाकुर, पृथ्वीराज, नाथ, गग
535	14656 (15)	,,	उदयराज, मीरदान, खेम, कविगद देवीदास, हमीर ब्रह्मदास, गंग, कासीराम, धर्मसी, केसवदास
536	13494 (22)	कागद की पैंठे-गुरा ने भेजने की	
537	14899 (2)	कागदरी नकल	
538	12730 (2)	कागद स्याही को झगडो	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×9 10, 14	75–88	पूर्ण	19 वी श	
29×21 22, 28	1–2	,,	20 वी श	
17×12 11, 19	92–93	,,	19 वी श	
15 5×11 5 9, 18	74–76	,,	,,	
24×16 23, 17	39, 39, 33 33, 35, 37 38, 39, 46 40, 42, 42 45, 45–46	,,	,,	
16×11 8, 18/22	33 43	,,	गु 1865	
25×20 17, 14	21–38	,,	20 वी श	पत्राङ्क 21 पर म तखतसिह के कवित्त हैं ।
24×15 35, 24	73–81	,	गु 1814	पत्राङ्क 78–81 पर राधाकृष्ण शृगार परक 67 सवैये हैं ।
20×16 13, 20	120–122	,,	19 वी श	
14×11 9, 18	163–168	,,	गु 1900	पति और पत्नी द्वारा भेजे जाने वाले प्रेम पत्रो के सबोधनादि एव पत्राङ्क 169–175 पर औषधी सग्रह व शाबर मत्रादि है ।
17×12 5 19, 18	76 वा	,,	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
539	13770 (6)	कुण्डलिया	गिरधर कविराय
540	13511 (17)	„	„
541	13511 (42)	„ जसराज हरधवलोतरा	
542	14371 (1)	„	
543	15060 (1)	गीत—छोटो साणोर	
544	13511 (27)	गीत—सपखरो-अवतारांरो	
545	14463 (2)	गीत—सावझडो-इन्द्ररो	भो० मानाजी
546	12706 (18)	गीत—दनारो	
547	13770 (1)	गीत—मनरो	
548	15060 (15)	गीत—वर्षाऋतुरो	
549	13511 (6)	गीत संग्रह— (1) इन्द्ररो (2) जलन्धरनाथजीरो (3) मल्लीनाथजीरो (4) महादेवजीरो	चारण रामचन्द्र

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×9 9; 12	36–37	पूर्ण	19 वी श	
17×12 9, 16	50–51	"	"	
17×12 14, 22	195–198	"	1849	लि क सेवग विरधीचद
22 5×15 5 14, 14	1–8	"	19 वी श	शिक्षाप्रद 34 कुण्डलियादि हैं।
17 5×13 10, 15	1–2	"	20 वी श	
17×12 11, 19	91 वा	"	19 वी श	
20×16 5 19, 26	4 था	"	18 वी श	
15 5×11 5 9, 10	78–83	"	19 वी श	
10×9 9, 12	4–5	"	"	प्रथम 3 पत्र अप्राप्त
17 5×13 9, 14	14–15	"	20 वी श	
17×12 13, 25	23–24 24–25 25 वा 25–26	"	19 वी श	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
550	13513 (5)	गीत सग्रह— (1) पोहकरणारो (2) प्रोयतारो (3) गोरधनजीरो (4) कवित्त सेवग थानमलजीरो	
551	15293 (28)	गीत सग्रह— (1) साल्हकु वर गोगाजीरो	
552	14412 (1)	गीत-सग्रह— (1) श्रीसाँवलजीरो (2) जिनदासजीरोग्रादि	
553	14079	गीत सपखरो	
554	15060 (4)	गीत वडो-साणोर	
555	15051 (5)	गीत साणोर	
556	13513 (4)	,,	
557	15060 (3)	,,	
558	14357 (9)	गूढार्थ सग्रह	
559	14370 (2)	,,	
560	13511 (16)	छन्द नाहरखानजीरो-	नाहरखान

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×16 22, 15	109–114	पूर्ण	20 वी श	गुटके के मध्य से पत्राङ्क सख्या 109 लगी है ।
25 5×15 5 32, 44	54 वा	,,	20 वी श.	
14×11 9, 18	47–52	,,	19 वी श	पत्राङ्क 51 वा अप्राप्त
14×13 5 12, 15	31–32	,,	19 वी श	
17 5×13 10, 15	5 वा	,,	20 वी श.	
29×21 26, 24	8 वॉ	,,	,,	
24×16 21, 13	52 वा	,,	20 वी श	
17 5×13 10, 15	4–5	,,	20 वी श	
16×12 5 11, 24	37–39	,,	गु 1911	
21×15 5, 16	73–83	,,	19 वी श	50 पद्य है । टिप्पण मे शब्दार्थ है ।
17×12 9, 16	46–50	,,	19 वी श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
561	13770 (4)	छप्पय	कविदास, देवो
562	12706 (4)	जमालरा दूहा	जमाल
563	13778 (1)	जसराज-झालारा कुण्डलिया	
564	13770 (18) 4	दूहा—अधूरा पूरारा	
565	12706 (13)	दूहा—आठपोहररा	
566	13770 (18) 2	दूहा—इसकरा	
567	12697 (4)	दोहा—कागदरा आदि	कवि मथुरेश
568	13770 (18) 6	,, ,,	
569	13511 (32)	,, कामकलारा	वृन्द
570	14357 (8)	,, किसनियाँ आदिरा	किशन, हरिदास
571	12709 (16)	,, गुरु-चेलारा	
572	13513 (9)	,, ,,	
573	14079 (5)	,, छांटमा	विहारिदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×9 9, 12	28 वाँ 25 वा	पूर्ण	19 वी श	ৎ
15 5×11 5 7, 13	30–34	,,	,,	
32×25 27, 24	1–3, 20 वा	,,	20 वी श.	44 पद्य हैं।
10×9 10, 14	34–37	पूर्ण	19 वी श	
15 5×11 5 9, 18	67–68	पूर्ण	,,	
10×9 10, 14	27–30	पूर्ण	,,	10 दोहे हैं।
16 5×17 12, 16	234–237	,,	गु 1823	अत मे षट्ऋतु वर्णन के दो कवित्त हैं।
10×9 10, 14	38–39	,,	19 वी श.	
17×12 9, 15	100–101	,,	,,	
16×12 5 16, 20	34–36	,,	गु 1911	
23×13 16, 34	136–137	पूर्ण	19 वी श	30 प्रश्नोत्तर हैं।
24×16 22, 15	123–126	पूर्ण	20 वी श	पत्राङ्क 128 पर गूढार्थ हैं।
14×13 5 10, 18	10–12	,,	1790	'सतसई' के हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
574	12729 (7)	दोहा-दारूरा दीपका	
575	14357 (7)	दोहा-पखवाडा आदिरा	गोविंददास, भद्रसेन, थान कविगद, मालदास, तुलसी, कमाल, सीतलपुरी दीनदर्वेश
576	13770 (18) 3	दोहा-पखवाडारा	
577	12717 (13)	दोहा-पनरे तिथिरा; बारे-मासरा	
578	14079 (4)	दोहा-प्रास्ताविक	
579	14079 (15)	,, ,,	
580	12697 (3)	दोहा-फूलपृच्छारा	सुन्दरदास
581	14418 (1)	दोहा-फूलबत्तीसीरा	
582	12706 (14)	दोहा-बरसातरा	
583	12706 (16)	दोहा-बारेमासरा	
584	12706 (19)	,, ,,	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5×12 5 16; 24	89–91	पूर्ण	20 वी श	
16×12 5 16, 20	29–35	"	गु 1911	रेखता, सवैया, सुभाषितादि हैं।
10×9 10, 14	31–33	"	19 वी श.	
21 5×14 13; 27	74–76	पूर्ण	गु 18 वी श	अत मे शत्रु जय स्तवन है।
14×13.5 13, 18	8–9	पूर्ण	18 वी श	
14×13 5 14, 16	140–141	पूर्ण	1790	लि क देवचन्द, लि स्था इन्द्राणा पत्राङ्क 143–144 पर छत्तीस कारखानो के नाम है।
16 5×17 15, 17	231–233	पूर्ण	1823	31 दोहे हैं।
12 5×11 10, 15	5–9	पूर्ण	19 वी श	प्रारम्भ के 4 पत्रो पर शकुनावली, पत्राङ्क 10–17 पर औषधीसग्रह एव पत्राङ्क 18-21 पर तात्रिक जत्रिया हैं।
15 5×11 5 9; 18	68–70	पूर्ण	19 वी श	
15 5×11 5 9, 18	73–74	"	19 वी श	
15 5×11 5 9, 18	62–63	पूर्ण	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
585	13770 (18) 5	दोहा–बीडारा	
586	13770 (16)	दोहा–मित्रनै लिखै जिका	
587	14358 (7)	दोहा–संग्रह	बुधराव
588	15061 (3)	,,	महन्त मुकन्ददास
589	13770 (14)	,, (प्रकीर्ण)	
590	14678	दोहा–संजोग सिणगाररा	
591	15052 (2)	,, ,, तथा कवित्त–सवैया–संग्रह	कविराम, भूषण, पृथ्वीराज, जमाल आदि
592	12717 (14)	दोहा–सज्जनरा (पुरुष-स्त्री परिहास)	
593	12706 (12)	दोहा–सात-वाररा	
594	14079 (3)	,, ,,	
595	13770 (3)	दोहा-सात-सखियारा	
596	12706 (15)	,, ,,	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
10×9 10, 14	37–38	पूर्ण	19 वी श	
10×9 10, 14	6–9	,,	1862	
15.5×11 5 11, 18	132–134	,,	19 वी श	
23 5×15 5 20, 18	26 27	,,	19 वी श	पत्राङ्क 28–29 पर कवित्तादि हैं।
10×9 9, 12	154–173		1862	132 दोहे हैं।
17×13 9, 16	कुल 27	,,	19 वी श	
25×20 17, 14	7–9, 21–38	,, ,,	20 वी श	51 दोहे हैं। पत्राङ्क 12–18 पर उर्दू-लिपि मे रमल आदि तथा 10–11, 19–20 पर कवित्तादि हैं
21 5×14 13, 27	77–79	,	18 वी श	23 दोहे हैं। वाद मे 6 शृङ्गारिक दोहे और हैं।
15 5×11.5 9, 18	66 वां	,,	19 वी श.	
14×13 5 13, 18	7 वा	,,	गु 1790	
10×9 9, 12	18–20	,,	19 वी श	
15 5×11 5 9, 18	70–73	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
597	14416 (6)	पनरेतिथिरा सवैया	नुरसी
598	12706	,,	जसराज (जिनहर्ष)
599	13519 (9)	,,	,,
600	12717 (8)	,,	,
601	14914 (8)	,,	,,
602	14428 (3)	पखवाडो	
603	13770 (17)	पत्र लेखन विधि (स्त्री ने लिखै जिकी श्रोपमा)	
604	15298 (2)	परची सोना-लोहा की	
605	14914 (1)	पृथ्वीराजरी भावना (गीत)	
606	15033 (6)	प्रहेलिका(श्राडियाँ) एवं दोहा-संग्रह	
607	13511 (30)	प्रास्ताविक	कविगद, नरहर
608	14371 (5)	,,	वृन्द श्रादि
609	13505 (18)	प्रेमपत्री लेखन विधि	

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल, (वि संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12×11.5 12, 12	31–34	पूर्ण	1819	
15 5×11 5 9; 18	64–65	,,	19 वी श	
22×17 19, 18	7–8	अपूर्ण	,,	
21 5×14 14, 30	71–73	पूर्ण	1852	लि क वलराज, लि स्था बीदपुर
15 5×11 13, 28	126–128	,,	1757	लि क मनसाराम, लि स्था बीलाडा
17×17 13, 16	54–55	,	20 वी श	
10×9 10, 14	10–18	,,	19 वी श	
26 5×22 5 11, 20	116–118	,,	,,	आगे भरथरी का कवित्त है।
15 5×11 15, 30	40 वा	,,	18 वीं श.	पत्राङ्क 1–39 अप्राप्त
17×13 5 12, 15	28–31	,,	20 वी श	नगरो तथा वस्तु परक पहेलिया हैं।
17×12 11, 19	97 वा	,,	19 वी श	
22.5×15 5 17, 15	38–40	,,	1886	44 पद्य है।
16×11 5 14, 18	56–60	,,	19 वी श.	पत्राङ्क 60–62 पर तपागच्छ नायक विजयसेन सूरि की स्तुति है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
610	14643 (2)	फूल चितवणी आदि सुभाषित-संग्रह	सुन्दर, बुधराव, खेतसी
611	14681	बारहमासा के चित्र	
612	15032 (2)	बारामासी	
613	12706 (8)	बारामासो	
614	13609 (4)	बारामासो	रामचन्द्र दूबे
615	14474 (1)	,, (किशनजीरो)	
616	15086 (3)	,,	
617	14339 (1)1-2	,, (कृष्ण-राधा, नेम-राजुल)	
618	14412 (4)	बारामासो व स्फुट दोहा	
619	13769 (3)	भंगी संवाद	
620	12706 (9)	राज-मजलिस	
621	13769 (6)	रामचन्द्रजीरा झूलणा	मुनि टीकम

माप से मी मे, पक्ति प्रति पृष्ठ, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5×15 5 15, 34	9–13	पूर्ण	20 वी श	
24 5×15 5	1–5	,,	19 वी श	चित्र स –5 चैत्र, आषाढ, सावरण, आसोज, फागुरण मास के चित्र हैं।
16×11 13, 16	13–16	,,	,,	12 पद्य हैं।
15 5×11 5 9, 18	56–59	,,	,,	
19×15 16, 18	16–26	,,	गु 1789	147 छन्द हैं। पत्र एक ओर लिखे हैं।
19 5×14 5 20, 14	2–4	,,	1846	पत्राङ्क 1–2 पर सुन्दरदास, तुलसी, माधोदास आदि के पद हैं। पत्राङ्क 4–7 पर ठाकुरारा नाम, चौवीस अवतार नाम, एकादशी फल विचार है।
20 5×15 5 12, 19	83 वा	अपूर्ण	1854	पत्राङ्क 83-84 पर कविगंद कृत दोहे व श्लोकादि हैं।
12×13 5 15, 18	1–4	पूर्ण	19 वी श	
14×11 7, 16	66–72 72–74	,,	18 वी श	
13 5×10 5 11, 17	45–46	,,	1704	लि स्था ल्हुडावरण
15 5×11 5 9, 18	59–62	,,	19 वी श	
13 5×10 5 14, 20	54–56	,,	1706	लि क सामा, लि स्था जोजावर

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
622	13509 (8)	रूपदीप (कवित्त)	साधुराम आसकरन
623	13789 (3)	रैनरूपारस	
624	13519 (7)	षड्ऋतु वर्णन	
625	14357 (5)	सयोग वत्तीसी आदि	
626	14357 (4)	सवैया इकतीसा आदि	कवि व्यास, सुन्दरदास
627	14412 (8)	सवैयो-लिखमीनारायणजीरो, सूरजसिंहजीरो	
628	14412 (5)	,, श्रीकृष्ण-लीलारो	
629	13499 (1)	सास-वहूरो झगडो	
630	12706 (6)	सीलोको	
631	14128	सुभाषित सग्रह सस्तवक	
632	12732	,, एव पहेलियां	
633	14756 (16)	,,	उदयराज
634	14463 (9)	स्फुट छद	कवि दूदा

माप से. मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×17 13, 26	75–76	पूर्ण	19 वी श	
22×18 17, 26	156वाँ	,,	गु 1814	20 पद्य हैं।
22×17 19, 18	5–6	,,	19 वी श.	
16×12.5 14/17, 18/22	1–16	,,	1911	86 पद्य हैं।
16×12 5 13, 18	6–16	,	,,	
14×11 7, 16	94–100	,,	18 वी श	पत्राङ्क 92–93 पर स्फुट पद्य हैं।
14×11 7, 16	74–81	,,	18 वी श.	
15 5×10 5 10, 26	1–2	,,	19 वी श	
15 5×11 5 8, 15	36–43	,,	19 वी श	एक वस्तु के विना दूसरे का अभाव इसी भाव पर 22 छन्द हैं।
25×12 6, 40	1–15	,,	19 वी श	
21×16 20, 30	86 वा	,,	19 वी श	जलसिक्त
24×15 35, 24	82–83	,,	गु. 1814	35 दोहे हैं।
20×16 5 19, 26	76 वा	,,	1765	लि क. जोगीदास, लि स्था गाँव भेड

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
635	12732 (5)	स्फुट सवैया	गुणचंद
636	13511 (24)	,, ,,	
637	13511 (50)	,, ,,	गिरधर कविराय
638	13770 (4) 2–3	,, ,,	कवि हेम, केसोदास गाडण
639	13770 (4) 7	,, ,,	सुन्दरदास
640	15051 (3)	,, ,, देशलक्षणरी	,,
641	13498 (3)	हीयाली, गुनसदोतरा (कहमुकरी)	
642	13505 (17)	हीयाली	
6 नी. शा. 643	13781	नसीहतनामा	
प: 644	14435 (1)	नसीहत रा दूहा	गुलराज कायस्थ
645	13770 (18)	नीतिरा दोहा	
646	13511 (35)	राजनीतिरा कवित्त	देवीदास
647	13512 (10)	,,	,,

माप से मी. मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×16 15; 22	85 वा	पूर्ण	19 वी श	
17×12 11, 19	83–85	"	19 वी श.	श्रीकृष्ण, विष्णु, हनुमान परक
17×12 11, 20	220–222	"	19 वी श	
10×9 9, 12	23–24	पूर्ण	19 वी श.	
10×9 9, 12	38–41	पूर्ण	19 वी श.	
29×21 26, 24	6 ठा	पूर्ण	20 वी श	
14 5×12 14, 18	88–89	पूर्ण	1670	11 मुकरिया हैं।
16×11 5 11, 16	54–55	पूर्ण	19 वी श	
27×18 5 23, 20	1–3	अपूर्ण	1942	
16×13 5 12, 12	1–26	पूर्ण	1935	अतिम दोपत्रोमे गुलराजकृत'अमल-वत्तीसी है। लि क स्वय ग्रन्थकार,र का 1935
10×9 10, 14	19–27	पूर्ण	19 वी श	56 दोहे हैं।
17×12 8, 16	116–127 139–169	"	1845	लि. क विरदीचद, पत्राङ्क 170-171 पर श्रीकृष्ण सबधी कवित्त हैं।
15×11 5 7/10, 14/18	1–55	पूर्ण	1861	लि क. विरधीचद, जलसिक्त

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
648	13515 (1)	राजनीतिरा कवित्त	देवीदास
649	13770 (25)	,,	,,
650	14318	,,	,,
651	15033 (4)	,, आदि	देवीदास, केशव, दीनदरवेश
652	13959 (2)	राजनीतिरा छप्पय	
653	12729 (5)	राजियारा दोहा	कृपाराम बारठ
654	15051 (6)	,,	,,
655	14388 (5)	लघुचाणक्य राजनीति भाषा	भावनादास
656	13770 (2)	लुकमान हकीमरी नसीहत	
657	13768 (1)	सिखामणी	
658	13770 (20)	,,	
659	12717 (7)	सीख व मूर्ख कथन	
660	15033 (3)	स्फुट सीखें	

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23×17 18, 16	3–27	अपूर्ण	1860	प्रथम दो पत्र अप्राप्त, लि क सेवग मोतीराम, लि स्था सोजत
10×9 10, 14	1–11	,,	1862	लि स्था कटालिया ग्राम
23 5×12 19/30, 12	1–22	,,	1809	लि क. वैद्य सिवलाल मलूकचद लि स्था वडनगर
17×13.5 15, 18	18–23	,,	20 वी श.	पत्राङ्क 18 पर महाराजा अभयसिंह व भीमसिह का गीत है।
17×10 5 9, 20	25–28	,,	19 वी श	9 छन्द है।
16 5×12 5 12, 24	64 वा	,,	20 वी श	104 दोहे हैं।
29×21 22, 20	9–10	,,	20 वी श	18 दोहे हैं।
12 5×11 5 11, 14	2–6	,,	,,	पत्राङ्क 7–10 पर पद एवं नुस्खे हैं।
10×9 9, 12	7–17	पूर्ण	19 वी श.	
15 5×12 16, 12	1–3	,,	1898	लि क मूलजी
10×9 10, 12	59–67	,,	19 वी श	113 सीखें हैं।
21 5×14 15, 22	69–70	,,	18 वी श	68 सीखें व 68 मूर्खतापूर्ण कार्यों के नाम हैं।
17×13 5 13, 16	12–16	,,	20 वी श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
7 भक्ति साहित्य	14473 (10)	अग्रदासजी की वाणी	अग्रदास
662	15297 (9)	अष्टक लीला	हरिराय
663	15297 (10)	आचार्यजी के स्वरूप को चिंतवन, गुसाईजी को चिंतवन	,,
664	14046 (1)	आचार्यजी को स्वरूप वर्णन	
665	13691 (1)	आचार्य महाप्रभु के प्रागट्य की वार्ता	,,
666	14741 (20)	आत्मा बोध, पचमाश, सोलहतिथि, ज्ञानमाला	गोरखनाथ
667	13494 (4)	आदिबोध	रामदास
668	14398 (5)	इदव छन्द	सुन्दरदास
669	13798 (2)	इश्क-चमनरादोहा	नागरीदास
670	14898 (2)		,,
671	14373 (2)	उपदेश चितीावणि	सुखराम
672	14475 (9)	उपदेश दिढावणी	फरीद
673	14281	उर्जन (अर्जुन) दासजी की परची एव जन्मलीला	

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5×12 5 22, 10	91–115	पूर्ण	19 वी श	
21×16 13, 12	5–11	अपूर्ण	20 वी श	प्रारम्भ के 4 पत्र अप्राप्त
21×16 13, 12	11–17, 17–22	"	"	पत्राङ्क 13 वा अप्राप्त
15 5×12 5 11, 18	1–10	पूर्ण	19 वी श	कीटविद्ध, 10 वे पत्र पर पद्मपुराण के अनुसार यमुना के 30 नाम है।
29×19 15, 16	1–107	पूर्ण	"	
13 5×10 5 11, 20	329–340	पूर्ण	"	
20×16 13, 20	22–28	"	"	
10×8 6, 10	41–48	"	गु. 1922	
22×18 17, 26	154–155	अपूर्ण	गु 1814	36 दोहे हैं।
16 5×12 9, 18	1–6	पूर्ण	गु 1904	पत्राङ्क 7–8 पर स्फुट दूहा-कवित्त हैं।
20×16 13, 16	16–21	"	20 वी श.	पत्राङ्क 15–16 पर मृग प्रसग के पद हैं।
19×15 5 14, 20	84–87	पूर्ण	20 वी श.	
17×11 20, 11	1–27, 28–36	"	"	र का परची 1953

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
674	14043 (20)	कक्का बत्तीसी	कबीरदास
675	15053 (2)	,,	
676	15061 (1)	,,	
677	14369 (10)	कनीरामजी की वाणी	कनीराम शिष्य पीथाराम
678	13960 (5)	कबीरदासजी की गूदडी	कबीरदास
679	14475 (7)	कबीरदासजी का छुटकर सबद	,,
680	13960 (2)	कबीरदासजी की परची	अनन्तदास
681	14423 (5)	,, ,,	
682	14376 (11)	,, ,,	
683	14392 (7)	,, ,,	
684	14741 (9)	,, ,,	
685	14716 (4)	,, ,,	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×16 5 12, 26	20–21	पूर्ण	गु 1912	
26 5×16 5 23, 19	4–6	,,	20 वी श	र का 1874, पत्राङ्क 6–8 पर चारभुजा के पद, पावस का कवित्त, जिनस्तुति, हनुमानजी का कवित्त तथा गीत हैं।
23 5×15.5 22, 16	6–7	,,	19 वी श	कीटविद्ध, पत्राङ्क 1–5 पर कृष्ण और वर्षा का रूपक आदि स्फुट कवित्तादि हैं।
22×15 16, 36	272–275	अपूर्ण	19 वी श	
14 5×10 5 9, 14	81–89	पूर्ण	19 वी श	
19×15 5 14, 20	59–73	,,	20 वी श	
14 5×10 5 9, 14	2–36	,,	19 वी श	
11×11 10, 12	128–163	,,	20 वी श.	
21 5×15 5 24, 18	44–54	अपूर्ण	18 वी श	पत्राङ्क 34–44 पर विष्णुसहस्रनाम है।
11×9 5 7, 13	62–66	,,	20 वी श	
13 5×10 5 11, 20	176–199	पूर्ण	19 वी श	
21×14 5 25, 21	282–290	,	1826	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
686	14473 (8)	कबीरदासजी का रेखता	कबीरदास
687	13494 (9)	कबीर-रैदास गोष्ठी	रैदास
688	14741 (11)	कबीर-रैदास को सवाद	सैना भगत
689	14741 (22)	कबीरदासजी की वांणी	कबीरदास
690	14068 (2)	,, ,,	,,
691	14337 (2)	,, ,,	,,
692	14414	,, ,,	,,
693	14395 (1)	,, ,,	,,
694	14392 (8)	,, ,,	,,
695	14716 (1)	,, ,,	,,
696	13737 (8)	,, की साखियां (अंगबद्ध)	,,
697	13770 (11)	,, ,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22 5×12 5 22, 10	82–85	पूर्ण	19 वी श	पत्रा.ङ्क 85–87 पर कमाल' कृत रेखते हैं।
20×16 13, 20	45–52	"	19 वी श	
13 5×10 5 11, 20	222–230	"	"	
13.5×10 5 11, 20	361–474	"	"	अतिम पत्र अप्राप्त
15×14 19; 22	1–80	"	1845	जीर्ण एव त्रुटित
14×12 5 14, 22	382–386	अपूर्ण	19 वी श.	
15×10 12, 22	17–96	"	1803	जीर्ण, पत्राङ्क 1–16 अप्राप्त
11×9 5 8, 12	73–197	"	1884	लि क सीताराम, लि स्था देसणोक पत्राङ्क 1–72 अप्राप्त
11×9 5 7, 13	67–107	पूर्ण	20 वी श	
21×14 5 25, 21	1–49	"	1826	लि क मगलदास, लि स्था डीडवाणा पत्राङ्क 5–7 पर वाजीदकृत श्रीमुखनामा तथा जगजीवन के पद हैं।
21 5×14 5 11, 24	1–6	अपूर्ण	18 वी श	
10×9 9, 12	83–136	पूर्ण	1862	लि क भीखनदास गौड लि स्था कटालिया

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
698	14391 (1)	कबीरदासजी की साखियाँ(अंगबद्ध)	कबीरदास
699	14473 (5)	,, ,,	,,
700	14478 (2)	,, ,,	,,
701	14742 (1)	,, ,,	,,
702	14913 (4)	,, ,,	,,
703	14913 (1)	,, ,,	,,
704	15098 (4)	,, ,,	,,
705	15234	,, ,,	,,
706	15240 (2)	कबीरदासजी के पद एवं कृतिसंग्रह	,,
707	13514 (4)	कबीरदासजी की साखी	,,
708	13494 (2)	करुणासागर	द्यालवाल
709	14913 (5)	करन-चितावणी	सुन्दरदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×10 10, 18	3–91	पूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 1–2 अप्राप्त, अग 59, साखी 926
22 5×12 5 22, 10	45–57	अपूर्ण	,,	पत्राङ्क 55 वा अप्राप्त
11 5×9 5 9, 15	351–355	,,	20 वी श	
15 5×11 11, 19	1–111	पूर्ण	गु 1833	अग 64, साखी 1372
16×11 8, 18	14–24	अपूर्ण	1865	
16×11 8, 18	1–21	,,	1865	पत्राङ्क 2 अप्राप्त
16×11 5 11, 18	1–57	,,	1847	लि क मानसिह; लि स्थान इन्दोर पत्राङ्क58–59 पर 'चतु श्लोकी भागवत' पत्राङ्क 60 पर 'कायाकल्प' की 'ओषधी' एव पत्राङ्क 61–63 पर 'नरसी के पद' है।
21 5×15 24, 18	1–29	,,	19 वी श	पत्राङ्क10–12 पर 'भक्त विरुदावली' है।
15×11 12, 20	324–523	पूर्ण	,,	पद 404, ग्रन्थ-कृतिया 8
16×12 5 16, 12	15–21	,,	20 वी श.	अत मे सुखराम कृत पद है।
20×16 13, 20	10–20	,,	19 वी श	
16×11 8, 18	24–32	,,	1865	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
710	14418 (8)	करुणाबत्तीसी	माधोदास
711	14470 (7)	,,	,,
712	13770 (23)	,,	,,
713	14365 (4)	,,	,,
714	14960 (7)	,,	,,
715	14897 (4)	,,	,
716	13830	कवित्त	निपटजी
717	13960 (4) 1	,,	ग्वालवाल
718	13960 (4) 2	कुण्डलिया	मनीराम
719	13494 (29)	,,	सुरतराम
720	13511 (29)	,,	अग्रदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12 5×11 10; 15	115–129	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 128 वा अप्राप्त
20×16 12, 18	37 47	पूर्ण	1810	लि क गुसाई दौलतगिरि लि स्था ग्राम मगरा, पत्राङ्क 47–78 पर सुभाषित एव हेजे की औषधी है ।
10×9 10, 14	1–20	,,	1862	लि स्था कटालिया, पत्राङ्क 27 पर सात सुख है ।
15×10 5 11, 16	105–116	,,	1888	
17×15 21, 19	409–415	,,	1871	
11 5×8 7, 12	111–134	,,	1903	लि. क जीवरणदास, लि स्था. जैतारण अगले पाच पत्रो मे कवीरदास की साखिया हैं ।
13×9 5 14, 20	1–3	,,	18 वी श	
14 5×10 5 9, 14	71 वा	,	19 वी श	
14 5×10 5 9, 14	72–75	,,	19 वी श.	
20×16 13, 20	152–154	,,	19 वी श	
17×12 11, 19	94–95	,,	19 वी श.	पत्राङ्क 96 पर हिरकिया (पागल)री औषधी है ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
721	14423 (2)	कृपन को अंग	बाजीद
722	14362 (3)	कृष्ण-रुक्मिणीरो व्याहलो	जनहरीदास
723	13749 (4)	खेमदासजी का रेखता	खेमदास
724	14383 (2)	गघ्घर निसाणी	जनहरिया
725	13494 (24)	गरभ चितावणी	रामदास
726	13770 (9)	,, व स्फुट अंग	,,
727	14394 (2)	,,	,,
728	14351 (6)	,,	लालदास
729	14365 (6)	,,	रामचरण
730	13765 (6)	गुणनिद्या-स्तुति	ईसरदास बारठ
731	14463 (18)	,,	,,
732	13494 (1)	गुण-बोध	ध्यानदास
733	14463 (13)	गुण-वैराट	ईसरदास बारठ

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×11 9, 12	14-20	पूर्ण	20 वी श	अरिल्ल छन्द है।
16×11 9, 15	37-42	,,	18 वी श	
16 5×10 5 11, 24	521-526	,,	1847	लि क साध माणकदास
16×12 5 8, 22	1-4	,,	1928	
20×16 13, 20	127-136	,,	19 वी श	
10×9 9, 12	44-69	,,	1862	पत्राङ्क 70 पर चौवीस अवतारों के नाम हैं।
11 5×10 9, 12	58-77	,,	19 वी श	
14 5×11 10, 16	49-56	अपूर्ण	,,	प्रारम्भिक अश अप्राप्त
15×10 5 11, 16	126-140	पूर्ण	1888	
22×16 16, 17	17-41	,,	1771	लि क मायाचंद, लि स्था योधपुर
20×16 5 20, 21	201-215	,,	1765	पत्राङ्क 217-219 पर तत्रोपचार है। लि क जोगीदास
20×16 13, 20	93-95	,,	19 वी श	
20×16 5 25, 24	127-137	,,	1764	लि क जोगीदास

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
734	14370 (1)	गुण हरिरस	ईसरदास बारठ
735	14463 (6)	,,	,,
736	14470 (5)	,,	,,
737	14478 (3)	,,	,,
738	14359 (7)	,,	,,
739	14079 (11)	,,	,,
740	13498 (4)	गुनगजन् नामो	वाजीद
741	14284 (1)	गुरु-उपदेशादि	सेवादास
742	14411 (1)	गुरु-उपदेश	पुष्करदास शिष्य चतरदास
743	13502	गुरु-प्रकरणादि	ग्वालवाल
744	14392 (1)	गुरु-मंत्र	सेवादास
745	13494 (11)	गुरु-महिमा	रामदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×15 9, 16	38–64	पूर्ण ,,	19 वी श.	पत्राङ्क 2–14 अकपाटी, पत्राङ्क 15–24 सीधोवर्णा एव लघु चाणक्य का चतुर्थ अध्याय है ।
20×16 5 19, 26	58–66	,,	1763	लि क. जोगीदास, लि स्था. भेडग्राम
20×16 18, 22	18–27		1803	लि क दौलतगिरि, अन्त मे अमरेस कृत स्फुट कवित्त. सवैया हैं ।
11 5×9 5 9, 15	355–388	,,	20 वी श	
14 5×11 10, 18	26–45	,,	19 वी श	लि क रूपदास, लि स्था नागपुर
14×13 5 15, 18	65–77	,,	19 वी श.	
14 5×12 10, 24	94–127	,,	1670	लि क गोपाल बछिल
10×8 7, 13	1–32	,,	1911	लि क उदयराम, लि स्था खीवसर
15 5×10 5 10, 18	2–9	अपूर्ण	1842	प्रथम पत्र अप्राप्त, र स्था डीडवाणा लि क बदरीनाथ निरजनी
33×16 5 13, 44	1–92	पूर्ण	19 वी श	9 प्रकरणो मे पौराणिक भक्तो के आख्यान युक्त ।
11×9 5 7, 12	1–11	,,	20 वी श	
20×16 11, 20	55–61	,,	19 वी श.	

क्रमाक गद्य विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
746	14043 (8)	गुरु-महिमा	रामदास
747	13494 (25)	गुरु-शिष्य-पवाद	परमराम
748	13494 (3)	"	"
749	14068 (5)	गोरखनाथजीरा ग्रन्थ (1) सृष्टि पुराण (2) चौबीस सिद्धि (3) रहरासि (4) दयाबोध (5) ज्ञानमाला (6) पद एव सबदी	गोरखनाथ
750	14716 (6)	गोरखनाथजीरा ग्रन्थ (1) दत्तगुष्ठी (2) ज्ञानतिलक (3) सृष्टि पुराण (4) रहरासि (5) दयाबोध (6) पद-सग्रह	"
751	13494 (14)	गोरखनाथजीरा पाँच वरन	
752	14716 (7)	" री सबदी	गोरखनाथ
753	13770 (12)	चन्द्रायण	वाजीद
754	14756 (13)	" (रामायण)	जन सारग

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5×17 13; 28	1-5	पूर्ण	गु 1910	
20×16 13, 20	136-139	"	19 वी श	
20×16 9, 12	77-84	"	19 वी श	
15×14 19, 22	188-199	पूर्ण	19 वी श.	प्रारम्भ मे गोरखनाथजी के बत्तीस लक्षणादि हैं।
21×14 5 25, 21	398-415	पूर्ण	गु 1826	पत्राङ्क 414 दो वार
20×16 11, 20	78 वा	पूर्ण	20 वी श	
21×14 5 25, 21	415-425	पूर्ण	गु 1826	
10×9 9; 12	137-145	पूर्ण	1862	लि क भीखनदास गौड़ लि स्था कटालिया
24×15 35; 24	65-67	पूर्ण	गु 1811	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
755	14046 (3)	चरन-चिन्हानि	वल्लभदास
756	13494 (13)	चाणकबोध	किसनदास
757	14285 (2)	चिंतावणी को अंग	जनमुरली
758	14043 (9)	,,	कनीराम
759	14352 (4)	,,	रामचरणदास
760	14392 (9)	,,	,,
761	14473 (1)	,,	प्रेमदास
762	14714 (2)	,,	सुन्दरदास
763	14897 (3)	,,	रामचरणदास
764	15016	चुरेलीना भेख	
765	14352 (6)	चौरासी बोल	जगनाथ
766	14475 (1)	,,	,,
767	15297 (8)	चौरासी वैष्णवों का धोल	हरिदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×12 5 11, 16	20–25	पूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 25-34 पर हरिदासकृत 'कृष्णप्रेमामृत' है ।
20×16 11, 20	62–77	,,	19 वी श	अत मे तबाखू का दोहा है ।
10×7.5 8, 12	43–53	,,	,,	
24 5×17 13, 28	6–20	पूर्ण	1912	
13 5×10 5 8, 12	45–65	पूर्ण	19 वी श	
11×9 5 7, 14	108–135	पूर्ण	20 वी श	लि क नवलसिह रामस्नेही लि स्था अहिपुर, पत्राङ्क 1–18 अप्राप्त
12 5×12 5 22, 10	19–20	अपूर्ण	19 वी श	
10 5×8 7, 12	51–75	पूर्ण	20 वी श	
11 5×8 7, 12	85–111	,	गु 1903	
17 5×11 5 14, 14	1–10	,,	19 वी श	राधा-कृष्ण लीला
13 5×10 5 8, 12	71–76	,,	,,	
19×15.5 14, 20	92–94	पूर्ण	20 वी श	
21×16 5 15, 12	45–51	,,	20 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
768	14247	चौरासी वैष्णवों की वार्त्ता	हरिराय
769	15238 (3)	छासठ अपराध	
770	14068 (13)	जडभरथरी-चरित्र	जनगोपाल
771	14741 (14)	,,	,,
772	15099 (6)	,,	,,
773	14741 (19)	जनहरीदास की कृतियां (1) ब्रह्म-स्तुति (2) प्राणमात्रा (3) वीरारस वैरागी (4) हस परमोध	जनहरीदास
774	14392 (3)	जनहरीदास की कृतिया (1) नाममाला (2) मनहठ (3) मनप्रसग (4 मन मतो जोग (5) मन उपदेश (6) गाबा का पद	,,
775	14340 (4)	जनहरीदास की वाणी व (तीमपदी, चन्द्रायणा)	,,
776	14359 (10)	,,	,,
777	15095 (4)	,, एव कृति सग्रह	,,

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
33×23 5 26, 28	1–345	पूर्ण	1890	अतिम पत्र खण्डित
14 5×13 5 10, 12	3–38	"	19 वी श	
15×14 19, 22	274–279	"	"	
13 5×10 5 11; 20	266–278	"	"	
18×12 10; 18	172–184	"	गु 1898	
13.5×10 5 11, 20	314–329	"	19 वी श	
11×9 5 7, 13	1–48	"	20 वी श	
24×14 12; 24	101–123	"	19 वी श.	पत्राङ्क 118–119 पर अग्रदास के पद है।
14 5×11 10; 18	2–35	अपूर्ण	19 वी श	प्रथम पत्र अप्राप्त लि क रूपदास, लि स्था नागोर
15×11 9, 19	71–199	पूर्ण	18 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
778	15099 (1)	जनहरीदास को साखिया	जनहरीदास
779	14742 (2)	,, कुण्डलिया, चन्द्रायणा रेखता पद, कडखा	,,
780	13494 (16)	जन्मपत्रिका की रमैणी	कबीरदास
781	14044 (3)	जन्माष्टमी की बधाई का पद	सूरदास
782	14381 (3)	जोगेश्वरी वाणी-संग्रह	गोरखनाथ, हणवंत कणेरीनाव हालीपाव, चापन्नाथ आदि
783	14352 (7)	झूलणा	सेवगराम
784	15437	ज्ञान-कक्को	
785	14472 (1)	(1) ज्ञान चौतीसी (2) कबीर-धर्मदास संवाद (3) रमैनी आदि	कबीरदास
786	14473 (6)	ज्ञानजी की साखी	मतज्ञानी
787	13339 (4)	ज्ञान-प्रकाश	जगजीवन
788	14396 (3)	ज्ञानमाला	शम्भूनाथ
789	13746 (3)	ज्ञानरसिक-गुणविलास	रामसजन शिष्य रामचरण

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×12 11, 22	1-9	पूर्ण	गु 1898	
15.5×11 11, 19	111-270	,,	गु 1833	
20×16 13, 20	81-92	,,	19 वी श	
22×13 5 24; 12	85-86	,,	,,	राग-देशगधार
20×11 22, 12	42-75	,,	गु 1810	
13 5×10 5 8, 12	76-89	,,	1921	पत्राङ्क 90-92 पर हनुमानजी के कवित्त हैं।
22×11 7, 21	1-4	,,	19 वी श	
18×14 13, 13	1-139	पूर्ण	1834	रमैनी 1884 मे लिखी गई है।
22 5×12 5 22, 10	57-68	पूर्ण	19 वी श	
20×14 11, 26	1-14	,,	,,	र का 1772
11×8 11, 18	1	,,	,,	अतिम पत्र पर
14×12 17, 15	134-146	,,	20 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
790	14043 (3)	ज्ञानलीला	रामानन्द
791	14388 (1)	,,	,,
792	14412 (2)	ठाकुरांरो चौमासो	
793	13737 (6)	ठाकुरांरो बारैमासो	संत जगो
794	14398 (6)	तुरसीदासजी की वाणी (गुरुदेव को अंग)	जनतुरसी
795	14068 (6)	,, एवं कृति-संग्रह	,,
796	14411 (4)	,,	,,
797	14337 (4)	,,	,,
798	14709 (3)	,, एवं कृति-संग्रह (करणीसार, साधुलक्षण, तत्त्वगुणभेद आदि)	,,
799	14716 (9)	तुरसीदासजी का कृति-संग्रह	,,
800	14423 (3)	,, ,,	,,
801	14360 (5)	,, की फुटकर साखी	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5×17 11, 24	4–6	पूर्ण	गु 1910	
12 5×11 5 10, 12	1–4	,,	गु 1920	पत्राङ्क 5–6 पर कबीर कृत 'राममत्र' है
14×11 7, 16	53–61	,,	18 वी श.	
21 5×14 5 12, 24	1–3	,,	1799	
10×8 5, 14	49–55	,,	गु 1922	
15×14 19, 22	199–242	,	19 वी श	
15 5×10 5 10, 18	22–70	,,	गु 1842	
14×12 5 14, 22	1–19	अपूर्ण	19 वी श	
26 5×12 5 13, 46	78–186	पूर्ण	,,	कीटविद्ध, 'परचोविधान' अपूर्ण है।
21×14 5 25, 23	428–545	,,	गु 1826	
11×11 11; 12	20–39	अपूर्ण	19 वी श	
15 5×10 10, 18	316–383	पूर्ण	1842	लि क साध सतोपदास

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
802	14437 (3) 8	त्रिलोचनजी की परची	अनन्तदास
803	14741 (5)	,,	,,
804	14068 (5) 1	दत्तगुष्टि (गोष्ठी)	गोरखनाथ
805	14741 (27)	दयालजी की परची	जनहरीदास
806	14373 (6)	दरियादास की वाणी	जनदरिया
807	14416 (8)	दशदान, गुरु-शिष्य-प्रश्नोत्तर, गोरख वचन	गोरखनाथ
808	15297 (6)	दश नामावली, नामरत्न नामावली	
809	14337 (6)	दादूदयालजी को कृत (कृति-सग्रह)	दादूदयाल
810	14381 (1)	दादूदयालजी की वाणी (साखी)	,,
811	13749 (1)	,, एव पद-सग्रह	,,
812	14362 (2)	,, साखी	,,
813	15240 (1)	, साखी एवं पद-सग्रह	,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×13 5 14, 12	151–157	पूर्ण	1814	लि क साध गोपाल, लि स्था गाव गूढा पत्राङ्क 158–160 पर हरिहर कृत विष्णुपजर स्तोत्र है।
13.5×10 5 11, 20	84–87	,,	19 वी श	
15×14 19, 22	185–188	,,	,,	साथ मे 'ज्ञानदीप प्रबोध' भी है।
13 5×10 5 11, 20	497–502	,,	,,	
20×16 15, 16	1–5	अपूर्ण	20 वी श	
12×11 5 12, 12	39–43	पूर्ण	गु 1892	
21×16 5 10, 10	28–38	,,	20 वी श	सस्कृत मे हैं।
14×12 5 14, 22	1–73	,,	19 वी श	
20 5×11 22, 12	10–23	अपूर्ण	19 वी श.	प्रारम्भ के 9 पत्र अप्राप्त
16 5×10 5 11, 24	1–346	पूर्ण	1847	लि क साध माणकदास, जीर्ण, पद 27 रागो मे हैं।
16×11 10, 15	8–25	अपूर्ण	18 वी श	पत्राङ्क 25-31 पर सतो के पद सग्रह हैं।
15×11 12, 20	8–189, 189–324	पूर्ण		पत्राङ्क 1–7 अप्राप्त, अग 37, साखी 2704, राग 27, पद 440

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
814	14452 (1)	दानलीला सचित्र	नदराम
815	15032 (1)	,,	
816	14043 (24)	दामजीरी चौपइया	दास
817	13480 (3)	दृष्टात-सग्रह्	
818	14392 (5)	देवजी की अष्टपदी	जनमुरली
819	14482 (5)	देवीदासजी की वाणी	देवादास स. क. हरीदास
820	14482 (7)	,, कृति सग्रह	,
821	13494 (27)	देवी को अग	कवीरदास
822	14475 (5)	द्यालदासजी के कवित्त एव नामप्रताप	द्यालवाल (जनरामा)
823	15369 (4)	द्यालदासजी के गीत	,,
824	14352 (10)	द्यालदासजी के छुटकर सवद	,,
825	14043 (10)	,, की वाणी	,,
826	14364 (13)	,, ,,	,,

माप से. मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेप ज्ञातव्य
24 5×16 5 11, 16	1–12	पूर्ण	20 वी श	चित्र स 32, र का 1762
16×11 13, 10	7–13	अपूर्ण	1853	पत्राङ्क 1–6 अप्राप्त, लि क सेवाराम
24×16 5 14, 40	39–41	,,	गु 1912	
17×14 13, 26	252–265	पूर्ण	19 वी श	
11×9 5 7; 13	55–59	,,	20 वी श	
24 5×12 35, 15	264–445	,,	गु 1844	
24 5×12 35, 15	501–527	अपूर्ण	गु 1844	
20×16 13, 20	150–151	,,	19 वी श.	
19×15 5 14, 20	32–40	पूर्ण	20 वीं श	
22×15 16, 36	222–226	,,	19 वी श	पाँच गीत हैं।
13 5×10 5 10; 16	108–112	,,	गु 1921	
24 5×17 13, 22	21–29	अपूर्ण	गु. 1912	
13×11 10, 10	32–42	,,	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
827	14369 (5)	द्यालदासजी के हरजस	द्यालवाल
828	14480 (2)	द्विजकन्या-सवाद	दादूदयाल
829	15309	,, भाषा	कवीरदास
830	14351 (2)	धन्नाजी की परची	अनन्तदास
831	14411 (2)	,,	,,
832	14741 (7)	,,	,,
833	14913 (3)	,,	,
834	14405 (1)	धर्मचितावणी आदि	सेवादास
835	15099 (2)	धर्म-युधिष्टर-सवाद भाषा	जनदयाल
836	14929 (1)	ध्यान-मजरी	अग्रदास
837	14066 (5)	ध्यान-लीला	माधोदास
838	14048 (4)	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल
839	14068 (15)	,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×15 16; 36	226-238	पूर्ण	19 वी श	24 रागो मे निबद्ध
17×8 8; 17	159–203	,,	,,	
29 5×13 5 9, 34	1–21	,,	1934	लि क हीरादास, लि स्था जोधपुर
14 5×11 10, 18	18–25	,,	19 वी श.	
15 5×10 5 10, 18	9–16	,,	गु 1842	
13 5×10 5 11; 20	167–171	,	19 वी श	
16×11 8, 18	8–14	,,	1865	
16×10 5 10, 16	1–18	,,	19 वी श	
18×12 11, 22	10–44	,,	गु 1898	
22×11 5 9, 22	1–8	,,	20 वी श	
22×16 14, 14	1–7	,,	1759	लि क. हरदैराम
15 5×10 11; 26	1–18	,,	19 वी श.	
15×14 19, 22	290–303	,,	,,	पत्राङ्क 299 के बाद पत्र सख्या 291 से पुन लगी हुई है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
840	14078 (2)	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल
841	14202	"	"
842	14261	"	"
843	14334 (2)	"	"
844	14359 (17)	"	परमानन्द
845	14365 (1)	"	जनगोपाल
846	14376 (5)	"	"
✓847	14676 (2)	" सचित्र	"
848	14741 (1)	"	"
849	14896 (2)	"	"
850	14897 (2)	"	"
851	14904	"	"

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×15 15; 16	1–18	पूर्ण	गु 1729	प्रारम्भ के 3 पद अप्राप्त
20 5×11 5 12, 28	7–19	अपूर्ण	1900	पत्राङ्क 19-20 पर रामचन्द्रजी की स्तुति है।
29×13 5 15; 42	1–8	„	1821	लि क वैष्णव किसोरदास
15×10 5 9, 22	1–29	„	20 वी श	गुटके के प्रारम्भ मे 'विष्णुपंजरस्तोत्र' है।
14.5×11 9; 18	82–91	„	19 वी श	पत्राङ्क 92-93 पर माधोदास कृत 'हनुमान जयति' तथा 93-97 पर पद-सग्रह हैं।
15×10.5 10, 15	1–32	„	गु 1888	पत्राङ्क 32-33 पर श्रीकृष्ण के 28 नाम हैं।
21.5×15 5 20, 18	58–72	„	18 वी श.	पत्राङ्क 55-57 पर 'दधिदान-इकतीसी' है।
21.5×12 5 11, 24	28–46	„	1848	चि सं. 7
13.5×10 5 11; 20	1–24	पूर्ण	19 वी श.	
16×11 11; 20	34–60	„	„	
11 5×8 7, 12	28–85	„	गु. 1903	प्रारम्भ के 27 पत्रो मे 'गीता' है।
11×10 5 10, 14	1–39	अपूर्ण	1841	तृतीय पत्र अप्राप्त

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
852	14940	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल
853	15070 (1)	,,	मुरलीदास
854	15095 (2)	,,	जनगोपाल
855	15099 (8)	,,	,,
856	14909 (3)	नरसीजीरो माहेरो	वसत
857	13503 (1)	नरसीजीरो माहेरो	वसत
858	14365 (5)	नरसी मेहर ·· हुडी	जेठमल कायस्थ
859	14418 (12)	,,	,,
860	13972 (3)	नागलीला	सूरदास
861	14359 (2)	नामदेवजी की परची	अनन्तदास
862	14043 (12)	,,	,,
863	14437 (3)	,,	,,
864	14925	,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×13 5 11, 17	1–29	पूर्ण	19 वी श	
15×12 9, 18	1–15	,,	,,	105 छन्द हैं।
15×11 9, 19	33–60	,,	,,	
18×12 12, 18	312-334	,,	गु 1898	
8 5×12 8, 16	112–126	,,	19 वी श.	
23 5×15 5 13, 21	1–9	,,	19 वी श.	
15×10 5 11, 16	116–126	,,	1889	र. का 1710 (?) 1720 (?) र स्था अहिपुर
12 5×11 10, 15	141–148	अपूर्ण	19 वी श	
21×16 19, 18	87–88	पूर्ण	1887	लि क खीमजी छगनजी तिवाडी लि. स्था भुजनगर
14 5×11 12, 16	7–13	,,	19 वी श	र का 1645
24 5×17 14, 20	46–59	अपूर्ण	गु 1912	
25×13 5 14, 12	143–151	पूर्ण	1814	लि क साध गोपाल, लि स्था गिरवा गाव गूढा, पत्राङ्क 78–142 पर 'गीता' है।
30 5×15 15, 32	1–2	अपूर्ण	20 वी श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
865	14741 (8)	नामदेवजी की परची	अनन्तदास
866	13497 (7) 45	नामदेव-पातशाह का झगडा	कबीरदास
867	15240 (3)	नामदेवजी की वाणी (पद-संग्रह)	नामदेव
868	14716 (12)	"	"
869	14741 (28)	नामदेवजी की महिमा का पद	
870	14073 (2) 3	" की साखी	,
871	14475 (8)	नामप्रताप आदि	परसराम
872	14373 (5)	"	रामचरण
873	14285 (1)	" एवं चितावणी	,
874	14364 (7)	" माहात्म्य एवं समयसार	जनतुरसी
875	14351 (5)	नाम-महिमा, राम-रक्षा	रामानन्द
876	14741 (23)	" एवं जखडी	वाजीद
877	14741 (16)	" एवं चितावणी	सेवादास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13 5×10 5 11, 20	171-176	अपूर्ण	19 वी श.	
18×13 5 9, 19	147-149	पूर्ण	"	
15×11 12, 20	523-562	"	"	
21×14.5 25, 22	555-575	"	1826	
13 5×10 5 11, 20	502-503	अपूर्ण	19 वी श	
15 5×10 9, 18	273-276	"	19 वी श.	
19×15 5 14, 20	73-84	पूर्ण	20 वी श.	
20×16 14, 16	43-49	"	20 वी श.	
10×7 5 8, 12	1-43	"	19 वी श	
13×11 10, 14	5-40	"	1963	लि क. हिम्मतराम, लि स्था मूडवा
14 5×11 12, 20	43-48	अपूर्ण	19 वी श.	
13 5×10 5 11, 20	476-480	पूर्ण	19 वी श	
13 5×10.5 11, 20	287-295, 295-303	"	19 वी श.	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
878	14709 (2)	नाम-महिमा एव चितावणी	सेवादास
879	13514 (1)	नाम-माहात्म्य	घमडीदास
880	14071 (2)	नामरत्न की टीका	हरिराय
881	15589	नाम हीरावली तथा व्रज-लीला	दामोदर
882	15095 (1)	नारायणलीला	माधवदास
883	15297 (7)	नित्यलीला	हरिराय
884	14048 (1)	निपटजी का सवैया	निपटजी
885	13494 (5)	निरालंभ	रामदास
886	12804	निर्णयसार	कवीरदास
887	14388 (2)	निसाणी	पेमदास शिष्य वालकदास
888	13960 (4) 3	निसाणी आदि	मनीराम
889	13960 (1)	पखवाडो	भीखमदास
890	13498 (2)	पद-सग्रह	अग्रदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26 5×12 5 13, 46	72–78	पूर्ण	19 वी श.	कीटविद्ध
16×12 5 16, 12	1–5	अपूर्ण	20 वी श	
17×18 11, 17	21–56	पूर्ण	20 वी श	
20 5×9 7, 24	1–4	,,	19 वी श.	श्रीकृष्णनाम-गुणकथन
15×11 9, 19	1–32	,,	,,	
21×16 5 13, 12	41–45	,,	20 वी श	
15 5×10 11, 26	1–7	,,	19 वी श	जीर्ण, अत मे राघोदास तथा रज्जब के भी पद हैं।
20×16 13, 20	28–30	,,	,,	
25×15 15, 32	1–16	,,	1819	जीर्ण-कीटविद्ध
12 5×11 5 10, 12	7–11	,,	गु 1920	
14 5×10 5 9, 14	76–80	,,	19 वी श	
14 5×10 5 12, 16	1–2	,,	,,	अत मे 'मीरा' का पद है।
14 5×12 14, 18	83–87	,,	1670	गुटके के पत्र ग्रस्त-व्यस्त हैं।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
891	13503 (5) 8	पद-सग्रह	अग्रदास
892	13497 (7) 1	,,	कबीरदास
893	13503 (3) 3	,,	,,
894	13503 (5) 1	,,	,,
895	13503 (4) 6	,,	,,
896	13767 (1) 10	,,	,,
897	14043 (13) 11	,,	,,
898	14382 (4)	,,	,,
899	13497 (7) 26	,,	काजीमहमद
900	13497 (7) 32	,,	कालू
901	14071 (1) 4	,,	कुम्भनदास
902	13767 (1) 5	,,	खीवा
903	13503 (5) 10	,,	खेम

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23 5×15 5 16, 26	3, 4, 11	पूर्ण	19 वी श.	रागवद्ध
18×13 5 9, 19	11–160	,,	,,	पत्राङ्को का विवरण परिशिष्ट मे देखें ।
23 5×15 5 13, 26	6–7	,,	,,	
23 5×15 5 13, 26	1–3, 6,8, 9, 11–14	,,	,,	रागबद्ध
23 5×15 5 13, 26	6–7	,,	,,	
16 5×11 5 10, 20	5–6	,,	20 वी श	
24×16 5 13, 36	21–23 45–47, 51	,,	गु 1912	
11×9 5 7, 13	49–53	,,	20 वी श	पत्राङ्क 53–55 पर अठाईसनाम, एकश्लोकी रामायण व भागवत है ।
18×13 5 9, 19	68-69		19 वी श	रागबद्ध
18×13 5 9, 19	100–101	,,	,,	,,
17×18 11, 17	15 वा	,,	20 वी श	पत्राङ्क 20 पर अष्टछाप के कवियो की प्रशसा का पद है ।
16 5×11 5 10, 20	3 रा	,,	,,	
23 5×15 5 16, 26	5 वा	,,	19 वी श	रागबद्ध

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
904	13767 (1) 11	पद-संग्रह	खेम
905	13497 (7) 43	,,	गरीबदास
906	14431 (1)	,, हरिजस	गुलराज कायस्थ
907	14431 (2)	,, व स्नेहलीला	,,
908	13497 (7) 4	,,	गैस
909	13503 (5) 16	,,	जनगोपाल
910	14381 (2)	,,	गोरखनाथ
911	13503 (4) 7–8	,,	घाटमदास, चिमनाबाई
912	13501 (3) 2	,,	जनचेतन
913	14073 (7)	,,	छाजू
914	15240 (4)	,,	छीतमदास
915	13497 (7) 38	,,	,,
916	14068 (11)	,,	जगजीवनदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5×11 5 10, 20	7 वा	पूर्ण	20 वी श	
18×13 5 9, 19	152 वा	,,	19 वी श	रागबद्ध
17 5×13 5 11, 11	1–7	,,	20 वी श.	लि क गुलराज कायस्थ
17 5×13.5 12, 11	8–56	,,	,,	लि क गुलराज कायस्थ
18×13 5 9, 19	13 वा	,,	19 वी श.	
23 5×15 5 15, 24	14 वा	,,	,,	रागबद्ध
20 5×11 22, 12	23–42	,,	गु 1810	
20 5×11 12, 24	6–7	,,	19 वी श	
12×8 9, 12	162–168	,,	गु 1860	रागबद्ध
15 5×10 9, 18	290 वा	,,	19 वी श.	
15×11 12, 20	562–566	,,	,,	
18×13 5 9, 19	127 वा	,,	,,	रागबद्ध
15×14 19, 22	269–271	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
917	13767 (1) 12	पद-संग्रह	जगजीवनदास
918	13497 (7) 39	,,	जानकीदास
919	14476 (1)	,, हरजस	जैमलदास
920	14364 (2)	,, ,,	,,
921	13503 (2)	,, ,,	,,
922	14479 (3)	,, ,,	,,
923	14394 (4)	,,	,,
924	14043 (5)	,,	,,
925	13497 (7) 33	,,	जनज्ञानी
926	13497 (7) 23	,,	जनतुरसी
927	13503 (5) 13	,,	,,
928	14423 (4)	,,	,,
929	14766 (2)	,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5×11 5 10, 20	7 वाँ	पूर्ण	20 वी श	
18×13 5 9, 19	129 वा	„	19 वी श	रागबद्ध
17 5×11 5 9, 19	6–22	„	„	पत्राङ्क 1–5 अप्राप्त
13×11 10, 14	3–4	„	„	
23.5×15 5 13, 30	1–5	„	„	रागबद्ध
15×10 8, 16	186–191	,	गु 1898	
11 5×10 9, 12	84–90	„	19 वी श	
24 5×17 11, 24	7–8	„	गु 1910	
18×13 5 9, 19	103 वा	„	19 वी श	रागबद्ध
18×13 5 9, 19	55, 163	„	„	रागबद्ध
23 5×15 5 15, 26	7–8	„	,	रागबद्ध
11×11 11, 12	39–127	„	20 वी श	
16×11 10, 22	57–91	„	1763	लि स्था आसोप, पत्राङ्क 56 अप्राप्त पत्राङ्क 92 पर सूरदास का पद है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
930	13497 (7) 19	पद-सग्रह	तुलसीदास
931	13503 (5) 7	,,	,,
932	13503 (4) 4	,,	,,
933	14068 (12)	,	दादूदयाल
934	13497 (7) 27	,,	,,
935	13497 (7) 10	,,	दूलहराम
936	13494 (15)	,,	दीन, नृसिहदास
937	13497 (7) 29	,,	देवादास
938	14043 (13) 19	,,	द्यालवाल
939	13497 (7) 5	,,	धन्ना
940	13497 (7) 20	,,	नरसी
941	13503 (5) 2	,,	,
942	14043 (13) 5	,,	नागरीदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×13 5 9, 19	39, 82, 134-135, 164, 165	पूर्ण	19 वी श	रागबद्ध
23 5×15 5 15, 26	5, 11, 12	"	"	रागबद्ध
23 5×15 5 12, 24	3-4	"	"	रागबद्ध
15×14 19, 22	271-273	"	1845	लि क भगवानदास
18×13 5 9, 19	89 वा	"	19 वी श	रागबद्ध
18×13 5 9, 19	23,24,70	"	19 वी श	रागबद्ध
20×16 11, 20	78-80	"	19 वी श.	
18×13 5 9, 19	92-94, 143-144	"	19 वी श.	
24×16 5 14, 30	60-61	"	गु 1912	
18×13 5 9, 19	14 वा	"	19 वी श.	
18×13 5 9, 19	42, 62, 71, 78, 160-161	"	19 वी श.	रावगद्ध
23 5×15 5 15, 26	6-13	"	19 वी श	रागवद्ध
24×16.5 13, 39	2 रा	"	गु 1912	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
943	13503 (5) 5	पद-संग्रह	नानग
944	13497 (7) 15	,,	,,
945	13767 (1) 6	,,	नापा
946	13497 (7) 21	,,	,,
947	13497 (7) 12	,,	नामदेव
948	13503 (5) 4	,,	,,
949	13767 (1) 3	,,	,,
950	14068 (7) 2	,,	,,
951	14043 (13) 10	,,	निरभैराम
952	14073 (6)	,,	नैनूदास
953	13497 (7) 24	,,	परमानन्द
954	13767 (1) 9	,,	,,
955	13503 (14) 5	,,	,,

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23 5×15 5 16, 26	3 रा	पूर्ण	19 वी श.	रागबद्ध
18×13 5 9, 12	54 वाँ	,,	,,	
16 5×11 5 10, 20	3 रा	,,	20 वी श	रागबद्ध
18×13 5 9, 19	44 वां	,,	19 वी श	रागबद्ध
18×13 5 9, 19	34 वा	,,	,,	रागबद्ध
23.5×15 5 15, 26	3, 10, 12	,,	,,	रागबद्ध
16 5×11 5 10, 20	3 रा	,,	20 वी श	रागबद्ध
15×14 19, 22	245–250	,,	19 वी श	
24×16 5 12, 34	15 वा	,,	गु 1912	
15 5×10 9, 18	288–289	,,	19 वी श.	
18×13 5 9, 19	57 वा	,,	,,	रागबद्ध
16 5×11 5 10, 20	5 वा	,,	20 वी श	
23 5×15 5 15, 26	7 वा	,,	19 वी श.	रागबद्ध

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
956	14071 (1) 2	पद-सग्रह	परमानन्द
957	14043 (13) 9	,,	परसराम
958	13497 (7) 30	,,	,,
959	13503 (3) 4–5	,,	पीपा, पूरणदास
960	13497 (7) 40	,,	पोहकरराम
961	13497 (7) 25	,,	वखतावर
962	13503 (3) 1	,,	,,
963	13497 (7) 36	,,	वखना
964	13767 (1) 13	,,	,,
965	13767 (1) 2	,,	वेनी
966	13497 (7) 44	,,	ब्रह्मदास
967	14043 (13) 2	,,	भगत (दास)
968	13767 (1) 1	,,	भगत (जन)

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×18 11, 17	11, 12, 14–17	पूर्ण	20 वी श	
24×16 5 13, 36	4–5	”	गु 1912	
18×13 5 9, 19	95 वा	”	19 वी श.	रागवद्ध
23 5×15 5 13, 26	7–8	”	”	
18×13.5 9, 19	134 वा	”	,	रागबद्ध
18×13 5 9, 19	64, 139 वा	”	”	रागबद्ध
23 5×15 5 13, 26	6 ठा	”	”	
18×13 5 9, 19	119, 123	”	”	रागबद्ध
16 5×11 5 10, 20	7 वा	”	20 वी श.	
16 5×11 5 10, 20	2 रा	”	”	
18×13 5 9, 19	154–155	”	19 वी श.	रागबद्ध
24×16 5 13, 39	1 ला	”	गु 1912	
16 5×11 5 10; 20	2 रा	”	20 वी श	प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
969	13497 (7) 31	पद-सग्रह	भागीरथ (जन)
970	14043 (13)15-16	,,	भीखमदास; जनभावन
971	13503 (3) 7	,,	मलूकदास
972	13503 (5) 11	,,	माधोदास
973	13497 (7) 2	,,	मीरावाई
974	13503 (5) 2	,,	,,
975	13503 (4) 5	,,	,,
976	14043 (13) 8	,,	,,
977	14043 (13) 6	,,	(जन) मुरली
978	13497 (7) 13	,,	मुरलीराम
979	13503 (4) 3	,,	मूलदास
980	13767 (1) 14	,,	मोहन
981	13508 (1) 1	,,	राघव

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×13 5 9, 19	97 वा	पूर्ण	19 वी श.	रागबद्ध
24×16 5 12, 32	43, 48–49	,,	गु 1912	
23 5×15 5 5, 15	9 वा	,,	19 वी श.	
23 5×15.5 16, 26	5 वा	,,	,,	रागवद्ध
18×13 5 9, 19	18–159	,,	,,	पत्राङ्को का विवरण परिशिष्ट मे देखें।
23.5×15 5 16, 26	1, 2, 4, 7, 9, 14	,,	,,	रागवद्ध
23 5×15 5 12, 24	4, 6, 7	,,	,,	
24×16 5 13, 36	4 था	,,	गु 1912	
24×16 5 13, 39	2 रा	,,	,,	
18×13 5 9, 19	28–30	,,	19 वी श.	रागवद्ध
23 5×15 5 12, 24	2–3	,,	,,	
16 5×11 5 10, 20	8–9	,,	20 वी श.	
12×6 6, 13	1–4	,,	1842 ई	लि क कुमालीराम, चार्ल्स जॉर्ज डिक्सन के वड़ दौरे मे लिपिकृत

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
982	13501 (2)	पद-संग्रह	रामचरण
983	13497 (7) 7	,,	रामजन
984	13503 (5) 15	,,	,,
985	14043 (13) 12	,,	रामदास
986	13494 (18)	,,	,,
987	13503 (5) 3	,,	,,
988	13501 (3) 1	,,	रामप्रताप
989	13497 (7) 6	,,	,,
990	13501 (3) 3	,,	रामवल्लभ
991	13497 (7) 17	,,	,,
992	13497 (7) 16	,,	रामलोचन
993	13746 (2)	,	रामसजन
994	13767 (1) 4	,	रामानन्द

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेप ज्ञातव्य
12×8 7, 12	7–154	पूर्ण	1860	राग 24, पद 147
18×13 5 9, 19	17, 24	,,	19 वी श	रागवद्ध
23 5×15.5 15, 26	9–10	,,	,,	रागवद्ध
24×16 5 12, 20	23 वा	,,	20 वी श	
20×16 13, 25	96 वा	,,	,,	
23 5×15 5 16, 26	1 ला	,,	19 वी श	रागवद्ध
12×18 9, 12	155–162	,,	1860	रागवद्ध
18×13 5 9, 19	15–16 27, 126	,,	19 वी श	रागवद्ध
12×8 9, 12	168 वा	,,	1860	अत मे शिण्य-परम्परा है ।
18×13 5 9, 19	70–71	,,	19 वी श	रागवद्ध
18×13 5 9, 19	66, 67, 135, 137	,,	,,	रागवद्ध
14×12 17, 15	108–134	,,	20 वी श.	
16 5×11 5 10, 20	3 रा	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
995	13497 (7) 35	पद-संग्रह	रूपदास
996	13497 (7) 28	"	रैदास
997	14043 (13) 1	"	"
998	13503 (3) 2	"	ललनासखी
999	13497 (7) 3	"	लालपुरी
1000	13767 (1) 8	"	वाजींद
1001	13497 (7) 9	"	"
1002	14071 (1) 3	"	विष्णुदास
1003	14043 (13) 3	"	विसनदास
1004	13497 (7) 42	"	वीरभद्र
1005	14388 (11)	" (कुण्डलिया)	संग्रामदास
1006	13501 (1)	"	संतदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×13 5 9, 19	107–114	पूर्ण	19 वी श.	रागबद्ध
18×13 5 9, 19	90 वा	,,	,,	रागबद्ध
24×16 5 13, 39	1 ला	,,	1912	
23 5×15 5 13, 26	6 ठा	,,	19 वी श.	
18×13 5 9; 19	12–13	,,	,,	रागबद्ध
16 5×11 5 10, 20	4 था	,,	20 वी श.	
18×13 5 9, 19	21 वा	,,	19 वी श.	रागवद्ध
17×18 11, 17	11 वा	,,	20 वी श	
24×16 5 13, 39	1 ला	,,	1912	
18×13 5 9, 19	144–145	,,	19 वी श	रागब्द्ध
12 5×11 5 9, 12	43–63	,,	20 वी श	अस्त-व्यस्त
12×8 7, 12	1–6	,,	1860	रागबद्ध

क्रमाक एव विषय	ग्रन्याक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1007	15296 (1)	पद-सग्रह (कवित्त)	सतीदास
1008	14043 (13) 4	"	सीतलग्रली
1009	14048 (2)	"	सुन्दरदास
1010	13497 (7) 18	"	जनसुन्दर
1011	13497 (7) 38	"	सुखमनदास
1012	13503 (4) 1	"	सुखराम
1013	13497 (7) 22	"	"
1014	13503 (5) 6	"	सुखसागर
1015	13497 (7) 14	"	सूरदास
1016	13503 (4) 2	"	"
1017	14043 (13) 17	"	"
1018	14071 (1) 1	"	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×12 5 11, 12	1–31	पूर्ण	1918–1925	उदयपुर के जगदीश मदिर का उल्लेख है। प्रारम्भ व अत मे सिवलाल, दीनदरवेश तथा तुलसी के कवित्त है। पत्राङ्क34–49 पर घरू हिसाब व पहाडे हैं। पत्राङ्क 50–52 पर स्फुट कवित्त हैं।
24×16 5 13, 13	2 रा	,,	1912	
15 5×10 10, 24	1–2	,,	19 वी श	
18×13 5 9, 19	37, 79	,,	,,	रागबद्ध
18×13 5 9, 19	128 वा	,,	,,	रागबद्ध
23 5×13 5 12, 24	1 ला	,,	,,	
18×13 5 9, 19	50 वा	,,	,,	रागबद्ध
23 5×13 5 16, 26	4 था	,,	,,	रागबद्ध
18×13 5 9; 19	31-167	,,	,,	*पत्राङ्को का विवरण परिशिष्ट मे देखें।
23 5×15 5 12, 24	1, 3	,,	,,	
24×16 5 13, 36	50 वा	,,	1912	
17×18 11, 17	1–10, 13, 17, 18	,,	20 वी श	रागबद्ध

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1019	14380 (1)	पद-सग्रह	सूरदास
1020	14043 (13) 13	,,	,,
1021	13497 (7) 34	,,	जनसेवादास
1022	14043 (13) 14	,,	जनसेवादास
1023	13497 (7) 41	,,	स्यामसखी
1024	14043 (13) 7	,,	जनहरिराम
1025	13503 (3) 6	,,	शाहहुसैन
1026	13497 (7) 11	,,	,,
1027	13497 (7) 8	,,	हरिदास
1028	13767 (1) 7	,,	,,
1029	12699 (7)	,,	,,
1030	13490 (9) 1–2	पद-सग्रह अभ्यग प्रात समे के	कृष्णदास, चतुर्भुज
1031	14046 (16) 1–4	" आचमन के	कृष्णदास, गोविन्दप्रभु, चतुर्भुज, कुम्भनदास,

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
19×14 14, 20	68–78 +6	पूर्ण	18 वी श	अस्त-व्यस्त, 6 पत्र और हैं।
24×16 5 12, 24	24 वा	,,	1912	
18×13.5 9, 19	104–105	,,	19 वी श	रागबद्ध
24×16.5 11, 22	25 वाँ	,,	1912	
18×13 5 9, 12	139–140	,,	19 वी श	रागबद्ध
24×16 5 13, 36	4, 57–60	,,	1912	
23 5×15.5 13, 26	8 वा	,,	19 वी श	
18×13 5 9, 19	26 वा	,,	,,	रागवद्ध
18×13.5 9, 19	20–21, 37, 56	,,	,,	रागबद्ध
16 5×11 5 10, 20	4 था	,,	20 वी श	
25×14 17, 12	38–43	,,	19 वी श	पत्र अस्त-व्यस्त
25 5×16 5 22, 19	25 वा	,,	,,	रागवेद्ध
15 5×12 5 10, 10	73, 73–74 75, 76	,,	,,	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1032	14738 (22) 1–4	पदसग्रह आचवन के	जनकल्याण, कृष्णदास मुरारिदास, परमानन्द
1033	13691 (2) 1–5	" आचार्यजी के	हरिदास, परमानन्द, सूरदास, छीतस्वामी, रसिक
1034	13749 (5) 1-5	" आरती के	नामदेव, जगजीवन, गरीबदास जगनाथ, प्रागदास
1035	14284 (4)	"	जनसेवादास
1036	14738 (41) 1–2	" गुरुभक्ति	सूरदास, रसिक
1037	14046 (8) 1–2	" आरती-मगला के	चतुर्भुजदास, जनभगवान
1038	14738 (9) 1–4	" "	चतुर्भुजदास, हित हरिदास, सूरदास, परमानन्द
1039	14738 (23) 1–3	" "	कृष्णदास, सूरदास, परमानन्द
1040	14046 (12)	" " राजभोग समय के	परमानन्द, सूरदास
1041	14738 (31) 1–2	" सध्या पाछे	चत्रभुजदास, परमानन्द
1042	14738 (32)	" शृङ्गार उतारने के	सूरदास
1043	14738 (27) 1–4 (30) 1–6	" आवती के	छीतस्वामी, गोविन्दप्रभु, परमानंद, नददास, चतुर्भूजदास, कृष्णदास परमानन्द, सूरदास, नन्ददास, छीतस्वामी

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5×13 5 12, 20	58–59	पूर्ण	19 वी श	रागवद्ध
22×19 15, 16	108–112	,,	,,	रागवद्ध
16.5×10 5 11, 24	526–530	,,	1847	लि. क साध माणकदास
10×8 7, 13	144–147	,,	1911	लि क उदयराम, लि स्था. खीवसर
16 5×13 5 12, 20	96 वा	,,	19 वी श.	रागवद्ध
15 5×12 5 11, 16	44–45	,,	,,	
16 5×13 5 12, 20	33–34	,,	,,	रागबद्ध
16 5×13.5 12, 20	59–64	,,	,,	रागवद्ध
15.5×12 5 11, 16	55–58	,,	,,	
16 5×13 5 12, 20	74 वा	,,	,,	रागवद्ध
16 5×13 5 12, 20	74–76	,,	,	रागवद्ध
16.5×13 5 12, 20	67–70, 71–74	,,	,,	रागवद्ध

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1044	14046 (19) 1–2	पदसंग्रह–आसरे के	परसोत्तम, कृष्णदास
1045	15069 (5) 1–11	" इन्द्रमान-भंग के	सूरदास, कृष्णदास, परमानन्द, आसकरण, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, नागरीदास, नंददास, गोविन्दप्रभु, विष्णुदास, छीतस्वामी
1046	14046 (13) 1–4	" उठापन के	छीतस्वामी, संघनदास सूरदास, नन्ददास
1047	14738 (24) 1–2	" उत्थापन के	गोविन्दप्रभु, कुम्भनदास
1048	14738 (14) 1–2	" उरहाने के	परमानन्द, सूरदास
1049	13490 (18)	" उरहाने के	सूरदास, चतुर्भुजदास
1050	14046 (7) 1–3	" कलेऊ के	सूरदास, चतुर्भुजदास, कुम्भनदास
1051	14738 (5) 1–3	" कलेऊ के	परमानन्द, सूरदास, जगन्नाथ
1052	12899 (1)	" कानजी नु कीरतन के	
1053	14914 (27)	" काया-गीत के	महमद
1054	15297 (2) 1–8	" कीर्तन-संग्रह	गोविन्दप्रभु, सूरदास, परमानन्द, रसिकनाथ, जनभगवान, आसकरन, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×12 5 10, 10	84-85, 88, 89	पूर्ण	19 वी श	
20×13 5 16-21; 14-22	129-151	,,	,,	राबगद्ध
		,,		
15 5×12 5 11, 16	58-62	,,	,,	
16 5×13 5 12, 20	64-65	,,	,,	रागबद्ध
16 5×13 5 12, 20	48-50	,,	,,	रागवद्ध
25 5×16 5 22, 19	39-40	,,	,,	रागवद्ध
15 5×12 5 11, 16	39-43	,,	,,	
16 5×13.5 12, 20	18-21	,,	,,	रागवद्ध
26 5×14 12, 29	1 ला	,,	,,	लि क. भाई हरजीवन
15 5×11 13, 24	144 वा	,,	18 वी श	
21×16 5 14; 12	1-9	,,	20 वी श	प्रथम पत्र खडित

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1055	14969 (2) 1-2	पदसंग्रह-कीर्तन के	नारायण, वाजीद, बालकराम, रसिकनाथ, केवलराम, सूरदास, तानसेन, तुलसीदास, कबीर, नरसी, वृजनिधि, द्वारकेश, मीरा, चन्द्रसखी, ब्रह्मदास, बखतावर, नंददास अग्रदास, परमानन्द, हमीदखान, विष्णुदास
1056	14738 (8) 1-9	" खंडिता के	कृष्णदास, भगवान, चतुर्भुजदास सूरदास, परमानन्द, छीतस्वामी, तानसेन, नन्ददास, गोविन्दप्रभु
1057	14738 (3) 1-3	" गंगाजी के	नन्ददास, गदाधर, परमानन्द
1058	13490 (3)	" "	नन्ददास, परमानन्द
1059	14043 (19)	" गरबी के	नरसी
1060	14738 (26) 1-2	" गाय बुलायबे के	चतुर्भुजदास, गोविन्दप्रभु
1061	14738 (33) 1-6	" गाय दुहने के	रसिक, चतुर्भुजदास, धरमदास, कृष्णदास, आसकरन, नन्ददास
1062	15069 (7)	" गोपाष्टमी के	चतुर्भुजदास, सूरदास, विट्ठल, परमानन्द, गोविन्दप्रभु
1063	14986 (1)	" गोपीचंद भरथरी के	
1064	13494 (20)	" "	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
19 5×14 12, 20	1–25	पूर्ण	गु. 1878–1900	लि क देवकरण सेवग, पत्राङ्क 27 पर तत्वज्ञान की टीप व पत्राङ्क 28 पर तुलसीदास का पद है।
		,,		
		,,		
16 5×13 5 12, 20	25–33	,,	19 वी श.	रागवद्ध
		,,		
16 5×13 5 12, 20	9–10	,,	,,	रागबद्ध
25 5×16 5 22, 19	19–20	,,	,,	
24×16 5 12, 26	17–18	,,	गु 1912	
16 5×13 5 12, 20	66–67	,,	19 वी श.	रागवद्ध
16 5×13 5 12, 20	76–80	,,	,,	रागबद्ध
20×13 5 17; 14	153–160	,,	,,	
16×11 11, 20	23–24	,,	,,	पत्राङ्क 1–22 अप्राप्त
20×16 13, 20	116–119	,,	,,	

क्रमाक एव विषय	गन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1065	14411 (3)	पदसग्रह—गोपीचन्द भरथरी के	
1066	13767 (5) 6	,, ,	
1067	14073 (4–5)	,, ,,	
1068	14741 (18)	,, ,,	
1069	15069 (2) 1–17	,, गोवर्द्धन पूजा-कीर्तन के	सूरदास, परमानन्द नन्ददास, विट्ठल, जनदयाल, कुंभनदास, हरिदास, लालदास रामदास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविन्दप्रभु, विष्णुदास, आसकरन, कृष्णदास, वल्लभ
1070	15069 (3)	,, गोवर्द्धन पूजा के	सूरदास
1071	14738 (13) 1–2	,, ग्वाल के	परमानन्द, सूरदास
1072	13490 (23)	,, ग्वाल के	,, ,,
1073	13490 (16)	,, घैया (माखन) के	,, ,,
1074	13490 (22)	,, चदा के	,, ,,
1075	15069 (2) 1–17	,, चोपड़-कीर्तन के	विट्ठल

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×10 5 10; 18	16–22	पूर्ण	1842	
16 5×11 5 7, 18	63–65	,,	20 वी श	
15 5×10 9, 18	282–288	,,	19 वी श.	
13 5×10 5 11, 22	307–310	,	,,	पत्राङ्क 310-314 पर छीतमदास कृत जखडी है ।
20×13 5 16; 14	26–90	,,	,	पत्राङ्क 56–57 अप्राप्त
20×13 5 16, 14	91–107	,,	,,	
16 5×13 5 12, 20	42–43	,,	,,	रागबद्ध
25 5×16 5 22, 19	43 वा	,,	,,	रागवद्ध
25 5×16 5 22, 19	38–39	,,	,,	रागबद्ध
25 5×16 5 22, 19	42–43	,	,,	रागबद्ध
20×13 5 16, 14	121–125	,,	,,	रागवद्ध, पत्राङ्क 111–120 अप्राप्त

क्रमाक एव विषय	ग्रन्याक	ग्रन्य-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1076	13490 (28) 1–9	पदसग्रह–छाक के	परमानन्द, ऋषिकेसव, स्यामदास चतुर्भुजदास, विट्ठल, गोविन्दप्रभु, कृष्णदास, आसकरन, सूरदास
1077	14046 (11) 1–4	" छाक के	सूरदाम, जनभगवान, रामदास, परमानन्द
1078	14738 (20) 1–4	" छाक के	परमानन्द, जनभगवान, रामदास, चतुर्भुजदास
1079	14738 (4) 1–5	" जगायवे के	चतुर्भुजदास, परमानन्द, आसकरन सूरदास, नन्ददास
1080	13490 (2) 1–3	" जमुनाजी के	सूरदास, परमानन्द, छीतस्वामी
1081	14043 (18)	" झगडो	
1082	14073 (2)	" ठीकरीनाथ के	ठीकरीनाथ
1083	12699 (5)	" डोल के	
1084	14738 (7) 1–5	" दधिमथन के	गोविन्दप्रभु, आसकरन, चतुर्भुज, सूरदास, नन्ददास
1085	13490 (20)	" दधिमथन के	सूरदास, गोविन्दप्रभु
1086	14738 (28)	" दान के	सूरदास
1087	13490 (25)	" दान के	कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, विट्ठल

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5×16 5 22, 19	55–59	पूर्ण	19 वी श.	रागबद्ध
15.5×12 5 11, 16	52–54	"	"	
16 5×13 5 12, 20	54–56	"	"	रागबद्ध
16 5×13 5 12, 20	10–18	"	"	रागबद्ध
25 5×16 5 22, 19	18–19	"	"	रागबद्ध
24×16 5 12, 28	15–16	"	गु. 1912	
15 5×10 9; 18	271–272	"	19 वी श	
25×14 17, 12	31 वा	"	"	
16 5×13 5 12, 20	23–25	"	"	
25 5×16 5 22, 19	40–41	"	"	रागवद्ध
16 5×13 5 12, 20	70–71	"	"	
25 5×16 5 22, 19	44–45	"	"	रागवद्ध

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1088	13490 (15)	पदसंग्रह–दामोदर-लीला के	सूरदास
1089	13490 (4)	,, दुहिवे के	कुम्भनदास, परमानन्द
1090	14738 (35)	,, दूध के	परमानन्द, आसकरन, रसिक, सूरदास
1091	14071 (5)	,, धोल के	नरसी
1092	14046 (6) 1–4	,, नित्य के	छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, सूरदास, परमानन्द
1093	13490 (1) 1–9	,, ,,	नंददास, द्वारकेश रामदास, परमानन्द, कृष्णदास, रसिकदास, सूरदास, चतुर्भुजदास, गोविन्दप्रभु
1094	13490 (1) 10–15	,, ,,	दामोदर भगवान, गोपालदास, केसोदास, छीतस्वामी, हितहरिवंश
1095	12699 (4) 1–3	,, विहार के	दामोदर, माधोदास नागरीदास
1096	14738 (1)	,, ,,	हरिदास, परमानन्द, व्यास, कृष्णदास, रसिकदास, नंददास द्वारिकेश, जगन्नाथ, माधोदास, छीतस्वामी
1097	14043 (17)	,, पन्द्रह-तिथि के	नरसी
1098	14738 (17)	,, पनघट के	परमानन्द, सूरदास, कृष्णदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5×16 5 22; 19	38 वा	पूर्ण	19 वी श.	रागबद्ध
25.5×16.5 22; 19	20 वा	"	,,	रागबद्ध
16 5×13.5 12; 20	83–84	"	,,	रागबद्ध
17×18 11, 17	81 वाँ	"	20 वी श	
15.5×12 5 11, 16	35–39	"	19 वी श	
25 5×16 5 22, 19	3–18	,	,,	रागबद्ध, पत्राङ्क 1–2 अप्राप्त
25.5×16 5 22, 19	9, 11,13, 15,	"	"	रागबद्ध
25×14 17, 12	24–30	,,	"	
16 5×13 5 12, 20	1–4	"	,,	रागबद्ध
24×16 5 12; 28	14–15	,,	गु 1912	
16 5×13 5 12; 20	47–48, 63–64	"	19 वी श.	रागबद्ध

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1099	14738 (14)	पदसंग्रह-पलना के	सूरदास, परमानन्द चतुर्भुजदास, कृष्णदास
1100	13490 (35)	" पोढने के	कृष्णदास
1101	14046 (18)	" "	परमानन्द, आसकरन, सूरदास
1102	14043 (29)	" प्रभाती के	सूरदास
1103	13490 (7)	" फल-फुनेरी के	गोविन्दप्रभु, परमानन्द
1104	13490 (13)	" बलदेवजी के खिजाने के	सूरदास
1105	12699 (1)	" बसंत के	हरिदास, कृष्णदास हितहरिवंश
1106	14071 (4)	" बाँसुरी के	सूरदास
1107	15238 (2)	" "	सूरदास
1108	14909 (2)	" बारामासी के	सूरदास, भवानीदास
1109	13490 (21) 1-4	" बाल-लीला के	नंददास, परमानन्द, सूरदास, चतुर्भुजदास
1110	14738 (15) 1-3	" "	कुम्भनदास, सूरदास, परमानन्द
1111	14738 (34) 1-6	" बीड़ी (पान) के	कुम्भनदास, लछीराम

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5×12 5 12, 20	43–44	पूर्ण	19 वी श.	रागबद्ध
25 5×16 5 22, 19	78 वा	,,	,,	रागबद्ध, अन्तिम पत्र पर द्वारिकेश व विट्ठल के पद हैं।
15 5×12 5 10, 10	81–83	,,	,,	
24×16 5 14, 38	61–63	,,	गु 1912	
25 5×16.5 22, 19	23 वां	,,	19 वी श	रागबद्ध
25 5×16 5 22, 19	37 वा	,,	,,	रागबद्ध
25×14 17, 12	3–8	,,	,,	प्रथम दो पत्र अप्राप्त
17×18 11, 17	80–81	,,	20 वी श.	
14 5×13 5 10, 12	1–3	,,	19 वीं श	
8 5×12 8, 16	55-60	,,	,,	
25 5×16 5 22, 19	41–42	,,	,,	रागवद्ध
16 5×13 5 12, 20	44–45	,,	,,	रागवद्ध
16 5×13 5 12, 20	84 वा	,,	,,	रागवद्ध

क्रमांक एव विपय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1112	14738 (34) 1-6	पदसग्रह-व्यालू के	परमानन्द, सूरदास, मुरलीदास, जगजीवन, आसकरन, स्यामदास
1113	13767 (5) 8	' भक्त-विरुदावली	जनगोपाल
1114	14073 (3)	" भरथरी की महिमा के	कालू
1115	15069 (6)	" भाईदूज	आसकरन, रामदास
1116	14738 (25) 1-4	" भोग के	गोविन्दप्रभु परमानन्द, कुम्भनदास, रामदास
1117	13490 (30)	" भोग सरते समय के	परमानन्द, जगजीवन, छीतस्वामी
1118	13490 (29)	" भोजन के	परमानन्द
1119	13490 (8)	" मगला के	चतुर्भुजदास, सूरदास, परमानन्द, गदाधर, जनभगवान
1120	14738 (16)	" माखन-चोरी के	सूरदास, परमानन्द
1121	13490 (17)	" माखन-चोरी के	सूरदास, परमानन्द
1122	13490 (14)	" माटी के	सूरदास
1123	14046 (17) 1-3	" मान के	सूरदास, नददास, कृष्णदास
1124	14738 (38-39) 1-6	" मान के	कृष्णदास, गोविन्दप्रभु, कुम्भनदास चतुर्भुजदास, सूरदास, परमानन्द

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5×13 5 12, 20	80-83	पूर्ण	19 वी श.	रागबद्ध
16 5×11 5 7, 18	61-62, 126, 132	,,	,,	
15 5×10 9, 18	277-282	,,	,,	
20×13 5 17; 19	152 वा	,,	,	
16 5×13 5 12, 20	65-66	,,	,	रागबद्ध
25 5×16 5 22, 19	59-60	,,	,,	रागबद्ध
25 5×16.5 22, 19	59 वा	,,	,,	रागबद्ध
25 5×16 5 22, 19	3 रा	,,	,,	रागबद्ध
16 5×13 5 12, 20	46-47	,,	,,	रागबद्ध
25.5×16 5 22, 19	39 वा	,,	,,	रागबद्ध
25 5×16.5 22, 19	37-38	,,	,,	रागबद्ध
15 5×12.5 10, 10	77-80	,,	,,	
16 5×13.5 12; 20	89-93	,,	,,	रागबद्ध

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1025	14738 (40) 1-6	पदसंग्रह-मिलाप के	रसिकदास, कृष्णदास, नंददास आसकरन, कुम्भनदास, सूरदास
1026	14738 (2) 1-6	" यमुनाजी के	परमानन्द, छीतस्वामी, रसिकदास, सूरदास, गोविन्दप्रभु, नंददास
1027	15074 (3) 1-7	" रथ के	गोविन्दप्रभु, कृष्णदास, माधौदास, सूरदास, कुम्भनदास, नंददास, विट्ठल
1028	15074 (2) 1-3	" राखी के	गोविन्दप्रभु, कुम्भनदास, आसकरन
1029	13767 (7) 1-13	" रागकल्याण के	दादूदयाल, महीधर, गो०तुलसीदास, सूरदास, गरीबदास, हुसैन, बसंत, कबीर, जगन्नाथ, रज्जब, सुन्दरदास, जनकिसोर, नानक
1030	13767 (9) 1-5	" राग कालगडा के	मीरा, नरसी, बखनो, नामदेव, कबीर
1031	13767 (4) 1-13	" (सबद) राग काफी के	अग्रदास, मीरा, शाहहुसैन, कबीर, रज्जब, सुन्दरदास, सीतलपुरी, बखतावर, बखना, तुरसी, जोगीदास, सूरदास, केवलराम, नागरीदास, पेम
1032	14043 (13)	" राग कालेरो के	बगतभारती
1033	13767 (10) 1-2	" राग खट के	चरनदास, नरसी
1034	13767 (6) 1-5	" राग खमाइची के	मलूकदास, मीरा, शाहहुसैन सुन्दरविरहन, बगतावर

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5×13 5 12, 20	93–96	पूर्ण	19 वी श	राबगद्ध
16 5×13 5 12, 20	4–9	,,	,,	रागबद्ध
17 5×11 5 8, 12	54–71	,,	,,	रागबद्ध
17 5×11 5 8, 12	52–54	,,	,,	रागबद्ध
16 5×11.5 7, 18	99–112	,,	20 वी श	
16 5×11 5 7, 18	132-137	,,	,,	
16 5×11 5 7, 18	35–56, 138 वा	,,	,,	
24×16 5 12, 30	46 वा	,,	1912	
16 5×11 5 7, 18	136 वा	,,	20 वी श	
16 5×11 5 7, 18	96–99	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1135	14043 (22)	पदसंग्रह–राग गरवी	
1136	14046 (5)	" राग गौडी के	नंददास
1137	13767 (11) 1-2	" राग चरचरी के	नरसी, कबीर
1138	13767 (2) 1-12	" (सबद) राग बसंत के	खीवा, दादू, जनबीठल, कबीर जगजीवन, जगभगतो, जनगोपाल नानक सुन्दर; बखनो, मुकंद हरदास
1139	14044 (4)	" राग बिलावल के	
1140	13767 (12) 1-2	" राग भैरवी के	मीरा, कबीर
1141	15074 (2) 1-19	" राग मलार (कीर्तन) के	नंददास, कुम्भनदास, तानसेन छीतस्वामी, कृष्णदास, भगवान व्यास, हरिदास, हितहरिवंश सूरदास, चत्रभुज, आनन्दघन नागरीदास, कल्याण, रूपसिंह गोविन्दप्रभु, मदनराय, बिहारीदास परमानन्द
1142	13767 (5) 1-15	" राग सोरठ के	बखतावर, कबीर, मीरा, दास नैनोदास, ब्रजनिधि, बखना, सूरदास, सुन्दरदास, नामदेव रज्जब, काजीमहमद, हरिदास हुसैन, जनतुरसी
1143	14043 (23) 1-4	" "	सुखराम, मीरां पूरणदास, दादू

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×16 5 17, 28	34 वा	पूर्ण	1912	
15 5×12.5 12, 16	34 वा	"	19 वी श	
16 5×11 5 7, 18	138, 139	"	20 वी श.	
16 5×11 5 7, 18	1–31	,	"	1–2, 2–3, 5, 6–8, 30–31 6, 8–10, 10, 11, 12, 13 29–30
22×13 5 24, 12	1–6	"	19 वी श	'गोद बैठ गोपाल कहति व्रजराजसो' की तुक पर 40 पद हैं।
16×11 5 7, 18	140-141	"	20 वी श	
17 5×11 5 9, 12	1–52	"	19 वी श	
16 5×11 5 7, 18	56–96	"	20 वी श	56,72,76,78, 84–86, 57–60 66; 67–69,71,75–76, 78–81, 86–87, 61–63,65–66, 70, 89, 73,76–77, 90–91,74, 82–84, 87–89 90, 91, 92, 95–96 93, 93–94
24×16 5 17, 40	35, 51 52 वा	"	1912	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1144	13767 (3) 1-5	पदसंग्रह-राग होरी के	कबीर, दादू, सूरदास, लछीराम मीरा, वल्लभदास, नारायणदास जनभगतो, चैन, सुखजीवन
1145	13490 (32) 1-16	" राजभोग के	परमानन्द, तानसेन, सूरदास गोविन्दप्रभु,नागरीदास, कृष्णदास हरिदास,चतुर्भुजदास, कुम्भनदास विट्ठल, छीतस्वामी, हितहरिवंश नददास, रामदास, जगजीवन आसकरन
1146	14738 (19) 1-3	" "	सूरदास, परमानन्द, गोविन्दप्रभु
1147	14046 (10)	" "	परमानन्द, सूरदास
1148	14073 (2) 2	" रामचन्द्रजी के	रघुनाथ
1149	13490 (19)	" लगन के	परमानन्द
1150	14043 (21)	" लावणी के	द्यालवाल दास
1151	14043 (23)	" वंशी के	
1152	13503 (5) 17	" वधावा रा	सीतलअलि
1153	14043 (15) 1-8	" "	सूरतराम, नरसी, सुखसागर कान्हड, तुलसीदास, मीरां कबीरदास, सुखराम

माप से मी मे, पत्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पत्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5×11 5 7, 18	13–99	पूर्ण	20 वी श	13–14, 16,21,23, 31-32, 15-16, 24–27, 17–18, 18–19 19, 33, 20, 99, 22 28, 29 वा
25 5×16 5 22, 19	61–75 64 वा 67, 69, 70, 71, 72, 73 74 वां	,,	19 वी श	रागबद्ध
16 5×13 5 12, 20	50–54	,,	,,	रागबद्ध
15 5×12 5 11, 16	48-51	,,	,,	47, 49,51, 48–50
15 5×10 9, 18	272–273	,,	,,	
22 5×16 5 22, 19	40 वा	,,	,,	रागबद्ध
24×16 5 11, 22	25–27 31 वा	,,	गु 1912	
24×16 5 11, 22	34 वा	,,	,	
23 5×15 5 15, 24	14 वा	,,	19 वी श	रागबद्ध
24×16 5 13, 26	6–44	,,	गु 1912	6, 6, 13, 14, 13, 28, 28, 37–38, 28 वाँ 29, 44, 37 वा

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1154	14043 (15) 9–15	पदसंग्रह–वधावा के	बाईराना, रामेश्वरदास, हस्तराम ग्वालवाल, लालदास, प्रमा, अज्ञात
1155	13490 (31, 33)	" वीरी के	कृष्णदास, विट्ठलदास, मुरारिदास परमानन्द, लछीराम, गोविन्दप्रभु कुम्भनदास
1156	12699 (3)	" व्रज-खेल के (धमाल)	दामोदर
1157	14738 (21) 1–3	" व्रज भक्तन के घर भोजन के	सूरदास, परमानन्द, आसकरन्द
1158	13490 (6) 1–4	" व्रतचर्या के	सूरदास, गोविन्दप्रभु, परमानन्द विट्ठलदास
1159	14738 (10) 1–2	" "	परमानन्द, सूरदास
1160	13490 (24) 1–3	" व्याह के	नंददास, भगवान, परमानन्द
1161	14738 (29)	" शोभा–वर्णन के	सूरदास
1162	14046 (14) 1–4	" सज्या के	परमानन्द, गोविन्दप्रभु चतुर्भुजदास, सूरदास
1163	14738 (37) 1–6	" सन्मुख के	लछीराम, परमानन्द, नन्ददास सूरदास, गोविन्दप्रभु कुम्भनदास
1164	14738 (12) 1–9	" सिंगार के	परमानन्द, नन्ददास, जनगोविन्द दामोदर, भगवान, छीतस्वामी, रामदास, चतुर्भुज, विष्णुदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×16 5 14, 40	39 वा 44–45, 52 वा	पूर्ण	गु 1912–	
25 5×16 5 22, 19	60 वा 75 वा	,,	19 वी श	रागवद्ध
		,,		
25×14 17, 12	22–24	,,	,,	
16 5×13 5 12, 20	56–58	,,	,,	रागवद्ध
25 5×16 5 22, 19	21–23	,,	,,	रागबद्ध
16 5×13 5 12, 20	34–36	,,	,,	रागबद्ध
25 5×16 5 22, 19	44 वा	,,	,,	रागबद्ध
16 5×13 5 12, 20	71 वा	,,	19 वी श	रागबद्ध
15 5×12 5 10, 10	64,66,65 67 वा	,,	,,	रागवद्ध
16 5×13 5 12, 20	84–89	,,	,,	रागबद्ध
16.5×13 5 12, 20	37–42	,,	,,	रागबद्ध

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1165	13490 (10-11)	पदसग्रह-सिगार के समय के	चतुर्भुजदास, गोविन्दप्रभु नूरदास कुम्भनदास, कृष्णदास, नन्ददास विष्णुदास, छीतस्वामी सूरदास, नन्ददास, परमानन्द गजाधर, मानदास, जगन्नाथ स्यामदास, हितहरिवंश, कुम्भनदास
1166	13490 (12) 1–7	" सिगार निरखते समय के	सूरदास, परमानन्द, रामदास, चतुर्भुजदास, नददास, कृष्णदास कुम्भनदास
1167	14046 (9) 1–2	" सिंगार के	सूरदास, परमानन्द
1168	13490 (26) 1–5	" सीतकाल के (भोजन के)	परमानन्द, कुम्भनदास, विट्ठलदास सूरदाम, नददास
1169	13490 (27) 1–13	" सीतकाल के	परमानन्द, कुम्भनदास, हितहरिवश नददास, सूरदास, कृष्णदास, गोविन्दप्रभु, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, हरिदास, मुरारिदास ब्रह्मदास तानसेन
1170	14046 (15) 1–6	" सेन भोग के	सूरदास, गोविन्दप्रभु, आसकरन परमानन्द, रसिकदास, जनकल्याण
1171	13490 (34) 1–7	" सेन समय के	नददास, गोविन्दप्रभु, परमानन्द कृष्णदास, तानसेन, सूरदास कुम्भनदास
1172	14738 (11)	" स्नान के	सूरदास, छीतस्वामी

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5×16 5 22; 19	25–28, 28–31	पूर्ण	19 वी श	रागवद्ध
25 5×16.5 22, 19	32–36	,,	,,	रागवद्ध
15 5×12 5 11, 16	46–47	,,	,,	
25 5×16.5 22, 19	45–48	,,	,,	रागवद्ध
25.5×16 5 22, 19	48–55	,,	,,	
15 5×12 5 10; 10	68–72	,,	,,	
25 5×16 5 22, 19	75–78	,,	,,	रागवद्ध
16 5×13.5 12, 20	36–37	,,	,,	रागवद्ध

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकारादि
1173	14359 (1) 1-5	स्फुट-पद-संग्रह	जनहरिदास, रामदास, कुशानन्द तुरसी, मानदास
1174	14068 (10) 1-27	,,	रामानन्द, कमाल, कृष्णानन्द तुरसी, मलूकदास, परसराम परमानन्द, जनहरिदास, चतरदास नापो, मुकन्ददास, गैबी, नैनूदास सूरदास पीपा, छीतमदास, नानक काजी मैहमद शेख वहाव, वाजीद नामदेव, जगजीवन, वेणी मछिन्द्रनाथ, जनसुन्दर कन्हीराम जनहरिराम
1175	14336 (13) 1-7	स्फुट-पद-संग्रहादि	वुधराव, कनीराम, पीथल, सूरदास, केसोदास, जतीअगरचन्द विहारीदास
1176	14357 (11) 1-3	,,	मूलचद, दासगुलाव, ऋषभदास
1177	14914 (51-52)	,,	जगराय, मीरा, नरसी
1178	14336 (8) 1-4	,,	तुलसीदास, मीरां, गंग, पीथल
1179	14661 (8)	,,	सूरदास आदि
1180	13503 (5) 18	स्फुट-पद-संग्रह (साखी)	
1181	14342 (12) 1-2	,,	नवल, जुगतराम

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14 5×11 15, 18	4–7	पूर्ण	19 वी श	प्रारम्भ के तीन पत्र अप्राप्त
15×14 19, 22	259 वा 259–260 260–261 261–262 262–264 265–266 267 वा 267–268 269 वा	”	”	
14×12.5 16, 20	129–139	”	”	कवित्त, सवैया छप्पय, दोहे आदि
16×12.5 14, 18	52–63	”	20 वी श	पत्राङ्क 55–56 पर 'भूषण वत्तीसी' है।
15.5×11 12, 20	202–203	”	18 वी श	जगराय कृत भवानीजीरी चर्या है। पत्राङ्क 203 पर धरमसी कृत ऋषभदेव स्तुति है। पत्राङ्क 199–201 अप्राप्त
14×12 5 15, 20	114–117	”	19 वी श	
14×11 5 19, 19	44–49	”	18 वी श	
23 5×15.5 15, 24	15 वा	”	19 वी श	पत्राङ्क 16 पर ढोरो (पशु) के उपचार-परक यन्त्र-तन्त्र हैं।
21×14 5 12, 14	78–95	”	”	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1182	14767 (2)	स्फुट पद-सग्रह (साखी)	
1183	14346 (2) 1-4	,,	जनहरिदास, किसनो, सूरदास परमानन्द
1184	14359 (5) 1-7	,,	श्यामदास, बुधानन्द, माधोदास कबीर, खेमदास, नामदेव, रैदास
1185	14359 (6) 1-7	,,	विक्रमदास, माधोदास, जनतुरसी कबीर, मीरा जनकालू, चतुर्भुजदास सूरदास, बुधानन्द, चरणदास लालदास, अग्रदास, गोविन्ददास हरिदास, दामोदर, नरसी, शाह?
1186	14359 (13)	स्फुट-पद-सग्रह	केवलदास, नददास लघुकेसो
1187	14359 (12) 1-3	,,	सुन्दरदास, वखना, सूरदास अग्रदास
1188	14363 (1) 1-3	,,	तुलसीदास, सूरदास, चन्द्रसखी
1189	14363 (3) 1-11	,,	जनसहज, मीराँ, सूरदास तुलसीदास, लवलीन, ललनासखी कबीर, रानाँवाई, नागरीदास बुधानन्द, अग्रदास
1190	15032 (3) 1-2	,,	चन्द्रसखी, बुधराव
1191	15074 (1) 1-6	,,	नददास, सूरदास, चतुर्भुजदास जनमाधो, गोविन्दप्रभु, विट्ठल
1192	15297 (1) 1-8	,,	विट्ठलदास, नददास, सूरदास गोविन्दप्रभु, रसिक, कृष्णदास धोंधी, माधोदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
27×17 15, 28	6–8	पूर्ण	19 वी श	रामभक्ति परक 16 पद है।
24×14 10, 24	17–65	,,	,,	लि क. भगत हरकिशन लि स्था जोधपुर
14 5×11 9, 14	33–44	,,	,,	रागबद्ध
14 5×11 10, 15	1–25	,,	,,	रागबद्ध
14 5×11 9, 18	65–69	,,	19 वी श	
14 5×11 9, 18	54–57	,,	,,	पत्राङ्क 58–62 पर कबीर परक प्रश्नोत्तर हैं एव पत्राङ्क 63–64 'मूठ काटण' रो मत्र है।
13×11 11, 15	5–6	,,	,,	
13×11 11, 16	17–32	,,	19 वी श	
16×11 13, 10	16–21	,,	19 वी श	
17 5×11 5 10, 16	1–8	,,	,,	
21×17 15, 14	1–19	,,	,,	सूरदास कृत सेवाफल के 50 पद हैं। रागबद्ध

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1193	15609 (1) 1-13	स्फुट-पद-सग्रह	कल्याण, माधोदास, नरसी त्रिलोचन, नापा, मीरां, रामानद तुलसी, परमानन्द, कबीर कृष्णदास, सदाराम, खेमदास
1194	15609 (5) 1-6		अग्रदास, नन्ददास, तुलसीदास मीरा, चतुर्भुजदास, जनमुरली
1195	15609 (3) 1-8		रामचन्द्र, अग्रदास, तुलसीदास सूरदास, हरिअलि, सुखसखी व्यास, परमानन्द
1196	15613 (13) 1-3		तुलसीदास, विष्णुदास, अग्रदास
1197	15613 (6) 1-2		सूरदास, व्यास
1198	15613 (18) 1-5		सूरदास, अग्रदास, गदाधर, व्यास ललितसखी
1199	15613 (15) 1-2		तुलसीदास, नंददास
1200	14351 (4) 1-9		संतदास, विष्णुदास, सूरदास कबीर, दासगोपाल, पुरुषोत्तमदास मीरां, देवा भगत, जनहरिदास
1201	14043 (26)	" (कवित्त-छप्पै)	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र-सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
19×15 16, 16	1–9	पूर्ण	गु 1789	अतिम 34 पत्रो पर 19–35 तक के पहाड़े हैं।
19×15 16, 16	26–32	,,	,,	
19×15 16, 16	11–15	,,	,,	
17 5×13 17, 30	32–38	,,	18 वी श.	
17 5×13 19, 30	7–9	,,	,,	पत्राङ्क 1–7 पर सस्कृत की कृतियां हैं। रागबद्ध
17 5×13 19, 30	52–59	,,	,,	अतिम पत्र पर गुसाई श्री रूपसनातम के ग्रन्थो का विवरण है।
17 5×13 13, 28	46–48	,,	,,	
14 5×11 10, 18	33–41	,,	19 वी श.	
24×16 5 12, 26	47 वा	,,	गु 1912	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1202	14434 (4) 1-10	स्फुट-पद-संग्रह	कविभारती, नंददास, सूरदास जनहरिया, तुलसीदास, कबीरदास भगवान, परमानन्द, मीरा कृष्णदास
1203	14371 (2) 1-4	स्फुट-पद-संग्रहादि	देवीदास, हंस, हरिराय, सूरदास
1204	13514 (5) 1-2	"	कबीरदास, मलूकदास
12C5	13494 (28) 1-3	"	द्यालवाल, रामदास, जनकालू
1206	13494 (18) 1-2	" (कुण्डलिया)	राघोदास, रामचरण
1207	14473 (4) 1-6	"	उर्जनदास शिष्य जनसुखदास मीरां, कबीर, विहारीदास नानगदास, लालदास
1208	14473 (11) 1-14	स्फुट-पद-संग्रह	कबीरदास, तुलसीदास, सुन्दरदास दास, जनजगी जनग्यानी, नामदेव देवादास, परसराम, अग्रदास सूरदास, प्रेमानद, श्रीभट केवलदास
1209	14403 (1-6)	"	नददास, सूरदास, परमानन्द लछीराम, गोविन्दप्रभु जनहरिया आदि

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×7 5 6, 12	47–72	पूर्ण	गु 1880	
22 5×15 5 18, 15	1–6	,,	19 वी श.	पत्राङ्क 1 पर सुन्दरदासजी कृत 'सवैया' के अगो का विवरण है । पत्राङ्क 6 पर एकश्लोकी-रामायण है । पत्राङ्क 7–10 पर हनुमत्कवच है ।
16×12 5 16, 12	21–24	,,	20 वी श.	
20×16 13, 20	151–152	,,	,,	
20×16 13; 20–16	102–104	,,	,,	
20×16 13, 16	38–43	,,	,,	
22 5×12 5 22, 10	115–133	,,	,,	रागबद्ध
22×16 16, 17	1–118	,,	,,	राग ताल बद्ध, पत्र अस्त-व्यस्त हैं ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1210	14474 (3) 1–22	स्फुट–पद–संग्रह	सूरदास, चन्द्रसखि, ग्यानदास मीरा, कबीर, रामसखी जनहरिदास, तुलसी, पदमातेली अग्रदास, सागरदास, कुम्भनदास दुल्हैराम, कान्हड़, कृष्णदास काजीमहमद, वालकदास रामचरण, रंगीलीसखी, तानसेन रूपदास, लालदास
1211	14434 (2) 1-14	”	हरिदास, सूरदास, अग्रदास तुलसीदास, विष्णुदास, कान्हड़ नागरीदास रूपरसिक भगवान सखी, परमानन्द, नरसी मीरां, रैदास, तानसेन
1212	14382 (1–8)	” (लीला)	सूरदास, परमानन्द, नंददास द्वारकेश, चतुर्भुजदास, गोविन्दप्रभु छीतस्वामी, कृष्णदास आदि
1213	14384 (1–15)	” ”	नंददास, कुम्भनदास, परमानन्द माधोदास, सूरदास, हरिदास, चतुर्भुजदास, गोकुलचंद तुलसीदास रसिकदास, छीतस्वामी, गोविन्दप्रभु कृष्णदास, गोपालदास, आसकरन
1214	14074 (1) 1–16	” ”	जनभगवान, परमानन्द, सूरदास देवीदास, रसिकदास, कृष्णदास नंददास, छीतस्वामी, दामोदर चतुर्भुजदास, नरसी, दास जगजीवन, गोविन्दप्रभु, रसनिधि कुम्भनदास आदि
1215	14388 (6) 1–4	”	सूरदास, मीरां, कबीर, लघुप्रह्लाद

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
19 5×14 5 18; 13	60–103	पूर्ण	1845	पत्राङ्क 60–61 पर 'अकफल-विचार' है।
11×7.5 6, 12	1–32	,,	गु. 1880	
18 5×14 12, 11	1–236	,,	1874	लि क. अर्जुनदास, रागबद्ध 460 पद हैं ।
15 5×14 14, 13	3–70	,,	19 वी श	प्रथम दो पत्र अप्राप्त, रागबद्ध
15 5×12 5 10, 20	4–333	,,	1829	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त, रागबद्ध
12 5×11 5 11, 14	1–12	,,	20 वी श.	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1216	14388 (4) 1-16	स्फुट-पद-सग्रह	कबीरदास, नैणदास, तुलसीदास नामदेव, मीरां, काजीमहमद वाजीद, देवादास, हरिदास, दीन जन प्रेमदास, अग्रदास, रामजन गरीवदास, सूरदास, नरसी
1217	14388 (8) 1-3	"	वखतावर, सूरदास, ठीकरीनाथ
1218	14388 (10) 1-6	"	मीरा,तुलसीदास,नरसी, कवीरदास विजयराम, रामदास
1219	14388 (12) 1-8	"	मीरा, रामचरण, जनहरिराम ललना सखी,कवीरदास,सुन्दरदास सग्रामदास, नरसी
1220	14342 (8) 1-2	"	देवा ब्राह्मण, सीयल
1221	15069 (1) 1-12	" (पर्वों के)	कुम्भनदास, द्वारकेश, कृष्णदास नददास, नागरीदास, परमानन्द चतुर्भुजदास, विष्णुदास, सूरदास विट्ठलप्रभु, रसिकप्रभु रामदास
1222	14715 (4) 1-2	"	रामचरण, रैदास आदि
1223	14741 (21) 1-9	"	नैनूदास, दास, सेवादास, कवीर नामदेव, पीपा, काजी महम्मद जनतुरसी, शाहहुसैन

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12 5×11.5 10, 12	1–38	पूर्ण	20 वी श	रागवद्ध
12 5×11.5 10, 12	23–27	,,	,,	
12 5×11 5 10, 12	31–42	,,	,,	
12 5×11 5 10, 12	63–84	,,	1939	लि क भरतदास साध, पत्राङ्क 71 पर 'रीस राठोडारी' आदि बातें हैं।, पत्राङ्क 79–83पर 'गोरखनाथजी की जखडी' है
21×14 5 15, 15	62–65	,,	19 वी श.	
20×13 5 16, 14	1-26	,,	,,	पत्राङ्क 18–23 अप्राप्त
9×6 5 5, 12	182–189	,,	,,	
13 5×10 5 11, 20	340–361	,,	,,	

क्रमाक एव विपय	ग्रन्याक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1224	14909 (2) 1-18	स्फुट-पद-सग्रह	कवीर, सूरदास, जनहरिदास मीरां, माधोदास, परसोत्तम तुलसीदास, देवादास, कृपासखी नृसिह, आनन्दघन, चन्द्रसखी नरसी, हुसैन, भूधर, दीन रामसखी, काजी महम्मद
1225	14909 (2) 1-10	"	संतदास, सूरदास, माधोदास तुलसीदास, मुरली, मीरां कवीरदास, काजी महमद, नरसी भवानीदास
1226	14909 (2) 1-4	"	मीरा, रामदास, दास, नैनोदास
1227	14909 (2) 1-16	"	वालकराम, व्रजानद, मीरां तुलसीदास, विष्णुदास, शिवदत्त आनन्दघन, जनतुरसी, जनहरिदास परमानन्द दीन, वसत, कवीरदास सूरदास, दयालसखी, चन्द्रसखी
1228	14909 (4) 1-24	"	छोगा, जनतुरसी, नागरीदास सूरदास, तुलसीदास, मीरा कवीरदास, हुसैन, गगादास म्दासुख, नामदेव, रूपदास माधोसुत, ललनासखी, चरणदास आनन्दघन, दादू, लघुदासो जनहरिदास, अग्रदास, सेवादास नामदेव, रैदास, नापा
1229	14373 (1) 1-3	"	तुलसी, हरीराम, रज्जव आदि
1230	14396 (2) 1-2	"	कवीरदास, जनहरिदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
8 5×12 8, 16	1–44	पूर्ण	19 वी श.	रागबद्ध, मीरा के पदों मे 'वर्गतावर' मीरा 'बडभागण' का प्रयोग हुआ है।
8 5×12 8, 16	44–55	,,	,,	रागबद्ध
8.5×12 8, 16	61–69	,,	,,	रागबद्ध
8 5×12 8, 16	74–112	,,	,,	रागबद्ध
8 5×12 8, 16	126–225	,,	,,	रागबद्ध
20×16 13, 16	1–14	,,	20 वी श.	
11×8 11, 18	1–16	,,	19 वी श.	लि. क. गुरु तिलोकसुन्दर, पदो से पूर्व परमानन्द कृत 'अम्बामाता की आरती' है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1231	14969 (2) 1-24	स्फुट–पद–सग्रह	कबीर, गोपालदास, खेतल, सूरदास रसिकनाथ, द्वारकेश, जनपारख तुलसीदास, मीरा, रामसखी बखतावर, जगन्नाथ, सीतलपुरी गैंस,तानसेन,चन्द्रसखी,ईश्वरलाल अनूप, ललनासखी, जिनदास परमानन्द, हुसैन, नरसी, चरनदास
1232	14373 (7)	"	कबीरदास, मीरा, तोलाराम सुखराम, प्रेमदास, जनदरिया सग्राम
1233	14371 (4) 1–3	"	नरहरिदास, हरिदास, अग्रदास
1234	14366 (3)	"	सूरदास, मुरलीधर, समन
1235	14389 (2) 1–5	"	नामदेव, नरसी, कबीरदास रामचरण जनमुरली
1236	13494 (21) 1–4	" (साखी कुण्डलिया)	सतदास घालवाल, रामचरण, रामजन
1237	13514 (3) 1–2	" (हरिजस)	कबीर अग्रदास
1238	13511 (37)	"	मीरा, परमानन्द, तुलसीदास वल्लभसखी, नरसी, दयाराम
1239	13509 (49)	"	
1240	13503 (5)	"	गोविन्द

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
19 5×14 12, 20	13–35, 39–51	पूर्ण	20 वी श.	लि क देवकरण सेवग, पत्राङ्क 10–11 अप्राप्त पत्राङ्क 1–9 पर हनुमन्नाटक की जगनाथ कृत टीका हैं।
20×16 15, 16	5–24	,,	,,	
22 5×15 5 14, 15	32–37	,,	19 वी श.	पत्राङ्क 10–31 अप्राप्त
22 5×16 12, 18	58–61	,,	18 वी श	पत्राङ्क 62–66 पर सप्तद्वीप परिमाण आदि प्रकीर्ण विगत है।
15×7 5 6, 15	17–46	,,	20 वी श	पत्राङ्क 25–28 पर जनमुरली कृत 'बारेमासी' है।
20×16 13; 20	119 वा 120 वा	,,	,,	
16×12 5 16, 12	9–11 12 वा	,,	,,	अगले पत्रो पर स्फुट कवित्त,तन्त्रादि है।
17×12 11, 16	133–139	,,	19 वी श.	
24×17 13; 28	74 वा	,,	,,	सर्वशक्तिमान-गुणवर्णन
23 5×15 5 15, 26	4 5	,,	,,	रागवद्ध

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1241	13494 (19) 1–13	स्फुट-पद–सग्रह (हरिजस)	रामदास द्यालवाल मलूकदास, सेवगराम कवीरदास परसराम वखना तुलसीदास पेम, राघोदास केवलदास, रामचरण, नानग
1242	14352 (2)	” ”	जैमलदास
1243	14352 (5)1–3	” ”	जानसायव, चतुर्भुजदास, गगाघर
1244	12699 (6)	पद-सग्रह–हितहरिवश स्तुति के	
1245	14738 (6) 1–5	” हिलग के	माघोदास, सूरदास, कुभनदास, कृष्णदास, चतुर्भुजदास
1246	13490 (5)1–4	”	नददास, सूरदास चतुर्भुजदास कुभनदास
1247	12699 (2) 1–8	” होरी के (घमाल)	हितहरिवश गोस्वामी विनैचद दामोदरस्वामी ध्रुवदास जयवल्लभ रूपलाल कृष्णदास अज्ञात
1248	14376 (3)1–5	,, होरी, वधावा आदि के	सूरदास, वुधानद, आशानद कृष्णदास, कवीर

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेप ज्ञातव्य
20×16 13, 20	104, 112,	पूर्ण	19 वी श	105, 110, 115
	105 वा			106, 108, 109, 112–114
	106 वा			
	108 वा			
	109 वा			
	110 वा			
	111,113वां			
13 5×10.5 8, 12	6–12			
13 5×10 5 8, 12	65–71	,,	,,	
25×14 17, 12	32–37	,,	,,	
16.5×13 5 12, 20	21–23	,,	,,	रागवद्ध
25 5×16 5 22, 19	20–21	,,	,,	
25×14 17, 12	8, 9	,,	,,	
	9, 10			
	10–13			
	13, 14			
	14 वा			
	15 वा			
	15, 16			
	17–21			
21 5×15.5 20, 18	28–33	,,		पत्राङ्क 31–33 पर 'वैष्णव गीता' हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1249	14043 (14) 1–10	पद-संग्रह—होरी के (धमाल)	जनकालू कबीरदास सेवगराम प्रतापसिंह चन्द्रसखी मीरा तुलसीदास टीकमदास रूपदास, सुखरामदास
1250	14043 (14)11-17	„ होरी के	गंगाधर गोविन्दराम मनसुखदास पोहकरराम जीवणदास जनहरिराम, ग्वालवाल
1251	14369 (7)	परसरामजी की वाणी	परसराम शिष्य रामदास
1252	14068 (17)	पातसाह-नामदेवरो झगडो	कबीरदास
1253	14475 (13)	पिसण-सिणगार	सेवादास
1254	14369 (9)	पीथारामजी की वाणी	पीथाराम शिष्य रामदास
1255	14741 (6)	पीपाजी की परची	अनन्तदास
1256	14366 (2)	„	„
1257	13480 (11)	„	„

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×16 5 13, 39	3, 49 3 30,36 3,5,6, 9 वा 9, 29 9–10, 10–11, 29 वां 30 वां	पूर्ण	1912	 18, 36 वा 32–33, 35 वा
24×16 5 19, 39	31 वा 33 वा 35 वा 36 वा 37 वा 50 वा	,,	,,	
22×15 16, 36	250–264	,,	19 वी श.	
15×14 12, 16	307 वा	अपूर्ण	,,	जीर्ण, अत मे फुटकर नुस्खे हैं।
19×15 5 14, 20	101–104	,,	20 वी श.	39 वे पद्य पर्यन्त, अतिम 9 पत्रो पर 'कर्मविपाक' है।
22×15 16, 36	267–272	पूर्ण	19 वी श	
13 5×10 5 11, 20	87–167	पूर्ण	19 वी श.	
22 5×16 13; 26	8–57	,,	1723	लि क गगाराम
17×14 13, 18	243–251	अपूर्ण	19 वी श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1258	14068 (9)	पीपाजी की वाणी	संत पीपा
1259	14968 (4)	पीर-मुरीद को संवाद	
1260	14071 (3)	पुरुषोत्तमजी (कृष्ण) के ख्याल	
1261	14369 (6)	पूरणदासजी की वांणी	पूरणदास शिष्य द्यालवाल (दयालजी)
1262	13765 (1)	प्रह्लादचरित्र	जनरैदास
1263	14047 (2)	"	जनगोपाल
1264	14068 (16)	"	"
1265	15033 (5)	प्रह्लादचरित्र	
1266	14482 (8)	"	जनगोपाल
1267	14741 (12)	"	"
1268	15099 (9)	"	"
1269	13497 (1)	" (बारामासी)	जनरैदास
1270	14043 (28)	प्रह्लादजी की लावणी	सेवादास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×14 19, 22	256–259	पूर्ण	19 वी श.	
19 5×14 12, 26	36–38	"	1891	लि क देवकरण अत मे 'राग–विहाग' का एक पद है।
17×18 11, 17	56–80	"	20 वी श	रागवद्ध
22×15 16, 36	239–250	"	19 वी श.	
22×16 19, 15	1–2	अपूर्ण	1780	लि क गुलाल लि स्था मेडता
13 5×12 15, 18	36–53	पूर्ण	19 वी श	लि स्था डूँगर-गाँव, हाडोती मे
15×14 19, 22	303–306	"	1845	लि. क रूपदास निरजनी लि स्था. गाँव कठौती
17×13 5 15, 20	25–26	अपूर्ण	19 वी श.	पत्राङ्क 23–24, 27 पर स्फुट गीत, कवित्त एव दोहे हैं।
24 5×12 35, 15	527–535	पूर्ण	गु 1844	
13 5×10 5 11, 20	230–253	"	19 वी श	
18×12 10, 18	335–354	"	गु 1898	
17 5×13.5 9; 20	2–5	अपूर्ण	19 वी श	
24×16 5 14, 32	55–57	"	1912	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1271	14837 (2)	प्रियाजी (राधा) के नाम	
1272	14364 (6)	वखतरामजी री वांणी	वखतराम
1273	12705 (2)	वारहमासी	लालदास
1274	14043 (16)	वारहमासो	तुलसीदास
1275	14417 (4)	वालकरामजी के कवित्त	वालकराम
1276	14352 (8)	वालणचरित्र	परसराम
1277	13498 (5)	वाल–लीला	माधौदास
1278	13789 (4)	वैनविलास	नागरीदास
1279	13339 (5)	व्रह्मनिरूपण	कव्रीरदास
1280	13747	व्रह्मसमाधि	जगनाथ शिष्य रामचरण
1281	14909 (1)	व्रह्मस्तुति	जनहरिदास
1282	14364 (3)	" आदि	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
29 5×22 5 28; 21	1 ला	पूर्ण	19 वी श	
13×11 10, 15	42–53	,,	,,	
17 5×11 5 10, 21	1–18	,,	19 वी श.	शोभन बार्डर, जीर्ण प्रारभ मे स्तुति-स्तोत्र (सस्कृत) एव अतिम पत्रो पर वशीकरण मत्र है।
16×11 14, 30	11–13	,,	1912	
14×10 10, 20	88–102	,,	,,	दादू से भेट का कवित्त पत्राङ्क 96 पर है।
13 5×10 5 10, 16	92–98	,,	गु 1921	
14 5×12 10, 24	128–133	अपूर्ण	1670	67 वे दोहे पर्यन्त
22×18 17, 26	157–158	पूर्ण	गु 1814	आगे 6 पत्रो पर स्फुट गीत, कवित्त सवैया तथा छीक विचार है।
20×14 12, 24	1–4	,,	19 वी श	
34×17 5 12, 34	1–15	,,	1927	कर्त्ता का जन्म स्थान ढूँढाड गत अजमेर सूबे मे सोडो, मालपुरे के पास।
8 5×12 8, 16	1–8	,,	19 वी श	
13×11 10, 14	4–17	अपूर्ण	,,	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1283	14340 (1)	भँवरगीत (भ्रमरगीत)	जनमोहन
1284	14391 (2)	"	"
1285	13737 (3)	" सचित्र	"
1286	13494 (30)	भक्तमाल	रामदास
1287	14373 (3)	"	जनसुखिया
1288	14369 (1)	"	रामदास
1289	14766 (1)	भक्तमाल	नारायण दास (नाभादास)
1290	15254	" भक्तिरसबोधिनी टीका युक्त	मू नारायणदास, टी प्रियादास
1291	15093 (2)	" "	" "
1292	14256	" "	, "
1293	14460	" "	" "

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×14 9; 24	8–16	अपूर्ण	19 वी श.	पत्राङ्क 1-7 अप्राप्त, पत्राङ्क 16-17 पर मानदास कृत 'गोपीचद' है। लि क हरकिशन लि स्था जोधपुर
12×10 10, 14	1–16	पूर्ण	1810	लि क खेतसी प्रोहित लि स्था विक्रमनगर अगले पत्रो पर 'कर्मविपाक गीता' सस्कृत मे है।
21 5×14.5 11; 24	50–64	,,	1799	चित्र सख्या–4 रेखा चित्र-4 पत्राङ्क 55 वा त्रुटित
20×16 13; 20	154–169	,	19 वी श	
20×16 13, 16	21–38	,,	20 वी श	
22×15 16, 36	167–172	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 171 वा अप्राप्त पत्र अस्त-व्यस्त
16×11 10, 22	1–55	,,	गु 1763	अतिमाश अप्राप्त, जीर्ण प्रति
21 5×11 5 11, 36	1–156	,,	19 वी श	पत्राङ्क 21,22 28,29,68,106–109, 127,128,131–135,137–140, 143, 145,147–150, 154, 156 अप्राप्त
17 5×16 5 13, 18	1–232	पूर्ण	1829	टी र का 1769 लि क. गोपालदास भट्ट
30×15 5 14, 38	1–98	अपूर्ण	19 वी श	अतिमाश अप्राप्त
29×11 12; 44	1–118	पूर्ण	,,	सवत् 1792 की प्रति से प्रतिलिपित लि क स्यामदास निरजनी

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1294	14960 (5)	भक्तमाल भक्तिरसबोधिनी टीका युक्त	मू नारायणदास, टी प्रियादास
1295	14802	भक्तमाल भक्तिरसबोधिनी टीका युक्त	मू. नारायणदास टी प्रियादास टिप्पण-वैष्णवदास
1296	14459	भक्तमाल सजुक्ति टीका	मू नारायणदास टी. बालकराम
1297	14473 (3)	भक्त-विरुदावली	मलूकदास
1298	14043 (27)	भक्त-विरुदावली	दास (अमरदास)
1299	14359 (8)	भक्त-विरुदावली (भक्त-वत्सलताई को अंग)	" "
1300	14909 (2)	भक्ति-विरुदावली	भवानीदास
1301	14043 (4)	भक्तिजोग	रामानन्द
1302	13746 (4)	भक्ति-पतिव्रत वर्णन, उपदेश चिंतामणि	रामसजन शिष्य रामचरणदास
1303	14391 (4)	भक्तिभावती	गैसानन्द शिष्य अनन्तानन्द
1304	15101 (3)	भक्तिभावनी	" "
1305	15613 (10)	भक्तिमार्गसुख	लालदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×15 21, 19	205–334	पूर्ण	1867	टी र का 1769 लि क साधूराम लि स्था विक्रमनगर
31×15 5 14, 38/45	1–241	”	19 वी श	टी र का 1769
31×15 5 12, 38	2-421	अपूर्ण	1932	टी र का 1800 लि क बुदहीराम लि स्था भैरू दै, प्रथम पत्र अप्राप्त
22 5×12 5 22, 10	24–26, 37–40	”	19 वी श	पत्राङ्क 27–36 अप्राप्त
24×16 5 14, 34	54–55	”	गु 1972	
14 5×11 10, 18	46–53	पूर्ण	19 वी श	अत मे ‘झाडे’ का मत्र है ।
8 5×12 8, 16	69–74	”	”	
24 5×17 11, 24	6-7	”	गु 1910	
14×12 17, 15	146–153	”	20 वी श	
12×10 9, 13	107–168	अपूर्ण	गु 1811	अतिमाश अपूर्ण
23×14 20, 14	1–22	पूर्ण	1817	र का 1609, पत्र त्रुटित
17 5×13 21, 34	21–25	”	18 वी श	पत्राङ्क 25-27 पर स्फुट-पद व 27-30 पर ‘एकादशी नाम’ आदि ज्ञातव्य हैं ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1306	15297 (4)	भगवदी (भक्त) के लक्षण	
1307	14359 (16)	भयचितावणी	लालदास
1308	14741 (15)	"	"
1309	13508 (5)	भरथरीजी की बारे-मासी	
1310	14383 (1)	" "	लालदास
1311	14741 (17)	" की महिमा के पद	
1312	13744	भरथरीवैराग्य	हरिदास
1313	14716 (8)	भरथरीजी की सब्दी	
13:4	13480 (4)	भीखबावनी	भीखजन
1315	14043 (25)	भुजगी छन्द	
1316	13494 (12)	भ्रमतोड	सुखराम
1317	13494 (26)	भ्रमविधूमण को अग आदि	रामदास
1318	14046 (2)	मणिवंध ग्रन्थनी टीका	

माप से मी. मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×16 5 14, 12	15–22	पूर्ण	20 वी श	
14 5×11 9, 18	70–82	,,	19 वी श	
13 5×10 5 11, 22	278–287	,,	,,	
12×6 6, 13	3–11	,,	1898	लि क नथमल, लि स्था टाटगढ प्रारम्भ व अत मे औषधी सग्रह है ।
16×12 5 9, 18	1–4	,,	1928	अत मे 'सनिश्चरजी की कथा' का प्रारम्भ मात्र है ।
13 5×10 5 11, 20	303–307	,,	19 वी श	लि क डिगबरदास कर्त्ता जन्म स्थान—वाँसवरेली
17×13 5 15, 42	1–17	,,	1864	लि क साध माधवदास झामापंथी लि स्था सवल, फतैपुर परगना
21×14 5 25, 21	425–427	,,	गु 1826	अत मे चोरंगीनाथ की सबदी के 4 पद हैं ।
17×14 15 22	265-275	,,	19 वी श	
24×16 5 14, 40	41–42	,,	1912	मृग, कांग, खर, मुर्ग, श्वान आदि का सवाद है ।
20×16 11, 20	61–62	,,	20 वी श	
20×16 13, 20	139–148	,,	19 वी श	पत्राङ्क 149–150 पर स्फुट गीत व दोहे हैं ।
15 5×12 5 11, 18	10–20	,,	,,	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1319	13494 (7)	मनराड	रामदास
1320	14405 (2)	मनहठ	जनहरिदास
1321	14837 (3)	माधौ-विदग्ध	रूपसनातन
1322	14043 (2)	मानसीसेवा	रामानन्द
1323	14364 (1)	”	”
1324	13494 (17)	माला को अग	रामदास
1325	14715 (3)	मुरलीरामजी की वाणी	जनमुरसी
1326	13494 (3)	मूलपुराण	रामदास
1327	14737 (2)	मूलपुरुष	द्वारिकेश
1328	14479 (2)	मोतीरामजी की वाणी	मोतीराम
1329	13508 (4)	मोरधजरी कथा	सूरदास
1330	14351 (1)	मोहमरद राजारी कथा	जगन्नाथ
1331	14411 (5)	”	”

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
20×16 13, 20	39–43	पूर्ण	19 वी श.	
16×10 5 10, 16	19–22	,,	,,	
29.5×22 5 29, 22	1–21	अपूर्ण	,	पत्राङ्क 2–6 अप्राप्त
24 5×17 11, 24	3–4	पूर्ण	गु 1910	
13×11 10, 14	1–3	,,	19 वी श	प्रारभ के पत्रो पर कबीर व मोतीराम के पद हैं।
20×16 13, 20	96–100	,,	,,	पत्राङ्क 101 पर जनतुरसी कृत 'गुरु महिमा' का पद है।
9×6 5 5, 12	116–182	,,	,,	
20×16 13, 20	20–22	,,	,,	
16×12 5 9, 18	22–31	,,	,,	
15×10 8, 16	26–186	,,	गु 1898	
12×6 6, 10	1–22	,,	1935	
14 5×11 10, 24	3–18	,	19 वी श	प्रारभ मे सतदास कृत 'चितावणी' तथा 'पीरू शकुनावली' है।
15 5×10 5 10, 18	71–79	,,	गु 1842	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1332	14423 (6)	मोहमरद राजारी कथा	जगन्नाथ
1333	14482 (10)	"	"
1334	14741 (13)	"	"
1335	15099 (5)	"	"
1336	14914 (47)	योगपावडी	गरीबगिरि
1337	15047	रघुनाथलीला	माधवदास शिष्य जगन्नाथ
1338	13749 (3)	रज्जबजी का कवित्त (अगबद्ध)	रज्जब
1339	14837 (4)	रसमुक्तावली	हितध्रुव (ध्रुवदास)
1340	14452 (2)	राधा-कृष्ण व्रज-विहार लीला सचित्र	
1341	15609 (2)	राधाजी को शृगार आभूषण	
1342	13497 (4)	रामचरणजी की लावणी	लवलीनराम शिष्य रामलोचन
1343	14389 (1)	" वाणी	रामचरण

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×11 10, 12	163–187	पूर्ण	20 वी श.	
24 5×12 32, 15	538–550	,,	गु 1844	र का 1776
13 5×10 5 11, 20	253–266	,,	19 वी श	
18×12 10, 18	159–172	,,	गु 1898	
15.5×11 13, 20	188–193	,,	18 वी श	
21 5×9 5 8, 27	1–26	,,	19 वी श.	लि क मँगनीराम
16 5×10 5 11, 24	500–521	,,	1847	लि क साध माणकदास, पत्र जीर्ण
29 5×22 5 29, 22	21–25	,,	1812	लि स्था. नागपुर
24 5×16 5 11, 16	12–77	,,	20 वी श	चित्र सख्या 102. लि क वल्लभदास लि स्था जोधपुर, पत्राङ्क 40 के स्थान पर 31 व 41 के बाद भी दो पत्रो पर गलत पत्राङ्क लगे हैं। अत मे 'तुलसी की कथा' अपूर्ण है ।
19×15 16, 16	9–11	,,	1789	लि क अमरा
17 5×13 5 9, 16	1–6	,	19 वीं श	
15×7 5 6, 15	1–17	अपूर्ण	20 वी श	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1344	14482 (2)	रामचरणजी की वाणी एव कृति-सग्रह	रामचरण
1345	14710 (2)	” ”	” स क नवलराम
1346	14711	” ”	”
1347	14713 (2)	” ”	”
1348	14714 (1)	” ”	”
1349	14715 (2)	रामचरणजी की वांणी	”
1350	15304	”	”
1351	14482 (4)	” की महिमा का सवद	देवादास
1352	13494 (10)	” के स्फुट कुण्डलिया रेखता	रामचरण
1353	13743	रामजन की वांणी	रामजन
1354	14713 (3)	” ”	”
1355	13337 (1)	रामदासजी का कृति-सग्रह	रामदास (जनरामा)
1356	14369 (2)	रामदासजी का कृति-सग्रह	रामदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5×12 35, 24	67–247	पूर्ण	गु 1844	
34 5×17 5 14, 38	64–287	,,	20 वी श	अतिम पत्र अप्राप्त
35×20 5 21, 40	1–66	,,	19 वी श	
13×6 5 7, 21	44–468	,,	1898	लि क सरणाराम लि स्था. पाली
10 5×8 7, 12	1–51	अपूर्ण	20 वी श	
9×6 5 5, 12	10–116	,,	19 वी श.	
26×12 10, 32	1–122	,,	20 वी श	
24 5×12 35, 15	252–264	पूर्ण	गु 1844	
20×16 13 20	52–54	अपूर्ण	19 वी श	
24 5×16 5 18, 32	1–100	पूर्ण	,,	
13×6.5 7, 21	468–484	,,	गु 1898	लि क सरणाराम लि स्था पाली
14×12 5 14, 22	261–381	अपूर्ण	1851	लि क परसराम, लि स्था मूडवा पत्राङ्क 296–298, 325–336, 361–370 अप्राप्त, जीर्ण
22×15 16, 36	172–207	पूर्ण	19 वी श.	23 कृतियाँ हैं ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1357	13494 (6)	रामदासजी की छुटकर वाणी	रामदास
1358	13494 (1)	,, ,,	,,
1359	14043 (7)	,, ,,	,,
1360	14433	,, वाणी	,,
1361	14364 (4)	,, ,,	,,
1362	14398 (1)	,, ,,	,,
1363	14779 (1)	,, ,,	,,
1364	14475 (4)	,, ,,	,,
1365	14398 (3)	,, ,	,,
1366	13770 (10)	,, साखियाँ	,,
1367	14369 (3)	,, साखी, रेखता, पद	,,
1368	13494 (8)	,, ,, छन्द भुजंगी	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
20×16 13, 20	30-39	अपूर्ण	19 वी श	
20×16 12, 17	1–10	,,	,,	
24 5×17 11; 24	17–20	,,	गु 1910	
11.5×8 5 8, 16	1–128	पूर्ण	20 वी श	
13×11 10, 10	17–32	अपूर्ण	19 वी श.	
10×8 5, 14	1–33	पूर्ण	गु 1922	
15×10 8, 16	2–26	,,	1898	
19×15 5 14, 20	26–32, 40–46	,,	20 वी श	
10×8 8, 14	5–16	,,	गु 1922	
10×9 9, 12	71–82	,,	1862	
22×15 16; 36	207–222	,,	19 वी श	
20×16 13, 20	43–45	,,	,,	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1369	13972 (4)	रामरत्न गीता	कुशलसिंह शिष्य गुरुदयाल
1370	13746 (3)	रामसजनजी की वाणी एव कृति-सग्रह	रामसजन शिष्य रामचरण
1371	14482 (9)	रामसागर	कबीरदास
1372	13497 (5)	रावण की लावणी	नवलीनराम शिष्य रामलोचन
1373	14463 (12)	-रासकीला	ईसरदास बारठ
1374	14068 (7)	रूपदासजी का पद	रूपदास
1375	14716 (13)	रैदासजी की परची	अनन्तदास
1376	14741 (10)	"	"
1377	13960 (3)	"	"
1378	14068 (8)	रैदासजी की वाणी	रैदास
1379	14396 (4)	रोमावली	गोरखनाथ

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×16 19; 18	1–34	पूर्ण	1887	अतिम पत्र पर श्री रामचन्द्र के राज्य-तिलक विषयक एक चित्र है। पत्राङ्क 1-6 पर 'पाण्डवगीता', 7–8 पर 'कर्मविपाक गीता' एव 8-10 पर गर्भ-गीता' सस्कृत मे हैं। लि क खीमजो छगनजी तिवाडी, कच्छ देशे, भुजनगर
14×12 18, 15	1–108	,,	20 वी श.	
24 5×12 32; 15	535–538	,,	गु 1844	
17 5×13 5 9, 16	6-7	,,	19 वी श.	
20×16 5 25, 24	121–127	,,	1764	लि क. जोगीदास
15×14 19, 22	242–244	,,	19 वी श.	
21×14 5 25, 22	575–582	,,	गु 1826	अत मे जगजीवनदास के स्फुट-पद हैं।
13 5×10 5 11, 20	199–222	,,	19 वी श	
14 5×10.5 9, 14	36–70	,,	,,	
15×14 19, 22	250–256	,,	,,	
11×8 11, 18	2–5	,,	,,	इसके बाद साधु के 91 लक्षरण हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1380	14741 (25)	लघुताग्रन्थ	पीपा
1381	13519 (6)	लहरवत्तीसी	
1382	13509 (9)	लावणी	
1383	13497 (2)	,, अष्टपदी	लवलीनराम शिष्य रामलोचन
1384	13514 (6)	वमेकवाररो नीसाणी	केसोदास गाडण
1385	13761 (1)	,,	,,
1386	13765 (7)	,,	,,
1387	14079 (10)	,,	,,
1388	14463 (14)	,,	,,
1389	14478 (4)	,,	,,
1390	13890 (5)	,,	,,
1391	15096 (1)	,,	,,
1392	14737 (1)	वन्नभाख्यान,	भाई गोपालदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13 5×10 5 11, 20	487–492	पूर्ण	19 वी श.	
22×17 21, 20	1–5	,,	,,	अत मे मल्ल कृत 'कलिजुग के कवित्त' है।
24×17 13; 26	76-77	,,	,,	
17 5×13 5 10, 16	5–8	,,	,,	
16×12 5 17, 12	24–45	अपूर्ण	20 वी श	पत्राङ्क 46-48 पर औषधी सग्रह है।
16×22 5 24, 20	1–10	पूर्ण	गु 1804 1855	जीर्ण, प्रारभ मे जैनतीर्थ माहात्म्य का कवित्त है।
22×16 17; 17	42–56	,,	1770	लि क मयाचन्द श्वेताम्बर, लि. स्था योधपुर
14×13.5 15, 18	45–64	,,	गु 1793	
20×16 5 25, 24	137–144	,,	1764	लि क जोगीदास
11 5×9 5 9, 15	388–423	,,	20 वी श	पत्राङ्क 424–429 पर 'गणेश-गोरख-गोष्ठी' है।
23×16 5 23, 24	36–48	,,	1827	लि स्था जोधपुर
20.5×15 5 16, 22	1–12	,,	1836	लि क छीतरमल मथेन, अत मे कवित्त एव सुभाषित पद्य हैं।
16×12 5 9, 18	1–22	,,	19 वी श	

क्रमांक एवं विवरण	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एवं टीकाकार
1393	14473 (9)	वाजींदजी की ग्ररिल्ल	वाजीद
1394	14423 (1)	विरह की अग	रामचरण
1395	14392 (2)	विवेक-चिनावणी	सुन्दरदास
1396	14362 (6)	विवेक-सागर	लच्छीराम
1397	15613 (16)	विरहमंजरी	नन्ददास
1398	15238 (1)	वृन्दावनलीला	वीरभद्र
1399	15218 (2)	वृन्दावनमत	ध्रुवदास
1400	14048 (5)	[illegible]	मनोहरदास
1401	14398 (4)	[illegible]	
1402	15207 (5)	[illegible]	हरिराम
1403	[illegible] (1)	,, सारार्थ	,,
1404	[illegible]	[illegible]	[illegible] ([illegible])
1405	[illegible]	,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22.5×12 5 22, 10	87–90	पूर्ण	19 वी श	
11×11 7, 9	1-4	अपूर्ण	20 वी श	पत्राङ्क 5 पर परसराम के कवित्त हैं।
11×9 5 7/12, 12/15	11–18	पूर्ण	,,	
16×11 11, 16	96–129	,,	18 वी श	
17.5×13 21, 34	48–52	,,	,,	पत्राङ्क 52 पर ही गदाधर कृत 'यमुनाष्टक' है।
14 5×13 5 10, 12	1–15	,,	19 वी श.	144 पद्य हैं।
11 5×11 9, 12	1–18	,,	1831	र का 1686
15 5×10 11, 26	1–30	,,	1826	
10×8 6, 10	17–29	,,	गु 1922	पत्राङ्क 30–40 पर 'अश्वत्थामा-सुयोधन सवाद' भाषा है।
21×16 5 14, 12	22–27	अपूर्ण	20 वी श	
22×13 5 26, 14	11–59	,,	19 वी श	पत्राङ्क 1–10 अप्राप्त
24 5×17 13, 24	30–46	पूर्ण	गु 1912	
15 5×10 11, 26	1–14	,,	गु. 1826	

क्रमांक एवं विवरण	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1406	14068 (14)	शुक (मुक्त) संवाद	खेमकवि (खेमदास)
1407	14078 (6)	"	"
1408	14351 (8)	"	"
1409	14482 (11)	"	"
1410	14716 (3)	"	"
1411	14741 (2)	"	"
1412	19099 (4)	"	"
1413	14710 (1)	मनरामजी की वाणी	मनराम सं क. नवनराम
1414	14482 (1)	"	"
1415	14337 (3)	"	"
1416	14713 (1)	" [illegible]	"
1417	14715 (1)	" "	"

माप से मी में, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×14 19, 22	279–290	पूर्ण	19 वी श	
15 5×15 13, 14	32–53	,,	गु 1729	आगे दो पत्रो पर स्फुट-पद हैं।
14 5×11 10, 18	61–86	अपूर्ण	19 वी श	
24 5×12 32, 15	550–560	पूर्ण	गु 1844	
21×14 5 25, 21	274–282	,,	गु 1826	
13 5×10 5 11, 20	24–45	,,	19 वी श.	
18×12 10, 18	133–159	,,	गु 1898	
34 5×17 5 14, 38	1–64	,,	20 वी श	स०काल 1830 शाहपुरा, अत मे कृपारामजी के परमधाम प्राप्ति के साक्ष्य का कवित्त है'
24 5×12 31, 16	1–67	,,	1844 गु	अत में सतदासजी की निर्वाणतिथि का कुण्डलिया है।
14×12 5 14, 22	1–29	अपूर्ण	19 वी श	
13×6 5 7; 21	1–44	पूर्ण	गु 1898	
9×6 5 5, 12	1–10	अपूर्ण	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1418	14352 (9)	सन्यासजोग (योग)	
1419	14482 (3)	सबद-माणिक-बोध चोहट्ट	मू. रामचरण चो बालकराम शिष्य मीठाराम
1420	14405 (3)	समन सेऊ की परची	अनन्तदास
1421	14482 (6)	सर्वंगसार	सकलन कर्त्ता नवलराम
1422	14713 (4)	" का छोटमा सबद	सं क नवलराम जनतुरसी, जनहरिदास, कबीर, रामचरण आदि
1423	13480 (1)	" "	सं क. नवलराम
1424	13670 (13)	सांगा आदि	सुन्दरदास, राघो
1425	15297 (3)	सर्वांगस-नामावली	
1426	14363 (2)	सहस्रनामजी री सांखी	जनसज्जनराम
1427	15244 (1)	[illegible]	[illegible]दास
[illegible]	15244 [illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	14362 [illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ([illegible]) शिष्य [illegible]

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13.5×10 5 10, 16	98–108	पूर्ण	गु 1921	
24 5×12 35; 15	247–252	,	गु 1844	
16×10 5 10; 16	22–29	,,	19 वी श.	अत के दो पत्रो पर रामानन्द कृत 'ज्ञानलीला' है ।
24.5×12 35; 15	446–605	,,	गु 1844	पत्राङ्क 605 के बाद 501 है । लि क श्रीराम
13×6 5 7; 21	484–515	,,	1898	लि क सरणाराम लि स्था. पाली
17×14 18; 23	1–241	,,	19 वी श.	
10×9 9, 12	146–153	,,	गु. 1862	
21×16 5 12, 10	10–14	,,	20 वी श	
13×11 12, 16	8–17	,,	19 वी श.	
9 5×9 10, 15	1–4	अपूर्ण	,,	
9 5×9 11; 15	1–3	,,	,,	पत्राङ्क 4–6 पर स्फुट-पद हैं ।
16×11 9, 16	3–7	,,	18 वी श	
20×16 13; 20	122–126	पूर्ण	20 वी श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1431	14716 (1)	सिद्धवंदना-बत्तीसी	प्रेम
1432	15613 (9)	सिद्धान्त पंचाध्यायी	नन्ददास
1433	12702	सिद्धान्त-शतक	लाडूनाथ
1434	14381 (5)	सीता-स्वयंवर	रामदास निवास
1435	14398 (7)	सुदामा-चरित्र	मलूकदास
1436	14969 (3)	"	जेठमल
1437	15218 (3)	"	कलिराम
1438	15613 (7)	"	नन्ददास
1439	14342 (9)	" की बारखड़ी	
1440	14381 (4)	" "	
1441	15098 (3)	" "	
1442	13761 (26)	सुन्दरदासजी की वाणी	सुन्दरदास
1443	14176	सुन्दरदासजी की वाणी आदि	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×14 5 25, 22	554–555	पूर्ण	गु 1826	अत मे 'साध को व्योरो' है।
17 5×13 19, 30	17–20	,,	18 वी श	
20×16 10, 18	2–15	अपूर्ण	1912	र का 1800, लि स्था. जोधपुर प्रथम पत्र अप्राप्त, अत के दो पत्रो मे लाडूनाथजी के प्रशस्तिपरक 9 दोहे है।
20 5×11 17, 10	110–118	पूर्ण	गु 1810	पत्राङ्क 118 के वाद 'कृष्णार्जुन प्रश्नोत्तर' है।
10×8 5, 14	56–85	,,	1922	लि के मलूकदास (कर्त्ता से भिन्न)
19.5×14 13, 22	30–36	,,	1883	र का 1815, लि क. त्रैतकरण सेवग लि स्था. गाँव वडलू
11.5×11 9, 12	1–74	,,	1831	लि क. नद ब्राह्मण
17 5×13 21, 34	10–11	अपूर्ण	18 वी श	
21×14 5 12, 15	66–69	पूर्ण	19 वी श	
20 5×11 21, 8	103–107	,,	1810	पत्राङ्क 76-103 पर 'ब्रह्मगीता' है।
16×11 5 9; 15	1–6	,,	19 वी श	पत्राङ्क 6-7 पर स्फुट-कवित्त है।
16×22 5 28, 18	1–5	अपूर्ण	गु 1885	
28×14 12, 38	1–63	,,	19 वी श	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1444	14417 (5)	सुन्दरदासजी की वाणी	सुन्दरदास
1445	14480 (1)	” ” सवैया आदि	”
1446	14745	” ”	”
1447	14417 (1)	” साखी एव अनभैप्रोखि	”
1448	14473 (7)	” के कवित्त	”
1449	13959 (3)	” के सवैया आदि	”
1450	14391 (1)	सुन्दरविलास	”
1451	14475 (6)	सूरातन को अगादि	मोतीराम
1452	14351 (3)	सेऊ-समन की परची	अनन्तदास
1453	14475 (10)	”	”
1454	14741 (4)	”	”
1455	14913 (2)	”	”
1456	14924	”	”

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×10 10, 20	103–161	पूर्ण	19 वी श.	
17×8 8, 20	1–249	"	"	
24 5×11 13, 44	2–55	अपूर्ण	"	प्रथम पत्र अप्राप्त
14×10 10, 20	4–18 18–31	"	"	प्रारभ के 3 पत्रो पर दादू कृत साखियाँ हैं।
22 5×12 5 22, 10	68–82	पूर्ण	"	
17×10 5 9, 24	28–58	"	"	
12×10 10, 16	15–44	अपूर्ण	गु 1810	पत्राङ्क 1-14 अप्राप्त
19×15 5 14; 20	46–56	पूर्ण	20 वी श.	
14 5×11 10, 18	25–33	"	19 वी श.	
19×15 5 14; 20	87–92	"	20 वी श	
13 5×10 5 11, 20	79–84	"	19 वी श.	
16×11 8, 18	1–8	"	गु. 1865	
30 5×15 5 15, 40	1–4	अपूर्ण	20 वी श.	पत्राङ्क 2 अप्राप्त धन्नाजी की परची भी है।

क्रमाक एव विपय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1457	14475 (12)	सेवगरामजी की वाणी (झूलणा)	सेवगराम शिष्य परसराम
1458	14369 (8)	,, की वाणी	
1459	14716 (5)	सेवादासजी की फुटकर वाणी	सेवादास
1460	14360 (4)	सेवादासजी की साखी	,,
1461	14073 (1)	,, का कृति-सग्रह	,,
1462	14068 (3)	,, ,,	,,
1463	14365 (2)	स्नेहलीला	जनमोहन (मोहनदास)
1464	14366 (1)	,,	,,
1465	15070 (4)	,,	,,
1466	15095 (3)	,,	,,
1467	15294 (5)	,,	,,
1468	15053 (1)	स्नेह-सग्राम	व्रजनिधि (सवाईप्रतापसिह)
1469	15238 (4)	स्याम-सगाई	नददास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
19×15 5 14, 20	94–101	पूर्ण	20 वी श	
22×15 16, 30	264–267	,,	19 वी श	
21×14 5 25, 21	291–397	,,	,,	
15 5×10 10, 18	287–315	,,	,,	
15 5×10 9, 18	1–270	,,	,,	
15×14 19, 22	80–148	,,	,,	
15×10 5 10, 15	57–82	,,	गु 1888	
22 5×16 15, 26	5–8	अपूर्ण	1723	पत्राङ्क 1 पर सत-परम्परा एव पद हैं। पत्राङ्क 2-4 अप्राप्त
15×12 8, 14	42–58	पूर्ण	1803	लि क सीताराम लि स्था नवलकिसोरपुरा
15×11 9, 19	60–71	,,	19 वी श	
9 5×9 9, 10	1–29	,,	1801	लि क केसोराम पचोली, उदयपुर पत्राङ्क 30-31 पर स्फुट दोहे हैं।
26 5×16 5 20/25, 18	1–4	,,	20 वी श	र का 1852 र स्था चन्द्रमहल, जयपुर
14 5×13 5 10, 12	1–10	,,	19 वी श	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1470	13825 (9)	हरचन्दनी चउपई	
1471	14741 (3)	हरचंद सत (हरिश्चन्द्र सत्य)	ध्यानदास
1472	14078 (5)	"	"
1473	14047 (1)	"	"
1474	14464	"	"
1475	15099 (10)	"	"
1476	14359 (4)	हरवोल चितावणी	सुन्दरदास
1477	14068 (4)	हरिदासजी का कृति-सग्रह	जनहरिदास
1478	14709 (1)	"	"
1479	14716 (2)	"	,
1480	14360 (2)	"	"
1481	14284 (2)	"	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5×16 19, 26	119–124	अपूर्ण	17 वी श	पत्राङ्क 125-127 अप्राप्त
13 5×10 5 11, 20	45–79	पूर्ण	1814	
15 5×15 13, 14	1–32	,,	1729	लि क दयाराम लि. स्था जोधपुर
13 5×12 15; 18	1–36	,,	19 वी श	
30 5×13 5 14, 38	1–13	,,	,,	पत्राङ्क 14 पर रामानद कृत 'रामरक्षा स्तोत्र' है।
18×12 10, 18	354–382	,,	1898	लि क साध नदराम लि स्था. बडु ग्राम
14 5×11 12, 22	26–28	,,	19 वी श.	पत्राङ्क 27-28 पर स्फुट-पद पत्राङ्क 31-33 पर स्फुट मत्रादि हैं।
15×14 19, 22	148–185	,,	,,	फुटकर कृतियाँ हैं।
26 5×12.5 13, 46	1–72	,,	,,	जीर्ण
21×14 5 25, 21	150–274	,,	गु. 1826	लि क साध वनमालीदास, लि स्था. डीडवाणा पत्राङ्क 149 पर रमानदजी कृत 'रामरक्षा स्तोत्र' है।
15 5×10 9, 18	91–155	,,	गु 1826	साखी 314, पद 31, ग्रन्थ 5 लि. क माधोदास निरजनी लि स्था. दिल्ली
10×8 7; 13	33–133	,,	1911	लि. क नदयराम लि. स्था खीवसर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1482	14337 (5)	हरिदासजी की वाणी (साखी)	जनहरिदास
1483	14359 (3)	,, ,,	,,
1484	14395 (2)	,, ,,	,,
1485	14475 (3)	,, ,,	,,
1486	14043 (6)	हरिरामदासजी की वाणी	जनहरिया
1487	14352 (3)	,,	,,
1488	14398 (2)	,, (गुरुदेव को अंग)	,,
1489	14476 (2)	,, (छुटकर सबद)	,,
1490	14479 (4)	,, (छुटकर प्रसंग)	,,
1491	14394 (1)	,, एवं अन्य ग्रन्थ	जनहरिराम शिष्य जैमलदास
8 कथा-वार्त्ता	14643 (1)	अकबर-बीरबल के किस्से आदि	
1493	12709 (15)	अचलदास-खीचीरी वार्त्ता, (वचनिका)	शिवदास गाडण
1494	14670	,, वचनिका	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×12 5 14, 22	1–6	अपूर्ण	19 वी श.	
14 5×11 13, 16	14–24	,,	,,	पत्राङ्क 25वे पर कबीरदास का पद है।
11×9 5 8, 12	197–216	पूर्ण	1884	लि क सीताराम, लि स्था देसणोक पत्र चिपके हुए हैं।
19×15 5 14, 20	18–26	अपूर्ण	20 वी श	
24 5×17 11, 24	9–17	पूर्ण	1910	
13 5×10 5 8, 14	12–44	,,	19 वी श.	
10×8 8, 19	1–5	,,	1922	
17 5×11 5 9, 19	23–173	,,	19 वी श	
15×10 8, 16	191–215	,,	1898	लि क कल्याणदास लि स्था लाडणू, रामद्वारा
11 5×10 9, 12	2–58	अपूर्ण	19 वी श	प्रथम पत्र अप्राप्त
24 5×15 5 15, 34	1–8	,,	20 वी श.	त्रुटित, 42 किस्से हैं।
23×13 16, 32	129–136	पूर्ण	19 वी श	लि क नित्यसागर
23 5×10 5 11, 34	1–18	,,	1787	लि क नाथा, पत्राङ्क 18 पर स्फुट-गीत तथा हिचकी मिटाने का नुस्खा है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1495	12717 (3)	अचलदास-खीचीरी वार्त्ता (वचनिका)	शिवदास गाडण
1496	15295 (10)	" ऊमादे-भटियाणीरी वार्त्ता	
1497	12709 (12)	अनतराय-साखलारी वात	
1498	15086 (4)	" "	
1499	15295 (16)	अप्सरा च्यारा हे इन्द्र सराप-दीदो जणीरी वात	
1500	15295 (22)	अस्त्री सूवटी बोली ज्या वात	
1501	14756 (12)	उरजण (अर्जुन) ने हमीररी वात	
1502	12709 (2)	एकलगिढ दाढालारी वार्त्ता	
1503	14756 (11)	" "	
1504	14836 (2)	, "	
1505	15295 (30)	ओखाणारी वार्त्ता (तणारा भारतरी वार्त्ता)	
1506	15295 (18)	काणा-रजपूतरी वार्त्ता	
1507	15295 (17)	कुंअर-भूपतसेणरी वार्त्ता	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21 5×14 15, 32	13–20	पूर्ण	1796	लि. क ज्ञानराज लि स्था खेरवा
23 5×23 25, 30	75–80	,,	19 वी श	
23×13 15; 32	97-105	,,	,,	
20 5×15 5 14, 22	85–98	,,	1854	
23 5×23 25, 34	98–100	,,	19 वी श.	
23 5×23 22, 28	114–116	,,	,,	
24×15 35, 24	58–64	,,	गु 1811	अत मे 'वीर जिन स्तुति' तथा फला-फल विचार है।
23×13 15, 42	32–37	अपूर्ण	1828	प्रारम्भ अप्राप्त, लि स्था गुदगरीनगर पत्राङ्क 38 पर 'वारह-मडलीको' के कवित्त हैं।
24×15 35, 24	54–58	पूर्ण	गु 1811	
32×22 27, 22	30–41	,,	19 वी श.	
23.5×23 27, 28	154–161	,,	,,	
23 5×23 25, 34	105–107	,,	,,	पत्राङ्क 108 अप्राप्त, पत्राङ्क 109 पर 'भला-वुरारी वात' का अतिमाश है।
23 5×23 25, 34	100–104	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1508	15295 (32)	कुंअर-मगलरूपरी अर महता सुमतरी वार्त्ता	
1509	13769 (50)	कुतबदीन-साहिजादारी वार्त्ता	
1510	14463 (22)	" "	
1511	13770 (5)	खूबीरी वात	
1512	15295 (28)	गामरा-धणीरी वात	
1513	14341 (2)	चत्रमुकट-चन्द्रकिरण राणीरी वात	
1514	17709 (14)	चन्दकुंवररी वात	रसिक कविराय
1515	13737 (5)	" सचित्र	"
1516	14081 (10)	"	"
1517	15015 (3)	"	"
1518	15295 (13)	चापा-सिंघलरी अर वीरा-भायलांरी वार्त्ता	
1519	15295 (31)	चित्रसेण-कुंवररी वार्त्ता	
1520	13512 (9)	चौवोलीरी कथा	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23.5 × 23 25, 34	167–171	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 169 वा खडित पत्राङ्क 170 वा अप्राप्त
13 5 × 10 5 12, 16	221–244	पूर्ण	1705	अन्य प्रति के पाठान्तर भी दिए हैं।
20 × 16 5 23, 22	226-231	,,	1765	लि क जोगीदास 'ढढणी देवलरी कही'
10 × 9 9, 12	30–34	,,	19 वी श	शकुनो के कवित्त भी है।
23 5 × 23 20, 26	132–133	अपूर्ण	,,	
21 5 × 15 5 15, 12	87–98	,,	,,	
23 × 13 15, 32	124–129	पूर्ण	,,	
21.5 × 14 5 12, 22	1–9	,,	1799	र. का 1740 चित्र सख्या 1
16 × 12 11, 20	32–45	,,	1890	
16 5 × 12 5 10, 21	81–111	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 110 वा अप्राप्त
23 5 × 23 25, 30	86–93	पूर्ण	,,	
23 5 × 23 26, 26	161–167	अपूर्ण	,,	पत्राङ्क 163, 165 अप्राप्त
15 × 11 5 12, 20	82–92	पूर्ण	1859	

क्रमाक एव विपय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1521	12709 (13)	जगदेव-परमाररी वार्त्ता	
1522	12709 (10)	जलाल-गहाणीरी वार्त्ता	
1523	12717 (12)	,, ,,	
1524	12730 (3)	,, ,,	
1525	13512 (8)	,, ,,	
1526	14836 (1)	ढोला-मरवणरी वार्त्ता	
1527	15237 (2)	ढोला-मारूणी की वात	
1528	15295 (21)	तातवाजी ने राग-पिछाण्यो ज्या वात	
1529	15295 (11)	तिलोकसी-जसड़ोतरी अर कुंगडे-बलोचरी वात	
1530	15295 (33)	दामा-देवडा अर सामा-सरवहिया-री वात	
1531	15295 (3)	दीदमांनरा फलरी वात	
1532	13495	नलराजारी वात	
1533	15086 (1)	नागवती ने नागजीरी वात'	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23×13 15, 32	105–124	पूर्ण	19 वी श	
23×13 15. 32	72-89	,,	,,	लि स्था गुदगरीनगर
21.5×14 13, 27	46–73	,	1795	लि क उमेदराज अत मे 'नीसाणी' छद है।
17×12 5 11, 16	76–116	,,	19 वी श.	
15×11 5 11, 18	49–87	,,	1859	लि क नेमीचन्द
32×22 27, 22	1–29	,,	19 वी श	चित्र बनाने के लिए स्थान रिक्त है।
20 5×12 5 10, 22	1–57	,,	,,	दूहा-वार्त्ता क्रम मे
23 5×23 22, 28	112–114	,,	,,	
23 5×23 24, 28	80–83	,,	,,	
23 5×23 34, 32	171–174	अपूर्ण	,,	अतिमाश अप्राप्त
23 5×23 24, 28	24–25	पूर्ण	,,	
20 5×15 11, 25	1–46	अपूर्ण	,,	अतिमाश अप्राप्त
20 5×15 5 15, 22	1–15	पूर्ण	1854	प्रारम्भ मे स्फुट कवित्त-श्लोकादि हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1534	15293 (25)	नागवती-नै-नागजीरी वात	
1535	15295 (12)	पचमाररी वार्त्ता	
1536	12730 (4)	पन्ना कस्तूरीरी वात	
1537	13505 (13)	पन्ना-वीरमदेरी वात	
1538	13745	"	
1539	15015 (1)	"	
1540	15052 (1)	फूलजी-फूलकवररी वात	
1541	15015 (2)	फूलजी-फूलमतीरी वात	
1542	12706 (21)	"	
1543	15295 (23)	वचीवुहारीरी वात	
1544	15295 (8)	वाघ अर वछारी वात	
1545	14867	मदनगत्त	दामा

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5×15 5 24, 40	45-50	पूर्ण	17 वी श	
23 5×23 25; 30	84–86	,	19 वी श	
17×12 5 14; 20	1–48	अपूर्ण	,,	
16×11 5 10, 16	5–21	,,	,	
27 5×17 20; 14	1–63	,,	20 वी श	
16 5×12 5 9, 21	22–64	,,	1899	प्रारम्भ अप्राप्त लि क मोतीराम खतरी
25×20 28; 25	1–5	,,	20 वी श.	प्रारम्भ के दो पत्रो तथा पत्राङ्क 5–6 पर स्फुट-दोहे है।
16 5×12 5 8, 18	65–80	पूर्ण	19 वी श	
15 5×11 5 9, 17	123–129	अपूर्ण	,,	
23 5×23 22, 28	116–118	पूर्ण	,,	
23 5×23 24/27;28/30	65–71	,,	,,	पत्राङ्क 69 वा त्रुटित
25×11 15, 48	1–5	,,	1788	लि क पूरणप्रभ, लि.स्था. धरणावास पत्राङ्क 5 वे पर ही पूरणप्रभ कृत 'यंत्र कोठाभरण विचार चउपई' है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1546	14717 (1)	मधुमालतीरी कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास कायस्थ
1547	15298 (1)	,, ,,	,,
1548	14083	,, ,,	,,
1549	12732 (4)	,, ,,	,,
1550	12709 (7)	,, ,,	,,
1551	13969 (1)	मधु-मालतीरी कथा चौपई के फुटकर पत्र (सचित्र)	,,
1552	14437 (3)	मधु-मालतीरी कथा चौपई सचित्र	,,
1553	14676 (3)	मृग-कपोल कथा	,,
1554	15295 (1)	रतन-हीरा अर परीन-हीरागरी वार्त्ता	

माप से मी मे. पंक्ति प्रति पत्र, प्रक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22×20 23, 21	5-90	अपूर्ण	1838	प्रारम्भ अप्राप्त लि क. मथेन सरूपचद, लि.स्था मेडता पत्राङ्क 6, 7, 12, 13, 16, 20, 24, 56, 57, 61, 65, 85, 88 अप्राप्त चित्र स 88, 8 खण्डित पत्रो सहित।
26 5×22 5 23, 28	3-116	,,	19 वी श	चित्रित पृ 210, पत्राङ्क 1-2, 10, 76, 80 अप्राप्त, पत्राङ्क 113 वा दो बार, पत्राङ्क 20, 23, 26, 28 मे एक-एक चित्र कटा हुआ, पत्राङ्क 44 मे दो चित्र कटे हुए हैं।
19×17 9 32	22	,,	,,	चित्र स 3, जीर्ण एव अस्तव्यस्त
21×16 17, 34	52-85	पूर्ण	1851	लि क. लक्ष्मीविजय लि. स्था तिवरीग्राम
23×13 15, 42	1-29	,,	19 वी श.	लि क नानजी
28×17 5 20.5×15 22 5×14 5 14; 21	9-13, 5, 7	अपूर्ण	,,	एक पत्र 'पन्ना-वीरमदेरो वात' का है जिसके दोनो ओर चित्र हैं। चित्रित पत्र 5B, 7B, 9AB, 10AB, 11AB, 12AB; 13AB=14
25×13 5 20, 22	1-58	पूर्ण	1814	लि क साध गोपालदास लि स्था गुढा-गिरवा चित्र स. 29, 1-17 तक पूरे रगीन एव 18-29 तक रेखा चित्र
21 5×12 5 11, 24	49-54	अपूर्ण	गु 1848	पत्राङ्क 12-13 पर दो चित्र हैं। गुटके की अन्य कृतियाँ सस्कृत मे हैं।
23 5×23 26, 30	14-17	,,	19 वी श.	त्रुटित, पत्राङ्क 15 वा अप्राप्त प्रारम्भ मे 'देवसी रेवारी की वार्त्ता' का अतिमाश है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1555	14643 (3)	रतनाहमीररी वात	
1556	14042 (2)	"	
1557	12730 (5)	रसालु-कँवररी वात	नरवद चारण
1558	12717 (1)	रसालु-राजारी वात	"
1559	13509 (5)	"	"
1560	14335 (6)	"	"
1561	14898 (3)	"	"
1562	13771 (3)	" सचित्र	"
1563	15295 (26)	राजाकेरवरी वात	
1564	12709 (11)	राजाचन्द-प्रेमलालछि रुद्रदेवरी वात	
1565	15295 (29)	राजापराक्रमसेनरी वात	
1566	15295 (2)	राजाभोज अर छीपणरी वात	
1567	14081 (8)	राजाभोज अर डोकरीरी वात	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5×15 5 20, 36	1–17	पूर्ण	1919	अत मे विरोधोक्त उक्तियाँ हैं ।
25 5×17 21, 17	30–60	,,	1925	आगे के 5 पत्रो पर स्फुट-कवित्त, सवैया व रेखातादि हैं।
17×12 5 14, 20	1	,,	19 वी श	लि क उदेचन्द
21 5×14 11, 23	1–5	अपूर्ण	18 वी श	
24×17 15, 32	56–73	पूर्ण	1860	लि क करमचन्द गोलछा
15×11 5 1 5/22,20/30	34–44	अपूर्ण	19 वी श.	
16 5×12 10, 16	1–31	पूर्ण	190	लि क. तेजकरण, लि स्था जोधपुर पत्राङ्क 32 वे पर झाडामन्त्र है ।
19×15 14, 24	95–110	,,	1861	चित्र. स 20 लि क हर्षसागर
23 5×23 27, 28	125–128	,,	19 वी श.	
23×13 15, 32	89–97	,,	,,	
23 5×23 27, 28	29–35	अपूर्ण	,,	पत्राङ्क 134–150 अप्राप्त
23 5×23 24, 28	18–24	पूर्ण	19 वी श	
16×12 12, 22	24–26	,,	गु 1890	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1568	12709 (9)	राजाभोजरी पनरमी-विद्यारी वात	भवानीदास व्यास
1569	13785 (1)	राजाभोजरी पनरमी-विद्यारी वात	भवानीदास व्यास
1570	14898 (4)	” ”	”
1571	15086 (2)	” ”	”
1572	14339 (10)	” ”	”
1573	15295 (20)	राजामित्रसेनरी वात	
1574	15295 (9)	राजाविजेपनरी वात	
1575	15295 (5)	राजाशालिवाहनरी वार्त्ता	
1576	15295 (14)	रावनरपतरी वार्त्ता	
1577	15295 (15)	रुद्रवे-पाटण माहे बामण चोरी कीदी जणीरी वात	
1578	15295 (6)	लूणसाहरी बेटीरी वार्त्ता	
1579	15035	वीरमदे-पनारी वात	शेरसिंह
1580	12709 (8)	वीरमदे-मोनगरारी वार्त्ता	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23×13 15, 32	41–72	पूर्ण	1829	लि क नन्दसागर लि स्था गुदवस नगर
22 5×16 5 12/17, 24	3–36	अपूर्ण	1839	प्रारम्भ अप्राप्त लि स्था भजेरा
16 5×12 10, 16	34–46	"	गु 1902	
20 5×15 5 15/11,22/15	15–82	पूर्ण	गु 1854	
12×13 5 16, 16	16–19	"	19 वी श.	पत्राङ्क 21-27 पर 'केशव' तथा 'भूषण' के स्फुट-छन्द हैं।
23 5×23 22, 28	151–154	"	"	पत्राङ्क 110 अप्राप्त
23 5×23 27, 30	111–112	पूर्ण	"	
23 5×23 24, 28	71–74	"	"	
23 5×23 25; 34	94–96	"	"	
23.5×23 25; 34	97–98	"	"	
23 5×23 24, 28	36–44	अपूर्ण	"	पत्राङ्क 44-59 अप्राप्त पत्राङ्क 42 वा खण्डित
18×13 13, 14	5–109	पूर्ण	1904	पत्राङ्क 1-4 अप्राप्त लि क तुलाराम हजारी
23×13 15, 42	29–41	"	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1581	15237 (1)	सदैवच्छ-सावलिंगारी वात	
1582	13737 (4)	सदैवच्छ-सावलिंगारी वात सचित्र	
1583	12717 (15)	,, ,,	
1584	13825 (26)	,, ,,	
1585	13512 (7)	,, ,,	
1586	13772	,, ,, स्फुट सचित्र पत्र	
1587	15295 (7)	साहरा वेटारी अर राजारा कुंअररी वार्त्ता	
1588	15295 (25)	साहूकार ने सूआरी वात	
1589	15295 (27)	साहूकाररी वार्त्ता	
1590	14787	सिंघासन बत्तीसी भाषा	गुणविजय शिष्य मेघजा (उद्योतविजय)
1591	14341 (1)	,,	
1592	15238 (3)	सुआ की वार्त्ता	
1593	13509 (1)	सुआ-बहोत्तरीरो कथा	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
20 5×12 5 8, 22	1–9	अपूर्ण	19 वी श.	
21 5×14 5 13, 26	1–31	पूर्ण	1799	चित्र सख्या 18 जीर्ण एव खडित
21.5×14 13, 27	81–120	,,	1798	लि.क उत्तमराज; लि.स्था गुदगरी र का 1662
24 5×16 21, 40	281–292	अपूर्ण	17 वी श.	आद्यन्त अप्राप्त
15×11 5 14, 18	1–48	पूर्ण	1859	लि क नेमचद, जीर्ण र का. 1662
20.5×13 5 18, 20	24	अपूर्ण	19 वी श	चित्र सख्या 21 पत्राङ्क 1, 3, 8, 9 खडित
23 5×23 29, 28	60–65	,,	,,	प्रारम्भ अप्राप्त
23.5×23 22, 28	121–125	पूर्ण	,,	
23 5×23 20, 26	129–131	,,	,,	पत्राङ्क 130 वा खडित
25×11 5 19, 48	1–46	,,	1764	
21 5×15 5 14/21,14/21	1–86	अपूर्ण	19 वी श.	तीसरी पुतली की कथा से प्रारम्भ
14 5×13 5 10, 12	38–71	पूर्ण	,,	
24×17 15; 32	2–45	अपूर्ण	,,	प्रथम पत्र अप्राप्त 57 कथाएं हैं।

क्रमांक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1594	14410 (1)	सुग्रा-बहोत्तरीरी कथा	
1595	15295 (24)	सुनारी ने सुग्रारी वार्त्ता	
1596	12697 (2)	हितोपदेश पचाख्यान भाखा	
1597	12696	"	
10 काव्य-शास्त्र	15089	अलकार-ग्राशय	उत्तमचन्द भण्डारी
1599	14397	ग्रलंकार-रत्नाकर	दलपतिराय
1600	13784 (21)	अलकार रा दूहा	"
1601	13784 (8)	कविकुलकठाभरण	कवि दूलह
1602	13512 (1)	कविप्रिया	केशवदास
1603	14041	"	"
1604	14461 (3)	"	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×11 5 10, 18	24–146	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 1-23 अप्राप्त 42 वी कथा पर्यन्त
23 5×23 22, 28	118–121	पूर्ण	"	
16 5×17 17, 18	31-230	अपूर्ण	1823	पत्राङ्क 1-30 अप्राप्त, लि क. पुरोहित-सदाराम, लि स्था रूपनगर व गाँव रोहिडी, अत मे हरलाल कृत महाराजा जमवतसिह आदि के कवित्त हैं।
24 5×17 11, 24	6–148	"	1885 1886	लि क हिम्मतराम तथा जैतराम आसकरण, लि स्था जोधपुर, पत्राङ्क 1–5 7,8 अप्राप्त, जीर्ण व कीटविद्ध अत मे दिशा एव प्रहर के अनुसार शकुन-विचार है।
20×10 5 10, 22	1–100	"	19 वी श	अतिमाश अपूर्ण र का 1857 विजयादशमी, जीर्णपत्र
10×8 7, 11	4–153	"	"	र का 1798 आद्यन्त अप्राप्त
17×13 9, 14	1–28	"	20 वी श	164 दोहे हैं।
17×13 9, 13	1–35	पूर्ण	1937	लि. क कृपाराम
15×11 5 12/15, 25	1–97	"	1849	लि क सेवग विरधीचंद लि स्था जालोर पत्राङ्क 1–67 कीटविद्ध
24×19 5 15, 22	1–90	"	1859	लि क पडित खुस्यालचद
22 5×13 40, 26	23–32	"	1766	लि. क कनकसोम गणि

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1605	14837 (5)	कविप्रिया	केशवदास
1606	14917	कविप्रिया (सटिप्पण)	"
1607	15235	"	"
1608	13786	कविप्रिया भरणाख्य-टीका सह	" टी हरिचरणदास
1609	13784 (10)	कविमत-मंडण सव्याख्या	गोकुलनाथ
1610	13777 (1)	कविवल्लभ	हरिचरणदास
प: 1611	13787 (1)	काव्यप्रबन्ध	बगसीराम लालस
प: 1612	15216 (5)	कौशल-वृत्त-भासि	कौशलकवि पुत्र भागचन्द शिष्य सदाराम
1613	13780 (4)	छन्द-अलंकार लक्षण	उदैचन्द भण्डारी पुत्र कुसलचन्द
1614	13780 (1)	छन्दप्रबन्ध	"
प 1615	13669	छन्दविभूषण सटीक	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
29 5×22 5 29, 22	1–51	पूर्ण	1812	लि स्था नागपुर
25×10 5 15, 46	1–48	अपूर्ण	18 वी श.	पत्राङ्क 47 वा अप्राप्त
22 5×15 22, 21	1–54	,,	19 वी श.	र का 1658
37×18 22/27,15/18	1–260	पूर्ण	1901	लि.क फतेराम वोरा, जोधपुर टी र का 1835
17×13 9, 14	1–56	,,	20 वी श	लि क कृपाराम
30×24 22, 22	1–50	,,	1906	र का. 1839
26 5×23 5 24, 24	1–56 1–21 1–22 1–13	,,	1924	र का 1913 बीकानेर 1 शब्दार्थप्रबन्ध 2 दूषरण-भूषरण प्रबन्ध 3 गुरणवृत्त प्रबन्ध कीटविद्ध
13×12 5 12, 16	1–121	,,	1946	र का 1816 पत्राङ्क 78 के बाद कीटविद्ध अत मे चित्रकाव्य परक कवित्त-सवैये हैं। लि क कल्यारणवगस, सांगानेर
38 5×27 24, 23	1–25	अपूर्ण	20 वी श	
38 5×27 24, 23	1–37	पूर्ण	20 वीं श	र का 1864, नागोर
27 5×13 8; 24	1–105	,,	19 वी श.	र का 1875 लि क लालचद प्रोहित लि स्था जोधपुर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1616	15216 (4)	छन्दसार	नारायणदास वैष्णव
1617	13517 (1)	"	सूरतिमिश्र
1618	13518 (1)	"	"
1619	13784 (1)	छन्दोरत्नावली	हरिरामदास निरंजनी
1620	14775	"	"
1621	14829	"	"
प. 1622	15258 (1)	जसवन्तभूषन चन्द्रिका	मनोहर कवि
1623	13780 (3)3	दूषनदर्पण-सटीक	टी उदैचन्द भण्डारी
1624	15613 (1)	नखशिख वर्णन	
1625	14336 (5)	नायक-नायिका लक्षण	
1626	14267 (1)	नायिकाभेद लक्ष-लक्षण हजारा	कविनाथ, शिवराम आलम, भोलानाथ, सुजान आदि
1627	13512 (5)	पिंगलरी जन्म पत्रिका	सेवग हररूप

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×12 5 11, 16	53–74	पूर्ण	1919	र का. 1829, र स्था चित्रकूट
21×17 26, 22	1–2	अपूर्ण	19 वी श	
20×15 16, 14	1–2	,,	,,	
17×13 10, 18	10–44	,,	1916	र. का 1795, पत्राङ्क 1–9, 34 वा अप्राप्त, पत्र चिपके हुए पत्राङ्क 44-46 पर स्फुट-कवित्तादि है।
30 5×15 5 15, 32	1–8	पूर्ण	1897	लि क. सम्पतराम लि स्था खीवसर
25 5×11 5 13, 35	1–14	,,	1897	लि क विरधीचन्द लि स्था पचभदरा
23×16 17, 14	1–94	अपूर्ण	1880	र. का 1879, जीर्ण पत्राङ्क 88-89 अप्राप्त प्रथम दो पत्र खण्डित
38.5×27 24, 23	1–35	पूर्ण	20 वी श.	
17 5×13 14, 24	3–5	अपूर्ण	1741	25 छन्द हैं। प्रारम्भ मे नन्ददास के पद हैं।
14×12 5 13, 14	97–99	,,	19 वी श.	20 छन्द हैं।
21×15 5 8, 20	1–10	,,	,,	सग्रह ग्रन्थ
15×11.5 12, 20	141–144	पूर्ण	,,	लि क सेवग विरधीचन्द

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1628	13784 (16)	प्रवीणसागर रा फुटकर छन्द	प्रवीणराय
प 1629	13780 (2)	प्रस्तारप्रबन्ध-भाषा	उदैचन्द भण्डारी
1630	14267	भाषा-भूषण	महाराजा जसवतसिंह
1631	14279 (2)	"	"
1632	14669	माधवसिंह-सुयशप्रकाश	छविनाथ
1633	15258 (2)	रघुनाथ-रूपक	सेवग मनसाराम (मछ)
1634	13509 (11)	"	"
1635	13780 (3) 4	रसनिवास	उदैचन्द भण्डारी
1636	15006 (2)	रसमंजरी	
1637	15613 (14)	"	नन्ददास
1638	12701 (1)	रसरत्न	रसलीन, सूरतिमिश्र
1639	15088 (1)	"	"
1640	12701 (2)	रसरत्न की टीका	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×13 9, 15	1–12	अपूर्ण	20 वी श	27 छन्द हैं।
38 5×27 24, 23	1–47	पूर्ण	,,	र. का 1879, जोधपुर
21×15 5 9; 17	1–27	,,	19 वी श.	
15 5×10 10; 15	1–27	,,	1858	पुष्पिका महत्त्वपूर्ण है।
24 5×11 5 10; 27	1–63	,,	19 वी श	
23×16 17; 14	1–89	,,	1880	जीर्ण; अंत मे उत्तमचन्द भण्डारी के प्रशस्तिपरक दोहे हैं।
24×17 15; 28	78–89	अपूर्ण	19 वी श.	
38 5×27 24, 23	1–21	पूर्ण	20 वी श.	
22×12 15; 14	66–73	,,	1720	लि. क. अमीचन्द, पत्राङ्क 74-77 पर स्फुट पद व रेखता हैं।
17 5×13 19/25,30/36	39–46	,,	18 वी श	
24 5×17 18; 16	1–7	,,	19 वी श.	र का 1768
18 5×14 14, 15	1–11	,,	,,	
24 5×17 20, 18	7–10	अपूर्ण	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1641	15072 (1)	रसरत्नावली	मणिमंडन
1642	15006 (1)	रसिकप्रिया	केशवदास
1643	15610	"	"
1644	14461 (2)	" सबालावबोध	"
1645	13517 (3)	रूपदीप-पिंगल	जयकृष्ण भोजक शिष्य कृपाराम पुत्र भवानीदास
1646	13512 (4)	"	"
1647	15088 (2)	"	"
1648	14712 (4)	"	"
1649	13509 (2)	"	"
प 1650	14280	वाणीभूषण	कवि उमेद
1651	13784 (1)	व्यंग्यार्थ कौमुदीरा कवित्त	कविप्रताप

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×17 1 /24,17/15	1–43	अपूर्ण	20 वी श	203 छन्द हैं। पत्राङ्क 44-46 पर जसविजय तथा विनयविजय कृत स्तुतिस्तोत्र हैं।
22×12 22, 18	6–65	,,	1718	र का 1648 लि क जोशी कल्याणदास प्रारम्भ अप्राप्त
18×15 5 14, 22	1–73	पूर्ण	1794	लि क अमरू, लि स्था जयपुर गुटके के प्रथम पत्र पर सदैवच्छ सावलिगारी वात का प्रारम्भ है।
22 5×13 30/40,18/26	1–74	,,	1766	लि क कनकसोमगरिग पत्राङ्क दूसरा अप्राप्त लि स्था जगाराग्राम अत मे सुभाषित एव औषध सग्रह है।
20, 18	22–28	अपूर्ण	1858	र का 1776 लि क सेवक गोकलदास
15×11 5 11, 18	127–140	पूर्ण	1856	र का 1776, लि क सेवक बुधमल लि स्था सोजत
19×14 14, 15	11–22	अपूर्ण	19 वी श.	
21 5×19 16, 15	134–143	पूर्ण	1913	
24×17 13, 28	46–54	,,	19 वी श	लि क सेवक मूलचन्द; अत मे राठोडो की पीढियो का कवित्त है।
15 5×11 9/10,17/20	1–25	,,	,,	र का 1861, राजगढ़
17×13 9, 13	1–14	अपूर्ण	20 वी श.	33 कवित्त हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1652	13780 (3)2	शब्दार्थचन्द्रिका	उदैचन्द भण्डारी
1653	14402	शिख-नख-वर्णन	वलभद्र
1654	15061 (2)	,,	,,
1655	13670 (3)	,, सटिप्पण	,,
1656	13512 (2)	सयोगवत्तीसी	मानकवि
1657	13777 (2)	सभाप्रकाश	हरिचरणदास
1658	13780 (3) 1	साहित्यसार सटीक	उदैचन्द भण्डारी
1659	12697 (1)	सुन्दर-शृंगार	कविराज सुन्दरदास
1660	12876	,,	,,
1661	14357 (10)	,,	,,
12 कोष	13512 (6)	अनेकार्थ नाममाला (मानमंजरी, नाममंजरी)	नन्ददास
1663	13518 (2)	,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
38 5×27 24, 23	1–17	पूर्ण	20 वीं श	र का. 1890, जोधपुर
22.5×16 16, 15	4–18	अपूर्ण	1833	लि क कन्हीराम पत्राङ्क 1-3 अप्राप्त
23.5×15 5 15, 18	8–25	पूर्ण	1876	लि स्था तखतगढ
23 5×16 11, 25	1–17	,,	1875	
15×11 5 14, 22	98–107	,,	1849	लि क सेवक विरधीचद लि स्था जालोर
30×24 22, 22	1–60	,,	20 वी श	आगे 'कुवलयानन्द' व 'गणितसार' सस्कृत मे हैं।
38 5×27 24, 23	1–6	,,	,,	कवि कृत शब्दार्थचद्रिका, दूषनदर्पण, रसनिवास, छदविभूषन चारो कृतियो का ग्रन्थनाम 'साहित्यसार' है।
16 5×17 14, 20	17–55	अपूर्ण	1823	पत्राङ्क 1-16 अप्राप्त 346 वें छन्द पर्यन्त
25×10 5 16, 42	1–20	पूर्ण	19 वी श.	र का 1688
16×12 5 15, 18	1–52	,,	1911	लि क छोगालाल व्यास
15×11 5 11, 20	145-156	,,	1855	लि क सेवक विरधीचन्द पत्राङ्क 157-159 पर स्फुट कवित्त सवैये हैं।
22×16 18	12–19	अपूर्ण	19 वी श	प्रारम्भ अप्राप्त

क्रमाक एव विपय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1664	13761 (27)	अनेकार्थ नाममाला (मानमनरी-नाममजरी)	नन्ददास
1665	14066 (4)	"	"
1666	14343	"	"
1667	13790 (2)	उर्वशी नाममाला (धनजय नाममाला-भापा)	शिरोमणि माथुर
1668	13790 (3)	एकाक्षर अनेकार्थ सुवोधचन्द्रिका नाममाला (सौभरिनाममाला-भापा)	फकीरचन्द पुत्र मयाराम चहुआन
1669	13511 (5)	नामकोप-सग्रह	
1670	14418 (11)	नाममजरी रा दूहा	कायस्थ भवानी पुत्र जेठमल
1671	14079 (16)	नाममाला	
1672	14898 (1)	"	
1673	13790 (1)	नामरत्नमाला	उदैचन्द भण्डारी
1674	14570	सभा-शृंगार	हुमरत्न शिष्य (?)
1675	14827	"	

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16×22 5 28, 18	1–5	पूर्ण	गु 1855	
22×16 19, 20	1–13	अपूर्ण	1754	लि क सांवलदास वैष्णव, जैतारण प्रारम्भ के 4 पत्रो पर सस्कृत मे स्तोत्र-सग्रह है ।
20×14 12, 24	1–24	पूर्ण	19 वी श	
26×17 5 19, 16	1–19	,,	,,	र का 1680 बुरहानपुर
26×17 5 19, 16	20–81	अपूर्ण	,,	पत्राङ्क 59 वा खडित व पत्राङ्क 60-80 अप्राप्त कीटविद्ध
17×12 13, 25	21–23	पूर्ण	,,	इन्द्र, नाग, सूर्य, चन्द्र, ज्वाला, धरती, पवन, सिंह आदि नाम
12 5×11 10, 15	136–139	,,	,,	
14×13 5 14, 18	145–148	,,	1790	
16 5×12 8, 18	15–18	अपूर्ण	1902	विष्णु,माताजी रुद्र,गणपति आदि नाम
26×17 5 19, 17	14–75	,,	19 वी श.	र का 1899 पत्राङ्क 1-13 अप्राप्त किंचित कीटभक्षित
25×10 5 11, 28	1–22	,,	18 वी श.	पत्राङ्क 2, 6-10 अप्राप्त विविध ज्ञान-कोष
25×11 16, 40	1–4	,,	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1676	14862	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह
1677	14226	अमृतसागररी वचनिका	,,
1678	12732 (9)	औषधी-संग्रह	
1679	13508 (2)	,,	
1680	15293 (1)	,,	
1681	14948 (2)	,,	
1682	14356 (1)	,,	
1683	13240	रामविनोद-भाषा	रामचन्द्र मिश्र पुत्र केशव शिष्य पद्मरङ्ग
1684	13969	,,	,,
1685	14399	,,	,,
1686	15583	,,	,,
1687	14736	,,	,,

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23×15 5 22; 18	6–331	अपूर्ण	19 वी श.	पत्राङ्क 1-5, 7-9, 24-32, 36-45, 269-271, 274-279, 320-329 अप्राप्त, पत्राङ्क 331 दो बार
27×12 5 10, 32	1–48	,,	,,	छटवा नुस्खे व निदान
21×16 28, 40	100–102	,,	,,	जलसिक्त
12×6 6, 13	4–7	,,	ई 1842	
25 5×15 7 22, 37	1–7	,,	17 वी श	कीटविद्ध, जीर्ण
15×11 5 7, 16	2–8, 1–15	,,	20 वी श.	प्रारम्भ मे 'यन्त्रमुक्तावली' का एक पत्र है।
17×16 5 13, 26	1, 52–69	,,	19 वी श	पत्राङ्क 1-5 पर 'शकुनावली' है।
24 5×11 9, 24	1–24	,,	1913	र का 1720, खुरसाण
26 5×12 15, 40	1–77	पूर्ण	1865	लि क. सूरत शिष्य वख्तावरमल लि स्था शाहजहाबाद
27×18 20, 18	13–39	अपूर्ण	20 वी श.	पत्राङ्क 1-2 अप्राप्त पत्राङ्क 12-16 त्रुटित द्वितीय अधिकार पर्यन्त
26×13 16, 38	1–88	पूर्ण	1902	
21×17 18; 34	4–121	अपूर्ण	1911	पत्राङ्क 1-3 अप्राप्त, 4 था खडित, लि.क वीरवैताल लि. स्था कलकत्ता

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1688	15286	रामविनोद-भाषा	रामचन्द्र शिष्य मघरङ्ग
1689	14109	योगचिंतामणि वैद्यकसार बालावबोध	मू हर्षकीर्तिसूरि बा नरसिंह शिष्य रत्नराजगणि
1690	13943	वैद्यमनोत्सव (महोत्सव)	नयनसुख पुत्र केशवराज
1691	14331	"	"
1692	14425	" (नयनसुख वैद्यक)	"
1693	14619	"	"
1694	14740 (1)	"	"
1695	14930	"	"
1696	15236	" सटीक	"
1697	15239 (1)	"	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×11 10, 16	14–153 159–303	पूर्ण	1774	पत्र जलसिक्त-चिपके हुए, प्रारम्भ मे 8 स्फुट-पत्र हैं, अत मे औषधी-सग्रह है। लि स्था कोठणोद ग्राम
13 5×12 19, 23	1–83	,,	1836	लि क वैद्य नथमल लि स्था कोसीथल
25×10 5 13, 35	1–17	,,	18 वी श	र का 1649, सिहनद
17×13 5 12, 20	1–25	अपूर्ण	19 वी श	
17×13 17, 17	1–34	पूर्ण	1911	
26×10 5 12, 38	1–18	,,	18 वी श	र का 1649 सिहनद अत मे स्फुट-औषधी-सग्रह हैं।
15×12 5 16, 20	1–28	,,	1803	लि क पडित परमानन्दजी जैचद पत्राङ्क 28-29 पर औषधी-सग्रह, , 1-21 स्वरोदयशास्त्र-भाषा, ,, 1-23 सामुद्रिकशास्त्र-भाषा, ,, 1-19 लघुचाणक्य राजनोति सटीक अपूर्ण है।
27×12 5 12, 26	1–27	,,	1918	लि क खूबचन्द लि स्था दशपुर
16×14 5 11, 10	2–57	अपूर्ण	19 वी श	अतिमाश अपूर्ण आगे पुस्तक के स्वामी ठा वमीसिहजी हरदत्तसिहजी की पीढियाँ, घरू-हिसाब, पट्टीपहाडा आदि हैं।
15×11 5 12, 18	1–22	,,	,,	पत्राङ्क 22-26 पर औषधी-सग्रह तथा साथ के पूरे गुटके मे यत्र-मत्र तथा औषधी-सग्रह है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1698	15319	वैद्यमनोत्सव	नयनमुख शिष्य केशवराज
1699	13768	"	"
1700	13512 (3)	शालिहोत्र-भापा	नकुल
1701	14276	"	"
1702	15083	स्त्रीकल्प	
1703	12702 (2)	स्फुट-नुस्खे	
1704	14890 (3)	हरताल मारण विधि आदि सग्रह (रसौषधी-सग्रह)	
1705	14890 (2)	हिम्मतप्रकाश (माधवनिदान-भापा)	श्रीपति भट्ट पुत्र पुरुषोत्तम पुत्र रावल श्रीगोपाल
14– ज्यौतिष	13735	आक सवछरी (अक सवतसरी)	
1707	13092	आयुर्दायिनी वार्ता	
1708	14870	उपदेशमाला	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×10 5 15, 40	1–13	पूर्ण	19 वी श	र का 1649 'अकबर' के समय सिहनद मे।
15 5×12 16, 12	1–6	अपूर्ण	,,	स्फुट-टीपे हैं।
15×11 5 13, 19	108–126	पूर्ण	1850	लि क सेवक विरधीचद लि स्था सोजत
17×13 5 15, 25	1–32	अपूर्ण	19 वी श	अतिम दो पत्रो पर स्फुट-नुस्खे हैं।
31×11 5 11, 64	1–4	पूर्ण	,,	स्त्री-रोग हेतु औषधी-सग्रह है।
17 5×11 8, 10	21–35	,,	20 वी श	प्रारम्भ मे मत्र-यत्रादि हैं।
23×16 5 23, 24	1–13	,,	गु 1826	पारा, हिंगलू, सीसा, अभ्रक-शुद्धि आदि
23×16 5 23 24	1–53	,,	1826	लि का 1730 इसके पूर्व परमानद कृत 'रत्नाकरनाम-माला' सस्कृत भाषा की कृति है।
23×12 9, 30	1–68	,,	1807	लि क रामकिशन पारीक संवत् 1601 से 1700 तक अत मे औषधी-सग्रह है।
26×12 15 47	1–6	,,	19 वी श	लि स्था अजारा नगर
25 5×10 5 15, 42	1–5	,,	1745	लि क तत्त्वसुन्दर लि स्था सिणधरी नगर

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1709	15293 (19)	उपदेशमाला यत्र-विचार	
1710	14125 (3)	उपदेशमाला शकुनावली	
1711	13455	उल्कापात विचार आदि	
1712	13514 (7)	कर्मविपाक	
1713	14467	" भाषा	
1714	15293 (49)	" (राशिफल)	
1715	12970	कर्मव्यापार(ऊमा-महेश्वर-सवाद)	
1716	13827 (9)	काक परीक्षा, छीक पृच्छा आदि	
1717	15293 (18)	कालज्ञान	
1718	12813	गुराचार (शिव-पार्वती-संवाद)	
1719	14756 (9)	गृह गोधा विचार (पल्ली-पतन-विचार)	
1720	12890	ग्रहण-विचार	
1721	13093 (2)	ग्रह-फल	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5 × 15 5 20, 35	20 वा	पूर्ण	17 वी श	जीर्ण
26 × 12 13, 19	6–8	,,	20 वी श	
16 5 × 11 24, 23	1–2	,,	,,	
16 × 12 5 9, 16	48–60 64–65	,,	,,	पत्राङ्क 60-63 पर मत्रतत्र एव राशिफल है।
25 × 11 17, 50	1–11	,,	19 वी श	
25 5 × 15 5 28, 40	142 वा	,,	17 वी श	
18 5 × 8 5 7, 22	1–11	,,	1784	लि क अबावीदास लि स्था राधनपुर
21 5 × 13 15, 22	24–26	,,	18 वी श	
25 5 × 15 5 30, 54	26–28	अपूर्ण	17 वी श	सस्कृत मे है।
27 × 14 12, 28	1–10	पूर्ण	19 वी श	लि क भाई इच्छाराम 'वृहस्पति' का फलादेश है।
24 × 15 35, 24	52–53	,,	गु 1811	पत्राङ्क 53-54 पर कल्की जन्म-पत्रिका है।
25 5 × 11 5 12, 37	1	,,	19 वी श	
23 5 × 11 5 13, 27	6–7	,,	1909	लि क हरजीवन माधवजी सस्कृत श्लोको की भाषा

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1722	13717	घर करावणगे विधान	
1723	14336 (3)	घरोली-विचार (पल्ली-पतन विचार)	
1724	13329	चन्द्रार्कीना टीपणानी विधि	
1725	14756 (8)	जन्मजातक-फल	
1726	12704 (5)	जन्मलग्न पत्रिका सग्रह	
1727	14079 (14)	जिनावर-पृच्छा	
1728	15241	जोतिकसार भाषा (ज्योतिषसार)	कृपाराम पुत्र तुलाराम कायस्थ
1729	15293 (52)	ज्योतिष गुराचार्यादि स्फुट-सग्रह	
1730	13926	ज्योतिषरी वार्त्ता (वर्षफल सग्रह)	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
27 × 14 12, 35	1–3	पूर्ण	19 वी श	लि क जयगोपाल पुरोहित लि स्था नागोर
14 × 12 5 13, 14	53-58	,,	1814	लि क चेला खूबराम
40 × 9 5 38, 17	1	,	19 वी श	
24 × 15 35, 24	50-51	,,	1811	लि. क भामा पत्राङ्क 47-49 पर 'पाडवगीता' व 'कर्म गीता' तथा स्फुट-पद हैं।
15 × 14 5 9, 13	1–7	,,	20 वी श	सवत 1884, 1905, 1928, 1932 के कायस्थ माथुर डामरिया मेघराज, जयकरण, गोर्धनलाल तथा मगनमलजी एव जयकरण की पुत्रियो के जन्माक्षर हैं।
14 × 13 5 11, 15	127–134	,,	गु 1795	पत्राङ्क 135 पर जन्मलग्न पत्राङ्क 136 पर वर्षफल विधि पत्राङ्क 137–139 पर स्फुट-कवित्त छदादि हैं।
15 × 10 8, 18	1-59	,,	19 वी श	र का 1792, पत्राङ्क 14 पर सवत् 1611 मे जोवनेर मे तेजसी को मारकर खगार द्वारा अमल करने की विगत है। प्रारम्भ के 14 पत्रो पर तथा 59–80 पर मत्रौषधी सग्रह, शकुनविचार एव स्फुट-छन्द है।
25 5 × 15 5 23, 40	152–177	,,	17 वी श	जीर्ण
25 × 12 5 18, 42	1–21	,,	1892	लि क ऋपि माणीराम लि स्था विलाडा

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1731	13511 (46)	टीपणारी पाटी	
1732	12706 (7)	तरवार शुभ-अशुभ देखणारा छंदादि	
1733	14203 (1)	तर्कपृच्छा शकुनावली	
1734	14437 (3) 4	देव-शकुनावली	
1735	13827 (8)	देवीरा शकुन	
1736	14937	दोषावली	
1737	12892	द्वादशभुवन-विचार	
1738	14871	द्वादशलग्न-पृच्छा	
1739	13827 (7)	नगर ग्राम, गढनी दशाफल	
1740	12628	नवग्रह-भाषा दूहा	
1741	14274 (2)	नवग्रहो की आरज्या व राशि-दृष्टि-विचार	
1742	12859	नाड़ी-विचार	
प 1743	13094	निर्णयसिद्धान्त भाषा	रघुराम पुत्र जयराम औदिच्य

माप से मी में पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि संवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17×12 10, 16	207–208	पूर्ण	19 वी श	
15 5×11 5 7, 13	44–54	,,	,,	पत्राङ्क 55 वा अप्राप्त
19×10 5 23, 16	3–11	,,	,,	'दोष शकुनावली' भी है।
25×13 5 18, 14	72–74	,,	1814	लि क साध गोपालजी लि स्था गुढा
21 5×13 15, 12	23 वा	,,	18 वी श	
24 5×14 12, 28	1–7	,,	20 वी श	राशि के अनुसार विभिन्न रोगो का उपचार विधान है।
24 5×11 16, 38	1–3	,,	19 वी श	खण्डित
25 5×10 5 13, 44	1–4	,,	1774	पत्र जीर्ण-चिपके हुए अंत मे कन्या जन्म विधान' है।
21 5×13 15, 22	21–22	,,	18 वी श	प्रारम्भ मे 1–21 पत्र तक 'दशाफल विचार' है।
19 5×14 11, 21	2–41	अपूर्ण	1896	प्रथम पत्र अप्राप्त लि क रामनाथ व्यास, जोधपुर
22×11 10, 26	11–19	,	19 वी श	अंतिम पत्र खण्डित
25×11 13, 32	1–2	पूर्ण	1842	लि क राजाराम जोशी
26×13 13, 37	1–16	,,	1924	र का 1708

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1744	14203 (2)	पंचवाक्य शकुनावली	
1745	13339 (7)	पंचीकरण	अखाजी
1746	14417 (3)	पंचीकृत महावाक्य	
1747	14437 (3) 5	पातशाह शकुनावली	
1748	15413	पाराशरी व्याख्या	विष्णुदास
1749	14437 (3) 2	पाशाकेवली	
1750	14927 (2)	बारहभुवन-विचार	
1751	12729 (1)	भड्डली पुराण	भड्डली
1752	13144	महादेवीना ग्रह (स्पष्ट) करवानी विधि	
1753	13090	महिमाईवाक्य	
1754	15250	राजावारे सावण (शकुनविचार)	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
19×10 5 19, 12	12-22	पूर्ण	19 वी श	लि क मुनि मेघविजय पत्राङ्क 23 पर 'वारो का महादशा फल' है।
20×14 12, 26	1-7	अपूर्ण	,,	
14×10 10, 20	81-88	पूर्ण	,,	
25×13 5 19, 14	74-78	,,	1814	लि क साध गोपाल पत्राङ्क 78 वें पर शिव का रेखा-चित्र है।
21×10 8, 28	1-17	अपूर्ण	19 वी श.	
25×13 5 19, 13	59-69	पूर्ण	1814	लि क साध गोपालदास लि स्था गिग्वा, गाम गुढा
18 5×14 18, 15	1-17	,,	1806	पत्राङ्क 17-21 पर 'रुद्राक्ष माला मत्र' है।
16 5×12 5 14, 26	1-30	,,	1955	लि क ऋषि अनूपचद लि स्था राणावास पत्राङ्क 31 पर ओसवाल वशोत्पत्ति के 11 छन्द हैं।
24 5×11 17, 48	1	,,	19 वी श	
24×12 5 9, 25	1-7	,,	1906	सवत 1801-1900 तक का वर्षफल विचार है।
25 5×10 13, 42	1-10	,,	1852-1857	लि क श्रीमालीनद, कपूरविजय, शुभकर्ण, लि स्था जोधपुर अतिम पत्र पर 'जोगीराज-स्त्री सवाद' है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1755	15218 (1)	रामाज्ञा प्रश्न	गो॰ तुलसीदास
1756	14079 (12)	लग्नविचार	भट्टारक जिनउदैसूरि
1757	13938	वर्ष, दिन प्रवेश विधि आदि	
1758	14014	विवाहभूषण-भाषा	कविकनक शिष्य सौभाग्य
1759	13770 (15)	शकुनबत्तीसी	
1760	14347	शकुनविचार	
1761	13505 (14)	"	
1762	14079 (8)	"	
1763	15293 (48)	"	
1764	15293 (45)	"	
1765	12729 (4)	शकुन-संवत-भाग	

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, प्रक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11 5×11 9, 12	21-64	अपूर्ण	1831	प्रारम्भ के 20 पत्र अप्राप्त पत्राङ्क 21–23 खण्डित जीर्ण एव कीटविद्ध
14×13 5 12, 18	78–79	पूर्ण	1793	लि क सिवराज बछराजोत पत्राङ्क 80–82 'स्त्रीरै छोरू न हुवै तिणरो विचार' है। पत्राङ्क 83-85 पर जन्मलग्नादि हैं।
25×10 5 14, 50	1-9	,,	19 वी श	
25×12 5 17, 44	1-8	,,	896	र का 1872 लि क चन्द्रसूर लि स्था त्रिनातट नगर
10×9 10, 14	1–5	,,	1862	
16×11 9, 18	1–19	,,	19 वी श	अतिम रचना, प्रारम्भ मे ज्योतिप की सस्कृत कृतियाँ हैं।
16×11 5 10, 16	21–24	,,	,,	छीक, वार, तिथि, प्रभात तीतर, घूघू आदि के शकुन।
14×13 5 14, 18	34–37	,,	1809	पत्राङ्क 37 पर 'माताजीरी स्तुति' पत्राङ्क 38 पर कविगद के कवित्त एव बखतसिहजीरो गीत' है।
25 5×15 5 24, 42	136–141	,	17 वी श	काक, शृगाल छीक,स्वप्न, पल्लि-पतन, अग-स्फुरणादि के शकुन।
25 5×15 5 24, 44	128–134	,,	,,	मात्रिका, ज्ञानमजरी, दिशा, पशु-पक्षी आदि शकुन विचार।
16 5×12 5 14, 27	60–63	अपूर्ण	20 वी श	77 दोहे है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1766	15293 (47)	शकुनाध्याय चतुष्पदिका	गुणवल्लभ शिष्य गुणसमुद्र सूरि
1767	13505 (16)	शकुनारी याददास्त	
1768	14404 (9)	शकुनावली	
1769	15097 (2)	"	
1770	15293 (44)	शकुनावली त्रय	
1771	14908	"	
1772	14907	शकुनावली (निर्मलज्ञान शकुनावली)	
✓1773	14679	शकुनावली सचित्र	
1774	13328	शनिविचार	
1775	13827 (2)	षट्पंचाशिका सअर्थ	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5 × 15 5 25, 42	135–136	पूर्ण	17 वी श	
16 × 11 5 11, 16	31–45	,,	19 वी श	पत्राङ्क 46–53 पर ग्रन्थ स्वामी की पीढियाँ व वरू याददास्त है ।
15 × 11 11, 12	228-247	,,	1955	लि क ललवाणी केसरमल
16 × 10 5 7; 16	83–108	,,	1925	लि क अबालाल चोईसा लि स्था बूँदी ।
25 5 × 15 5 20, 40	112–127	,,	17 वी श	लि क जयसागर वाचक 'पाशाकेवली' अपूर्ण है ।
16 5 × 14 13, 17	1–30	,,	20 वी श	'सोले शकुनावली' आदि ।
21 5 × 11 5 15, 30	1–5	,,	1915	लि क वल्लभदास निरजनी लि स्था अडबड, 'तरीक, ईजतमाल, जमायत, उक्लाह, हुमराह, नसतुल, खारिजफाल' आदि यवन शकुनावली है ।
12 × 11 5/8, 12	1–63	,,	20 वी श	चि स 62, 63 प्रकार की वस्तुओ के प्रथम दर्शन के शकुन दिए है । अत मे हाथी का एक रेखाचित्र है ।
22 5 × 9 5 10, 28	1	अपूर्ण	1872	
21 5 × 13 13, 23	1–16	पूर्ण	1790	लि क रूपा शिष्य नगराज लि स्था घाणेराव, प्रारम्भ के 7 पत्रो पर स्त्री मूल-फल व औषधी सग्रह है । पत्राङ्क 17–23 पर लग्नफल एव छाया-पुरुष विचार है ।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1776	13568	सक्राति विचार	
1777	12729 (3)	सवतमार (मेघमाला भाषा)	
1778	13511 (39)	सत्ताईस नक्षत्र आदि	
1779	15293 (50)	सामुद्रिक शास्त्र	
1780	14948 (1)	स्वरोदय (उमामहेश्वर-सवाद)	
1781	15098 (1)	"	
1782	15294 (7)	"	
1783	15073 (1)	स्वरोदय (ज्ञान स्वरोदय)	चरणदास—रणजीत पुत्र मुरली
1784	14383 (3)	"	"
1785	14472 (2)	"	"
1786	14724	"	"
1787	14725	"	
1788	14416 (2)	" (महादेवजी रो)	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23×10 5 13, 38	1 ला	अपूर्ण	19 वी श	
16 5×12 5 13, 28	55–59, 76–88	पूर्ण	1968	'मेघमाला' पर आधारित लि क अनोपचद
17×12 10, 16	181–182	पूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 183 पर सोजन के महत रामदास पर कवित्त हैं ।
25 5×15 5 23, 44	143–148	अपूर्ण	17 वी श	सस्कृत में है ।
15×11 5 10, 20	1–8, 9–16	पूर्ण	20 वी श	
16×11 5 10, 18	6-9	अपूर्ण	19 वी श	
9 5×9 9, 14	1–20	पूर्ण	1867	लि क पाडे माणकचन्द, अगले पत्रो पर औषधी सग्रह है ।
15×10 5 9 14	1–38	,,	1856	
16×12 5 10, 21	1–22	,,	1938	लि स्था सोजत नगर, पत्राङ्क 23-29 पर सस्कृत मे तत्त्वबोध' है ।
18×16 13, 13	141–174	,,	1834	पत्राङ्क 182 पर अब्राह्मण ब्रह्मवेताओ के नाम है ।
21 5×12 9, 22	1–22	,,	20 वी श	देवकृष्णदरजी वाचनार्थ
26 5×13 10, 34	1–10	,,	1904	लि क देवकृष्ण दरजी लि स्था जोधनगर
12×11 5 12, 12	1–19	,,	1819	लि स्था सलाणा नगर साह करमचन्द पठनार्थ

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1789	13748	स्वरोदय वार्तिक (शिवस्वरोदय)	
1790	14830	स्वरोदय विचार भाषा	लालचंद
15-गणित	12704 (6)	दस जाति लेखारी करणरी रीत	
1792	12700	लीलावती गणित चिंतामणि भाषा	रिदलाल सेवक
1793	14642 (3)	लीलावती भाषा	[मू भास्कराचार्य] भा लालचंद
1794	13830 (7)	" "	"
1795	14368 (1)	वर्णमाला व अंक-पाटी	
16 संगीत एवं नृत्य	13784 (13)	नृत्यरा छन्द	सूर्यमल मीसण
1797	15298 (3)	राग-चीतनी का दूहा	
1798	13752 (1)	रागरत्नाकर	राधाकृष्ण कवि
1799	13511 (4)	राग-रागणीरो विचार	
1800	13752 (3)	राग-रागिणी संग्रह	[महाराजा मानसिंह]

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5 × 11 10, 18	1–16	पूर्ण।	1951	लि क नारायणदास
25 5 × 10 5 17, 45	4–8	,,	1840	र का 1753, लि क दानमल लि स्था पाटोदी, प्रारम्भ के 3 पत्रो पर ज्योतिष विचार है।
15 × 14 5 9, 13	1–2	अपूर्ण	20 वी श	अत मे शृ गारिक पद्य है।
21 × 15 5 15, 16	1–27	,,	19 वी श	र का 1700 नागोर, रत्नचन्द्र मुनि कँवलिया गच्छ–नागपुर की आज्ञा से
25 × 17 17, 28	100–105	,,	20 वी श	र का 1736 बीकानेर
13 × 9 5 13, 18	62–113	पूर्ण	1784	लि क गगाधर
21 × 14 5 13, 25	1–18	,,	1908	प्रारम्भ मे 'मुँहपत्ती रा बोल' तथा अत मे 'पोथी का दूहा' है।
17 × 13 9, 13	1–8	अपूर्ण	20 वी श	22 छप्पय छन्द है।
26 5 × 22 5 11, 22	119–126	,,	19 वी श	प्रारम्भ मे 36 रागो के नाम हैं।
27 × 19 26, 21	1–12	पूर्ण	19 वी श.	लि क रामकृष्णदाम
17 × 12 9, 12	190–193	,,	,,	पत्राङ्क 193 पर स्फुट दोहे तथा पत्राङ्क 194 पर ग्रहो के अनुमार रत्नो केनाम एव मत्र है।
27 × 19 26, 19	1–115	अपूर्ण	,,	'रसराज, रसीलेराज' की छाप पदो में है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1801	13830 (11)	रागारा दोहा	
1802	15033 (7)	सभाभूषण	गगाराम
17 काम शास्त्र	14890 (3)	कोक मजरी	कवि कोक
1804	14899 (1)	कोकशास्त्र	" तथा सौभाग्यसुदरी ?
1805	13768 (3)	" भाषा	
1806	15293 (51)	" " सह	"
1807	14042 (1)	"	आनन्द कवि
1808	14336 (5)	नायक-नायिका भेद	
18 रत्न शास्त्र	14928	मोहरा-परीक्षा (मणि परीक्षा)	मानतु गाचार्य
1810	13778 (5)	रत्न-परीक्षा भाषा	
1811	14763	रत्न-परीक्षा	रत्नसागर
19 वास्तु शास्त्र	13827 (3)	वास्तुमार्ग-समर्थ	सूत्रधार मडन पुत्र खेतउ (खेता)

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
13×9 5 13, 16	129–133	अपूर्ण	18 वी श	
17×13 5 12, 15	31–34	,,	20 वी श	
23×16 5 23, 24	13–35	पूर्ण	1828	लि क ओझा अभैकरण लि स्था जोधपुर
14×11 5 8, 13	3–160	अपूर्ण	1900	पत्राङ्क 1-2 अप्राप्त, जीर्ण पत्राङ्क 161-162 पर औषधी विचार है। लि क दयाराम
15 5×12 16, 12	1–68	पूर्ण	1901	लि क मूलजी लि स्था मनफरा गांव
25 5×15 5 24, 42	149–151	अपूर्ण	17 वी श	
25 5×17 21, 17	1–29	पूर्ण	1925	15 खण्डो मे विभक्त लि स्था जोधपुर
14×12 5 13, 14	97–99	अपूर्ण	19 वी श	20 छन्द है।
27 5×13 7, 24	1–9	पूर्ण	20 वी श	
32×25 27, 28	10–14	,	,	रत्नदीपिकाग्रन्थ' भाषा
23×15 5 16, 17	1–33	,,	1888	र का 1755 लि क मनूलाल
21.5×13 15, 22	1–23	,,	1790	र का कु भकर्णराज्ये चित्तौडगढ, लि क रूपा-धारोराव, आगे पत्राङ्क 1-129 पर 'भुवनदीपककेवली बालावबोध' तथा ज्योतिप विचार है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
20 मंत्र-तंत्र शास्त्र	13724	कल्प-सग्रह	
1814	13722	चौरासीतत्र व चौसठ जोगिनीनाम	
1815	15293 (27)	जागुलीविद्या	
1816	13505 (10)	झाडो डीलरी व्याधिरो	
1817	13768 (4)	तत्रविद्या	
1818	13723	"	
1819	12729 (6)	"	
1820	14948 (3)	दीप्या अवतार-विधि समत्र	
1821	15293 (31)	मत्र-यत्र पताकादि-सग्रह	
1822	15293 (29)	" सग्रह	
1823	15293 (24)	" "	
1824	12828	मंत्र सर्वस्व भाषा	
1825	14404	हनुमान मत्र यत्र	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
27 5×14 17, 42	1–40	पूर्ण	2004	लि मेघराज, बाठिया की पोळ नागोर, सस्कृत एव राजस्थानी भाषा मे है।
25×11 17, 60	1–3	,,	1824	तत्रोपचार है।
25 5×15 5 24, 42	52–53	,,	17 वी श	
16×11 5 16, 12	17 वा	,,	19 वी श	ज्वर एव शरीर-रक्षा का
15 5×12 16, 10	68–71	,	गु 1901	
28 5×13 5 16, 50	1–7	,,	20 वी श	
16 5×12 5 14, 24	72–75	,,	,,	
15×11 5 8, 16	1–9	,,	,,	मत्रोपचार-सग्रह
25 5×15 5 22, 46	76-92	,,	17 वी श	सस्कृत मे है।
25 5×15 5 24, 46	55–67	,,	,,	पत्राङ्क 64 पर भड्डली के दोहे हैं।
25 5×15 5 30, 52	42–44	,,	,,	
23×15 22, 17	1–40	,,	1895	लि क लाला चुन्नीलाल
15×11 10, 10	209–217	,,	20 वी श	पत्राङ्क 207–208 पर सवत् 1959 मे मुनि मानमलजी के शिष्य के आगमन की विगत है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
21 स्तुति-स्तोत्र	13362	अंबाजीनो छन्द	
1827	13827 (10)	अंबामाताजीरी आरती	
1828	13769 (40-41)	अंबा-स्तुति एवं विनती	पुण्यमुनि
1829	14408 (4)	"	
1830	15280	आनन्दाष्टक	अंबदास
1831	14075 (6)	कृष्णजी को वधावो	दास ?
1832	12709 (6)	क्षेत्रपालजीरो छंद	कवि विदुर
1833	13769 (16)	"	
1834	13511 (43)	"	
1835	13825 (1)	"	
1836	14075 (4)	गंगाजीरो छन्द	
1837	15293 (22)	गणेशाष्टक एवं भैरवाष्टक	
1838	13769 (53)	गीत-आरतीरो	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×12 10, 20	1–3	पूर्ण	1902	लि क जेठाभाई मेता
21 5×13 15, 22	27–28	,,	18 वी श	पत्राङ्क 26-27 पर देवी की स्तुति है। अतिम पत्र पर नेत्र-औषधी है।
13 5×10 5 12, 14	159–162	,,	1707	पत्राङ्क 192-193 पर अबामाता का गीत है।
15×10 9, 17	53-54	अपूर्ण	गु 1780	पत्राङ्क 51–52 अप्राप्त
15 5×8 6, 16	1–3	पूर्ण	20 वी श	
15.5×11 5 14, 17	38–40	,,	1793	पत्राङ्क 42-43 पर डिगल गीत है।
23×13 14, 26	4-5	,,	18 वी श	
13 5×10 5 13, 20	84–85	,,	,,	
17×12 14, 20	199–200	,,	19 वी श	
24 5×16 19, 37	113–114	,,	16 वी श	प्रारम्भ के 112 पत्र अप्राप्त, पत्राङ्क 113 पर 'हिंगुलाज षट्पदी' का अतिमाश है।
15 5×11 5 8, 15	33–35	,,	18 वी श	
25 5×15 5 30; 46	93 वा	,,	17 वी श	सस्कृत मे है।
13 5×10 5 10, 20	255 वा	,,	18 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1839	13511 (10)	गीत-करणीमातारो	
1840	13511 (9)	गीत-खेतलजीरो	
1841	13511 (11)	गीत-त्रिकुट-श्रीकृष्णजीरो	
1842	14463 (25)	गीत-गोरखनाथजीरो	सेवक मानाजो
1843	13769 (54)	गीत-श्रीठाकुरारो लंका-समयरो	दुरसा आढा
1844	13761 (12)	गीत-सपखरो (स्तुति)	हमीर
1845	13511 (7)	गीत-सारदा मातारो	
1846	14463 (20)	चालकनेचा छंद एवं भवानीजीरो छंद	श्रीकम दुरसा आढा
1847	13514 (2)	चित्रामणिमाला-मंत्र	नन्ददास
1848	13513 (2)	चोथमाताजीरो छंद	गोईन्ददास (गोविन्ददास)
1849	14806	जगदम्बा-छन्द	सीधर कवि (श्रीधर)
1850	13769 (44)	जयनी-छन्द	
1851	12704 (4)	दुर्गासार-बत्तीसी	सूरजभाण

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
17 × 12, 13, 25	33 वा	पूर्ण	19 वी श	
17 × 12 13, 25	32–33	,,	,,	
17 × 12 13, 25	34–35	,	,,	
20 × 16 5 22, 22	237 वा	,,	18 वी श	
13 5 × 10 5 10, 20	256 वा	,,	,,	
16 × 22 5 25, 20	32–33	,,	1855	
17 × 12 13, 25	27–28	,,	19 वी श	पत्राङ्क 26-27 'पर माडराणी रो छद' है।
20 × 16 5 23, 22	220 वा	,,	18 वी श	
16 × 12 5 16, 12	6–8	,,	20 वी श	लि क रुघिया
24 × 16 23, 15	46–48	,,	,,	
25 5 × 11 15, 38	1–7	,,	1717	लि क हीररत्न गणि लि स्था कु आरना
13 5 × 10 5 12, 22	201–204	,,	1720	लि क मोभा, चक्रमध्ये बैठि लिखत पत्राङ्क 205 पर भगवती-गीत' है।
15 × 14 5 9, 14	1–15	,,	1902	लि क छगनलाल पचोली

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1852	15293 (35)	दुर्गासप्तशती	
1853	13769 (43)	देवीजीरो छंद	
1854	13769 (39)	"	कवि हेम
1855	13769 (20)	"	कवि सारंग
1856	13769 (18)	"	कवि धन
1857	13769 (15)	"	कवि मेम (हेम)
1858	13769 (4)	"	केशवो
1859	13769 (46)	"	कवि देद
1860	15293 (34)	नवग्रह एवं शनिश्चर-स्तोत्र	
1861	13761 (13)	नवग्रह-स्तुति	कवि खेतल
1862	13765 (4)	नारायणजीरी नीसाणी	रामराय
1863	14969 (5)	ब्रह्मास्तुति	गो. तुलसीदास
1864	13769 (25)	भगवती-कनेज जोगिणी छंद	दुरसा आढा

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, ग्रक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ ग्रपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5 × 15 5 27, 50	96–106	पूर्ण	17 वी श	सस्कृत मे है ।
13 5 × 10 5 12, 22	195–201	,,	1721	लि. क. सोभा
13 5 × 10 5 12, 14	158-159	,,	18 वी श	
13 5 × 10 5 13, 20	98–101	,,	,,	
13 5 × 10 5 13, 20	88–95	,,	,,	
13 5 × 10 5 13, 20	82–83	,,	,,	
13 5 × 10 5 13, 20	48 वा	,,	,,	लि स्था धूकडेसर
13 5 × 10 5 13, 20	211–216	,,	,	लि क सोभा लि स्था कवर्ता
25 5 × 15 5 21, 46	95 वा	,,	17 वी श	सस्कृत मे है ।
16 × 22 5 25, 22	33–36	,,	गु 1855	
22 × 16 18, 16	12–13	,,	गु 1780	
19 5 × 14 13, 28	40 वा	,,	1895	लि क देवकरण 'रामचरितमानस' से
13 5 × 10 5 12, 16	131–135	,,	1707	लि क नाराइण लि स्था जोजावर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1865	14463 (4)	भवानीजीरो छंद (हिंगुलाजमाता)	कवि नेत
1866	14463 (27)	"	"
1867	15293 (43)	भवानीसहस्रनाम	
1868	12706 (20)	भवानीस्तुति	नाहरसिंह
1869	14418 (3)	भेरूजीरो छंद	
1870	15216 (3)	महादेवजी की आरती	
1871	13769 (17)	महादेवजी रो छन्द	
1872	14714 (3)	महादेवजीरी स्तुति	नरहरदास
1873	14463 (16)	महादेवजीरो छंद	कवि नेत
1874	13769 (58)	महेशजीरो छन्द	
1875	14418 (10)	माताजीरी आरती व भैरूजीरी स्तुति	
1876	14463 (10)	माताजीरो गीत	जोगीदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि मवत्)	विशेष ज्ञातव्य
20×16 5 19, 26	42-44	पूर्ण	1764	लि क जोगीदास
20×16 5 19, 26	240-243	,,	1763	पत्राङ्क 241 पर जोगीदास के पद्य पत्राङ्क 242 पर 'क्षेत्रपालजीरो छद' पत्राङ्क 243 पर 'ठाकुरारी नीसाणी' भवानीजीरो गीत' आदि हैं।
25 5×15 5 30, 46	111 वा		17 वी श	सस्कृत मे है।
15 5×!1 5 8, 13	110-115	,,	19 वी श	पत्राङ्क 117-122 अप्राप्त
12 5×11 9, 15	38-40	,,	,,	पत्राङ्क 41 पर 'माताजीरी स्तुति' है।
13×12 5 11, 16	51 वाँ	,	20 वी श	
13 5×10 5 13, 20	85-87	,,	18 वी श	पत्राङ्क 188 पर रुद्रजीरो सवैयो है।
10 5×8 7, 12	76-80	,,	1946	लि क सिघ्वी गुमानमल लि स्था जोधपुर
20×16 5 25, 24	148-149	,,	1765	लि क जोगीदास, पत्राङ्क 149 पर जोगोदास कृत 'समस्या काकरो' है।
13 5×10 5 14, 24	264 वा	,,	18 वी श.	लि क चेला मामा
12 5×11 10, 15	133-135	,,	19 वी श	अत मे तानसेन कृत एक पद राग भैरव का है।
20×16 5 19, 26	76-78	,,	1764	र का 1764

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1877	14914 (3)	माताजीरी चरमा (चर्चा)	कवि नारायण
1878	13761 (29)	माताजीरो छंद	दुरसा आढा
1879	14079 (1)	"	
1880	15216 (1)	"	हृदयराम
1881	15096 (4)	"	जगियो
1882	14914 (64)	माताजीरा दुआला	नारायण
1883	14717 (2)	माताजीरा दोहा	भानो
1884	13765 (5)	माताजीरो ध्यान	नरसिंह
1885	15216 (2)	माताजीरी नीसाणी	
1886	13509 (10)	माताजीरी स्तुति	वल्लभदास
1887	14043 (1)	रामरक्षा	रामानन्द
1888	14352 (1)	"	"

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 14, 24	41–42	पूर्ण	18 वी श	अत मे जगरूप कृत 'पार्श्वनाथ स्तवन' है ।
16×22 5 27, 16	19-20	,,	1804	हरराम जी मुखा लिख्यौ लि स्था जसोल आगे 'भर्तृहरिशतक' सटिप्पण है ।
14×13 5 16, 18	1–5	,,	1790	लि क सिवराज वछराजोत लि स्था सिवाणा गढ
13×12 5 11, 16	44-47	,,	20 वी श	कीट-भक्षित प्रारम्भ मे सस्कृत के स्तोत्रादि हैं ।
20 5×15 5 16, 22	25 वा	,,	1836	लि क छीतरमल
15 5×11 10, 22	228 वा	,	18 वी श	पत्राङ्क 229 वा अप्राप्त पत्राङ्क 228, 230 पर चीहल एव जसराज के दोहे हैं ।
22×20 20, 16	91–92	,,	1838	अत मे शृगारिक कवित्त हैं ।
22×16 18, 16	13–14	,,	1780	लि क हरजी गौड, मेडता पत्राङ्क 15 पर ब्रह्माजीरे घडी, पोहर रो लेखो है ।
13×12 5 11, 16	47–50	,,	20 वी श	पजाबी पुट है । पत्राङ्क 50 पर 'बद्रीनाथ-लीला' है ।
24×17 15, 28	77–78	,,	19 वी श	
24 5×17 11, 24	1–3	,,	1910	प्रारम्भ के दो पत्रो पर 'हरिचदसत' के 13 छन्द हैं ।
13 5×10 5 9, 12	1–6	,,	19 वी श	प्रारम्भ के चार पत्रो पर मीरा, तुलसी व मनोहर के पद हैं ।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एव टीकाकार
1889	14392 (6)	रामरक्षा	गोरखनाथ
1890	15294 (6)	रामरक्षास्तोत्र-भाषा	
1891	14434 (3)	रामस्तोत्र	गो तुलसीदास
1892	15294 (4)	वसुदेव रावउत दसरथ देवउत	पृथ्वीराज राठौड
1893	14676 (5)	विष्णु-सहस्रनाम	
1894	12704 (1)	शक्ति-भक्ति-प्रकाश	माधोराम कायस्थ
1895	13769 (19)	शनिश्चरजीरो छद	
1896	12717 (6)	"	कवि हेम
1897	13511 (48)	"	"
1898	15096 (3)	"	"
1899	13373	शिवजीनी बारामासी	शिवानन्द
1900	15293 (39)	श्रीचक्राष्टकम्	शंकराचार्य

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
11×9 5 7, 13	60–62	पूर्ण	20 वी श	पत्राङ्क 59-60 पर सतदास के पद हैं।
9 5×9 9, 9	32–38	,,	1815	लि. स्था सरदारगढ पत्राङ्क 39-43 पर मत्रोपचार सग्रह है।
11×7 5 6, 12	43–46	,,	1880	
9 5×9 12, 13	16-21	अपूर्ण	19 वी श	42 छन्द हैं, अतिमाश अप्राप्त
21 5×12 5 11, 24	58–68	पूर्ण	1848	सस्कृत मे हैं। चित्र स 1
15×14 5 9, 13	4–58	अपूर्ण	1901	र स्था मेडता पत्राङ्क 1-3 अप्राप्त लि क प छगनलाल
13 5×10 5 13, 20	96–97	पूर्ण	18 वी श	
21 5×14 13, 38	67-68	,,	,,	अत मे 'माताजीरो छन्द' के 4 दोहे हैं।
17×12 13, 20	217–219	,,	19 वी श	
20 5×15 5 16 22	22 वा	अपूर्ण	1836	लि क छीतरमल
18 5×11 5 10, 26	1	पूर्ण	19 वी श	लि क मेताजी शकरजी
25 5×15 5 16, 44	108 वा	,,	17 वी श	सस्कृत मे है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1901	14432 (4)	सरसा माताजीरी स्तुति	जसवंतसिंह
1902	14075 (1)	सहस्रनामस्तोत्र सग्रर्थ (रामसहस्रनाम)	
1903	14914 (69)	सीकोत्तरीमातरो छंद	गागलो
1904	14370 (4)	सूरजजीरो सिलोको	
1905	14358 (8)	सूरजस्तोत्र	
1906	13769 (7)	हनुमंत-छंद	
1907	13667	हनुमान-चालीसा	गो तुलसीदास
1908	13476	हनुमानजीरी आरती	"
1909	13492 (2)	"	"
1910	14342 (11)	हनुमानजीरी वारत्तो	
1911	14284 (3)	हनुमान-जैत	नरहरिदास
1912	14363 (4)	"	"

माप मे मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल वि सवत्	विशेष ज्ञातव्य
19×9 5 11, 13	21 वा	पूरा	19 वी श	
15 5×11 5 12, 20	1–75	,,	1726	लि क महात्मा रुघनाथ लि स्था खीवसर
15 5×11 13, 28	274–275	,,	18 वी श	पत्राङ्क 273-274 पर 'बलदेवगीत' आदि हैं।
21×15 9, 16	106 109	,,	19 वी श	
15 5×13 5 13, 16	134–136	,,	,,	
13 5×10 5 10, 16	56–57	,,	1707	
30 5×15 13, 42	1-4	,,	19 वी श	अत मे केशवदास कृत एक छद है।
12 5×8 6, 13	1–4	,,	1875	लि क जगन्नाथ लि स्था राधनपुर
19 5×18 14, 12	103–105	,	19 वी श	
21×14 5 12, 14	72–78	,,	,,	जलसिक्त
10×8 7, 13	141–144	,,	1911	लि क उदयराम लि स्था खीवसर
13 5×10 5 10, 12	36–38	,,	19 वी श	पत्राङ्क 38-39 पर तुलसीदास के पद है। पत्राङ्क 40-43 पर सप्त ऋषियो के नाम व राजाओ की वशावली है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
1913	14359 (9)	हनुमान-जैति	नरहरिदास
1914	13667	हनुमान-बाहुक	गो तुलसीदास
1915	14914 (32)	हिंगलाजदेवीजीरी चर्या आदि	नारायण, पातल
22 (1) जैनागम, दर्शन			
1916	14611	उत्तराध्ययन कथा-संग्रह	
1917	13988	कर्मग्रन्थ यन्त्र भाषा	पंडित सुमतिवर्द्धन
1918	15293 (12)	कुशलानुबन्धी अध्ययन सवालावबोध	
1919	14428 (19)	जम्बूद्वीप-वर्णन	
1920	13825 (22)	जीवविचार-सूत्रार्थ	
1921	15293 (13)	जीवविचार-स्तवक	शांति सूरि
1922	15270	गणधरवाद	
1923	14428 (6)	नवतत्त्वविचार	
1924	14931	"	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14 5×11 10, 18	54–55	पूर्ण	19 वी श	अन्त मे कृष्ण व कौरव-सवाद का एक पद है।
22×15 5 13, 20	1–6	,,	,,	
15 5×11 13, 24	149–151	,,	18 वी श	अतिम कृति अपूर्ण है। पत्राङ्क 152 वा अप्राप्त
26×10 5 16, 45	1–38	,	19 वी श	चतुर्थ अध्याय पर्यन्त
27×13 12, 34	1–20 1–9	अपूर्ण	1903	द्वितीय ग्रन्थ अपूर्ण लि क हमीर विजय लि स्था कृष्णगढ
25 5×15 5 30, 50	15–19	पूर्ण	17 वी श	सस्कृत-प्राकृत-राजस्थानी मे
17×17 15, 16	247–252	,,	20 वी श	
24 5×16	206–225	,,	16 वी श	प्राकृत-राजस्थानी पत्राङ्क 206 पर महालक्ष्मी-स्तोत्रादि सस्कृत मे है।
25 5×15 5 46, 52	19 वां	,,	17 वी श	
25 5×11 5 15, 40	1–8	,,	19 वी श	
17×17 13, 16	64–66	,,	20 वी श	पत्राङ्क 68-69 पर 24 तीर्थङ्कर, 11 गणधर, 20 विहरमान व 16 सतियो के नाम हैं।
25×12 18, 41	1–21	,,	,,	अतिम पत्र अन्य ग्रन्थ का है जिस पर 'नक्षत्रभेद-विचार' एव 'नाडीचक्र' है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1925	15293 (16)	नवतत्त्वविचार	
1926	14323	निशीथ सूत्र की हुडी	
1927	14428 (14)	प्रतिक्रमणसूत्र	
1928	14329 (5)	"	
1929	14428 (13)	लघुदण्डक	
1930	14309	"	
1931	14125 (4)	लघुनवतत्त्व	
1932	14060	समयसार-नाटक	बनारसीदास
1933	13935	"	"
1934	13826 (1)	षडावश्यक-बालावबोध	शोवक जयविजयगणि शिष्य विमलहर्ष
22(2)जैन प्रकरण	14428 (15)	अठाईस बोल	
1936	13958 (18)	आचार्यना छत्तीसगुण आदि	
1937	15293 (22)	आलोयण-विचार	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5×15 5 24, 46	22–24	पूर्ण	17 वी श.	
22 5×11 5 17, 28	1–19	,,	1820	लि क गुलालचन्द
17×17 13, 16	197–208	,,	20 वी श.	पत्राङ्क 196–197 पर स्तुति-स्तोत्र एव गीत है ।
18×13 5 11, 24	13–33	,,	19 वी श	
17×17 13, 16	175–195	,,	20 वी श	
25×11 5 19/15 40/28	1–10	,,	19 वी श	
16×12 13, 35	9–12	अपूर्ण	20 वी श	
23 5×13 16, 32	1–54	पूर्ण	1895	लि क ऋषि मनरूप लि स्था रत्नपुरी
24×11 5 15, 38	1–34	अपूर्ण	19 वी श	अतिम पत्र अन्य प्रति का है ।
18 5×15 16, 26	25–88	,,	17 वी श	प्रारम्भ अप्राप्त पत्राङ्क 104 पर 'पाशाकेवलो है ।
17×17 13, 16	208–112	पूर्ण	20 वी श	पत्राङ्क 212 पर 'दोषविचार' है ।
18×16 15, 20	14–18	,,	18 वी श	पत्राङ्क 14 पर सवत् 1757 मे लिखी 'व्रतविधि' है ।
25 5×15 5 30, 50	41 वा	,,	17 वी श	सस्कृत मे है ।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1938	13958 (5)	इक्वीस ठाणा	
1939	14428 (18)	इक्कीस द्वार	
1940	14330	एक सौ इक्यासी वोला री हुडी	
1941	14428 (20)	गत-आगत-वर्णन	
1942	14428 (4)	चार ध्याँन	
1943	14234 (1)	चौवीस तीर्थङ्कर परिवार चक्र	
1944	14428 (1)	चौवीस दण्डकद्वारान्तर्गत प्रकीर्ण सग्रह	
1945	14310	छुटकर वोल-संग्रह	
1946	14234 (2)	जवूद्वीप मे दस वोला रो विचार	
1947	14234 (3)	तीर्थङ्कर भगवतरा चौतीस अतिसय	
1948	14234 (5)	तीर्थङ्करांरा नाम चौपईवद्ध	
1949	14428 (21)	तीनमनोरथ, पचवोल, वीसनाम आदि	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×16 17, 21	35–44	पूर्ण	18 वी श	
17×17 15, 16	226–245	,,	20 वी श	
20 5×13 24, 36	1-9	,	1962	लि क खूबचद
17×17 13, 16	252–256	,,	20 वी श	
17×17 13, 16	56–58	,,	,,	
25×16 5 22, 22	1–28	,,	19 वी श	
17×17 13, 16	1–48	,,	20 वी श	पत्राङ्क 49 पर उपमा-सग्रह है पत्राङ्क 49-54 पर 'रूपी-ग्ररूपी रा बोल' है।
24 5×10 5 13, 36	1–17	,,	19 वी श	
25×16 5 18, 34	29–32	,,	,,	
25×16 5 18, 34	33–35	,,	,,	कीटविद्ध
25×16 5 18, 34	42–44	,,	,,	
17×17 13, 16	256–258	,,	20 वी श	पत्राङ्क 259 पर कारको के नाम हैं।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1950	14832	तेरै काठियारी गाथा अभक्षनाम अठारे पाप-स्थान आदि	
1951	14313	दण्डकद्वार	
1952	14125 (2)	पचदण्डक अवचूरि	
1953	14428 (12)	पच्चीस वोला गे थोकडो	
1954	14130	प्रश्नोत्तर रत्नमाला-वालाववोध	
1955	14234 (4)	वासठ मार्गना द्वार	
1956	14325	वोल विचार-सग्रह	
1957	14234 (6)	श्रावकना वोल	
1958	14328	सम्यक्त निर्णय गाथार्थ वालाववोध	
1959	13770 (4)	साधु श्री विनैचदजी ने कागद लिखियो तिणरी विगत	
1960	14129	सूक्तावली	
1961	14465	सूक्तिमाला भाषा वालाववोध	वा केसरविमल गणि
1962	13958 (11)	सूक्तिमूक्तावली-भाषा	मू सोमप्रभ भा वनारसीदास

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5×11 18, 48	1-3	पूर्ण	19 वी श	
25×11 16, 36	1-25	,,	1695	लि क. आर्या सोभागदे
26×12 13, 35	4-6	,,	20 वी श	
17×17 13, 16	166-175	,,	,,	
28 5×13 22, 42	1-6	,,	19 वी श	लि स्था पालणपुर
25×16 5 18, 34	36-39	,,	,,	कीटविद्ध, पत्राङ्क 40-41 पर तीर्थङ्करो के नाम हैं।
22 5×10 5 10, 28	1-13	,,	,,	
25×16 5 18; 34	45 वाँ	,,	,,	पत्राङ्क 46-51 पर तीर्थङ्कर नाम, तीन चौवीसी नाम आदि सग्रह है।
23×10 5 10, 32	1-18	,,	1932	
23 5×16 14, 32	18 वा	,,	19 वी. श.	सस्कृत-राजस्थानी
25×11 13, 35	1-6	,,	,,	अतिम पत्र पर आणद मुनि कृत 'तवाखू री मज्झाय' है।
23×11 15, 36	1-10	,,	,,	र. का. 1794 लि. स्था सादडी
18×16 18; 27	55-66	,,	1761	लि. क. क्षेमचन्द्र; मगलापुर भाषा र का 1691

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
1963	13828 (22)	सूत्र माहि पूछवा योग्य वोल-सग्रह तथा आगमारो आसरो	
1964	12729 (2)	हुडीवोल	
(22)-3 जैनाचार	14107 (1)	अजनशलाका-वालाववोध	विजयलक्ष्मी सूरि
1966	14422 (4,7)	अष्टप्रकारीपूजा	देवचन्द शिष्य दीपचद
1967	14319 (2)	"	"
1968	14346 (3)	"	"
1969	14350 (4)	"	"
1970	14345 (6)	" एव जन्म महोत्सव छद	"
1971	14124	अष्टोत्तरी स्नात्र-विधि आदि	
1972	14954 (2)	आलोयणा-विधि	
1973	13769 (5)	ईश्वरी-पूजा; थापना-विधि	
1974	15293 (54)	ऋषभदेव-पूजा	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 15, 10/32	70–78	पूर्ण	18 वी श	पत्राङ्क 68-69 अप्राप्त लि क पडित भागचन्द पत्राङ्क 78 पर 'सबोध-सप्तति' है।
16 5×12 5 16, 28	32–49	,,	20 वी श	
26 5×12 5 15, 40	1–11	,,	,,	लि क गुमानसागर
10×9 5 10, 12	22–29, 84–93,	,,	19 वी श	
24×12 12, 13	6–10	,,	,,	
15×13 13, 16	81–88	,,	,,	अक्षर उडे हुए धूमिल हैं।
14×10 8, 16	44–52	,,	,,	
16×12 14, 14	1–16	,,	,,	पत्राङ्क 16-20 पर आरती एवं स्तवन हैं।
26 5×11 12, 28	1–16	,,	1836	लि क. नेमविजय लि स्था. पीपाड
21×11 5 14; 34	1–7	,,	20 वी श	अत मे संस्कृत मे 'सकल चैत्य त्रैलोक्य स्तवन' तथा जिनहर्ष व समयसुन्दर कृत सज्झाय हैं।
13 5×10 5 13, 20	49–53	,,	18 वी श	
25 5×15 5 30, 46	195 वां	अपूर्ण	17 वी श.	संस्कृत मे है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (3) जैनाचार	13496 (18)	कलस-पूजा	जयमगलसूरि शिष्य रामचन्द्रसूरि
1976	14231	चोसठप्रकारी पूजा-विधि	वीरविजय
1977	13350	चौवीस तीर्थङ्करारी पूजा	
1978	13828 (32)	ज्ञानपहिरावणी-गाथा	
1979	15246	नवपदपूजा-वासक्षेत्रपूजादि	देवचन्द
1980	14422 (5)	नवपदपूजा	देवचन्द एव यशोविजय वाचक
1981	14319 (3)	"	"
1982	14346 (1)	"	"
1983	14350 (5)	"	"
1984	14400 (4)	"	"
1985	14107 (2)	नवाणु प्रकारनी पूजा	वीरविजय शिष्य विजयदेवेन्द्र
1986	13958 (17)	निर्वाणकाण्ड-भाषा	साह भगवतीदास (भगौतीदास)

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×14 18, 22	45-50	पूर्ण	19 वी श	
24×12 5 15; 25	1-37	,,	1934	लि क हीरा ब्राह्मण अत मे शुभवीर मुनि कृत 'नवअगपूजा' के दोहे हैं।
20×14 5 12; 24	1-122	अपूर्ण	19 वी श	पत्र चिपके हुए हैं।
15 5×11 15, 10/32	105-106	पूर्ण	,,	प्राकृत मे है।
25×12 14, 34	1-11	,,	19 वी श	हीरधर्म एव पद्मसूरि कृत चैत्यवदनादि' भी हैं।
10×9 5 10, 12	30-58	,,	1894	लि क विजयसागर
24×12 12, 13	10-19	,,	19 वी श	
15×13 13, 16	58-72	,,	,,	गुटके के प्रारम्भ मे प्राकृत की कृतियाँ है।
14×10 8, 16	52-72	,,	,,	पत्राङ्क 72-73 पर 'मैमदापीर' का मत्र है।
22 5×18 18, 18	1-18	,,	20 वी श	
26 5×12 5 15, 40	11-14	,,	20 वी श	र का 1884
18×16 15, 24	12-13	,,	गु 1763	र का 1741

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (3) जैनाचार	14342 (10)	निर्वाणकाण्ड-भाषा	साह भगवतीदास
1988	14120	प्रतिमा-थापरण, कुमती-उथापरण-चरचा	
1989	14125 (1)	प्रश्नोत्तर, वीसथानक उद्यापन-विधि	
1990	15050	वाराव्रतनी टीप	
1991	14107 (3)	वाराव्रत-पूजा	वीरविजय
1992	14107 (4)	वीसथानक-पूजा	विजयलक्ष्मीसूरि
1993	14609	श्राद्धप्रतिकर्म-अतिचार	
1994	14409 (12)	श्रावकना-अतिचार	
1995	14566	"	
1996	14368 (10)	श्रावकातिचार	
1997	14422 (6)	सतरहभेदी पूजा	साधुकीर्ति
1998	14400 (5)	"	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21 × 14 5 12, 15	70–71	पूर्ण	19 वी श	र का 1741
25 5 × 12 5 19, 50	1–4	"	"	लि स्था जोधपुर
26 × 12 13, 35	1–2	अपूर्ण	20 वी श	तृतीय पत्र अप्राप्त
26 × 13 20; 40	1–3	पूर्ण	1948	लि क मयाचन्द लि स्था गाँव भदडा (कच्छदेश)
26 5 × 12 5 15, 40	14–17	"	20 वी श	
26 5 × 12 5 16, 42	21–26	"	"	पत्राङ्क 18–20 अप्राप्त
25 5 × 10 5 15; 38	2–5	अपूर्ण	1673	लि क. पुण्यविजयगणि प्रथम पत्र अप्राप्त
16 5 × 12 5 12; 15	31–42	पूर्ण	19 वी श	
15 × 9 5 11, 22	1–14	"	16 वी श	लि क मुनि हेमविजय
21 × 14 5 12, 25	91–101	"	1908	लि क फतैविजय लि स्था फलौदी
10 × 9 5 10, 12	59–83	"	1895	र का 1618 लि क विजयसागर
22 5 × 18 18, 18	18–28	"	20 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (3) जैनाचार	13828 (17)	सतरहभेदी-पूजा	
2000	14332 (3)	"	साधुकीर्ति
2001	14346 (4)	"	"
2002	14332 (6)	सतरहभेदीपूजा-विधि	सकलचन्द
2003	14813	"	
2004	14300 (1)	सामाइकरा वत्तीस दूषण, प्रतिक्रमण-विधि, पारण-विधि आ	
2005	14428 (7)	सामाइक प्रतिक्रमण-विधि	
2006	14404 (5)	सामाइकरी पाटी	
2007	14368 (8)	सामायकलेवानी विधि	
2008	14428 (16)	"	
2009	14107 (6)	सिद्धचक्रजीरी वास-पूजा	क्षमाकल्याण
2010	14319 (1)	स्नात्रपूजा	देवचन्द्र शिष्य दीपचद

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 18, 22	21–28	अपूर्ण	गु 1755	लि क पडित रामचन्द्र,पत्राङ्क 21 वा खण्डित व 28 का अश मात्र प्राप्त । पत्राङ्क 15-21 पर जिनवल्लभसूरि कृत 'महावीरचरित्र' प्राकृत मे है ।
15×15 5 19, 22	7–12	पूर्ण	गु 1934	लि. क राजेन्द्रसागर
15×13 13, 16	88–103	"	1898	लि क पडित धरमचद लि स्था वीकानेर
15×15 5 16, 32	1–8	,	1940	लि. क मुनि रामसागर
21, 11 9, 40	1–3	अपूर्ण	18 वी श	पडीमात्राओ का प्रयोग है ।
25 5×13 13, 28	115–123	पूर्ण	20 वी श	गुटके के प्रारम्भ मे सस्कृत मे स्तुति-सग्रह है । पत्राङ्क 123-124 पर मति-कल्याण कृत 'ऋषभदेव-स्तुति' है ।
17×17 13, 16	69–85	"	"	
15×11 9, 12	197 वा	"	"	
21×14 5 12, 25	78–88	"	गु 1908	
17×17 13, 16	222–225	"	20 वी श.	
26 5×12 5 16; 42	33–34	"	1902	
24×12 12; 32	1–6	"	19 वी श.	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
2011	14350 (3)	स्नात्रपूजा	देवचन्द्र शिष्य दीपचद
2012	14393 (2)	"	"
2013	14422 (4)	"	"
22 (4) रास-चौपई	14404 (10)	अजनासतीरो-रास	
2015	14561	अजनासुन्दरी-च ि	पुण्यसागर वाचक
2016	14631	" "	भुवनकीर्ति शिष्य ज्ञाननंदी
2017	14680	" " सचित्र	
2018	14547	अवड-रास	ज्ञानशेखर गणि शिष्य सौभाग्यशेखर
2019	14107 (5)	अध्यात्मगीता-बालावबोध	देवचन्द शिष्य दीपचद
2020	13826 (4)	अमरदत्त-मित्रानन्द-रास	शिष्य देवगुप्तसूरि
2021	13071	आणंद-सधि	मुनि श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष
2022	14400 (7)	"	"
2023	14497	आर्द्रकुमार-विवाहलो	कमलविजय शिष्य लाभविजय

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×10 8, 16	31–44	पूर्ण	19 वी श	
11 5×11 12, 14	39–55	,,	,,	अत मे 'अष्टप्रकारी-पूजा' प्रारम्भ की गई है।
10×9 5 9, 12	4-21	,	,,	
15×11 12, 12	251–273	अपूर्ण	1957	
24 5×11 17, 52	1–14	पूर्ण	1740	र का 1789
24 5×10 5 13, 42	1–28	,,	18 वी श	र. का. 1776 उदयपुर लि क. हीरसागर गणि, राजनगर
22×10 5 9, 32	1–34	अपूर्ण	1852	लि क सूरतराम मथेन पत्राङ्क 14-23 अप्राप्त, चित्र स 53
26×11 19, 42	1-25	पूर्ण	19 वी श	र का 1710
26 5×12 5 6, 40	26–33	,,	1902	लि क गुमानसागर लि स्था सिवपुरी
18 5×15 15, 29	124–154	,,	17 वी श	र का 1606 शाके 1472
25 5×11 5 13, 38	1–12	अपूर्ण	19 वी श	अतिमाश अप्राप्त
22 5×11 18, 21	29–45	पूर्ण	1924	र का 1684 लि स्था फलोधी नयरे
25 5×11 18, 46	1–2	,,	17 वी श	पडी मात्राओ का प्रयोग है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
(22) 4 रास-चौ	15267	आषाढभूतिमुनि-रास (चौपई)	ज्ञानसागर शिष्य मुनि माणिक्यसागर
2025	12709 (5)	"	"
2026	14523	"	सुधर्मरुचि
2027	14563	इलाकुमार-चउपई	ज्ञानसागर शिष्य माणिक्यसागर
2028	14639 (2)	" "	"
2029	12753	उत्तमकुमाररी-चउपई	तत्त्वहंस कवि
2030	14404 (4)	उपदेस-रास	ऋषि रायचन्द
2031	14537	ऋषभदेव-विवाहलु धवलबन्ध	सेवक
2032	14544	"	"
2033	14551	"	"
2034	14600	"	"
2035	14630	ऋषिदत्ता-चउपई	नयप्रमोद
2036	14542	ऋषिदत्ता-रास	जयवन्तसूरि

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25×11 16, 52	1–5	पूर्ण	19 वी श	र का 1724 र स्था चक्रापुर गाँव
23×13 11, 22	68–87	,,	1762	लि क हितराज
25×11 13, 42	1–3	,,	17 वी श.	लि क चेला ज्ञानसोम साध्वी रत्नसुन्दरी पठनार्थ
24×10 15, 50	1–6	,,	1729	र का 1719 शेषपुरी लि क रत्नविजय गणि
14×13 11, 16	27–51	,,	19 वी श	लि क मानजी
28 5×11 16, 44	1–36	,,	1901	र का 1731 मठाडा नगर लि क विजयसागर पूनमगच्छीय
15×11 9, 12	173–193	,,	1939	र का 1820 पत्राङ्क 194–196 पर मत्रोपचार है।
26×10 5 13, 44	1–10	,,	17 वी श	जीर्णप्रति से प्रतिलिपि होने के कारण बीच-बीच मे अक्षर छोड दिए गये हैं।
25 5×11 11, 40	1–14	,,	,,	
25 5×11 13, 34	2–10	अपूर्ण	1591	प्रथम पत्र अप्राप्त लि क विजयराज
25×12 16, 42	108–112	,,	1659	अतिमाश अपूर्ण
23 5×10 10, 12	1–9	पूर्ण	18 वी श	र का 1408
25 5×11 14, 42	1–22	,,	17 वी श	र का 1643 गधार वदर लि क उदयकुशल

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एवं टीकाकार
22-(4) रास नौ	13825 (16)	कन्नी-रास	
2038	13505 (12)	रानड़-कठियारागी-चउपई	मानसागर शिष्य जीतसागर
2039	12732 (2)	,,	,,
2040	15293 (36)	[illegible]-चउपई	देवशील
रा. 2041	14656	कुमारपाल-रास	हीरकुशल शिष्य विमलकुशल
2042	14608	[illegible]-रास	
2043	14573	[illegible]	
2044	12733 (4)	[illegible]-चउपई	जयचन्द्र शिष्य जिनचन्द्रसूरि
2045	13762 (2)	,,	,,
2046	[illegible] (1)	[illegible]	[illegible]
2047	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5×16 24, 40	200 वा	अपूर्ण	16 वी श.	
16×11 5 14, 16	34–50	पूर्ण	1872	अगले चार पत्रो पर'सोनाजीरी पीढिया-री याददाश्त' तथा नुस्खा है ।
21×16 17, 34	19–25	,,	1851	र का 1747 लि क ज्ञानविजय गणि, जलसित्क
25 5×15 5 24, 40	51–52	,,	17 वी श	
26×12 14, 46	1–28	,,	1659	र का 1640 अकिमपुरी लि स्था घूमा
25 5×11 13, 38	1–16	,,	1709	लि क खेमविजय लि स्था कालद्रीनगर
25×11 14, 48	1–7	,,	18 वी श	लि स्था वरणा
19 5×17 5 15, 18	116–154	,,	19 वी श	र का 1721 बीकानेर
22 5×16 5 22, 8	1–15	,,	1943	
15×11 13, 15	5-11	अपूर्ण	20 वी श	पत्राङ्क 1–4 अप्राप्त, पत्राङ्क 11 पर समयसुन्दर कृत 'महावीरस्तवन' तथा अगले पत्रो पर पट्टी-पहाडे है ।
25 5×11 5 26, 44	1–12	पूर्ण	18 वी श	र का 1751 लि क मुनि कमलसागर
19 5×17 5 15, 18	1–42	,,	1873	र का 1757 पत्राङ्क 42–43 पर चौवीसतीथङ्कर-नाम हैं । कर्त्ता लु कागच्छीय है ।

[illegible]	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (4) ग्राम-की	14404 (3)	गुणकरंड-गुणावली-चौपई	दीपचन्द ऋषि शिष्य मुनि-क्षेमकर्ण वर्द्धमान
2050	14440	” ” सचित्र	गजकुशल
2051	13806 (16)	गौतम-पृच्छा-चउपई	मनरंग
2052	13828 (64)	गौतमस्वामी-रास	विनयप्रभ उपाध्याय
2053	14379 (2)	” ”	”
2054	14332 (2)	” ”	”
2055	14333 (1)	” ”	”
2056	14238 (8)	गौतमस्वामी-रास	”
2057	14336 (6)	” ”	”
[illegible]	[illegible]	” ”	”
[illegible]	[illegible]	” ”	”
[illegible]	[illegible]	” ”	”
[illegible]	[illegible]	” ”	”

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×11 13, 15	34–96	पूर्ण	20 वी श	
24 5×17 5 19, 36	3–42	अपूर्ण	19 वी श	र का 1714; चित्र स 36+17=53 पत्राङ्क 1, 2, 11, 16, 17, 19, 39, 41 वे अप्राप्त,पत्राङ्क 16,20 वा दोबार
14 5×13 14, 14	37–44	पूर्ण	,,	पत्राङ्क 34-37 पर औषधी सग्रह तथा 44–45 पर 'आत्मा-सज्झाय' है।
15 5×11 9, 18	100–108	,,	18 वी श	र का 1412 खभात पत्राङ्क 107 वा खडित
18×13 5 11, 14	14–21	,,	19 वी श	
15×15 5 19, 22	3–7	,,	1934	
17 5×13 5 17, 16	1–11	,,	19 वी श	
16×11 10, 18	88–98	,,	,,	र. का 1412 खभात
15×13 13, 16	149–156	,,	1888	
14×10 8, 10	1–14	,,	19 वी श	
21×14 5 13, 25	109–114	,,	1908	लि क फतैविजय लि स्था फलोदी
20×16 5 23, 22	231–334	,,	18 वी श	लि क मुनि जोगीदास अत मे 'पेट दूखने' की औपधी है।
24×11 13, 34	1–5	,,	19 वी श	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (4) तान-बी०	14665 (1)	चतुर्गति-चउपई	
2063	13505 (11)	चंदन-मलयागिरि री चउपई	भद्रसेन
2064	13905	" "	"
2065	14312	" "	खेमहर्ष (क्षेमहर्ष)
2066	12277	चंदलेहा री चउपई	मतिकुशल शिष्य रतनवल्लभ
2067	14585	" "	"
2068	14545 (5)	[illegible]	
[illegible]	14519 (2)	[illegible]	[illegible]
[illegible]	14262	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible] चउपई	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11 18, 56	1–3	पूर्ण	18 वी श	पत्राङ्क 3 पर सोमसुन्दरसूरि शिष्य कृत 'विमल-मत्रीश्वररास' है।
16×11.5 14, 16	18–34	,,	,,	
28×12 13, 31	1-10	पूर्ण	18 वी श	
25 5×10 5 16, 48	1–14	अपूर्ण	19 वी श	
16×11 5 11, 18	1–97	पूर्ण	,,	र का 1728
26×12 17, 40	1–20	,,	1800	लि. क. यशोहर्ष शिष्य भक्तिहर्ष
16×12 12, 14	41-49	,,	19 वी श	र. का 1839 नागोर
25×10 5 18, 48	4–7	,,	18 वी श.	र. का. 1584
25×11 5 15, 36	1–21	अपूर्ण	19 वी श	
26×12 12, 36	1–23	पूर्ण	1987	र का 1970 नीमच लि क केसुलाल, लि स्था. भावी
24 5×16 24, 40	183–187	,,	17 वी श	र का. 1522
12×11 5 12, 12	19–23	,,	1819	लि क मुनि अमृतउदय
15×11 13, 15	32–33	,,	20 वी श.	प्रारम्भ मे 'लघुचाराक्य राजनीति' है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (4) रास-चौ०	12709 (17)	ढोला-मारूरी चउपई	कुशललाभ
2076	12717 (4)	"	"
2077	12730 (1)	"	"
✓2078	13771 (1)	" सचित्र	"
2079	14615	थावच्चासुत-साधु-चउपई	समयसुन्दर शिष्य सकलचद
2080	12733 (3)	दान-शील-तप भावनारो चौढालियो (सवाद-शतक)	"
2081	14632 (4)	"	"
2082	14621	"	"
2083	14412 (12)	"	"
2084	13806 (4)	"	"
2085	14385 (3)	"	"
2086	15260	"	"

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23×13 15, 34	1-29	पूर्ण	19 वी श	र का 1617 जैसलमेर लि क नित्यसागर
21 5×14 11, 24	22–62	,,	1795	लि क उमेदराज लि स्था खेरवा नगर
17×12 5 12, 18	1–75	,,	1863	
19×15 13, 19	1–60	अपूर्ण	19 वी श	चित्र सख्या 31, अतिमाश अपूर्ण
25 5×11 15, 42	1–15	पूर्ण	1729	र का 1691 खभात लि स्था लूणकरणसर
19 5×17 5 15, 16	108–115	,,	19 वी श	र का 1662 सागानेर
24.5×10 5 15, 40	18–21	,,	1851	
25 5×11 13, 42	1–5	,,	1678	अचलगच्छाधिराज- श्री कल्याणसागरसूरीश्वर विजयराज्ये लिपि बद्ध
14×11 8, 16	217–229	अपूर्ण	गु 1707	
14 5×13 18, 15	3–11	पूर्ण	19 वी श.	पत्राङ्क 1–3 पर प्राकृत मे 'महावीर-स्तोत्र' है।
15 5×13 5 12, 15	80–91	अपूर्ण	,,	
25 5×10 5 13, 46	1–4	पूर्ण	18 वी श	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (4) रास-चौ०	14600 (2)	देवकुमार मत्रीश्वर-चउपई	सौभाग्यसुन्दर गणि शिष्य देवसमुद्र
2088	13825 (10)	धन्ना-रास (चरित्र चउपई)	मतिशेखर
2089	14600 (13)	,,	,,
2090	14560	धर्मदत्त चन्द्रधवल-चउपई	राजलाभगणि शिष्य राजहर्ष
2091	13778 (6)	धर्मबावनी	धर्मसी (धर्मवर्द्धन)
2092	13785 (3)	धर्मबुद्धि-पापबुद्धिनी चौपई	लाभवर्द्धन शिष्य शातिहर्ष गणि
2093	14640 (1)	,,	,,
2094	14600 (2)	धर्मरत्न-चतुष्पदी	धर्मसमुद्र
2095	14353	धर्मलावणी	चपाराम
2096	14416 (4)	ध्यानबत्तीसी	बनारसीदास।

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 × 12 16, 48	78-88	पूर्ण	गु 1638	र. का. 1624 मेदिनीपुर अत मे सकलचद कृत गीत है।
24 5 × 16 19, 26	154-161	अपूर्ण	16 वी श	र का 1514 पत्राङ्क 128 पर गौतमस्वामी रास' का प्रारम्भ है। पत्राङ्क 129-143 अप्राप्त
25 × 12 17, 48	89-98	पूर्ण	1659	लि क शुभकरण लि स्था राजलदेसर
25 5 × 11 18, 52	1-18	,,	17 वी श	र का. 1547
32 × 25 27, 26	.4-17	,,	20 वी श	र का 1725
22 5 × 16 5 25, 34	1-17	,,	1943	र का 1742
15 5 × 11 13, 28	1-34	,,	1801	लि क कोडूराम मथेन लि स्था जोबनेर
25 × 12 16, 54	21-27	,,	1637	र का 1564 प्रारम्भ मे विष्णु-सहस्रनाम स्तोत्रादि सस्कृत मे हैं। पत्र चिपके हुए हैं।
14 5 × 11 12, 20	3-26	अपूर्ण	1899	र का 1884 लि क ऋषि देवीदास लि. स्था वृन्दावन प्रारम्भ अप्राप्त
12 × 11 5 12, 12	23-30	पूर्ण	1819	लि क मुनि अमृतउदय

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (4) रास-चौ०	14526	नंदीश्वर अढ्ढमद्दीप-चउपई	श्रावक मालदेव शिष्य देवसुन्दरसूरि
2098	14548	नमिराजर्षि-चउपई	ललितसागर शिष्य पुन्यरत्नसूरि
2099	13806 (26)	नरक-चउढालियो	
2100	13825 (14)	नल-दमयती-चउपई	
2101	14303	नल-दवदंती-रास	समयसुन्दर
2102	14613	"	"
प· 2103	14527	नल-दवदंती प्रबन्ध	विजयशेखर शिष्य विवेकशेखर
2104	14564	नलदवदंती लघु-रास	
2105	14492	निमनाथ-विवाहलु	श्रीब्रह्म
2106	12717 (2)	नेमिकुमार-फाग	राजहर्ष
2107	14914 (3)	"	"
2108	14498	नेमिनाथ-प्रबन्ध	लावण्यसमय
2109	14914 (20)	नेमिनाथ-रास	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11 21; 60/65	1	पूर्ण	17 वी श	
25×11 11; 42	1–6	,,	,,	र का 1669
14.5×13 15, 18	89–91	,,	19 वी श	लि क जीवनहंस शोभनलिपि
24 5×16 22; 36	188–189	,,	16 वी श	
28 5×12 26, 36	1–16	अपूर्ण	19 वी श	पत्र चिपके हुए हैं।
26×11 19, 45	1–25	पूर्ण	1693	र का. 1673 मेडता लि क ज्ञानहर्ष गणि
26×11 5 16, 42	1–42	,,	17 वी श	र का 1676
22×10 5 11, 30	5–9	,,	1624	लि क सकलमूर्ति गणि पत्राङ्क 1–5 पर 'नववाडि' आदि हैं।
26×11.5 11, 42	1–18	अपूर्ण	18 वी श.	प्रथम पत्र अप्राप्त
21 5×14 13, 26	7–8	पूर्ण	1796	
15 5×11 12, 26	153–155	,,	18 वी श.	लि क. वाचक धर्मराज लि स्था नाडूल
24×11 11, 42	1–14	,,	1662	लि. क. जोशी शिवलाल लि स्था. स्तभतीर्थ (खभात)
15 5×11 11; 18	129–135	,,	1786	कीटविद्ध लि क. मुनि प्रेमराज

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (4) रास-चौ०	14305 (1)	नेमि-राजुल-बारहमासो	
2111	13806 (27)	,,	जिनहर्ष
2112	14641 (3)	,,	विनयविजय
2113	14339 (16)	,,	कवियण, *लब्धोदय
2114	14339 (14)	,,	कवियण
2115	14495	पचाख्यान विषये-कर्मरेखा-भाविनी-चरित्र	नित्यसौभाग्य शिष्य वृद्धि-सौभाग्य
2116	14562	पाडव-चरित्र	महिमासिंह शिष्य शिवनिधान
2117	14835	पुण्यसार-चरित्र	साधु मेरुगणि शिष्य हेमरत्नसूरि
2118	15068	पोसनी-रासो	बखतेश
2119	15051 (8)	,,	
2120	14620	प्रत्येकबुद्ध-चउपई	समयसुन्दर
2121	13825 (11)	बारह-व्रतनी चउपई	
2122	14306 (2)	बावनमुक्तावली	जसराज (जिनहर्ष)

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5×11 5 13; 36	1–2	पूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 2 पर जिनहर्ष कृत 'सिद्धाचल स्तुति' है।
14 5×13 13, 18	92-93	,,	,,	
14×11 5 21, 19	18–22	,,	18 वी श	र का 1728 पत्राङ्क 22 पर 'अनागत चौवीस नाम' है।
12×13 5 18, 18	66-69	,,	19 वी श	*र. का. 1689 पत्राङ्क 66 पर जिनकुशलसूरि गीत है।
12×13 5 12, 15	58-63	,,	गु. 1848	
25 5×11 5 22, 48	1–7	,,	1744	लि क तत्वचन्द्र लि स्था वेहडानगर
26×11 14/16,48/52	1–73	,,	19 वी श	
27×11 5 19, 56	1–14	,,	18 वी श.	र. का 1571
17 5×13 18, 17	पृ 1–10	,,	सन् 1903	अफीम की प्रशसा मे है।
29×21 24, 22	1–12	,,	1959	
26×11 17, 42	1–25	,,	17 वी श	र. का 1665 आगरा
24 5×16 19, 26	161 वा	अपूर्ण	16 वी श	
26×11 5 15, 32	7–12	पूर्ण	19 वी श	र. का 1738 पत्राङ्क 12-13 पर बनारसी कृत सवैया है।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (4) रास-चौ०	14501	विल्हणपचाशिका भाषा	कवि सारग शिष्य पद्मसुन्दर
2124	14821	”	”
2125	14416 (5)	भवसधि-चतुदर्शी-चउपई	
2126	14522	भवियकुटव-चरित्र	
2127	12709 (1)	माघवानल-कामकदला-चउपई	कुशललाभ वाचक
2128	12717 (11)	” ”	”
2129	14406 (2)	” ”	”
2130	14469	” ”	”
2131	14603	” ”	”
2132	14401	मानतु ग-मानवतीनो रास	मोहनविजय
2133	13507	” ”	”
2134	14320	” ”	”

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×11 17, 52	1–10	पूर्ण	18 वी श	र. का 1638 जालोर
26×11 15, 44	1–15	,,	19 वी श	लि क कुशलक्षेम लि स्था सिरोही
12×11 5 12, 12	30–32	,,	1819	
26×11 15, 54	1–3	,,	17 वी श.	
23×13 15, 42	1–25	,,	19 वी श	र का 1617 ? जैसलमेर प्रथमपत्र खडित
21 5×14 10, 25	1–45	,,	1795	र का 'सोल सोलोतरे'=1616 लि क नगराज, खेरवा
22×15 21, 15	1–33	,,	1733	र का 1616 लि क अमरसी, लि स्था मेदनीपुर
26×11 13. 34	1–24	,,	1741	लि क सौभाग्यविजय लि स्था जावरनगर
26 5×11 5 13, 45	1–21	,,	18 वी श	लि क रगभेरू
27×11 5 15, 48	1–19	अपूर्ण	20 वी श	र का 1760 अणहिलपुर पाटण 29 वी ढाल पर्यन्त
12 5×10 11, 12	24,25,56 64–108	,,	19 वी श	पत्र जीर्ण,पत्राङ्क 1-23, 26-55, 57-63 अप्राप्त, पत्राङ्क 38-39 पर 'शालिभद्र-रास' का अश है।
24 5×12 13, 40	1–33	,,	,,	47 वी ढाल के 12 वे चरण तक

क्रमाक एव विषय	ग्रन्याक	ग्रन्य-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
(22) 4 रास-चौ०	14404 (3)	मानतु ग-मानवतीनो रास	मोहनविजय
2136	13983	मृगलेख्यानी चौपई	ऋषि रायचन्द
2137	14302	,,	,,
2138	13825 (12)	मृगाङ्कलेखा-चउपई	
2139	14600 (14)	मृगाङ्कलेखा सति-चरित्र	वच्छ
2140	14336 (12)	मृगापुत्रनी-चौपई	उदय शिष्य सदारग
2141	13826 (5)	मृगावती-चरित्र	समयसुन्दर
2142	14584	मोती-कपासिया-सवाद	मुनिश्रीसार शिष्य रत्नहर्ष
2143	12732 (3)	रत्नपाल-चौपई	सूरविजय
2144	14338 (16)	राचा-बत्तीसी	
2145	14342 (2)	राजुल-पच्चीसी	लालचंद
2146	14519	रात्रिभोजन-चौपई	धर्मसुन्दर वाचक

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×11 17, 18	100–170	पूर्ण	20 वी श.	र का 1760 अणहिलपुर पाटण दुर्गादास राठौड राज्ये ।
29 5×12 5 13, 50	1–25	"	1968	र. का 1858 मेडता लि क ऋषि न्यालचद, बेनातट
27×12 27, 36	3–17	अपूर्ण	1852	र का 1838 जोधपुर लि क आरज्या मया; लि स्था रीवा-नरसिंहदास गु देचारी हवेली
24 5×16 24, 41	179–183	"	16 वी श	प्रारम्भ के 169 छन्द अप्राप्त
25×12 16, 48	98–107	पूर्ण	गु 1639	
14×12 5 13, 16	120–129	अपूर्ण	19 वी श	र का 1753 पत्राङ्क 117-119 अप्राप्त
18 5×15 16, 30	155–173	पूर्ण	17 वी श	पत्राङ्क 173-177 पर 'कल्याणमदिर स्तवन' तथा 'वासुपूज्य पूजा' है ।
23 5×13 9, 28	1–8	"	18 वी श	र. का 1686 फलवर्द्धिपुर प्रारम्भ मे सुभाषित हैं ।
21×16 17, 34	26–51	"	1855	र का 1732 बुरहानपुर लि क लक्ष्मीविजय गणि लि स्था रोहिडानगर
16×11 10, 20	145–150	"	19 वी श	पत्राङ्क 150-152 पर मेघराज कृत 'पार्श्वनाथ स्तवन' है ।
21×14 5 16, 15	20–29	अपूर्ण	"	पत्राङ्क 20-21 पर रसराज एव गगाजी को विनती है ।
26 5×11 15, 52	1–8	पूर्ण	17 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (4) **रास-चौ०**	14636	ललितांगकुमार-रास	जिनहर्ष शिष्य शांतिहर्ष
2148	14600 (3)	"	"
2149	14500	लुंकावदनचपेटा-चउपई	लावण्यसमय
2150	14524	"	"
2151	14600 (11)	वंकचूल-चौपई	
2152	14272	वछराजकुमार-प्रबन्ध (वछराज-देवराज-चउपई)	विनयलाभ
2153	14666	वस्तुपाल-तेजपाल-रास	समयसुन्दर
2154	14667	"	"
2155	13825 (15)	"	पासचन्द सूरि
2156	12852	विक्रमपचडंडरी चौपई	लक्ष्मीवल्लभ
2157	14315	विक्रमादित्य-अधिकार	लाभवर्द्धन
2158	14567	विक्रमादित्य-परकाया-प्रवेश चौपई	

माप से मी मे पक्ति प्रति पन, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23 5×11 17, 52	1–28	पूर्ण	1748	र का 1744 पाटण लि क लक्ष्मीशेखर पत्राङ्क 25 वा खंडित
25×12 15, 40	28–35	अपूर्ण	17 वी श.	अतिमांश अपूर्ण
27×11 5 16; 46	1–6	पूर्ण	17 वी श	र का 1543
26×11.5 15, 46	1–6	,,	,,	
25×12 16, 48	75–77	,,	1638	लि क मुनि गणेश अत मे 'वीस थानक सज्भाय' है।
27×11 5 16; 48	1–47	,,	1849	र का. 1730 मुलतान
26×11 12, 36	1–2	,,	18 वी श.	र. का 1682 तिमरी
26 5×12 14; 36	1–2	,,	19 वी श	र का. 1682 तिमरी
24 5×16 24, 40	190–193	,,	16 वी श	
26×12 13, 36	1–53	अपूर्ण	19 वी श.	
24 5×11 5 12, 36	1–30	,,	,,	
20×11 11, 26	1–25	पूर्ण	1641	लि क. चेला गोविन्द लि. स्था नवानगर

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26 5 × 11 5 15, 54	1–6	पूर्ण	17 वी श	र का 1485
14 × 12 5 9, 14	7–22	अपूर्ण	19 वी श	प्रारम्भ अप्राप्त
17 × 12 5 11, 18	11-25	पूर्ण	1864	लि क. पडित नायकविजय लि स्था. जावालग्राम पत्राङ्क 25-26 पर 'शत्रुञ्जय स्तवन' है।
18 × 14 5 15, 22	1–8	"	गु 1766	प्रारम्भ मे 'गुणस्थान-क्रमारोह, चैत्यवदन' आदि हैं।
21.5 × 11 5 15, 38	1–3	"	19 वी श	र. का. 1719
14 5 × 13 15, 15	52–62	"	"	र. का 1666 नागोर
25 × 11 17; 52	1–3	"	1752	लि क अमरदत्त लि स्था. ब्रम्हेसर
18 × 13.5 11, 24	1–9	"	19 वी श	
15 × 13 13, 16	139–149	"	गु 1888	
14 × 10 8, 16	14–31	"	19 वी श	
21 × 14 5 13; 25	101–108	"	1908	र. का. 'नभ गज गज शशि' = 1880
26.5 × 11 13, 36	1–18	अपूर्ण	17 वी श.	र. का 1591 पाटण पत्राङ्क 11, 14, 15 वा अप्राप्त
24 5 × 11 13; 46	1–18	पूर्ण	"	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (4) रास-चौ०	14534	शांतिनाथ विवाहलु	आनन्दप्रमोद शिष्य हर्षप्रमोद
2173	14617	शालिभद्रमहामुनि-चउपई (रास)	जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि
2174	14314	"	"
2175	14590	"	"
2176	14596	"	"
2177	14602	"	"
2178	14605	"	"
2179	12918	"	"
2180	12733 (2)	"	"
2181	14618	शील-रास	विजयदेव सूरि
2182	14622	"	"
2183	14092	श्रीचंदकेवली चरित्र रास (आनन्दमंदिर-रास)	ज्ञानविमल सूरि

माप से मी मे, पन्क्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26 5×11 13, 36	1–18	अपूर्ण	17 वी श	र का 1591 पाटण पत्राङ्क 11, 14, 15 वा अप्राप्त
25×11 15, 46	1–15	पूर्ण	18 वी श	र का 1678
24 5×11 13, 36	1–18	,,	1877	लि क मुनि विद्याविजय लि. स्था सणवाड
27×11 12; 37	1–25	,,	1706	लि क देवसी एव नरपाल लि. स्था स्यालकोट
25 5×11 13, 38	1–22	,,	18 वी श	लि क लक्ष्मीविजय गणि
26 5×11 11, 56/44	1–20	,,	,,	
25×11 5 15, 38	1–19	,,	1806	लि क. अमृतशेखर गणि लि स्था सेरडी
25 5×11 12, 36	1–28	,,	1829	लि क मोहनविजय लि स्था पीपाडनगर
19 5×17 5 15, 18	70–107	,,	19 वी श	
25 5×11 15, 36	1–8	,,	1673	
25 5×11 5 13, 45	1–8	,,	18 वी श.	लि स्था नवानगर
26×11 5 20, 50	1–126	अपूर्ण	1831	र का 1770 राधनपुर लि क विमलविजय पत्राङ्क 3, 4, 6 ठा अप्राप्त

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (4) रास-चौ०	14137	श्रीपाल-रास	विनयविजय एवं यशोविजय
2185	13916	श्रीपाल-रास	विनयविजय एवं यशोविजय
2186	14308	"	"
2187	14607	"	ज्ञानसागर
2188	14600 (6)	श्रेणिक-रास	सोमविमल
2189	14499	संवेगद्रुममंजरी	कुशलसंयम
2190	14632 (6)	संवेगबावनी	विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय
2191	12709 (4)	सदयवच्छ-सावलिगारी चौपई	मुनि केशव (कीर्तिवर्द्धन) शिष्य दयारत्न
2192	12717 (10)	" "	"
2193	13771 (2)	" " सचित्र	"
2194	15293 (57)	" "	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5 × 12 5 15, 36	1–47	पूर्ण	1872	र का 1738 राणेर लि क मनरूपविजय गणि लि स्था सुभटपुर (जोधपुर) अतिम दो पत्र खडित
24 × 12 13, 32	1–97	पूर्ण	1894	लि क कुशलसुन्दर
25 × 12 12, 26	1–107	अपूर्ण	1887	लि क कमलसागर लि स्था मु बई बिंदर पत्राङ्क 56 से सटिप्पण पत्राङ्क 102 वा अप्राप्त
25 × 11 13, 42	2–36	,,	1732	र का 1726 लि क सोमविजय प्रथम पत्र अप्राप्त
25 × 12 18, 48	42–61	पूर्ण	1636	र. का 1603 लि क देवसुन्दर
26 × 11 11, 42	1–7	,,	,,	लिपि प्राचीन
24 5 × 10 5 15, 40	23–24	,,	1851	अत मे शातिविजय कृत 'जीवनी सज्झाय' है।
23 × 13 13, 24	42–67	,,	1761	र का निधि मुनि रस शशि = 1679 लि क लालरत्न गणि लि स्था गुदगरी नगर
21 5 × 14 10, 26	1–78	,,	19 वी श	लि क उमेदराज लि स्था खरवा नगर
19 × 15 13, 24	61–94	,,	1861	चित्र सख्या–44 लि क हर्षसागर
25 5 × 15 5 26, 43	200–212	,,	17 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एवं टीकाकार
22 (4) रास-चौ०	14530	सार-सिखामणी-चउपई	संवेगसुन्दर
2196	14518	सिद्धान्तोक्त विचार-रास	
2197	14000	सीता-राम प्रबन्ध	समयसुन्दर
2198	13511 (22)	सीख-रासो	कविरूप
2199	13778 (4)	सुदर्शनश्रेष्ठिना कवित	धर्मसिंह शिष्य
2200	12732 (7)	"	कवि दीपो
2201	14504	सुदर्शनश्रेष्ठि-रास	संघविमल शिष्य मुनिसुन्दर
2202	13987	सुभद्रासती-चौपई	रघुपति पाठक
2203	14263	सुर-सुन्दरी-चौपई	नयसुन्दर
2204	14624	स्थूलिभद्र-इकवीसउ	लावण्यसमय
2205	14600 (7)	स्थूलिभद्र-फागु	मालदेव
2206	12733 (1)	हंसराज-वच्छराज-चौपई	जिनोदय सूरि

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
26×10 5 15, 44	1–8	पूर्ण	17 वी श.	र. का 1548
26 5×11 22, 66	1–30	,,	1630	लि क गोपाल लि स्था. स्तम्भतीर्थ नगर
26×12 21, 48	1–61	अपूर्ण	1932	लि क. गभीरसागर लि. स्था. कुचेरा नगर पत्राङ्क 21 वां अप्राप्त
17×12 11, 16	71–78	पूर्ण	19 वी श	लि. क. सेवग विरधीचद लि. स्था कापग्डा 'जोगीदासरा मू डा सू सु ण उतारियो'
32×25 27, 26	1–9	,,	20 वी श.	
21×16 18, 34	87–96	,,	19 वी श	लि. क. ज्ञानविजय गणि जलसिक्त
25 5×11 13, 48	1–9	,,	17 वी श.	र का 1501
26 5×13 13, 45	1–18	,,	19 वी श	र का 1825
25×11 12, 44	1–23	अपूर्ण	,,	चित्र बनाने के लिए स्थान रिक्त हैं।
25×11 13, 30	1–5	पूर्ण	18 वी श	अत मे 'स्थूलिभद्र-गीत, महावीर स्तवन तथा जीव शिक्षा गीत' है।
25×12 18, 48	61–64	,,	1636	बीच-बीच मे अक्षर उडे हुए है।
19 5×17 5 15, 20	2–68	अपूर्ण	1873	प्रथम पत्र अप्राप्त प्रारम्भ के पाच पत्र त्रुटित

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
(22) 4 रास-चौ०	14097	हंसराज-वच्छराज-चौपई	जिनोदयसूरि
2208	14269	,, ,,	,,
2209	14540	हंसावली	असाईत
2210	14860	हरिबल-रास	जीतविजय
22 (5) कथा-चरित्र-गद्य	14301	कालिकाचार्य-कथा	
2212	14654	कुमारपाल-रास भाषा	ऋषभदास
2213	14311	चतुर्मासिक व्याख्यान	
2214	14741 (24)	जंबूसर को कथा	
2215	14068 (1)	,,	
2216	14351 (7)	,,	
2217	14896 (4)	जंबूसर को प्रसंग	
2218	14298	जंबूस्वामि-चरित्र	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5 × 11 15, 34	1–29	पूर्ण	1849	र का 1680 लि क अमरसागर, देलवाडा सवत् 1811 की प्रति से प्रतिलिपित
25.5 × 10 5 16, 40	1–32	,,	19 वी श	पत्राङ्क 30 वा खडित
26 5 × 10 5 17, 56	1–10	,,	17 वी श	लि. क मोहरणदे
25 5 × 12 19, 44	1–20	,,	1904	र का. 1702, 'भुज सयम' 'वर्षे' लि क ताराचद, लि स्था. पाटोदी
25 × 12 5 12, 32	1–23	,,	20 वी श	
25 × 11 19, 44	1–120	अपूर्ण	18 वी श.	भाषा र का 1670 त्रंवावती, खंभात
25 × 10 5 13, 44	1–18	पूर्ण	1877	लि क भीवसुन्दर लि स्था. फलवर्द्धिका
13 5 × 10 5 11, 20	480–487	,,	19 वी श	
15 × 14 18; 25	1–2	अपूर्ण	,,	जीर्ण एवं त्रुटित
14 5 × 11 10, 16	56-61	पूर्ण	,,	
16 × 11 11, 20	133–141	,,	1845	पत्राङ्क 141–146 पर सुभाषित एवं कवीर, दादू आदि के पद हैं।
26 5 × 11 5 15, 40	1–11	,,	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (5) स्तवन-चरित्र-गद्य	14793	जिनदासश्रेष्ठि-कथा	
2220	13958 (15)	बारहव्रत-कथा	
22 (6) स्तुति-सज्झाय	14332 (7)	अतरीकपार्श्वनाथ-छन्द	भावविजय
2222	14632 (3)	"	"
2223	13828 (25)	अजितशांति-स्तवन	मेरुनन्दन
2224	14641 (7)	अध्यात्म धमाल,नेमिनाथ-भास	बनारसीदास; रूपविजय
2225	13958 (2)	अनन्तजिन-स्तवन	विजयदेव सूरि
2226	14338 (7)	अनाथि-मुनि-सज्झाय; अरहनक-सज्झाय	कनकविजय; समयसुन्दर
2227	14358 (5)	अरणक-स्वाध्याय	कीर्तिसूरि
2228	14641 (9)	अर्बुदाचल चैत्योत्पत्ति तथा गीतादि-संग्रह	लघुदामा, समयसुन्दर, भुवनकीर्ति
2229	13761 (6)	अष्टभय-निवारण गौडी-पार्श्वनाथ-छन्द	धर्मसी (धर्मवर्द्धन)
2230	14815 (1)	अष्टमी-स्तवन	कांतिविजय

माप से. मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 × 11 14, 42	1–73	पूर्ण	19 वी श	लि. क भाणविजय गणि लि स्था रावनपुर
18 × 16 16, 24	1–10	,,	1763	लि क रूपचन्द्र लि स्था. अकबराबाद
12×9 5 11, 13	38-47	,	19 वी श	पत्राङ्क 48-49 पर ज्यौतिष विचार एव औषधी सग्रह है।
24 5 × 10 5 11, 35	13–17	,,	1851	पत्राङ्क 16-17 चिपके हुए पत्राङ्क 17 पर रूपविजय कृत 'सनतकुमार सज्झाय' है।
15 5 × 11 16; 25	91–92	,,	18 वी श	पत्राङ्क 113-114 पर जिनवल्लभ कृत 'लघु स्तवन' सस्कृत मे हैं।
14 × 11 5 19, 19	41–43	,,	,,	
18 × 16 16, 24	32–34	,,	,,	'बाई हर्षा पठनार्थं'
16 × 11 12, 24	20-23	,,	19 वी श	पत्राङ्क 24 के वाद प्राकृत भाषा की कृतियाँ हैं।
15 5 × 13.5 12, 15	111–113	,,	,,	पत्राङ्क 115–117 पर कातत्रसूत्र है।
14 × 11 5 16, 18	49–59	,,	18 वी श	
16 × 22 5 25, 20	27–28	,,	गु 1855	
25 5 × 13 5 22, 52	1	,,	20 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्भाय	14427 (7)	अष्टापदजीरो-स्तवन	जसवतसागरशिष्य
2232	12733 (6)	”	”
2233	14714 (4)	अहिल्या-स्तुति	
2234	13825 (24)	आगम-सज्भाय	नयकीर्ति वाचक
2235	14416 (1)	आतमवत्तीसी (उपदेस वत्तीसी)	जिनराज
2236	14600 (1)	आदिदेव-स्तवन	धर्मसमुद्र
2237	13828 (43)	आदिनाथ कलश	
2238	13958 (3)	आदिनाथ-स्तवन	समरचन्द सूरि
2239	13825 (19)	”	
2240	14914 (26)	”	जिनहर्ष

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
23 5×16 19, 11	43 वा	पूर्ण	1909	लि क महर्षि मलूकचन्द नागोरी, लु का लि स्था जोधपुर
19 5×17 5 17, 22	44 वा	,,	19 वी श	
10 5×8 7, 12	81-90	,,	1945	लि क गुमानमल सिंघ्वी लि स्था जोधपुर
24 5×16 25, 36	254 वा	,,	गु. 1584	पत्राङ्क 226-228 पर 'स्वरोदय' तथा पत्राङ्क 247-253 पर'चउवीस दण्डक-विचार' है।
12×11 5 11, 11	1-6	,,	1819	लि क अमृतउदय
25×12 13, 48	4 था	,,	1636	लि क देवसुन्दर पाठक लि स्था विक्रमपुर पत्राङ्क 3 पर प्रहेलिकाए पत्राङ्क 6-7 पर अरिष्टाध्याय भाषा पत्राङ्क 8-13 पर लघुचाणक्य सस्कृत मे पत्राङ्क 14वे पर 'वीसथानक-विधि' है।
15 5×11 14, 26	10-13	,,	18 वी श	प्राकृत मे है।
18×16 13, 27	34 वा	,,	18 वी श	
24 5×16 21, 36	202 वाँ	,,	16 वी श	
15 5×11 16, 26	144 वा	,,	18 वी श	र का 1745 पत्राङ्क 144 वा दो वार

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तुति-सज्झाय	13828 (45)	आदिनाथ-स्तवन	
2242	14463 (19)	आदिभवानी-छंद; क्षेत्रपालजीरो छन्द	
2243	14422 (2)	आनन्दघन-वहोत्तरी	आनन्दघन
2244	13958 (1)	आराधना मोटी (वृहत्)	पार्श्वचन्द सूरि
2245	13826 (3)	आराधना	समयसुन्दर
2246	13806 (24(	आलोयणा-छत्तीसी	"
2247	14368 (7)	इग्यारस, अष्टमी, अनाथिमुनि-सज्झाय	उदयरत्न वाचक, वाचकदेव, समयसुन्दर
2248	13806 (10)	इलापुत्र-सज्झाय	लब्धिविजय
2249	13505 (5)	"	"
2250	15293 (42)	ईश्वरी-गीत-पञ्चक	समधर
2251	15293 (41)	ईश्वरी-छन्द-त्रय	लालकवि
2252	14932	उत्पत्ति-सज्झाय	श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष
2253	13496 (14)	ऋषभजिन-स्तवन	शिवसुन्दर शिष्य देवसुन्दर

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 14, 26	114–115	पूर्ण	18 वी श	
20×16 5 20, 21	219–220	,,	,,	
10×9 5 11, 14	6–8	,,	19 वी श	
18×16 15, 24	2–32	अपूर्ण	1702	र. का. 1592 प्रथम पत्र अप्राप्त
18 5×15 16, 26	105–106	पूर्ण	17 वी श	
14 5×13 16, 18	83–86, 86–88	,,	19 वी श	र का 1698 अहमदपुर
21×14 5 12, 25	74–78	,,	1908	लि. क फतैविजय लि स्था फलोदी
14 5×13 18, 15	18 वा	,,	19 वी श	
16×11 5 12; 18	9 वा	,,	,,	
25 5×15 5 30, 40	110 वा	,,	17 वी श	
25 5×15 5 26, 42	108–110	,,	,,	
24 5×11.5 14, 32	1–4	,,	1837	अतिम पत्र त्रुटित
15×14 5 16, 22	39–40	,,		र का 1715 साडेरागच्छ

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14914 (23)	ऋषभजिन-स्तवन	भाववर्द्धन शिष्य राजसिंह
2255	13828 (54)	" "	रत्नचन्द मुनि
2256	14914 (22)	" "	ज्ञानचन्द
2257	14338 (4)	ऋषभजिन, महावीर, पार्श्वनाथ-स्तवन	सदानन्द पाठक, सभाचन्द, समयसुन्दर
2258	13761 (9)	ऋषभदेवजीरो छन्द	धर्मसी
2259	13761 (10)	" "	जिनलाभ सूरि
2260	13496 (15)	ऋषभदेवजीरो स्तवन	
2261	13496 (12)	" "	चतुरभुज
2262	14052 (3)	औपदेशिक ढाल-पद-संग्रह	विनयचन्द शिष्य अनूपचंद
2263	13806 (23)	कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर
2264	14416 (7)	"	
2265	14427 (5)	कर्म-सज्झाय	ऋद्धिहर्ष
2266	14950 (14)	"	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 11, 22	138 वां	पूर्ण	18 वी श	पत्राङ्क 139 पर उदयराजकृत 'पार्श्व-नाथ स्तवन' है।
15 5×11 9, 18	41–44	,,	,,	लि क तिलककीर्ति
15 5×11 15, 26	137 वा	,,	,,	र का 1744 अन्त मे एक नीसानी छन्द है।
16×11 12, 24	12–14	,,	19 वी श	
16×22 5 25, 20	30 वा	,,	गु 1855	र का 1760
16×22 5 25, 20	30–31	,,	,,	र. का 1825
15×14.5 17, 22	40-41	,,	19 वी श	
15×14 5 16, 20	36–37	,,	,,	र का 1724 रिषभदेव (केसरियाजी)
24×11 17, 46	4–93	,,	,,	अतिम दो पत्रो मे गुटके की 44 कृतियो की सूची है।
14 5×13 16, 18	80–84	,,	,,	र का 1668
12×11 5 12, 12	35–39	,,	गु 1819	
23 5×16 19, 11	40–41	,,	20 वी श	
15 5×11 12, 20	197–198	,,	18 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14342 (7)	कल्याणमंदिरस्तोत्र-भाषा	
2268	14914 (33)	कापरहेडापार्श्वनाथ-स्तवन	जिनहर्ष
2269	14641 (5)	काया-जीव-भास	जयसोम
2270	14914 (58)	कृष्णजीरो सिलोको	
2271	14600 (10)	कोसलऋषि-सज्झाय आदि	कवियण, देवसुन्दर
2272	13806 (21)	क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर
2273	14408 (6)	"	"
2274	14368 (6)	क्षुलकाध्ययन-स्वाध्याय	वाचक उदय शिष्य विजयसिंह
2275	13828 (52)	गणधरसंख्या-स्तवन	जयसोम उपाध्याय
2276	14463 (1)	गणपति-छन्द	हेमरत्न
2277	13958 (16)	गाडलियापार्श्वजिन-स्तुति	पद्मचन्द्र सूरि
2278	13806 (2)	गीत-संग्रह	*पुण्यकलश गणि, क्षेमकुशल, बनारसी
2279	14914 (66)	गुरु-गीत	रामविजय शिष्य अमरसागर

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21 × 14 5 18 16	58-59	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 61-62 पर 'चौवीस जिन स्तुति' है।
15 5 × 11 15, 26	153 वा	पूर्ण	18 वी श	
14 × 11 5 19, 19	30-31	,,	,,	
15 5 × 11 14, 24	213-215	,,	,,	पत्राङ्क 226 पर महिमद पातसाहगे (जिनचद) कवित्त है।
25 × 12 16, 48	74-75	,,	गु 1636	
14 5 × 13 16, 18	74-77	,,	19 वी श.	र स्था नागोर
15 × 10 11, 15	70-74	,,	1781	लि क पडित भाग्यविजय पत्राङ्क 77 पर भाग्यविजय कृत 'शातिजिन स्तवन' है।
21 × 14 5 12, 25	73-74	,,	1908	
15 5 × 11 11 24	32-34	,,	18 वी श	र का 1657
20 × 16 5 19, 26	2-3	,,	,,	इसके वाद सस्कृत मे शनिश्चर छन्द है।
18 × 16 15, 24	10-11	,,	,,	र, स्था माडल ग्राम
14 5 × 13 14, 14	64-74	,,	19 वी श	*र का 1777 बीकानेर
15 5 × 11 9, 28	258 वा	,,	18 वी श	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14329 (4)	गौडीजीरो छन्द	
2281	14914 (65)	गौडीजीरी विनती	
2282	13496 (4)	गौडीपार्श्वनाथ-स्तवन	जिनराज
2283	13496 (3)	"	जिनहर्ष
2284	13761 (3)	"	सेवक रूप
2285	13806 (12)	"	भुवनकीर्ति
2286	13828 (40)	"	जिनराज
2287	13828 (63)	"	
2288	14338 (11)	" तथा नवकार गीत	"
2289	14333 (2)	" "	प्रीतविमल
2290	14338 (2)	गौडीपार्श्वनाथ-स्तवन शत्रुञ्जयतीर्थ-स्तवन, चितामणिपार्श्वनाथ-स्तवन	सदानन्द नयविमल समयसुन्दर
2291	14339 (2)	गौडीपार्श्वनाथ-स्तवन	कनकविमल सूरि शिष्य उदयरत्न

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
18×13 5 11; 24	9–13	पूर्ण	19 वी श.	तान्त्रिक उपचार
15.5×11 13, 26	256-257	,,	18 वी श	प्रारम्भ मे 'शत्रुञ्जयउद्धार'का अतिमाश है। पत्राङ्क 231-255 अप्राप्त
15×14 5 15, 20	30 वा	,,	19 वी श	अत मे 16 सतियो के नाम हैं।
15×14 5 15, 20	29 वा	,,	,	
16×22 5 25, 18	11–16	,,	1855	लि क चारित्र्योदय गणि लि स्था पाटोदी
14 5×13 18, 15	19–20	,,	19 वी श.	
15 5×11 14, 26	7 वा	,,	18 वी श	
15 5×11 12, 30	98 वा	,,	,,	र का 1722 पत्राङ्क 99 वा त्रुटित
16×11 10, 18	111–115	,,	19 वी श	
17 5×13 5 18, 16	12–16	,,	,,	
16×11 12, 24	7–10	,,	,,	लि क वाचक सभाचन्द
12×13 5 16, 22	5 वा	,,	,,	पत्राङ्क 6 पर आनन्द, रूपचन्द व गगाराम कृत स्फुट-पद हैं।

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14543 (1)	गौडीपार्श्वनाथ-स्तवन	
2293	14914 (4)	" "	कपूर शिष्य वाचक रतन
2294	14914 (38)	" "	कुशललाभ
2295	14914 (2)	" "	हर्षनन्दन
2296	14914 (53)	" "	अभय
2297	17717 (16)	" "	अमीचन्द शिष्य मेघकीर्ति
2298	13806 (19)	गौतम-अष्टक	समयसुन्दर
2299	14338 (15)	गौतम-स्तवन	"
2300	14358	गौतमस्वामी-सज्झाय	लावण्यसमय
2301	13825 (18)	चउदहगुणठाणा-सज्झाय	
2302	14914 (30)	चउवीसतीर्थङ्कर-स्तवन	वाचक मूला (मूलचन्द)
2303	13769 (26)	चउसठजोगिणी, वियोगिनी-स्तोत्र	

माप से. मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5×11 13, 34	1–3	पूर्ण	19 वी श	लि. क जयमूर्ति अत में वशीकरण मत्र है।
15 5×11 14, 24	42 वां	,	18 वी श	
15 5×11 13, 24	159–161	,,	1792	
15 5×11 15, 30	41 वा	,,	18 वी श	र का 1683
15 5×11 13, 22	204 वा	,,	,,	
21 5×14 13, 27	121 वा	,,	,,	र का 1776 'सवत्त सत्तर सहोतरै'
14 5×13 16, 15	63 वा	,,	19 वी श	
16×11 10, 18	145 वा	,,	,,	
15 5×13 5 11, 15	136–137	,	,,	पैत्राङ्क 139-140 पर शकुनबिचार एव पद्मावती सज्झाय' है।
24 5×16 21, 36	201–202	,,	16 वी श	
15 5×11 13, 24	147 वा	,,	18 वी श.	
13 5×10 5 12, 16	136–138	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14400 (3)	चतुर्दश गुणस्थान स्तवन	मुनिधर्मसी (धर्मवर्द्धन)
2305	14335 (3)	चतुर्विंशति जिनस्तवन	आनन्दविजय शिष्य कमलविजय
2306	14357 (3)	" "	हरीसागर
2307	14599	" "	ज्ञानविमल सूरि
2308	14326	" "	आनन्दघन
2309	14338 (13)	" "	जिनराज
2310	15268	" "	आनन्दघन
2311	15293 (40)	चतुःषष्टि योगिनी-स्तोत्र	
2312	14428 (9)	चारमंगल-स्तवन	जयमल
2313	13828 (41)	चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	समयसुन्दर
2314	13806 (13)	" "	"
2315	13806 (11)	चेलणा-सज्झाय	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
22 5×18 19, 18	6-9	पूर्ण	20 वी श	र का 1729 वहिडमेरू
15×11 5 16, 22	14–16	,,	19 वी श	
16×12 5 14, 18	1–6	,,	गु 1911	र का. 1814 नाडुल पत्राङ्क 44-45 पर गग आदि के स्फुट-छन्द है।
25×12 19, 38	1–5	अपूर्ण	,,	पत्राङ्क 4 वा अप्राप्त
24 5×11 11, 32	1–24	,,	19 वी श	प्रथम व अतिम पत्र क्षतिग्रस्त
16×11 10, 18	118–138	,,	,,	समयसुन्दर कृत 'जिनवर गीत' भी है।
25 5×11 14, 38	1–10	,,	,,	
25 5×15 5 8, 42	108 वा	पूर्ण	17 वी श.	सस्कृत मे है।
17×17 13, 16	95–100	,	20 वी श	
15 5×11 14, 26	8 वा	,	18 वी श	
14 5×13 18, 15	20 वा	,,	19 वी श	
14 5×13 18, 15	18–19	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14914 (12)	चैत्य परिवाडि स्तवन	लावण्य शिष्य लक्ष्मीचन्द्र
2317	14327	चैत्यवंदन-स्तवन-संग्रह	सुधनहर्ष, विनयविजय, ऋषभदास, लब्धिविजय, मानविजय, भाणविजय
2318	14428 (10)	चौवीस जिन-वंदना	
2319	14329 (1)	चौवीस जिन-स्तवन	जसविजय वाचक
2320	14339 (6)	" "	जिनराज
2321	14954 (1)	" "	देवचन्द्र
2322	14914 (15)	" "	बोधबीज ? (विनयप्रभ)
2323	13828 (18)	चौवीस तीर्थङ्कर गीत	जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि
2324	13496 (1)	चौवीस तीर्थङ्कर रा पचबोल स्तवन	जयसागर
2325	13496 (6)	चौवीस तीर्थङ्कर की विनती	जिनराज
2326	15261	चौवीस तीर्थङ्कर स्तवन-बालावबोध	मू देवचन्द्र
2327	14640 (2)	चौवीस तीर्थङ्करारी स्तुति	लालविनोद ?

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेप ज्ञातव्य
15 5×11 14, 26	77–80	अपूर्ण	19 वी श	र का 1729 पत्राङ्क 78 अप्राप्त
22 5×10 5 11, 22	1–18	पूर्ण	"	
17×17 13, 16	101–126	"	20 वी श.	लिपि अशुद्ध
18×13 5 11, 20	1–14	"	"	
12×13 5 15, 16	23–33	अपूर्ण	19 वी श	पत्र शोभन
21×11 5 18, 34	1–4, 7–8	पूर्ण	20 वी श.	सस्कृत मे है। पत्राङ्क 6 पर ऋषि चोथमल की सज्झाय तथा 9 पर 'पचभावना स्तवन' है।
15 5×11 14, 22	96–97	"	18 वी श	लि क मुनि धर्मराज अत मे देश-देश की महिमा का पद है।
15 5×11 11, 21	29–42	"	1755	लि क परसा शिष्य कनकविलास लि स्था फलवद्धिका
15×14 5 14, 20	24–26	अपूर्ण	19 वी श	र का 1492 पत्राङ्क 1-23 अप्राप्त
15×14 5 15 20	33 वा	पूर्ण	"	
25×11 5 16, 48	1–10	अपूर्ण	20 वी श	सभवजिनस्तुति पर्यन्त।
15.5×11 10, 14	34–36	पूर्ण	1801	

क्रमाक एव विपय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तुति-सज्भाय	14339 (4)	चौवीसी	गोकुल
2329	14914 (9)	"	जिनराज सूरि
2330	14336 (9)	छावीस सती सज्भाय	भानो
2331	14336 (11)	जवूस्वामी सज्भाय, पचमहाव्रत सज्भाय	सिद्धविजय, रत्नचन्द
2332	13828 (23)	जन्माभिषेक पार्श्वनाथ-स्तवन	पुण्यसागर
2333	13496 (13)	जयमाल	
2334	14461 (4)	जसराज-वावनी	जसराज (जिनहर्ष)
2335	13761 (11)	जिनकुशलसूरिगीत	हर्षहसमुनि
2336	13828 (21)	जिनगीत	यशोवर्द्धन
2337	14338 (3)	जिनदत्तसूरिगीत	कमललाभ, मालदास; राजहर्ष
2338	13958 (4)	जिन-प्रतिमा स्थापना सज्भाय	पार्श्वचन्दसूरि
2339	13828 (53)	जिन-प्रतिमानी हुडी	जिनरंग

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12×13 5 15, 16	14–15	अपूर्ण	1848	लि क पडित ज्ञानचन्द शोभन पत्र
15 5×11 17, 36	70–75	,,	18 वी श.	प्रथम 4 गीत अप्राप्त लि स्था सोजत
14×12 5 12, 15	118–123	पूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 117 पर 'गौतमस्वामी स्तवन' है।
14×12.5 12, 15	114–116	,,	,,	
15 5×11 11; 24	82–85	,,	18 वी श	पत्राङ्क 79-80 अप्राप्त पत्राङ्क 86-87 पर तीर्थङ्करो के बीच कालगत अन्तर का विवरण है।
15×14.5 27, 22	39 वा	,,	19 वी श	पत्राङ्क 38-39 पर स्फुट-पद है।
22 5×13 40, 26	32–34	,,	1768	र का 1738 पत्राङ्क 35-36 पर प्रश्नोत्तर एव चित्र-काव्यबद्ध स्फुट कवित्तादि हैं।
16×22 5 25, 20	32 वा	,,	1855	
15 5×11 12, 22	61 वा	,,	18 वी श	पत्राङ्क 64-67 पर खरतरगच्छ के श्रावको का विवरण है।
16×11 12; 24	10–11	,,	,,	
18×16 14, 34	34 वा	,,	,,	
15 5×11 11, 24	34–35	,,	,,	पत्राङ्क 36-39 अप्राप्त, 40 वे पर भूपति पुत्र हेमराज का जन्मलग्न है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तुति-सज्झाय	14339 (3)	जिनप्रतिमानी हुंडी	जिनहर्ष
2341	14427 (3)	जिनरस (गुणजिनरस)	वैणीराम
2342	13496 (2)	जिन-विनती	
2343	13828 (48)	जिन-स्तवन	जिनचंदसूरि शिष्य ?
2344	14358 (2)	"	आणंद शिष्य कमलसाधु
2345	13830 (4)	जिन-स्तुति	दीपचंद
2346	14321 (5)	जिन-स्तुतिरो कक्को	
2347	14914 (13)	जीव-आत्म गीत	सिद्धिविजय
2348	14914 (37)	जीव-काया गीत	समयसुन्दर
2349	13496 (8)	जीव-सज्झाय	
2350	14338 (10)	ज्ञानपंचमी-बृहत्स्तवन	"
2351	14368 (9)	ज्ञानपंचमी-स्तवन	मानसागर
2352	14338 (1)	ज्ञानपंचवीसी	बनारसी

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12×13 5 14, 15	7–13	पूर्ण	19 वी श	र का 1725 अत मे परसराम कृत एक साखी है।
23 5×16 19; 11	24–38	,,	20 वी श	र का.'निधिखड समुद्र चदवर्षे'=1769 र स्था. पीपाड,माधवसिंह कमधजराज्ये
15×14 5 15, 20	27–28	,	19 वी श.	
15 5×11 13, 24	19-20	,,	18 वी श	
15 5×13 5 10, 15	74–79	,,	19 वी श	
13×9 5 12, 14	19–21	,,	1766	लि क व्यास घासीराम
21×14.5 16, 15	42–44	,,	19 वी श	पत्राङ्क 41 पर 'पचवधावो' है।
15 5×11 14, 26	81-82	,,	18 वी श	पत्राङ्क 80-81 पर कामिनी-कत प्रश्नोत्तर के 10 पद्य है।
15.5×11 13, 24	158–159	,,	,,	
15×14 5 20, 24	34 वा	,,	19 वी श	
16×11 10, 18	106–111	,,	,,	
21×14 5 12, 25	88-90	,,	1908	लि क फतैविजय लि. स्था. फलोदी
16×11 12, 24	5–7	,,	18 वी श.	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14079 (9)	तीर्थमाला-स्तवन	समयसुन्दर
2354	15293 (4)	"	सिद्धसेनसूरि
2355	15293 (5)	" (पूर्व देश सवधी)	हंस शिष्य कमलधर्म
2356	12733 (7)	"	ऋषि नरसिंघ (नृसिंह)
2357	13806 (7)	" (तीर्थ स्तोत्र)	समयसुन्दर
2358	15293 (33)	त्रिपुराभारती लघुस्तवन-सस्तबक	मू लघ्वाचार्य
2359	14345 (3)	दीवाली-सज्झाय, आत्मनिंदा-सज्झाय	ऋषि जयमल; ज्ञानसागर
2360	14491 (2)	द्वादशभावना-सज्झाय	सकलचन्द
2361	14428 (22)	धन्ना-अणगार-सज्झाय	
2362	14914 (11)	" "	वाचक पुण्यसागर
2363	14914 (43)	नदिषेण-स्वाध्याय	लब्धिविजय
2364	15293 (3)	नदीश्वर-स्तवन	

माप से मी मे पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×13 5 11; 16	40-41	पूर्ण	1816	पत्राङ्क 42-44 पर नीतिपरक दोहे तथा स्फुट ज्योतिप विचार है ।
25 5×15 5 25, 56	9 वा	,,	17 वी श	प्राकृत मे है ।
25 5×15 5 39, 70	9–10	,,	,,	जीर्ण-कीटविद्ध र. का 1565
19 5×17 5 15, 18	44-46	,,	19 वी श.	र का 1874
14 5×13 18, 15	15-16	,,	,,	
25 5×15 5 30, 40	93–94	,,	17 वी श	मूल सस्कृत, स्तपक राजस्थानी
16×12 12, 14	18–30	,,	19 वी श	
26×11 13, 48	7–11	,,	1697	अत मे इसी विषय का एक अपूर्ण पद्य है ।
17×17 13, 16	259–263	अपूर्ण	20 वी श	लिपि कामदारी एव भ्रष्ट
15 5×11 14, 24	76 वा	अपूर्ण	18 वी श	र. का 1726 प्रारम्भ के 4 पद्य अप्राप्त पत्राङ्क 77 पर सस्कृत मे 'माघ-भोज समस्या' है ।
15 5×11 12, 22	166–167	पूर्ण	,,	पत्राङ्क 168-183 अप्राप्त
25 5×15 5 54, 50	8 वा	अपूर्ण	17 वी श	जीर्ण-खडित

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	13828 (24)	नदीश्वर-स्तवन (वृहत्)	मुनि मेरु
2366	13828 (36)	नमिउण-स्तोत्र	
2367	13761 (7)	नवकार-छन्द	धर्मसी (धर्मवर्द्धन)
2368	14335 (1)	नवकार-छन्द, सरस्वती-सज्झाय	कुशललाभ, सकलचद
2369	13828 (55)	नवकार-फल	
2370	13828 (62)	नवकार-सज्झाय	गुणप्रभ सूरि
2371	13825 (17)	"	
2372	14914 (60)	नवकार-स्तवन (रास)	
2373	14339 (12)	नवकार-स्तवन	
2374	12733 (9)	"	जिनदास
2375	14339 (5)	नववाडि-सज्झाय	जिनहर्ष
2376	14422 (3)	"	"
2377	14336 (10)	नाकोडापार्श्वनाथ-स्तवन	समयसुन्दर

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5 × 11 14, 22	87–90	पूर्ण	18 वी श	लि क ताराचन्द अपभ्र श मिश्रित प्राकृत मे है।
15 5 × 11 13; 21	114–115	"	"	पत्राङ्क 116-117 खडित
16 × 22 5 25, 20	28–29	"	गु 1855	
15 × 11 5 10, 15	3–10	अपूर्ण	19 वी श	प्रथम दो पत्र अप्राप्त
15 5 × 11 10, 24	45–48	पूर्ण	1754	लि. क नेमिसुन्दर गणि
15.5 × 11 12, 30	97–98	"	गु 1754	
24.5 × 16 21, 36	201 वा	"	16 वी श	प्रारम्भ मे 'जीव-दया सज्झाय' का अतिमाश है।
15 5 × 11 11, 20	220–223	"	18 वी श	
12 × 13 5 23, 26	50–53	"	गु 1848	लि क ज्ञानचन्द
19 5 × 17 5 14, 18	48 वा	"	19 वी श	
12 × 13 5 15; 16	15–22	"	1848	लि क ज्ञानचन्द पत्र शोभन
10 × 9 5 10, 13	1–3	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 176-183 अप्राप्त अत मे 'सिद्धचक्र स्तवन' है।
14 × 12 5 12, 15	113–114	पूर्ण	"	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14815 (2)	नारीनी सिखामणी	--
2379	14914 (72)	नारी-सज्झाय	न्यानसागर (ज्ञानसागर)
2380	13497 (6)	नेमजी की लावणी	लवलीनराम शिष्य रामलोचन
2381	13496 (2)	नेमजीरी-सज्झाय	जिनहर्ष
2382	14521	नेमि-छन्द	लावण्यसमय
2383	12732 (8)	नेमिजिन-चौवीस-बोल	अमृतविजय
2384	14914 (14)	नेमिनाथ-गीत	अमरसो
2385	14424 (2)	नेमिनाथजीरी लावणी	जिनदास
2386	13496 (7)	नेमिनाथजीरी सज्झाय	विश्वभूषण
2387	14067 (8)	नेमिनाथजीरो सिरलोको	पुण्यसागर शिष्य
2388	14432 (13)	नेमिनाथ-राजमती (राजुल) गीत एवं चोमासो	कविमोहन

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
25 5×13 5 22, 52	1–2	पूर्ण	20 वी श	
15.5×11 13, 20	281–282	,,	18 वी श	पत्राङ्क 283 पर समयसुन्दर कृत 'पार्श्वनाथ स्तवन' तथा मीरा का पद एव कमठासुरवध का अपूर्ण स्तवन है । पत्राङ्क 284–306 अप्राप्त
17 5×13 5 9, 16	7–11	,,	19 वी श.	
15×14 5 15, 20	51 वा	,,	,,	
26 5×10.5 13, 48	2–10	अपूर्ण	,,	र का 1546 प्रथम पत्र अप्राप्त लि. क रत्नमूर्ति लि स्था स्तम्भतीर्थ
21×16 19, 37	96–99	पूर्ण	1855	लि क लक्ष्मीविजय लि स्था नीतोडा ग्राम
15 5×11 14, 56	95 वा	,,	18 वी श	
13×10 5 7, 12	12–15, 18–19	,,	20 वी श	पत्राङ्क 16-17 पर 'सामाइक लेवणरी पाटी' है ।
15×14 5 15, 26	33–34	,,	,,	
18×14 5 14, 20	1–5	,,	18 वी श	
12×9 5 11, 13	19–20	,,	19 वी श.	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14914 (11)	नेमि-राजमती-गीत	रिद्धिहर्ष
2390	14914 (54)	"	जिनहर्ष
2391	14914 (24)	"	"
2392	14914 (8)	" एवं सुमतिनाथ-गीत	सकलचंद, जिनराज
2393	14914 (76)	"	उदैहर्ष
2394	14914 (36)	"	हितविजय
2395	14463 (21)	नेमि (राजुल) राजमती गीत आदि	डूंगर, सतजोगो, नारायण
2396	14345 (4)	नेमि-राजमतीरी ढाल	आसकरण
2397	13505 (9)	नेमि-राजमती-सज्झाय	नगजी
2398	13828 (14)	नेमि-राजमती-स्तवन	जिनहर्ष
2399	14386 (3)	" "	कांतिविजय
2400	14914 (35)	" "	वरमसी (धर्मवर्द्धन)

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 14, 24	76 वां	पूर्ण	18 वी श.	
15 5×11 13 22	205 वा	,,	,,	
15 5×11 12, 22	139–141	,,	,,	र का 1726 लि स्था खेरवा अत मे इन्ही की बारामासी है।
15 5×11 15, 27	68 वा	,,	,,	पत्राङ्क 46-67, 69 अप्राप्त
15 5×11 15, 27	312–313	अपूर्ण	,,	'पार्श्वनाथ-स्तवन' भी अपूर्ण है।
15 5×11 11, 19	157–158	पूर्ण	,,	
20×16 5 23, 22	223–225	,,	1765	पत्राङ्क 225 पर खिडिया जगा के कवित्त हैं।
16×12 12, 14	30-41	,,	19 वी श	र का 1839 कुचेरा
16×11 5 12, 18	16 वां	,,	,,	
15 5×11 11, 21	28 वां	,,	,,	
17×12 5 10, 16	26–27	,,	गु. 1864	लि क नायकविजय अत में 'सूरजदेवरो श्लोक' अपूर्ण है।
15 5×11 12, 26	156–157	,,	18 वी श	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्भाय	14914 (57)	नेमि-राजमती-स्तवन	ऋद्धिहर्ष
2402	15253 (2)	नोकारसार-स्तवन	कुशललाभ वाचक
2403	13496 (17)	पचजिन-स्तवन	लावण्यसमय
2404	14342 (13)	पच-मगल	रूपचन्द
2405	13825 (25)	पवासमुखपोतका पडिलेहण विचार-सज्भाय	सोमदेवसूरि
2406	14914 (48)	पद्मप्रभु-गीत	धरमसी (धर्मवर्द्धन)
2407	14941 (19)	पद्मप्रभु-स्तवन	"
2408	14357 (2)	पनरेतिथि-सज्भाय; पच्चवाडारीसज्भाय एव पद-सग्रह	रगविजय शिष्य कृष्णविजय; केसर विजय, वनारसी, रूपचद
2409	13499 (2)	परमज्योति (कल्याणमदिर-स्तोत्र भाषा)	वनारसी
2410	13828 (47)	पार्श्वजिन-स्तवन	विनयलाभ
2411	13761 (4)	पार्श्वनाथजीनो देशांतरी छद	कुशललाभ

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 12, 20	209–212	पूर्ण	18 वी श.	अत मे कनकभाण कृत सीमधर-स्तवन' है ।
24×11 13, 34	5–6	,,	19 वी श	
15×14.5 31, 26	43 वा	,,	,,	पत्राङ्क 44 पर 'नेमिकुमार' के स्फुट पद हैं ।
21×14 5 18, 16	96–102	,,	,,	
24 5×16 16, 40	254 वा	,,	16 वी श.	प्राकृत मे है ।
15 5×11 13, 20	194–195	,,	18 वी श	पत्राङ्क 194-195 पर 'गुरु सज्झाय' तथा 12 चक्रवर्तियो के नाम एव अत मे नित्यलाभ कृत 'उदयसागर गीत' है ।
15 5×11 13, 24	129 वा	,,	1798	लि क धर्मराज वाचक
16×12 5 15, 22	34–38	,	गु 1911	पत्राङ्क 30-34 पर तिथिनिर्णय, अष्टोत्तरी दशा, विशोत्तरी दशा आदि की विधि है ; पत्राङ्क 39-44 पर गणित ज्योतिष पद्धति एव शकुन-विचार है ।
15 5×10 5 8, 20	3–11	,,	1853	पत्राङ्क 12-13 पर स्फुट दोहे हैं ।
15 5×11 12, 20	18–19	,,	18 वी श.	पत्राङ्क 16-17 अप्राप्त
16×22 5 25, 20	16–20	,,	1855	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	13505 (1)	पार्श्वनाथजीरी नीसाणी	जिनहर्ष
2413	13761 (8)	पार्श्वनाथजीरो पाडगति छन्द	अभयसोम
2414	14914 (61)	पार्श्वनाथजीरो फाग	ऋद्धिहर्ष
2415	13828 (44)	पार्श्वनाथ लघु-स्तवन	समयसुन्दर
2416	13499 (3)	पार्श्वनाथजीरो सिलोको	
2417	13496 (9)	पार्श्वनाथ-स्तवन	
2418	13828 (49)	" "	कनकविलास
2419	13828 (10)	" "	कमललाभ
2420	13806 (22)	पुण्य-छत्तीसी	समयसुन्दर
2421	13921	पुण्यप्रकाश-स्तवन	विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय-सूरि
2422	14641 (4)	" "	"
2423	14428 (2)	पुण्य-स्तवन	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16×11 5 7, 18	12–18	अपूर्ण	गु 1869	लि क. कपूरविजय लि स्था पीपाड पत्राङ्क 1-11 अप्राप्त
16×22 5 25, 20	29 वां	पूर्ण	गु 1855	
15 5×11 11, 20	224–226	,,	18 वी श	र का 1730 'गगन भुवन भोजन समै'
15 5×11 10, 22	113–114	,,	,,	
15 5×10 5 7, 16	14–15	,,	गु. 1853	पत्राङ्क 16-17 पर 'दरबार आमेर को असवारी जोधपुर की, गिणती आगरा की, पातस्याही दिल्ली की' आदि कथन हैं।
15×14 5 20, 24	34 वा	,,	19 वी श	
15 5×11 10, 20	25 वा	,,	18 वी श.	पत्राङ्क 20-24 अप्राप्त
15 5×11 10, 20	25 वा	,,	,,	पत्राङ्क 26 पर सवत् 1821 का स्वरूपचन्द के पुत्र का जन्मलग्न है।
14 5×13 16, 18	77–80	,,	19 वी श	र का 1669 सिद्धपुर
26 5×12 11, 30	1–6	,,	1907	लि क रूपचन्द गणि लि स्था श्री दमणबदर
14×11 5 19, 19	24–30	,,	18 वी श	र का 1719 रानेर
17×17 13, 16	52–54	,,	20 वी श.	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्भाय	13761 (5)	फलवर्द्धिपार्श्वनाथ-स्तवन	कवि कान्ह
2425	13828 (50)	" "	उदैहर्ष शिष्य
2426	14339 (13)	बारहभावना-सज्भाय	जयसोम शिष्य प्रमोदमाणिक्य
2427	13806 (17)	" "	"
2428	14336 (7)	वाहुवलि-सज्भाय आदि	समयसुन्दर, कानजी शिष्य कनक
2429	14342 (4)	भक्तामरस्तोत्र-भाषा	हेमराज
2430	15049	" "	"
2431	13505 (6)	भमरारी-सज्भाय	
2432	14052 (2)	भरत-वाहुवलि संग्राम (भरतजीरो करखो)	कुशल
2433	14914 (59)	भीनमालपार्श्वनाथ-स्तवन	पुण्यकमल शिष्य सुमति
2434	13505 (2)	मगल गीत	ऋषि जैमल
2435	13958 (10)	"	रूपचन्द

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16×22 5 25, 20	20–26	पूर्ण	1855	लि क चारित्र्योदय गणि लि स्था पाटोदी
15 5×11 11, 20	25–26	,,	18 वी श	
12×13 5 16, 15	53–58	,,	गु 1838	र. का 1676 वीकानेर 'रस वारिधि रस शशि वर्षे'
14 5×13 15, 15	45–52	,,	19 वी श.	
14×12 5 17, 15	111–113	,,	,,	
21×14 5 16, 15	33–39	,,	,,	पत्राङ्क 39-40 पर विनती, लावणी आदि स्फुट कृतियाँ हैं ।
25×12 5 15, 40	1–3	,,	,,	
16×11 5 12, 18	10 वा	,,	,,	
24×11 17, 46	3–4	,,	,,	
15 5×11 11, 20	215–219	,,	1784	लि क धर्मराज लि स्था नाडूल
16×11 5 10, 16	18–23	,,	गु 1869	लि क नयविजय चार 'मगल' हैं ।
18×16 17, 28	51–55	,,	18 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14336 (6)	मल्लिजिन-इग्यारस-स्तवन	पार्श्वचन्द
2437	13496 (22)	महामुनि-सज्झाय	राजसमुद्र
2438	13828 (34)	महावीर-कलश	
2439	14346 (7)	महावीरजीरो पारणो तथा नवकार-स्तवन	कुशललाभ वाचक
2440	13828 (42)	महावीर-बोली	जिनेश्वर सूरि
2441	13505 (4)	महावीरस्वामी-स्तवन	समयसुन्दर
2442	13496 (5)	"	"
2443	14400 (6)	"	"
2444	14953	" (निगोद विचार गर्भित)	ज्ञानसागर
2445	15293 (7)	महावीर वृहद्-स्तवन	सोमविमल शिष्य सोभाग्यहर्ष सूरि
2446	14427 (4)	" "	समयसुन्दर

माप से मी मे, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×12 5 14, 13	99–104	पूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 104-105 पर 'पचखाण सज्झाय' 106-109 पर सस्कृत के सुभाषित तथा 109-110 पर भूषण आदि के कवित्त सवैये हैं।
15×14 5 18, 20	52 वां	,,	,,	
15 5×11 11, 20	110–111	,,	1730	प्राकृत मे है। लि क तिलक विमल, लि स्था. फलोधी पत्राङ्क 111 पर सस्कृत मे 'लघुस्नात्र विधि' है।
15×13 13, 16	156–161	,,	1898	लि क. उदयरत्न मुनि लि स्था बीकानेर पत्राङ्क 161-162 पर 'वासक्षेप पूजा' है।
15 5×11 14, 26	9–10	,,	18 वी श	
16×11 5 12, 18	6–8	,,	19 वी श.	र स्था जेसलमेर
15×14 5 15, 20	31–32	,,	,,	
22 5×11 18, 18	28–29	,,	20 वी श.	
26×12 17, 42/35	1–7	,,	19 वी श	सअर्थ, त्रिपाठ
25 5×15 5 39, 55	10–11	,,	17 वी श.	जीर्ण-कीटविद्ध
23 5×16 19, 11	38–40	,,	20 वी श.	

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	13806 (2)	महावीर-स्तोत्र	उदयरत्न
2448	13806 (6)	"	समयसुन्दर
2449	15293 (58)	मातृकाबावनी छन्द	सारग
2450	14338 (14)	मुनिमालिका	चारित्र्यसिह शिष्य मतिभद्र
2451	14400 (1)	"	"
2452	13505 (8)	मेघकुमार-सज्झाय	कुशलमुनि
2453	14914 (73)	" "	पूनो
2454	14466	मेणरेहाजीनी सज्झाय	हीरसेवक
2455	14914 (29)	मेरुतुङ्गसूरि-सज्झाय	कवियण (धर्ममूर्तिसूरि)
2456	14432 (6)	मौन-एकादशी-तिथि-स्तवन	कातिविजय
2457	14036	यति-धर्मविकार-सज्झाय	सुखसागर शिष्य ज्ञानविमल सूरि
2458	15272	"	"

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14 5×13 13; 12	33–34	पूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 1-32 पर 'जीवविचार प्रकरण' सटबार्थ है।
14 5×13 18, 15	13–15	"	"	
25 5×15 5 19, 44	212 वा	अपूर्ण	17 वी श	
16×11 10, 18	138–145	पूर्ण	19 वी श	र का 1636 रिणिपुर
22 5×18 19, 22	2–4	अपूर्ण	20 वी श	प्रथम पत्र अप्राप्त
16×11 5 12, 18	13–15	पूर्ण	19 वी श	र स्था सोजत कर्त्ता–लुङ्का गच्छी है।
15 5×11 13, 24	307–309	"	18 वी श	अत मे एक पद जिनहर्ष कृत तथा 'हनुमान' पर कवित्त है।
26×13 13, 30	1–10	"	20 वी श	र का सवत चोहोत्तरा मां ? केकडी लि क सूरजमल, लि स्था फलोदी
15 5×11 13, 24	145–147	"	18 वी श	र स्था खभनयर (खभात) कर्त्ता– अचलगच्छी
12×9 5 11, 13	31–36	"	19 वी श	र का 1769 पत्राङ्क 37-38 पर 'नेम-राजुल गीत' है।
24 5×12 12, 28	1–14	"	19 वी श	र स्था सूरत कर्त्ता–तपागच्छी
25 5×11.5 12, 34	1–9	"	20 वी श	

क्रमाक एव विपय	ग्रन्याक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	13828 (57)	राणकपुर-स्तवन	समयसुन्दर
2460	14332 (5)	रात्री-भोजनरी लावणी	
2461	13828 (52)	रायजादा-स्तवन (शत्रुञ्जयगिरि स्तवन)	जगरूप
2462	14600 (8)	रूपक-माला	पार्श्वचन्द
2463	13505 (7)	वचन-सज्झाय	लब्धिविजय
2464	13496 (11)	वरकाणापार्श्वनाथ-स्तवन	अनूपसागर शिष्य ?
2465	13496 (10)	” ”	जिनहर्ष
2466	14914 (56)1-2	” ”	गुणशेखर; *रत्नसिंह
2467	15293 (55)	वसुधारा-स्तोत्र	
2468	14914 (25)	वाचक धनाजीरो कवित्त	भोजग जीवण
2469	14422 (8)	वासपूज्यजीरो-स्तवन; पार्श्वनाथ-स्तवन	उदयसागर समयसुन्दर

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 11, 24	51–52	पूर्ण	19 वी श	र का 1672 पत्राङ्क 93 पर 'वरकाणापार्श्वनाथ-स्तवन' है।
15×15 5 19, 22	18–19	,,	गु 1939	'साधु श्री रूपचदजी मुखात्' पत्राङ्क 20 पर आनन्दघन आदि के पद हैं।
15 5×11 11, 21	26–27	,,	19 वी श	
25×12 18, 48	64 वां	,,	गु 1636	र का 1586
16×11 5 12, 18	11–12	,,	19 वी श	
15×14 5 16, 20	36 वा	,,	,,	
15×14 5 20, 24	35 वा	,,	,,	
15 5×11 13, 20	208–209	,,	18 वी श	लि क धर्मराज र का * 1775
25 5×15 5 22, 40	196–198	,,	17 वी श	सस्कृत मे है।
15 5×11 11, 20	142–143	,,	1784	लि. स्था खेरवा पत्राङ्क 143 पर ही मेवाड के बदनोर के गुरु अमरसागर की स्तुति तथा अन्य ज्ञातव्य है।
10×9 5 10, 12	93–96	,,	19 वी श	

[illegible]	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) [illegible]	13499 (4)	विनती	
2471	13828 (56)	विमलनाथ-गीत	दयारग मुनि
2472	13828 (8)	विहरमान-स्तुति	
2473	15293 (11)	विहरमान-स्तुति एवं पार्श्वनाथ-गीत	जिनमाणिक्य शिष्य
2474	13828 (15)	वीर-स्तवन	लब्धिवल्लभ शिष्य लक्ष्मीकीर्ति
2475	14914 (31)	वीसविहरमान-स्तुति	उदयराज
2476	13806 (9)	वैराग्य गीत	समयसुन्दर
2477	15293 (23)	शत्रुञ्जयाम्नाय, भक्तामर एवं जयतिहुयण की [illegible] गाथाएं	
2478	12733 (8)	शत्रुञ्जयउद्धार-स्तवन	
2479	14914 (46)	शत्रुञ्जयऋषभदेव-स्तुति	समयसुन्दर
2480	15293 (6)	शत्रुञ्जय [illegible] स्तवन	
2481	[illegible] (17)	शत्रुञ्जय[illegible]-स्तवन	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15.5×10 5 10, 24	17–18	पूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 18 पर 'नेमिनाथ पद' अपूर्ण है।
15 5×11 11, 22	48–49	,,	18 वी श	पत्राङ्क 49-50 पर ग्रन्थ के स्वामी 'भूपति' का वशवृक्ष है।
15 5×11 9, 24	23 वा	,,	,,	
25 5×15 5 23, 50	14 वा	,,	17 वी श.	
15 5×11 13, 22	12–14	अपूर्ण	18 वी श	पत्राङ्क 1-11 अप्राप्त, 12 वा खडित 13 वे का अशमात्र प्राप्त
15 5×11 13, 24	147–148	पूर्ण	,,	कर्त्ता–अचलगच्छी पत्राङ्क 149 पर 'पार्श्वनाथ-स्तवन' अपूर्ण है।
14 5×13 18, 15	17–18	,,	19 वी श	
25 5×15 5 30, 50	42 वा	,,	17 वी श	सस्कृत राजस्थानी मे
15 5×17 5 14, 18	47 वा	,,	19 वी श	
15 5×11 12, 20	185–188	,,	18 वी श	
25 5×15 5 31, 55	11–12	,,	17 वी श	
15 5×11 11, 21	27–28	,,	19 वी श.	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
2482	13528 (28)	शत्रुञ्जयतीर्थ-स्तवन	जिनभक्ति सूरि
2483	15293 (6)	" मंडन आदिनाथ स्तवन	जिनहेम शिष्य हेमहंस सूरि
2484	14508	" "	
2485	15293 (9)	शत्रुञ्जय-स्तवन	
2486	14404	" सबालावबोध	
2487	14914 (74-75)	"	पद्मराज शिष्य पुण्यसागर मोहनविजय शिष्य रूपविजय
2488	14352 (2)	"	पद्मविजय
2489	14357 (12)	" [illegible]-स्तवन, पद एवं गीतादि	समयसुन्दर, श्रीसार, जसविजय
2490	14335 (5)	शत्रुञ्जय, गौड़ीपार्श्वनाथ-स्तवनादि	ज्ञानविमल
2491	14332 (1)	[illegible]-स्तवन	[illegible] शिष्य सोमसुन्दर
2492	14354 ([illegible])	[illegible]-स्तवन	[illegible], जिनचन्द्रसूरि, यशोविजय, रूपचन्द
2493	14332 (2)	"	[illegible], [illegible]

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 13, 20	100-101	पूर्ण	19 वी श	र. का 1871
25 5×15 5 13, 55	10 वा	अपूर्ण	17 वी श	
26×11 15; 42	10 वां	पूर्ण	18 वी श	लि स्था मंडपगढ
25 5×15 5 33, 58	12 वां	,,	17 वी श.	जीर्ण, संस्कृत मे है।
26×11 19; 62	1-6	,,	,,	बालावबोध राजस्थानी मे है।
15 5×11 14. 24	309-310	,,	1776	लि क धर्मराज लि स्था गुदवच नगर पत्राङ्क 311-312 पर दादूदयाल की साखी तथा घराबध कवित्तादि हैं।
15×11 5 14, 21	10-13	,,	19 वी श.	
16×12 5 14, 18	63-72	,,	1911	पत्राङ्क 63 पर 'ढूंढाडी' भाषा का नमूना है।
15×11 5 10, 18	29-34	,,	1860	
15×15 5 19, 22	2-3	,,	19 वी श.	प्रारम्भ में संस्कृत मे 'लघु शांति' है।
12×13 5 14, 18	6-16, 20 वा	,,	,,	
12×9 5 11, 13	14-19	,,	,,	ऋषभनाथ व गौडीपार्श्वनाथ के स्तवन भी हैं।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
2494 [illegible]	14914 (70)	शान्तिनाथ-गीत	जिनरंगसूरि
2495	14914 (40)	" . गौड़ीपार्श्वनाथ-स्तवन तथा नेमराजमती गीत	कनककीर्ति शिष्य जयमंदिर, साधुहर्ष, जिनहर्ष
2496	15253 (3)	शान्तिनाथजीनो-छन्द	गुणसूरि शिष्य पद्मसूरि
2497	13828 (30)	शान्तिनाथ-चोली, नेमिनाथ-चोली	
2498	13828 (11)	शान्तिनाथ-स्तवन	समयसुन्दर
2499	13828 (19)	"	जयसोम
2500	13828 (51)	शान्तिनाथ-स्तवन (पुद्गल-विचार-गर्भित)	धर्मरत्न
2501	14404 (6)	शान्तिनाथ-स्तवन	ऋषि रंगचन्द
2502	[illegible] (2)	[illegible]	समयसुन्दर
2503	14427 ([illegible])	[illegible]	जिनहर्ष
2504	[illegible] ([illegible])	" "	"

माप से मी में, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15 5×11 23, 28	276 वा	पूर्ण	18 वी श	पत्राङ्क 277 पर 'चहुआण कवित्त' है जिनमे सवत 1039 की परीस्थितियो की झलक है।
15 5×11 12, 22	164-166	,,	,,	लि क धर्मदास पत्राङ्क 163 वा अप्राप्त
24×11 13, 34	6-7	,,	19 वी श	
15 5×11 16, 28	102-103	,,	18 वी श	पत्राङ्क 104-105 पर प्राकृत मे 'घूमावली' है।
15 5×11 11, 21	26 वा	,,	1835	लि क फतैचन्द उदैचन्दोत लि स्था फलोदी
15 5×11 12, 12	42-43	,,	18 वीं श	
15 5×11 11, 24	30-32	,,	,,	पत्राङ्क 29 पर 'पचखाण विधि' है।
15×11 11, 14	198-200	,,	20 वी श	र. का 1894 लि क हीरालाल पत्राङ्क 200-202 पर रामचन्द्र कृत 'लावणी' तथा 202-205 पर औषधी सग्रहादि है।
14 5×13 18, 15	11-13	,,	19 वी श	
23 5×16 19, 11	23-24	अपूर्ण	20 वी श	पत्राङ्क 1-22 पर सस्कृतमे 'चाणक्यनीति' सभाषा टिप्पण है।
16×11 10, 18	115-118	पूर्ण	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14346 (8)	श्रावकनी करणी-सज्झाय	जिनहर्ष
2506	13505 (3)	" "	"
2507	13761 (2)	श्रीमंधर-सज्झाय	कमलकलश सूरि शिष्य
2508	13958 (19)	षट्-स्वाध्याय आदि	उदयविजय वाचक शिष्य विजयसिंह
2509	14914 (28)	संखेश्वरपार्श्वनाथ-स्तवन	देवविजय
2510	14358 (1)	" ", गौडी पार्श्वनाथ-स्तवन, पंचमी स्तवनादि	ऋद्धिहर्ष, भावसागर जिनराज, कानजी, देवसुन्दर शिष्य, उदय
2511	13828 (9)	संखेश्वरपार्श्वनाथ-स्तवन	जिनचन्द
2512	14914 (39)	संयतीराय-स्तवन	सकलचन्द
2513	15293 (15)	सत्तरिसय जिननाम ग्रहण-स्तवन	विशालसुन्दर शिष्य
2514	14914 (5)	सनतकुमार-सज्झाय	हर्षकुशल गणि
2515	13828 (37)	सप्त-स्मरण	जिनदत्तसूरि
2516	15293 (2)	समवसरण-स्तवन	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×13 13, 16	163 वा	पूर्ण	गु. 1898	पत्राङ्क 162-163 पर 'सखेश्वरपार्श्वनाथ-स्तवन' है।
16×11 5 12, 18	1–6	अपूर्ण	19 वी श	पत्राङ्क 3-4 अप्राप्त
16×22 5 25, 18	10–11	पूर्ण	"	
18×16 14, 20	19–20	"	18 वी श	
15 5×11 13, 24	144–145	"	"	र का 1717 'सवत सतर सतरोत्तरै'
15 5×13.5 9, 15	40–69	"	19 वी श	पत्राङ्क 43-48 पर सस्कृत मे 'लघुचाणक्य राजनीति' तथा 70-74 पर कमलकलशसूरि शिष्य कृत 'वभणवाडी-स्तवन' है।
15 5×11 10, 20	23–24	"	,	गुटके के प्रारम्भ के 7 पत्र अप्राप्त; पत्राङ्क 8-22 पर प्राकृत एव अपभ्र श की लघु कृतियाँ हैं।
15 5×11 12, 20	161–162	,	18 वी श	
25 5×15 5 23, 42	21–22	"	17 वी श	
15 5×11 15, 27	43 वा	"	18 वी श	
15 5×11 17, 30	118 वा	अपूर्ण	1731	प्राकृत मे है। पत्राङ्क 116-117 अप्राप्त
25 5×15 5 26, 70	8 वा	"	17 वी श	जीर्ण-कीटविद्ध अपभ्र श में है।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	13946	समेतशिखिर-स्तवन	
2518	13496 (19)	सम्प्रतिराजा-स्तवन	कनकसुन्दर शिष्य कान्हजी
2519	15293 (37)	सरस्वती-छन्द	देवसुन्दर कवि
2520	15293 (36,38)	सरस्वती-स्तोत्रद्वय	
2521	14351 (1)	साधु-साध्वीजी-गुणमाला	ऋषि जयमल
2522	13806 (8)	साधु-गुणमाला-स्तोत्र	
2523	14345 (2)	साधु-वंदना	
2524	14491 (1)	"	सकलचन्द
2525	14424 (6)	"	ऋषि जैमल
2526	14428 (8)	"	"
2527	14541	सिद्धपुर जिन-चैत्य-परिपाटी-स्तोत्र	कवि कुशलवर्द्धन
2528	12733 (10)	सिद्धाचलजीरो स्तवन	

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24×12 21, 42	1–8	पूर्ण	1907	लि क. भीमसागर लि स्था आसोप
15×14 5 18, 22	50 वा	,,	19 वी श	
25 5×15.5 27, 46	107–108	,,	17 वी श.	अपभ्र श मे है।
25 5×15 5 20, 43	107–108	,,	,,	सस्कृत मे है।
16×12 12, 14	2–10	अपूर्ण	19 वी श	प्रथम पत्र अप्राप्त प्रारम्भ मे 'साधुवदना' एव 'कलजुगरी नीसाणी' है।
14.5×13 18, 15	16–17	पूर्ण	,,	
16×12 12, 14	10–18	,,	,,	
26×11 13, 48	1–7	,,	गु 1697	
13×10 5 7, 12	81–105	,,	1931	लि क दौलतराज
17×17 13, 16	86–94	,,	20 वी श	
25 5×11 5 18, 58	1 ला	,,	17 वी श	39 छन्द हैं।
19 5×17 5 18, 21	49 वा	,,	19 वी श	लि क पन्यास मोहनराज लि. स्था खीमाडा नगर

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14914 (49)	सिद्धचक्र-विधि-स्तवन	विनयविजय वाचक शिष्य
2530	14914 (21)	सीमंधरस्वामी-गीत	चन्द्रहर्ष शिष्य हर्षरत्न
2531	14052 (1)	" -पत्रिका	कविजन
2532	13496 (20)	सीमधरस्वामी-स्तवन	जिनराज
2533	13828 (26)	" "	भक्तिलाभ
2534	14493	" "	कमलविजय शिष्य विजयसेन सूरि
2535	14427 (6)	सीलरी सज्झाय	ककसूरि शिष्य
2536	14428 (5)	सीलरो सवाद	देवेन्द्र सूरि
2537	14632 (1)	सुदर्शनश्रेष्ठि केवली-सज्झाय	ज्ञानविमल
2538	13505 (15)	सुमतिरो स्तवन	
2539	14425 (5)	सेवकरी करणी सज्झाय	जिनहर्ष
2540	13958 (14)	सोलह-सती-भास	मुनि मेघराज
2541	15253 (4)	सोलह-सती-सज्झाय	उदयरत्न

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेप ज्ञातव्य
15 5×11 13, 20	196 वा	पूर्ण	18 वी श	र का 1651
15.5×11 14, 25	135–136	,,	,,	
24×11 17, 46	1-3	,	19 वी श	
15×14 5 18, 22	50 वा	,,	,,	
15 5×11 16, 35	92–94	,,	,,	
25 5×11 5 11, 40	1–5	,,	18 वी श	र. का. 1682
23 5×16 19, 11	41–43	,,	20 वी श	र. का. 1844
17×17 13, 16	60-63	,,	,,	अशुद्ध लिखा है।
24 5×10.5 12, 35	1–4	,,	1851	
16×11 10, 16	25-30	,,	19 वी श	पत्राङ्क 31 पर गमन करते समय का शकुन-विचार है।
13×10 5 7, 12	73–80	,,	20 वी श	
18×16 16; 24	75–79	,,	1763	
24×11 13, 34	7–8	,,	19 वी श	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14339 (8)	सौभाग्यपंचमी-स्तवन	गुणविजय
2543	13806 (14)	स्तम्भणपार्श्वनाथ-सज्झाय	
2544	13828 (27)	स्तम्भण पार्श्वनाथ-स्तवन	
2545	13496 (16)	स्तम्भणपुर पार्श्वनाथ-स्तवन	
2546	14914 (7)	स्तवन-गीत-सज्झाय संग्रह जिनपद एवं पार्श्वनाथ स्तवनादि	रूपचन्द, बनारसी, जिनहर्ष लाभवर्द्धन, जिनसमुद्रसूरि
2547	14914 (67-68)	स्तवन-वीरगीत, बाहुबलीगीत	समयसुन्दर विमलकीर्ति
2548	14914 (55)	" वीर-स्तवन, नाकोडा-पार्श्वनाथ-स्तवनादि	समयसुन्दर
2549	14914 (44-45)	" अइमत्ता ऋषि सज्झाय, गुरु सज्झाय	लक्ष्मीरत्न भुवनकीर्ति
2550	14914 (10)	" पार्श्वनाथ स्तवन एवं पदादि	जिनहर्ष, सुखवर्द्धन
2551	14914 (7)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह अरिहंत-स्तुति, पार्श्वनाथ स्तवनादि	यशोवर्द्धन वाचक, धर्मसी जसवर्द्धन, नयसागर
2552	14914 (6)	" वासपूज्य-स्तुति, सिद्धाचल स्तुति	पंडित जिनचन्द, कवियण

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
12×13 5 14, 18	1–6	पूर्ण	19 वी श	
14 5×13 18; 15	20–23	अपूर्ण	,,	पत्राङ्क 26-33 पर 'भक्तामरस्तोत्र' सस्कृत मे है।
15 5×11 16, 25	94–96	,,	18 वी श	28 वे पद पर्यन्त पत्राङ्क, 100 पर 'तीर्थनाम स्तोत्र' का अतिमाश है। पत्राङ्क 97-99 अप्राप्त
15×14 5 17, 22	42–43	,,	19 वी श.	पत्राङ्क 41 वा अप्राप्त
15 5×11 12, 22	278 वा	पूर्ण	18 वी श	
15 5×11 12, 22	272–273	,,	,,	पत्राङ्क 271 पर कवि मेह कृत 'भवानीछद' तथा उदयराज के स्फुट छद हैं। पत्राङ्क 259-270 अप्राप्त
15 5×11 12, 22	205–208	,,	1791	र स्था जेसलमेर पत्राङ्क 205 वा दो बार, " 206 पर ग्रहो की दूरी का प्रमाण है।
15 5×11 13, 24	184–185	,,	18 वी श	प्रारम्भ के 8 पद नही है।
15 5×11 17, 36	75 वा	,,	,,	
15 5×11 15, 27	44-45	,,	,,	
15 5×11 15, 27	43 वा	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14831	स्तवन-ऋषभ जिनस्तवन, गीत-संग्रह	आनन्दघन
2554	14815 (3)	" वीर प्रभुनो पारणो, सीता सज्झाय आदि	दीपविजय, उदयरत्न जिनहर्ष, देवचन्द्र
2555	14811	" आलोयणा सज्झाय, सिद्धाचल स्तवनादि	समयसुन्दर, लाभोदय जिनचन्द
2556	14641 (6)	स्तवन-सज्झाय-गीत-संग्रह पार्श्वनाथ गीतादि	दानसागर, विनयविमल समयसुन्दर, शिवचन्द लालविजय, लावण्यसमय हेमप्रभ, सिद्धविजय* काजीमहम्मद
2557	14641 (2)	" सीमधरस्वामीलेख गीतादि	जयवंत पंडित, *आनन्दवर्द्धन भुवनकीर्ति ज्ञानसागर विनय, पदम
2558	14641 (1)	" तीर्थावली, शांतिजिन गीतादि	समयसुन्दर, दानसागर, जयवंत सूरि लावण्यकीर्ति, उदयरत्न
2559	14639 (3)	" गीतादि	जिनहर्ष गुणविनय, समयसुन्दर भैरवदास, भद्रसेन, राजसमुद्र मालदेव, नन्दसूरि, नयप्रमोद
2560	14639 (1)	" गीत-संग्रह	समयसुन्दर, राजसमुद्र कुशललाभ, भक्तिलाभ जिनराज
2561	14632 (5)	" मान, लोभ, आत्मशिक्षा, सीता सज्झाय	उदयरत्न

माप से मी. मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×11 4/10,28/42	1–39	पूर्ण	19 वी श	सस्तवक
25 5×13 5 22, 52	2–5	,,	20 वी श	
26×13 5 14/18,32/42	1–2	,,	,,	सस्तवक
14×11 5 19, 19	31–41	,,	18 वी श	*र का 1731
14×11 5 19, 19	8–17	,,	,,	*र का 1716 पत्राङ्क 17-18 पर 'जखडी' है। लि स्था हसतटे
14×11 5 19, 19	1–7	,,	,,	पत्राङ्क 7-8 पर स्फुट नुस्खे है।
14×11 5 19, 19	51–56 75–77	,,	19 वी श	पत्राङ्क 57-75 तक प्राकृत एव सस्कृत की कृतियाँ हैं।
14×13 11, 22	1–26	,,	,,	लि. क कमलचन्द गणि लि स्था सूरतविदर प्रारम्भ के दो पत्रो पर समस्त कृतियो की सूची दी गई है।
24 5×10 5 15, 40	21–22	,,	1851	लि स्था पाटण

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14632 (2)	स्तवन-सज्झाय नववाडि, रत्नदृष्टात, थूलिभद्र सज्झाय एव विशाल स्वामी गीतादि	अजितदेवसूरि, सोमविमल, सिद्धिविजय, उदयरत्न, दीपविजय, जिनहर्ष
2563	14600 (9)	" वैराग्यगीत, गयमुकमाल गीत वलभद्रवेलि, कुलक सग्रहादि	मुनि खेमराज, सेवक, पार्श्वचन्द, खेमकीर्ति शिष्य,
2564	14600 (5)	स्तुति-सज्झाय-गीत सग्रह मेघकुमार गीत, शत्रु जयगीत	सेवक श्रीकर्ण
2565	14582	" चतुर्विशति जिनकल्प, चैत्यवदनादि	मुनि उदय, मुनि रत्नसिंह लाभउदय, देवचन्द्र, पद्मविजय, क्षमाविजय, यशोविजय, नयविजय शिष्य
2566	14445	" साधुवदना, सीमधरस्वामी-स्तवनादि	मुनि श्रीसार, हीरविजय सकलचन्द
2567	14432 (1)	" चौथ महाव्रत स्वाध्याय, छायामुत छद, सूरजछद	कातिविजय कवि हेम कवि कानो
2568	14428 (17)	स्तवन-सज्झाय गीत सग्रह	रत्नचन्द
2569	14428 (11)	" विजयसेठ सज्झाय, अयवता स्तवनादि	मुनिरत्नचन्द्र शिष्य, लक्ष्मीरत्न
2570	14424 (7)	" साधु आचार सज्झाय आदि	रत्नचन्द्र, विनयचन्द *मोतीचन्द

माप से मी मे पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
24 5×10 5 15, 40	5–12	पूर्ण	1851	लि स्था. पाटण
25×12 16, 48	65–74	,,	गु 1636	
25×12 14, 46	38–39	,,	17 वी श	पत्राङ्क 40-41 पर बीकानेर नगर के दिन-प्रमाणादि ज्यौतिष विचार है।
26 5×12 5 10, 33	1–5, 8–13	,,	18 वी श	सस्कृत एव प्राकृत भापा की लघु-कृतिया भी हैं।
25 5×11 15, 34	1–38	,,	1679	लि क नान्य सौभाग्य गणि लि स्था श्रीवाविनगर 'चोहाण श्री राणा भोज राज्ये'
12×9 5 11, 13	3–5, 5–8 8–11	,,	19 वी श	पत्राङ्क 2 पर 'महादेवजी रो छद' " 12 पर 'सूरजरो छद, " 12-13 पर 'गोरादेरो छद' है।
17×17 13, 16	212–215	,,	20 वी श	पत्राङ्क 215-217 पर 'समभावरा बोल' " 218-222 पर 'गुणपचासभागा' है।
17×17 13, 16	127–166	,,	,,	
13×10 5 7, 12	106–122	,,	,,	र का 1836

क्रमाक एव विषय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14632 (2)	स्तवन-सज्झाय नववाडि, रत्नदृष्टात, थूलिभद्र सज्झाय एव विशाल स्वामी गीतादि	अजितदेवसूरि, सोमविमल, सिद्धिविजय, उदयरत्न, दीपविजय, जिनहर्प
2563	14600 (9)	" वैराग्यगीत, गयसुकमाल गीत वलभद्रवेलि, कुलक सग्रहादि	मुनि खेमराज, सेवक, पार्श्वचन्द, खेमकीर्ति शिष्य,
2564	14600 (5)	स्तुति-सज्झाय-गीत सग्रह मेघकुमार गीत, शत्रु जयगीत	सेवक श्रीकर्ण
2565	14582	" चतुर्विंशति जिनकल्प, चैत्यवदनादि	मुनि उदय, मुनि रत्नसिह लाभउदय, देवचन्द्र, पद्मविजय, क्षमाविजय, यशोविजय, नयविजय शिष्य
2566	14445	" साधुवंदना, सीमधरस्वामी-स्तवनादि	मुनि श्रीसार, हीरविजय सकलचन्द
2567	14432 (1)	" चौथ महाव्रत स्वाध्याय, छायासुत छद, सूरजछद	कातिविजय कवि हेम कवि कानो
2568	14428 (17)	स्तवन-सज्झाय गीत सग्रह	रत्नचन्द
2569	14428 (11)	" विजयसेठ सज्झाय, अयवता स्तवनादि	मुनिरत्नचन्द्र शिष्य, लक्ष्मीरत्न
2570	14424 (7)	" साधु आचार सज्झाय आदि	रतनचन्द्र, विनयचन्द मोतीचन्द

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि. सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
16 5×12 5 12, 15	42–56	पूर्ण	19 वी श	
10×9 5 12, 12	1–5, 8–14; 97–131	,,	1895– 1899	लि क सवाईसागर र का 1 1766, 2 1730 3 1744
12×11.5 9/12, 9/12	51–80	,,	गु 1819	प्रारम्भ मे संस्कृत की कृतियाँ है ।
16 5×12 5 11, 15	27–30	,,	19 वी श	प्रारम्भ मे सस्कृत प्राकृत की कृतियाँ हैं ।
15×10 8, 10	56–68	,,	1780– 1781	लि क भाग्यसागर शिष्य अजबसागर पत्राङ्क 68-70 पर 'पातशाह की वार्ता' है।
15×10 10, 12	27–36	,,	गु 1780	आगे पत्राङ्क 1-18 पर 'श्रावकप्रतिक्रमण सूत्र', 19-26 पर 'स्तम्भनपार्श्वनाथ नमस्कार' अभयदेव कृत तथा 27-49 पर 'भक्तामर स्तोत्र' है ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14408 (1)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह— पचासरापार्श्वनाथ-स्तवनादि	अजबसागर
2578	14400 (2)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह—	रत्नसमुद्र, विजयदेव सूरि
2579	14393 (1)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह— अजितनाथजिन-स्तुति, शत्रुञ्जय-स्तवन, पद्मावती स्तोत्र आदि,	हर्षविजय, कनकविजय, जिनहर्ष मोहन शिष्य रूपविजय, यशोविजय, रूपचन्द, पद्मराय, गुणसागर, मेघराज, दीपसौभाग्य लब्धिनिधान, कनककीर्ति गुणप्रभसूरि, जमवतसागर शिष्य उदयरत्न, साधुकर्मचन्द, श्रीदेव
2580	14386 (1)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह— हीरजीरी सज्झाय, महावीर-स्तवन,	भगत शिष्य विजयसेनसूरि, कांति सागर
2581	14368 (13)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह— पद्मप्रभु-स्तवन, सीमंधर-स्तवन, निश्चलव्यवहार-सज्झाय शीतलजिन-स्तवन	हंसभुवन सूरि, लाल गणि यशोविजय वाचक, उदय वाचक शिष्य विजयसिंह जिनहर्ष
2582	14368 (5)	" " मृगापुत्र-सज्झाय, थूलभद्र-सज्झाय, मेतारज-सज्झाय	भक्तिविजय लालचन्द विजयरंग
2583	14368 (4)	" " इरियावही सज्झाय नोकरवालीरी सज्झाय, पाचमरी सज्झाय	विनयविजय आनन्द शिष्य विनयविजय अमरविजय शिष्य लब्धिविजय
2584	14368 (3)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह— बीज-स्तवन, ज्ञानपंचमी-स्तवन, अष्टमी-स्तवन, मौन-एकादशी-स्तवन	ऋद्धिविजय शिष्य प्रमोदविजय विजयलक्ष्मी सूरि कांतिविजय

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र संख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
15×10 16, 17	1–11	पूर्ण	गु. 1780	प्रारम्भ के दो पत्रो मे विरहिणी नायिका के नायक के प्रति उद्गार तथा पत्राङ्क 14-15 पर 'जमाल' कृत दोहे है।
22 5×18 19, 22	4–6	,,	20 वी श	
11 5×11 12, 14	1–39	,,	19 वी श	
17×12 5 10, 18	7–10	,,	गु 1864	लि क क्षमाविजय पत्राङ्क 1-43 अप्राप्त 5-6 पर 'यात्राफल-स्तवन' है।
21×14 5 12, 25	117–125	,,	1908	लि क फतैविजय लि स्था. फलवर्द्धिनगर
21×14 5 12, 25	70–73	,,	,,	
21×14 5 12, 25	66–69	,,	,,	*र का 1733 पत्राङ्क 61 से 65 पर 'अजितशातिस्तोत्र' प्राकृत मे है।
21×14 5 13, 25	50–60	,,	,,	*र. का 1871

क्रमाक एव विपय	ग्रन्थाक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एव टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्भाय	14368 (2)	स्तवन-सज्भाय-गीत सग्रह– चैत्यवदन एव थुई सग्रह	ज्ञानविमल, नयविमल लब्धिविजय, देवकुशल मोहन शिष्य रूपविबुध ऋपभदास शिष्य विजयसेनसूरि गुणहप शिष्य, कातिविजय भाणविजय, जिनेन्द्रसागर नेमविजय, लाभविमल, शातिकुशल
2586	14358 (4)	स्तवन-सज्भाय-गीत सग्रह– मृगापुत्र-सज्भाय, साधुगीत आदि	समयसुन्दर, उदयरुचि शिष्य विजयकुशल उदय शिष्य शकरसौभाग्य विमलकीर्ति, चत्रभुजदास
2587	14357 (1)	स्तवन-सज्भाय-गीत सग्रह– पद-गजल आदि	रूपचन्द, लालचन्द, शाहहुसैन, आनन्दघन, गोपालसागर, लाल ज्ञानविमल सूरि, आदमखा हर्षचन्द्र, रत्नविमल, नवल, कविगोपाल, जिनचद, वखता सूरदास, मीरा
2588	14346 (9)	स्तवन-सज्भाय-गीत सग्रह– पार्श्वनाथ पदादि	मतिविलास, हर्षचन्द, नयनविमल आनन्दघन, मतिहस
2589	14339 (11)	स्तवन-सज्भाय-गीत सग्रह– महावीरस्वामी स्तवन, नेमि पद आदि	देवीदास, ज्ञानसागर, आनन्द, रूपविजय, जिनराज, समयसुन्दर रूपचन्द, ज्ञानविमल सूरि भानचन्द, जिनहर्प, आनन्दराम
2590	14339 (7)	स्तवन-सज्भाय-गीन सग्रह	रूपचन्द, वनारसी, विनयलाभ, जिनहर्प, आनन्दघन
2591	14338 (9)	स्तवन-सज्भाय-गीत सग्रह– अजित-शाति विवाहुला-स्तवन, सीमधरस्वामी-स्तवन	मेरुनन्दन आदि

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
21×14 5 13, 25	38–50	पूर्ण	1908	लि क फतैविजय लि. स्था फलवर्द्धिनगर पत्राङ्क 18-21 पर 'लघु चाणक्य राजनीति' तथा 21-38 पर सस्कृत-प्राकृत की कृतियाँ हैं ।
15 5×13 5 12, 15	92–106	,,	19 वी श	पत्राङ्क 107-110 पर पट्टी-पहाडे हैं । अत मे 'सर्प कीलक मत्र' है ।
16×12 5 13, 18	10–29	,,	1911	लि क गोपालसागर प्रारम्भ के तीन पत्रो पर तथा 11 वे पत्र पर स्फुट नुस्खे हैं ।
15×13 13, 16	165–170	,,	गु 1898	पत्राङ्क 167-168 पर गुटके कृतियो की अनुक्रमणिका है ।
12×13.5 17, 18	31–47	,,	1848	*र का 1611 लि क ज्ञानचन्द, पत्राङ्क 48 पर माधो कृत 'क्षेत्रपालजीरो छद' तथा 49 पर ज्ञान कृत अष्टपदी' है ।
12×13 5 15, 16	34–36	,,	19 वी श	
16×11 10, 18	98–106	,,	,,	

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14338 (5)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह— नेमिजिन-स्तवन, शांतिनाथ-स्तवन, पार्श्वनाथ लघु स्तवन	सभाचन्द शिष्य सदानन्द पाठक समयसुन्दर
2593	14336 (4)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह— धन्ना-सज्झाय आदि	श्रीदेव, ऋद्धिहर्ष, जिनहर्ष सूरि, दयासागर कीर्तिसूरि, कनकविबुध पद्मतिलक, कवियण
2594	14335 (4)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह— धन्नाशालिभद्र-सज्झाय कवित्त, लावणी मंत्रादि	”
2595	14332 (7)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह—	नवल, हर्षचन्द, समयसुन्दर, जैत, जिनहर्ष, जिनदास, मुनिगुमान, रूपचन्द, आनन्दराम
2596	14332 (4)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह— नवपद-स्तवन, शांतिजिन-स्तवन आदि	समयसुन्दर, चैनविजय, चन्द्रकीर्ति आनन्दघन, हीराचन्द, रत्नविजय, रूपविजय
2597	14108	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह	श्रीसार, प्रीतिविमल मोहनविजय, देव वाचक जिनहर्ष सूरि, जिनलाभ सूरि जिनहंस सूरि, वीरविजय रूपविजय, जिनचन्द सूरि ज्ञानविमल, पद्मविजय क्षमाकल्याण
2598	13505 (19)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह	सरदचन्द आदि

माप मे मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेप ज्ञातव्य
16×11 12, 24	15–16	पूर्ण	19 वी श	लि क वाचक सभाचन्द
14×12 5 14, 16	59–79, 85–96	,,	,,	पत्राङ्क 77-79 पर 'नेमिनाथरी वारामासी' अपूर्ण है । पत्राङ्क 79-84 पर 'भक्तामरस्तोत्र' सस्कृत मे है ।
15×11 5 13, 18	16–29	,,	,,	
15×15 5 17, 24	1–13	,,	1938	लि. क राजेन्द्रसागर
15×15 5 19, 22	12–17	,,	1939	
20×15 20, 18	1–96	,,	19 वी श	
16×11 5 11, 16	63–64	,,	,,	पत्राङ्क 65-66 पर शकुनविचार है ।

क्रमांक एवं विषय	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता एवं टीकाकार
22 (6) स्तवन-सज्झाय	14336 (2)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– नाभिनन्दन-स्तवन, चन्द्रप्रभु स्तवन, शीतलनाथ-स्तवन, अहिरण, सोलहसती-सज्झाय	शिवसुन्दर, दयासागर कीर्तिविमल शिष्य, समयसुन्दर, फतेचन्द मुनि लावण्यसमय, प्रीतिविजय
2600	14338 (6)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– महामुनि-सज्झाय, सीलद्रुपद	कवियण आदि
2601	14342 (6)	स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– चौमासा, विनती, सास-बहूरो झगडो	देवा ब्राह्मण आदि
2602	14914 (17)	स्थूलिभद्र-सज्झाय	भावसागर
2603	14358 (6)	स्थूलिभद्र-नवरसो, सीमंधर-स्तवन	उदयरत्न

माप से मी मे, पक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पक्ति	पत्र सख्या	पूर्ण/ अपूर्ण	लिपिकाल (वि सवत्)	विशेष ज्ञातव्य
14×12 5 11, 14	22–52	पूर्ण	1814	
16×11 12, 24	16–17	”	19 वी श	पत्राङ्क 17-19 पर जिननाम तथा स्फुट दोहे कवित्तादि है ।
21×14 5 15; 15	45-53	”	”	पत्राङ्क 54-58 पर सस्कृत मे ‘देवपूजा विधि’ है ।
15 5×11 14, 20	124–126	”	18 वी श	अत में ‘हर्षकुशल’ कृत काफीराग का एक पद है ।
15 5×13.5 12, 14	118-128, 129–132	”	19 वी श	

[ग्रन्थाङ्क 12613 से 15672 तक का विवरण समाप्त]

परिशिष्ट १

कतिपय विशिष्ट 'प' चिह्नित ग्रन्थों के उद्धरण

८९/१४३७६ (१) भगवद्गीता दोहानुवाद

प्रारम्भ— ।। ॐ ।। नमो प्रमात्मने ।। श्रीगोपीजन वलभाय ।।
श्रीकृष्णाय नम । ॐ अस्य श्री भगवद्गीता मालामत्रस्य
श्री भगवान वेदव्यास कृ (त) क्षीरनुष्टुव छंद······ इति ध्यान. ।।

पत्र २— श्री कृष्णाय नम॰ । धृतिराष्ट्र उवाचः ।
नमो निरंजन वगुण पर, गुण निधि गोविंदरायः ।
नमो गरुडध्वज कवल नैन, नमो जदुराय ।।१।।
नमो नमो गुरु कुं नमो, फुनि फुनि वारवार ।
नमो नमो सब संत कु, जिह घटि वस मुरारि ।।२।।
श्रीमुख जो गीता कही, अर्जुन सुं समझाय ।
जाकी भाषा जथा मति, कहु अव हरि गुन गाय ।।३।।
तातपरज या ग्रन्थ कौं, जानत श्री भगवांन ।
श्लोका को अख्यर अर्थ कहैं, सु सूनाहु सुजाण ।।४।।

अन्त (ग्रन्थ-प्रशम्ति)—

उपनखा सकल कामधेनि, दोहन नंद कुमार ।
वछौ पार्थ गीता दुगध हरिजन पीवन हार ।।४।।[१]
नमो नमो वसदेव देवकी सुत, सु सुमति अधार ।
नमो नमो श्री राधिके, वलभ नद कुवार ।।५।।
नमो व्रज जन हिता, जगपति जगत उधारन हार ।
नमो नमो फुनि फुनि नमो, नमो सहश्रनि वार ।।
गीता के श्लोक सातसै एक जानि,
श्रीमुख भाखै पाचसै, और चहोतरि आन ।
अर्जुन असी'र दोय, कहे सजय चालीस ।।
एक कृष्ण अर्जुन मिलि कह्यौ, एक धृतराष्ट्र प्रवीन ।।१०।।

---

१ प्रारभ के ३ छन्द अप्राप्त । पांचवें छन्द के बाद छन्द सख्या, क्रम से नहीं लगी है ।

रचनाकाल—संवत १७ वरस ५१ रविवार
माघे दुतीया कृष्ण पखि, भाषा मत अनुसार,
कही मलुकै दासांनुदास, लाहोरी निज नाम।
जादु सुत खत्री वरण, रसना पांवन कांम ।।
अक्षर घटि वधि होइ जो, ले है संत सुधारि।
सब सतन के चरन परि, लाहोरी वलि जाय ।।१६।।

पुष्पिका— लिखत तिवाडी अखैरांम वैष्णव रांमानंदी विष्णदास पठनार्थं। शुभं भव। संवत १९७४ वृषे फागुण मासे कृष्ण पक्षे ७ सपतम्यां तिथू चन्द्रवारे। नागोर रा गाव मुडवा माहे लिखी। वाचे जिणनु श्री राम रांम श्री सदगुर प्रसादात बाचजो जी। कल्याण मस्तु।

१०२/१४२५६ भागवत-दशम-स्कन्ध-भाषा

प्रारम्भ— ।।श्रीरामाय नमः।। श्री गुरुचर्णकमलेभ्यो नमः ।।श्रीकृष्ण चर्णकमलेभ्यो नमः ।।अथ दस्मस्कधे श्रीकृष्णलीला वर्णन।

प्रथम-मंगलाचरण—

जै गनपति गौरीनंदन, पुन शिवनंदन कहात।
गजमुख रदन सुहावना, बुधिदायक सुखदात ।।१।।
जिम दीपक तिमर ही हरै, त्यु हर हरि अज्ञान।
सामर्थ हमकु दीजिये, चरित्र कथन भगवान ।।२।।
श्री सरस्वती सुमरिकै, वदु बारबार।
बुद्धी आपहि दीजिये, सर्व विघ्न तुम टार ।।३।।
गुरु कु करू जु वंदना, निसि दिन बारबार।
नागर नदन[1] कहात प्रभु दादू विघ्न निवार ।।४।।

चौपई

दस्मस्कंध व्यासजी गायो। सोई शुक नृप कु जु सुनायो ।।
संस्कृत पठन नही कोउ जानै। जद भाषा कर चरित्र वखानै ।।५।।
गुरु दादू मोहि आज्ञा दीवी। संस्कृत की भाषा कीवी।
अधिक न्यून नाही मे गाऊ। यथा पूर्व कही तथा सुनाऊ[2]।।

१ विनोदीनदन
२ यह चौपई ग्रन्थ-प्रारम्भ से ऊपर वाले हाशिये मे पृथक् लिपि मे दी गई है।

अन्त— अरिल छन्द

दसमस्कंध ज्ञान निज सार है।
सुनैं सुनावैं कहत तिरत नहीं वार हैं ।।
स्वयं भगवान सुखदेवजी कहै।
(हर हा हा जी) परीक्षत पायो ज्ञान परम पद मुख लहैं ।।२९।।
नाना दुख ससार त्याग मन थिर भया ।
समभैं अतर द्वैत सहजैं गया ।।
कछु अनुभव ते जान सतगुर हि कहे ।
(हरि हा हा जी) चचलता सब त्याग रूप मे मिल रहे ।।३०।।

दोहा

यह महिमा पावन परम, दशम बोध निज ग्यांन ।
सुनैं सुनावै मोक्ष पद, जीवत लक्ष्मी जन ।।३१।।

चौपई

विहारी कुंज कृष्ण जस गावा। संस्कृत कूं भाषा मे लावा ।।
दसम स्कध सर्व जस मांही । गुप्त रहा प्रगट हुवा नाही ।।३२।।
अंतरजामी कीया विचारा। उग्रसिंघ मुख वचन उचारा ।।
विहारीकृत जस तुम प्रगटावो । यूं विचार कर कह दरसावो ।।३३।।
नराणदास कुं वचन कहावा । वचन सुनत मन मे हरखावा ।
ग्रंथ सुधकर स्व हाथ लिखावा । कथा करन आरंभ करावा ।।३४।।
उग्रसिंघ द्रव्य खरच करावा । छापा माही तुरत छिपावा ।
संतन कु पुस्तक वगसावा । साधू हरख सुं सवहि लिवावा ।।३५।।

मनहर छद

कृष्णगढ नगर वासी मोणोत है ओसवाल,
नृप कै दिवाण सो तो जग मे विख्यात है ।
पीढी दर पीढी सब भये है जु भाग्यवान,
रिध सिध भक्ति साजवस मे रहात है ।।
चैंनसिंघ मेता जाकै करणसिंघ सुत भये,
ताके सुत मोखमसिंघ जगत प्रगटात है ।
वाकै उग्रसिंघ सुत प्रकट जिहान माही,
दादू का प्रताप कर ईश्वर सहात है ।।३६।।

दोहा

उग्रसिंघ विख्यात है, बलभसिंघ बड भ्रात ।
जालमसिघ कनिष्ट है, ईश्वर रखै कुशलात ।।३७।।

जोधपुर माही वसत है, नृप को सदा है मन ।
गुरु दादू प्रताप तें, ईश्वर रहै प्रसन ।।३८।।

चौपई

पाच हजार सेतीस हे श्लोका । अनुष्टुप छद गिणाया चोखा ।।
दसमस्कध भागवत नित गावै । मन वाछित फल सहजै पावै ।।३९।।

अरिल

अजमेरा का ग्राम मे अवल बणाईया ।
श्रीनगर है नाम प्रगट दरसाईया ।।
कृष्णचरित्र सस्कृत सां प्राकृत मे गाइया ।
(हरि हा हा जी) विहारी कु ज सत दोऊ प्रगट कह सुनाईया ।।४०।।

चौपई

ये दोऊ सत प्रगट जग माही । दादूपथी कह बतलाही ।।
जन गरीव कै वस मे भईया । कृष्ण चरित्र वहु सु दर कहईया ।।४१।।

इस कु सुणै सुणावै कोई । ताकै सपदा सब सुख होई ।
अपुत्रवान कै सुत प्रगटाई । कृष्णचरित्र का यो फल गाई ।।४२।।

पुष्पिका— इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कध श्रीकृष्णचरित्रे वाल-लीला आदि कृष्ण-विवाह राक्षस-वध पाडव सहायक कृष्ण-वस-बसावली वरणनो नाम नवतीतमोध्याय ।।९०।।
श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु ।। राम ।।

आधी कै म्हत पुस्तक लिखी, **नरायणदास** कहत ।
जोधपुर मे उग्रसिंधजी, जिनकै चतुर्मास रहत ।।१।।

सवत उगनीसे इकावनो, आसोज सुद दुज जान ।
हरिचरित्र प्रताप तें, उग्रसिंघ सुख थान ।।२।।

।।राम।। ।।राम।। ।।राम।। । राम।।

१६२/१३७२५ (१–१०) छत्तीस राजकुली आदि सग्रह

प्रारम्भ— ।।श्री गणेशाय नम ।। अथ राजकुली छत्रीस ३६ कहै छै

पत्र 1 A १ **परमार**—धारा नगरी हुआ

२ **राठोड**—कनवजगढ हुआ

३ **चहुआंण**—नाडुलगढ हुआ, माया सिरो साभर आसापुरी देवी पुजीजै छै।

४ **गहिलोत**—आहड नगर हुआ ५ **दहोया** साहलगढ हुआ

६ **दसुणेचा**—हुरगगढ हुआ ७ **काछा** पोहरगढ हुआ

८ **सोलखो**—रोहणगढ हुआ ९ **खैर**-पाडवगढ हुआ

१० **मोरी**—चीतोडगढ हुआ ११ **नीकुप**—माडलगढ हुआ

१२ **ढीक**—आसेरगढ हुआ १३ **गोहील**- खेड पाटण हुआ

१४ **पढीहार**—मडोवरगढ हुआ १५ **चीवा**—पाटणगढ हुआ

१६ **झाला**—पांवागढ हुआ १७ २ कर्णचगढ हुआ

१८ **चालवा**—करणगढ हुआ १९ **जेठवा**-भु भलीयाहगढ हुआ

२० **रोहर**—तागगढ हुआ २१ **बुसा**—लोहागढ हुआ

२२ **लोह** मे गढेव २३ **वारहड**-सभणगढ हुआ

२४ **खीची**—जाईलवाडै हुआ २४ **खडवाण**—वमहीगढ हुआ

२५ **डोडीया**—रोहतीसगढ हुआ २६ **हीरीयाढ**—हरमचगढ हुआ

२७ **डाभी**—कापरवाडी हुआ २८ **तुवर**—दीली हुआ

२९ **कोरडा**—हथणापुर हुआ ३० **गौड**—आवेरगढ हुआ

३१ **मरुवाणी**—मगरूपगढ हुआ ३२ **जादु**—जुनैगढ हुआ

३३ **कछवाहा**—खोहगढ हुआ ३४ **भाटो**—लोद्रवैगढ हुआ

३५ **सोनीगरा**—जालोरगढ हुआ

३६ **देवडा**—आवूगढ हुआ महा अनलगढ कहीजै छै। इति छत्तीस राजकुली जाणवी सही।

कवित्त

पदग लख पखरैत, ऐसी लख पाई तुरंगम।
जुड वव विड देत, उपर असवार अलगम ।।
वारा लख वारणपती, सपत वेदीस परमाण।
सोलैसै सावत दस, लख राव विमाणी ।।
घू घ रेण गैण धूजै धरा, वीस लाख वाजित्र वली।
सिघ राव जैसिंघ मु, मडे नह कोई मडली ।।

२ राठोडारी वणावली — पत्र संख्या १ A से १३ A

(राठोडों की उत्पत्ति से लेकर महाराजा अभयसिंह की मृत्यु सवत्-१७८१ तक की प्रमुख घटनाओं का सवतो के अनुसार उल्लेख है)

अत

अथ भगतां री वशावली लिख्यते ।

१	ब्राह्मण जै जै देववंसी	२	माहाजन तिलोचनवसी
३	रजपूत पीपावसी	४	चारण तु'मरवसी
५	कायथ चित्रगुप्तवसी	६	सरगरो वालमीक वसी
७	थोरी कीतावसी	८	मैणो घाटमवसी
९	कसाई सुदनावसी	१०	पींजारो दादुवसी
११	रैवारी हीरावसी	१२	भाट जनकवसी
१३	खातो परसावसी	१४	कु'भार राकावसो
१५	माली नापावसी	१६	जाट धनावसी
१७	जुलाहो कवीरवसी	१८	ढेढ व्रहदावसी
१९	डूंब वीनरावसी	२०	छीपा नामदेवसी
२१	कीर कालूवसी	२२	नाई सेनावसी
२३	कलाल वखनावसी	२४	खत्री नानगवसी
२५	मोची वलभवशी	२६	तेली पदमावशी

पुष्पिका— भगत वसावलि सपूर्ण । लिखिते लेखक वनमाली रामचन्द्र मु० नागोर-मारवाड स० १९९४ रा मिति कार्तिक सुदि ३ सनीवार ॥

१७४/१५६४३ ठिकाणा—भीथड़ा-परगणा सोजत री ख्यात

प्रारम्भ— ।।श्री।। ।।श्रीरामाय नम ।।
।।ख्यात ठीकाणा भीथडा—परगने सोभत।।
।।सम्प्रदा [य] रामानन्द।।

।। भूमिका ।।

जो कि श्री दरवार के हुकम से मारवाड की ख्यात वणाने का हुकम हुवा । जब ओर ठीकाणो की ख्यात पेस हुई । जिससे हमारे ठीकाणे की भी ख्यात पेस होणा मुनासिब समभ कर महकमे

तवारीक से हुकम आया ख्यात पेस करणे का । तव अदी वर्त्तमान समय मे विद्यमान जो महतजी महाराज श्रीस्वामी भागवत-दासजी हे · ·· ···· ···· · म से उनका दासानुदास···· ····· ··· ···
[न] रसिघदास ने सप्रदाय पक्षो के ग्रथा की सहायता से और ठीकाणे के जो कोई जुने कागजात थे उनकी मदद से और पुष्करणे ब्राह्मण वोडा आसकरणजी की सहायता से वहोत परीश्रम के साथ ये ख्यात तव्यार करके ठीकांणा मे पेस की गई तो वाद मुलायजे श्री महतजी महाराज प्रसन्न करके महकमे तवारीख मे पेस करने की इजाजत फुरमाई । जव उनका तावेदार नरसिघदास हाजर होकर पेस कीवी ।

॥ जुगराफीया ॥

जीथडो जोधपुर से कोस १४ अग्निकोण मे है । ओ सोभन मु कोस १० पश्चिम दिशा मे है ओर गाव दुमाखीयो है ओर गाव में कुल घर १६२ है ।

ग्रन्थारम्भ

जो के साक्षात श्रीमन्नारायण हैं सो जीव लौंको पर कृपा करके गुह्य से गुह्य अवेरा दूर करने वाला राम-तारक मत्र हैं उसका श्रीलक्ष्मीजी महाराज को उपदेश किया ·· ··· ।

ग्रन्थान्त

·· ·· ···· · ···—ओर गमी होती है तव उनका घोडा ओर गहणा जेवर वगेरे इस ठीकाणे मे आता है ओर दूसरे ठाकुर गादी पर वैठते हैं तव प्रथम महतजी महाराज कठी वाधकर दुपट्टा ओढाते हैं । उनके पीछे ओरा का दस्तूर पाग वगेरे का होता हैं । ओर जो गादी वैठते हैं वो ठाकुर साहव उसी दिन या दूसरे दिन महतजी महाराज के डेरे आकर भेट पूजा वगैरे करते हैं ।

पुष्पिका— इति श्री ख्यात सपूर्णम् ॥सवत् १९५४ रा चैत्र शुक्ल पक्ष १॥[1]

---

१ पुष्पिका के पश्चात् [नरसिंहदास वैष्णव की] प्रस्तावना है । तदनन्तर ग्रन्थ के अन्तिम पत्रो-(११५ से ११७) में भीथडा टिकाने को समय-समय पर मिले पट्टे परवाने, ताम्रपत्र आदि की नकलें हैं ।

१८७/१५६४४ (२) पीढ़ियांरी विगत तथा स्फुट गीत सग्रह

पृष्ठवार विगत—

	नाम		पृष्ठ संख्या	विशेष
१	ओसवालांरो	कवित्त	१७३ वां	
२	लोड सार्जनियांरो	,,	,,	
३	तेजपाल वस्तुपाल रो	,,	,,	अंत मे एक कुण्डलिया है।
४	चक्रवर्ती रो	,,	१७४	
५	वार[ह] वांणावलीरो	,,	,,	
६	महाराजा श्री जसवन्तसिंहजीरा कवित्त छप्पै		,,	
७	सोलह सिणगार मरदरा-लुगाईरा कवित्त		१७४-१७५	
८	स्फुट कवित्त		१७५	=मुरली, केसोदास
९	गीत—रावरिडमलजी ने चित्तौड चूक हुवो तिण समैरो		,	
१०	गीत —महाराजा श्री अजीतसिंहजीरो		१७६	
११	गीत—महाराजा श्री अभैसिंहजीरो (गुजरात मे कह्यो)		,,	
१२	गीत—महाराजा श्री विजयसिंहजीरो संवत १८१० मे मेडतारी राडरो		१७६-१७७	खिडिया हुकमीचद
१३	गीत खीची गोरधनजोरो		१७७ वा	
१४	गीत —स्फुट		१७८ वां	
१५	सेतरामजीरी पीढियां—		१७८ वां	आस्थानजी से सरदारसिंहजी तक
१६	बूंदीरा राजावांरी पीढिया		१७९ वा	प्रारम्भ के ६ नाम नहीं हैं। (७) गोपीनाथोत से (१६) रामसिंघोत तक
१७	जैसलमेररा धणियांरी पीढियां		१७९ वां	प्रारम्भ के ९ नाम नहीं है। [१० वे सबलसिंहजी से १४ वे मूलराज तक]
१८	वीकानेर महाराजारी पीढियाँ		१८० वा	जोधाजी से गगासिंहजी तक

	नाम	पृष्ठ संख्या	विशेष
१६	पोकरणारा ठाकरांरी पीढिया	१८०वां	रिडमल से गुमान-सिंहजी तक
२०	ठिकाणा आऊआरी „	„	रिडमल से कुसाल-सिंह तक
२१	ठिकाणा गेईठा ठाकरारी „	१८१वां	रिडमल से इन्द्रसिंहजी तक
२२	ठिकाणा रायपुररारी „	„	६ वें किलाणदास से १६ वें रूपसिंह तक
२३	ठिकाणा खेरवारारी „	„	५ वे गोविन्दरामजी से १२ वें दौलतसिंहजी तक
२४	ठिकाणा वालरवारा धणियांरी „	१८२वा	५ वें रिणछोडदास से ८ वें रतनसिंह जैत-सिंहोत तक
२५	भाटी नवेरारा धणियांरी „	„	५ वें साहवखान से ११ वे उदैसिंह तक
२६	ठिकाणाँ खेजड़ला रा भाटियाँ री पीढियाँ „	„	४ थे हर्देसिंह से ८ वें सादूलसिंह तक
२७	ठिकाणाँ रामपुर रा भाटी-खाँप उरजणोतरी „	१८३वां	३ रा सूरतसिंह से ७ वां भवानीसिंह तक
२८	ठिकाणा सखवाय कापडेरा धणी खाप चहुआणांरी „	„	४ था चतुरभुज से ८ वां सरजी तक
२९	भाटी लूणाजो रा वेटा-पोना री „	„	तोलेजी से चतुरभुजजी तक
३०	आसोप रा धणी खाप कूंपावतरी „	१८४वा	रिडमलजी से चैनसिंहजी तक
३१	गाँव बलूदारी पीढियाँ खाप चादावत	„	जोधाजी से जीवणसिंहजी तक
३२	जैपुर महाराजा री पीढियाँ	१८५वा	पृथ्वीराज से सवाई जैसिंहजी तक
३३	किशनगढ महाराजारी „	„	सारमलजी से कल्याण-सिंह तक

	नाम		पृष्ठ संख्या	विशेष
३४	रतलाम महाराजा री पीढियां		१८५ वां	उदैसिहजी से पदमसिहजी तक
३५	ईडर " " "		"	अजीतसिहजी से गंभीरसिहजी तक
३६	ठिकाणां खीवसररी	"	१८६	राव जोधाजी से प्रतापसिहजी तक
३७	ठिकाणां चद्रावलरा धणियांरी खांप कूंपावत	"	"	१० वें फतेसिह से विसनसिहजी तक
३८	ठिकाणा नीवाजरा धणियांरी खांप-उदावत	"		४ थे कल्याणदास से १४ सावतसिह तक
३९	ठिकाणां पाटोदी रा धणियांरी जोधा महेसदासोत	"	१८७वां	राव मालदेव से जवाहरसिंह तक
३०	गांव गूंदेचरा धणियांरी खांप उदावत	"	"	राव जोधाजी से फुलेलसिह तक
४१	मनांणा रा धणियां री खांप मेडतिया अखैसिहोत	"	"	दूदोजी से देलचेसिह तक
४२	गांव वोडावडरा धणियांरी मेडतिया केसोदासोत	"	"	दूदोजी से मगलसिह तक
४३	गांव वडूरा धणी मेडतिया केसोदासोतरी	"	१८८वा	दूदोजी से सुलतानसिह तक
४४	ठिकाणा रीयां रा धणी माधोदासोतरी	"	"	राव जोधा से सिवनाथसिह तक
४५	वगडीरा धणी खांप जैतावत री	"	"	रिडमल से सिवनाथसिह तक
४६	पाली रा धणी खांप चांपावतरी	"	१८९वा	रिडमल से गजसिह तक
४७	रासरा धणी खांप उदावतारी	"	"	३ रा कल्याणदास से भोमसिह तक
४८	खारडा पालीरा धणी खांप चापावत आईदानोत री	"	"	आईदान से रायसिह तक
४९	कोरणारा धणी खाप करणोतरी पीढ़िया री		"	रिडमल से श्यामकरण तक

	नाम	पृष्ठ सख्या	विशेष
५०	भादराजणरा धणी खांप जोधारी पीढियां	१६०वा	रिडमल से बखतसिह तक
५१	वाघावसरा धणी खाप करणोतरी	"	रिडमल से जसकरण तक
५२	गाँव भाखरी रा धणी खाप जोधा री	"	मालदेव से देवीसिह तक
५३	गीत-चारण दाना रो कह्यो	१६०-१६१	
५४	गीत-सेवग किसना आसावतरो कह्यो	१६१वां	
५५	कवित्त-महाराज सरदारसिहजी रो	१६२वा	

२५३/१५६५४ रूपक सिवदानसिह भारथसिघोत जोधा केसरीसिघोत रो

॥ ॐ ॥

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नम । अथ ग्रन्थ रूपक राज श्री सिवदानसिघ भारथसिघोत जोधा केसरीसिघोतरो वारहट लालेजी रो कह्यो ।

टिप्पणी—गुटके के अन्त मे इस कृति के सबन्ध मे प्राप्त विवरण इस प्रकार है—

"ग्रन्थ रूपक राज केसरीसिघोत जोधा सिवदानसिघ भारतसिघोतरो— महाराजाजी विजैसिघजी री मरजी सूं ठिकांणै लाडणू वधियो। विजडखा सिध रा धणीरो गुलाम हो, जिण धणी ने मार नै सिधरो धणी वणियौ ने पीराऊ नामा सैर मे स्वराजथांन स्थापन कियो ने अनीत करतौ। तिण ऊपर महाराजाजी विजैसिघजी कोप कर तीन सूर वीर सुभटां ने मेलिया। माडणोत हरनाथसिह, पातावत मौकमसिघ, वारठ चारण जोगीदासजी मथाणियै रा। अै तीन ही सिध मे खुदावाद जाय विजड ने श्री हजूर रौ हुकम अन्यायरी मनाइ रौ सुणायौ। न मानीयां ने आ पांचा ने मारण रौ हुकम देता ही-माडणोत हरनाथसिघ रौ पेसकवज मियारी छाती सू परै फूटौ ने पातावत मौकमसिघजी री कटारी कलेजौ चाखियो ने वारठ चारण जोगीदासरी तरवार मियारा धड रै नै सिर रै विजो गकर

दियौ ने-साखला गैनसिं० सैलोत धीरसिंघ तरवारा काढ रूप रचा-ने युद्ध कर विजडरा वेटा ४ ने भाई ६ मार मारीजिया । वाघखा अर वीजड रौ पुत्र सेना सभ मारवाड पर आया ने हजूर खास रुकौ दे सिवदानसिंघजी ने लाडणू सू बुलाया । सो सावठा लोक शू फौज ले सिंध मे सामा गया । उठै सवत् १७ सारा माह वद २ सोमवार रौ युद्ध कर सिवदानसिंघजी घणा भाया सुभटा सु काम आया ने विजड रा वेटा ने हराय भगायौ । टालपुरियारौ असवाव ले भगाया ने फौज जोधपुर जीत ने आई—इण वर्णण रो ग्रन्थ रूपक वारठ चारण लालजी कृत छै ।"

दुहा

सुरा राय सु प्रसन हुवै, दीजै मुहि वरदान ।
सुज गाऊ भारथ सुतन, दल-नायक सिवदान ।।१।।

सु डाला आपौ सुमत, वरदाता वरवीर ।
रिण वरणू केहर हरा, सुज धज वध सधीर ।।२।।

सारस्वति देह सुवुध, वरणू ग्रथ विचार ।
सिवदानै कीनौ समर, सो वरणू कछू वुध सार ।।३।।

पहली गुण जोधाणपत, वरणू कछू विचार ।
राज तेज लछ धरम रज, सो कहसू मत सार ।।४।।

।। छन्द पद्धरी ।।

जोधाण नाथ राजत विजेस । सुज विभौ देख लाजत सुरेस ।
मद छके द्वार घुम्मत मतग । रितु छहू पटा झर स्याम रग ।।१।।

सिंदूर सीस चरचत सकाज । मिल भ्रमत सीस मधुकर समाज ।
तेजाल अनेका तुरग तास । ज्या दोड गुणाग्रह कुरग जास ।।२।।

अत — [छन्द पद्धरी]

सेखावत नाथू महा सूर । सुज करे समर लाहा सपूर ।।
वीदावत रूपौ महावीर । सुज लगा लोह समहर सधीर ।।१००।।

जैतेस हरौ मानेस जोध । कज स्याम पडे लोहा सक्रोध ।।
जुध थानसिंघ सोढौ सुजाण । मिल लगे घाव तन अप्रमाण ।।१०१।।

सुज फोजदारखा खेत सूर । पड कैमखानि लोहान पूर ।।
तु वर हर खेमो भिडे खेत । जिण वार पडे लोहास जैत ।।१०२।।
मोहिल जुध कीन्हौ महावाह । दलसाह पडे लोहा दुवाह ।।
गाजीखा कीवौ जुध गरूर । रत कयामखानि लोहा करूर ।।१०३।।
भाटी इम दीपौ महा अभग । जिण चार पडे लोहान जग ।।
सुज घाय भाई हीरौ सधीर । विध करे समर पड लोह वीर ।।१०४।।
पदमाल करे समहर सपूर । सुत ग्यानसीघ पड लोह सूर ।।
हटमाल राखिया असुर हाथ । भिड खेत पडे लोहा भराथ ।।१०५।।
गिणधीर तणौ हत आसुरांण । सालमौ पडे लोहा गुजाण ।।
हरिचद वखतौ[1] महावीर । राईका लोहा पड सधीर ।।१०६।।
सोढा हर कीधौ समर सूर । ग्यानेस पडे लोहां गरूर ।।
जैतसी जगोमालोत जास । जुध लगा लोह रिण खेत जास ।।१०७।।
जगमालउत्त गुल्लाब जाण । रिण पडे लोह हत आसुराण ।।
सावत गुमान लोहा सधीर । वेहू नगारची पडे वीर ।।१०८।।
जिण वार वाल पोतो सुजग । इदरेस पडे लोहा अभग ।।
नवलेस करे समहर निघात । भिड माहू लोहा पड भाराथ ।।१०९।।
इदरेस सुतन नवलो अभग । जिणवार लोह पड खेत जग ।।
उगरावत चेनो खित अरोड । लोहां धर पडियौ सुजस लोड ।।११०।।
रिण रूपै हतिया आसुरांण । मिळ लोहा पडियौ खित प्रमाण ।
मादुखा केमखानी अवाह । सुज पडियौ लोहा सुजस साह ।।११२।।
भोमेस ताम चहुवाण वीर । धुर धमल पडे लोहा सधीर ।।
कर तैजे मोहल जुध करूर । पडियौ रिण लोहा सुजस पूर ।।११३।।
हीदू वोडाणौ महावीर । रिण लगे लौह वेधे सरीर ।।
जालम इदौ कर जुधस काज । सुज पडे लोह खित असुर साज ।।११४।।
आसायच नवलो कट अभग । जद पडियौं लोहा कीध जग ।।
वीस दस मेक ठावा सु वीर । सुज हुवा घायली रिण सधीर ।।११५।।
धर स्याम काज मन क्रोध[2] धक । सुज हुवा घायली रिण असक ।
इण भात करे समहर अभग । जोधाहर खाटे जैत जग ।।११६।।
वाजा सु जैतरा खेत वाज । सुज समर जैत कीधा स काज ।।
वनसाह अभौ हिमतेस वीर । समर कर जैत चढिया सधीर ।।११७।।

---

१ खेनसी २ मोह ।

इण भात सहर जोधांण आय । वर वीर विजै लीधा वधाय ।।
सिरपाव पटा जवहर समाज । रीझिये दीध जोधाण राज ।।११८।।

रज पदमसिंघ सिवदान रग । विजपाळ हूत मिलियौ अभग ।।
दे पटा वधारा कुरब दीध । ऋत सिवा हूत चौगुणौ कीध ।।११९।।

समपिया वडा मौती विजेस । नर नाह वधारा दै नरेस ।
सुत भ्रात अवर रीझां सुकाज । समपिया पटा गहण समाज ।।१२०।।

कर भुजा पाण भारत सक्रोध । जोधहर वधे इण भात जोध ।

× × × × × ।।

दुहा—सोरठा

भारथ सुत भाराथ, करै जैत केहर हरा ।
समर पडै इक साथ, भाई भड लीधा अभग ।।१।।

।। दोहा ।।

सूर इद्र सिव पनग ससि, दधि महि गयण दिपाय ।
सिवदाना तौ जस इतै, रज धर अमर रहाय ।।२।।

कह्यो सुगुण लाले, सुकवि, अपणी मत अनुसार ।
जो कछु चूक अजुक्त ह्वै, सौ कवि लेहु सुधार ।।३।।

इती श्री ग्रथ रूपक राज श्री सिवदानसिंघ भारतसिघौत राठोड़ जोधा केसरीसिघोत लाडणू ठिकाणा मारवाड तस्य जुध । वारहट लालदान कृत सपूर्ण । लिखतू सग्रह करता बारहट जैतदान ।

३६०/१३७५१ रूपग पार पोरसातन (पुरुषार्थ-प्रकाश)

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नम । अथ रूपग पाल पोरसातन लिख्यते ।

।। दुहा ।।

अैक रदन वुद सदन अखं, अत गुण करण अराद ।
पावु जस रुपगै पढु, नमो पगा शिवनद ।।१।।

॥ गाथा ॥

कवता आद गरु कनीयाणी ।
कव मोडो समरै कनीयाणी ॥
कथ पावु कह्या कनीयाणी ।
करो हुकम मो पर कनीयाणी ॥२॥

॥ कवत ॥

पारजीत जोगगड, थपो गोरख अवगान्नी ।
पारजीत षट जती, नाथ नव सीघ चोरासी ॥
पारजीत वयैराग हुआ चोईस तिर्थंकर ।
पारजीत चोवीस पीर मोटा पैकवर ॥
पार रो वोध लाघण प्रथम, आपै अकल अधारणी ।
जीत पारजीत आखु जुगत, सुमत समायै चारणो ॥३॥

॥ गाधा ॥

उकती ध्यान धरचो उर आई ।
मन सु प्रसन्न वोलै मैहमाई ॥
भण थुपाल सैग तनो भाई ।
मोनु हुकम कीयो मैहमाई ॥४॥

॥ दुहा ॥

कै गावै नृप कवत कर, कै गावै करतार ।
गाउ भालालो गुण, सुणजो मह सिरदार ॥८॥

सभी 'समयो' के शीर्षक तथा उनकी अंतिम छन्द संख्या निम्न प्रकार हैं ।

पूर्वार्थ(र्द्ध) प्रसाद-उत्तपत्त रौ समौ—	१११ वें छन्द पर	समाप्त
वीनोद समईयो—	३०६	,,
चकार रो विरोध समयो—	३८५	,,
आवाहन रयसवीमारो समईयो—	६७५	,,
आक्रात रौ समौ	९३३	,,
सप्रहार रौ समौ	१०८५	,,
वुडारौ समौ	११४१	,,
रातीवादे रौ समौ (१२मो प्रवाडो)	१५२३	,,
सतीया रो प्रवाडौ (परवाडो)	१७६४	,,
झरडा रो प्रवाडो =आदीतसमौ	२१२५	,,
परचा रो समौ	१ से १४०	,,

॥ दुहा ॥

अन्त　　छै द्वादस रा सांमिरै, भाणु द्वादस भेद ।
द्वादस समीया पालग, वरण्या करण विचेद ॥१३५॥

पु ज तेज रौ पूतळौ, पाबु सुजस प्रचड ।
श्रो मेटै कात्तर पणौ, तिम औ मेटै तड ॥१३६॥

अरक ऊग मेटै अवन, सीय तम चौर उपाध ।
तु मेटै धाधल तणा, वीर आध नै व्याध ॥१३७॥

जोग पंथ हर भजन सु, तीन पीर काबुह ।
पीर भू भ पूजीजीया, गोगो नै पाबूह ॥१३८॥

उदै एक आदीत सु, रहै वरण ध्रम रीत ।
कव मोडै वरणान कीयौ, अै बारै आदीत ॥१३९॥

कवत

रचना प्रारम्भ समय—　　सोलौ वरस सकाज, अखां संवत्त उगणीसो ।
मास भादवै मइ, थिरा पूनम तिथ थीसौ ॥
पाल भाव मन प्रगट, कवी गुन आरंभ कीनौ ।
मो रूपग कहण रौ, दुश्रो करनादे दीनौ ॥
रचना समाप्त समय—　　कातक दीपमाला कहु, सुण सात्रवां उर साल री ।
कव मोडै वावीसै कीयौ, पूरण रूपग पालरी ॥१४०॥

पुष्पिका— * इति श्री पाल पौरमानन मुरधरभासा आसीया मोडा कृत परचारौ समौ । १२॥ रूपग पाल गोरसातन सपूर्णम् । सवत् १९३५ माहा सुदि ५ चद्रवासरे । लिखित पुष्करणा ज्ञाति वोहोरा कीसनलाल । श्री जोधपुर मध्ये । शुभ भवतु लेखक पाठकयो ।श्री॥

---

* जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है प्रस्तुत काव्य रूपक' होने के कारण कथोप-कथन शैली मे निबद्ध हे । इसे विभिन्न घटनाओ के आधार पर विभिन्न "समयो' मे विभक्त किया गया है । मूल ग्रन्थ से आद्यन्त उतारते समय इस ग्रन्थ के सवन्ध मे राजस्थानी भाषा के प्रगाढ विद्वान् श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत से चर्चा की तो उन्होंने वताया कि आसिया मोडा की प्रस्तुत रचना का प्रकाशन "पाबू प्रकाश" के नाम से वहुत पहले हुआ था जिसकी प्रतियाँ इन दिनो दुष्प्राप्य है । प्रस्तुत प्रति में लिपिदोष वहुत अधिक है ।

६४४/१४४३५ नसीहतरा दूहा

प्रारम्भ— ।। श्रीगणेशसाय न्मै ।।

अथ नीन नसीहत का दुहा लिखतं ।

दुहा

सिमरु देवी सरस्वती, गनपत के गुन गाय ।
विगन हरन मगल करन, सतन करन सहाय ।।१।।
सिव हरि अज सिमरो सदा, कर गुर कों परणाम ।
नीत नसीहत जुत का दुहा, पढो सुणो सुभ काम ।।२।।[१]
[नित प्रत ऐतो कीजीयै, अपनै तनतै काम ।
च्यार घडी रह पाछली, रजनी जागै स्याम][२]
निरप हाकम हुजदार सुंन, राजनीत की रीत ।
धरम अरथ जुन कहत हम, पढो सुनो कर प्रीत ।।३।।
राजा वडा छोटा कू·
धरनी पत धारै चिता, धरम सुजस के सात[३] ।
सोभा सरसी जगत मै, वात रहै विख्यात ।।४।।
प्रिभु पिण राजी रह सदा, अमर नाव वै जाय ।
अत वास वैकुठ मै, जग मै कमिय न काय ।।५।।
चित धारैगे चतुर नर, पढो सुनो सव कोय ।
नीत नसीहत जुत कही, निरमल वुध कर जोय ।।६।।
परमेश्वर सिमरो सदा, पीछै जग जजाळ ।
भुलो मत ईण मोन कू, वडो कुलगी काळ ।।७।।
लपना अपना पारका, स्मज वरावर सोय ।
दुस्मन मित समान दुहु, न्याय स्मै मै जोय ।।८।।
सूभै स्यांम दोफार कू, नीद न लीजै मीत ।
वडी वखत हरि भजण की, करो हरी जम चीत ।।९।।

टिप्पणी एव पाठ —

१. पढण सुणन के काम २ यह दूहा प्रथम पत्र पर है, किन्तु दूसरे पत्र में पुन प्रारम्भ करते समय छोड दिया गया है । ३ काज ।

लेखक ने अत मे स्वीकारोक्ति की है कि उसे पिंगल एव डिंगल का ज्ञान नही है । लिपि मे भी शब्दो के अशुद्ध रूप लिखे गए हैं—इस तरह का पाठ "स्मृत्यर्थ टांका हुआ पाठ" की श्रेणी मे आता है ।

जिसको सायब ने बडा, किया होय जग मांह ।
कुल को कारण मत गिनो, प्रित रीत करताह ।।१०।।
निरप को ऐता चाहियै, न्याय करै निज हाथ ।
सूंक हिमायत पर हरै, सुन गरीब की बात ।।११।।
अरजी वाचै आपही, अवरन सो नहिं लेत ।
जैसो न्याय नसीत मैं, तैसो ही कर देत ।।१२।।
जैसी लायक वै साजा, तैसी देत बनाय ।
परवस पात कूं परहरै, सक न रखै काय ।।१३।।
मारण लायक जो मरद, तामैं करणी देर ।
ईह कारण कव कहत है, मुवा न जीवै फेर ।।१४।।
पाय पूरा गत कामतै, नीत धरम को बाच ।
पोथी ग्यांन विग्यान की, बोल जबा तें साच ।।१५।।

अंत— कोई पापी दुखित फिरै, धरमी दुख सवाय ।
किण विध राजी रामजी गत नहि जाणी जाय ।।१६१।।
पतिवरता नैं पेट भर, अन वसतर नहि देत ।
विभचारण ससार सुख, भांत भांत कां लेत ।।१६२।।
नाथ निरंजण आप गत, जाणै न कोई जोध ।
काहा ग्यान विग्यांन अरु, काहा विद्या कै बोध ।।१६३।।
तुम गत उगम अथाग है, सुर नहिं पावै पार ।
मिनखो क्यू मैंहनत करै, भज ऊतरो भव पार ।।१६४।।
किया हरी का होत है, मुरख खचै भार ।
बिना बुध गरभ्यो फिरै, होयसु होवन हार ।।१६५।।
नीत नसिहत का दुहा, राजनीति बिसवास ।
गत गोबिंद करुणा कही, हरिजन हियै हुलास ।।१६६।।
पिंगल ना पढियो प्रिभू, ना डिंगल को बोध ।
नीत नसिहत का दुहा, सुगम कया मन मोद ।।१६७।।
पढो सुनो समझो सको, धरम सुजस कै काज ।
राज काज मैं रग मिलै कै **कायथ गुलराज** ।।१६८।।
बाल अवसता जो पढै, सावत रहै समाज ।
च्यार जरब चातुर हुवै, कै **कायथ गुलराज** ।।१६९।।
नीत नसीहत धरम जुत, करुणा अरु विसवास ।
लीला अपरमपार हरि, समजै प्रिभु का दास ।।२००।।

रचना काल.—समत सत ऊगणीस है, ता ऊपर पैंतीस ।
कार्तिक बद की चोथ किय, भोमवार के दीस ।।२०१।।

पुष्पिका— सपुरण। सुभ भवतु । कल्याणमस्तु। श्रै दुहा वाच कठा कर समजसी तिको नर वोत बुधवान हूसो । लिखत पचोली गुनराज । वाचै जिणा सू जै श्री च्यारभुजनाथजीरी वाचसी ।

नुस्खा— ।। छद पघरी ।।

कवि जेठ असाढ मै दाख कहै ।
नभ सावण सिधव लुण लहै ।।
मिल आसक कातिक मै मिसरी ।
हित पोह मिगम्मर सूठ हरी ।
माहा फागण पीपर माय मिलै ।
भिन चैत वैशाख मै सैंत मिलै ।
कवि कहत ईह' अनुपान करै ।
हरडी तन रोग छतीस हरै ।।१।।[1]

:अमल बतीसी रा दुहा

सिमरु देवी सरस्वती, गुन गावो गन राज ।
गुंण अवगुण ईण अमलरा, कह **कायथ गुलराज** ।।१।।

नाक झरै नस नोसरै, तेज घटै तन हाण ।
वो विष प्रातै खात पिव, कोन भलपण जाण ।।२।।

निवल नसावै सावली, झरता रह पयाण ।
गया तेज तन वावडै, कामण आकु जाण ।।३।।

रूप घटै पत पातळी, होत दिरब की हाण ।
आलस वध्या दलदर पिव आकु अवगुण जाण ।।४।।

आकु तेज अनत गुण, तन मन रह हुलास[2]

———

१ इसके बाद मे भी तोड मिटने की, गर्मी की, दस्त मिटने की तथा मुजाग की औषधी दी है । बाद मे "अमल वत्तीसी रा दूहा" है ।

२ इसके बाद के पत्र अप्राप्त हैं ।

१६११/१३७८७ काव्यप्रबन्ध

प्रारम्भ — श्रीगणेशाय नम । अथ काव्य प्रबध लालस वगसीरामजी कृत लिख × [ते]

श्री चत्यामरण सगुरण, सो सर्व वीज वीजाक्षर सजुत त × पत अगुरण ।
वगसिरांम जय जय जग वदन ।।१।।

।। दुहा ।।

श्री × जय जय सदा, **वगसिरांम** तिह वद ।
सुकल वर्ण वर्णातिम मि × अद्भुत हुत आनद ।।२।।
श्री लवोदर बुध सदन, चारु वदन × × चद ।
इ'वासन वगसा अभय, विघन विनासक व्र द ।।२'।
× यहा हमारे ग्र थ विघन विनास कर है ।

× × × × ×

अथ ग्रथ कारण ।।दुहा।।

श्री सादलर[1] × × [न] रिड्द वीकानेर,
छाया छत्र छतीस की, रच्यौ [काव्य प्रबध] × × ।।५।।

× × × × ×

दोहा

कोड दान कमधेस किय, पाय धरम जस पथ ।
कव काहू ना हन कियौ, गुन उपदेसक ग्र थ ।।७।।
छित कविद करियो छिमा, जो मम तुछ बुध जान ।
कहू कछू इक गुर कृपा, मेरे मत उनमान ।।८।।
सव्द अर्थ सामद्रवत, जथा सक्त गत जान ।
लियौ वोध जल मैं लखा मेरे घट उनमान ।।६।।

× × × × ×

समत गुनी सै तीन दस, × [म] गसर सुख सघ ।
तेज व्यास के बाग तह, वरन्यौ का × × [व्य प्रब]ध ।।१३।।

---

१ × × पाठ खडित है । "सादलर" "सार्दूलसिह" सभवत सिहथल प्रदेश के कोई ठाकुर अथवा व्यक्ति हो सकते हैं । आगे कवित्त सख्या ६ मे सिघथल = सिहथल का नाम आया है । पाठ खण्डित होने से यहाँ उद्धृत नही किया गया है ।

गुन कारन या ग्रंथ कौ, रच्यौ ज वगसीरांम ।
××[उदा] हरन अष्टाग के, मैं लखहूं तिह ठाम ।।१४।।

× × × × ×

वगसा बावन वरन तैं, सव्द भये संसार ।
वनै वग्न पद वाक्य तैं, प्रगट अनत प्रकार ।।२०।।

साहत मत सूं तीन सो, वाचक प्रथम वखांन ।
दुतिय लाछनक सोदषहु, व्यंजक त्रतिय विवान ।।२१।।

× × × × ×

अन्त [1]— मात्रा मैं गन मानीयैं, पच ट-वर्ग वखान ।
वगसा सग्या उलट विध, जथा नाम सो जान ।।
गिनहु रूप दो णगन के, गिनैं ढगन मुरगाह ।
पच डगन अठ ठगन पुन, टगन तीन दस ठाह ।।

नाम सख्या छद प्रबवे ।।सोरठा।।

णग गुर १ दो लघु मान, ढगण सु उर १ सरवर २ मही ३
रक्षस १ द्विज २ श्रे जान, डगण करण ३ कर ४ उरज ५ अरु ।१।

दोहा

तूरी १ वीर २ पायक ३ अवर, हीरा ४ पुन सार्दूल ५ ।
कुसम ६ नागपत ७ वांण ८ अे, ठगन छद मत भूल ।।२।।

सिव १ सिस[ससि] २ रवी ३ अरु वज्रधर ४,सेष ५ कृष्न अरु ६ कज ७ ।
व्रम्हा ८ नारद ९ कमठ १० ध्रुव ११, धर्म १२ साल १३ टग मज ।।

अत्यादि पुरष संग्या वचनात जानीयैं । प्रस्तार जांनीयैं ।
यहां लिखवे को हेतु यहि वरण मात्रा मिश्रत या रूप जानीयैं ।
जथा आद प्रमांण सु जानीयैं ।

। सत्री छद जथा ।

ध्यानी वानी ग्यानी जानी, मात्रा के ढगन व्रत के रक्षस जानीयैं ।

। धाम छद ।

रांम नाम क्रीत गीत । मात्रा के ढगन व्रत्त के सरोवर जानीयैं ।

। माधौ छद । ××××

---

१ तीसरा प्रकरण गुणवृत्त प्रवन्य किंचित्त अपूर्ण है । अंतिम प्रामाश यहां दिया गया है ।

१६१२/१५२१६ (५) कौशल-व्रत्त भासि

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नम । श्री रामो जयति । अथ कौशल बृत्त भासि लिखते ।

॥ दोहा ॥

कौशल राज कुवर कुवरि, वदन करि सुख कद ।
बरनत कौशल भासि बृत्त, रचि नाना बिधिछ्द ॥१॥

॥ दोहा ॥

श्री मन्नारायण बचन, समझि रचे असेस ।
तिनकौ नीकै समझि कै, वरनौ बृत्त अत अबशेस ॥२॥

॥ छप्पै ॥

विंद सहत गुरु होइ, सहत बिसरग पुनि जानौ ।
सजोगी गुरु आदि, बहुरि दीरघ गुरु मानौ ॥
चरन अतगत वग्न, लघू कवहू गुरु धारिये ।
कला मात पुनि रेख, नाम चहु लघु के ररिये ॥
असजो गुरु जिह्वा लघु, पढै सो लघु पहचानिये ।
कहि कौशल द्वयतिय वरन जुग, तुरत पढत ईक मानिये ॥३॥

॥ दोहा ॥

लिखनै मै जो आइ है, अर्द्ध चद्र गुरु मात ।
ते गुरु लघु पहचानि ह्वै, कल दीरघ बिख्यात ॥४॥

क कि कु त्रिय ह्रस्व जानिये, सजोगी गुरु आदि ।
द्वै कल पुलतादिक स्व निज, बिंद बिसर्ग अनादि ॥५॥

× ×

अन्त— गावत ××× [कौशल] मगन ह्वै, छिन छिन पुजन मा×[हि]
श्री ××[जानकी] वलभ विना, मन कहू लावत ××[नाहि] ७६।

करयो ग्रथ तिहि मुख निमित, सिय पिय उर धारि ।
भूलि चूक कहू ठौर ह्वै, ×× [लीज्यो] सु कवि सवारि ॥८०॥

रस श×[शि] वसु भू×[व] र्षे सुभ, नभ सित दिक तिथि जानि ।
अनुराधा भृगुवार जस, सिय वर करयो वखानि ॥८१॥

॥ श्लोक ॥

लेखक मंगला × ×[नाम] पाठ × × [काना] तु मगलं । मगन्न मर्व × × ×

पुष्पिका— इति श्रीमद्‌जानकीवल्लभ चरणारविंद भ्रमर रूप मन रतेषु श्रीमद मु × × मदासनुजीवी कौसलदासेन विरचि × ×]ताया] वृत्त ×[भा]ष्याया लघु क्रिया भेद निरूपणो नाम × × ×[अष्टम] प्रकाश ॥८॥ मीती सावण सुद ३ समत १९ स ४६ का । दशकत कल्याणवगस का × × नग्र सांगानेर मध्ये । राव पारीख प्रोहीत कि पुस्तक कल्याण वगस जवाहीरलाल की छै ।

× × ×

१६१५/१३६६९ छन्दविभूषण सटीक

× × × × ×[1]]

वचन हेत काजादिको, वच हित कज कहु होइं ।
सो दूषन देहो न कवि, ग्र थ संकीरन जोइ ॥६॥

॥ अथ मात्रा समजात मधुवार छद ॥

मधु गनज आत । कहि रूप जात ॥
कुच गोर गोल । अद्‌भूत अडोल ॥१॥

टीका— मधुवार छद लछन । चौ कल्यौ, एक जगन, एक अैसे आठ मात्रा को पद । जात्या अलकार लछन । उपमादिक रहित, केवल रूप गुन ही सुंदरता करि कै वरनै ।

उदाहरण— कुच गौर गौल अडोल अदभुन, अैसे रूप गुण सु दरता ज्योही त्योही वरनी ।

॥ खड छद ॥

खड खंड होइ, सभावोक्ति सोइ ।
कहै जेस भाव, लखो हाव भाव ॥२॥

टीका— खड छद लछन नव मात्रा को पद, म्वभावोक्ति अलकार लछन । क्रिया गुन कौ सभाव अंग ते वरनै ।

---

१ प्रथम पत्र अप्राप्त होने से प्रारम का पाठ ग्रन्थाङ्क १३७८० मे उपलब्ध पाठ के अनुसार दिया गया है ।

उदाहरण— हाव भाव अग सभाव क्रिया वरनी ।

× × ×

[।। मंगला चरण.—श्री गणेश स्तुति ।।

दोहा

मंगल के सव काज मैं, प्रथम गनेस मनाय ।
कर प्रनाम ताकौ वहुर, रचना रचौं वनाय ।।१।।

।। श्री सारदा स्तुति ।।

वानी कौं वदन करौं, वानी करन प्रकास ।
छद रु भूषन दुहुन कौ वरनौ विविध विलास ।।२।।

।। श्री इष्ट देवता स्तुति ।।

परम इष्ट निर्गुन सगुन, अलख अगम्य अलेख ।
वसो रिदै नित जगतपत, जो जग रक्षक भेख ।।३।।

छद लछ लछन सहित, भरती भूषन जुक्त ।
लै आसै ग्र'थान की, कहौ यथामत उक्त ।।४।।

अक कहैं मात्रा समझ, गनतै चोकल जांन ।
वरन छद मैं वरन हू, अक कहै पहिचान ।।५।।]

अंत— अथ अलंकार को सामान्य ल० [लक्षण] ।

।। दोहा ।।

सोभा दें जहा कवित मैं शब्द अरथ कवि उक्त ।
वही उक्त के नाम सो, अलकार कर सजुक्त ।।७४।।

ग्रन्थ-जन्म

सत अठार पिचतरै, फागुण सुद भृगुवार ।
छद विभूषन ग्रंथ कौ, तिथ दुतिया अवतार ।।७५।।

नाम छद रु भूषन बोध, विहु लच्छन लछ समेत ।
छदविभूषन ग्रथ कौ, धरौ नाम इह हेत ।।७६।।

देस सुरभि सुत रहय पदमणी, पुरष अन्न जल लौन ।
निसा हठा आ मयर रहत, मारु धर सुख भोन ।।७७।।

॥ देसाधिपति ॥

मुरधर मणि गढ सुभटपुर, तहां सु राजसथांन।
मानसिंघ महिमा मुकट, जक जेम सुख दान ॥७८॥

॥ ग्रन्थ-कर्त्ता कौ नाम ॥

उदैचद कीनौ सुय, छद विभूषन ग्रंथ ।
छदरु भूषन दुहन कौ, कथ्यौ सुगम कर पथ ॥७९॥

उत्तमचद मम भ्रात वड, तिन कृत ग्रंथ नवीन ।
अलंकार आसैं समुभ, अलकार रचां कीन ॥८०॥

दलपत औ हरचरण कृत, कवि दूलह कृत सोध ।
अपनी उक्त प्रमान कछु, रच्यौ अलकृत बोध[1] ॥८१॥

अष्ट करम सव जात, गन गनना उतपत छंद ।
मम कृत छद प्रबध मे, सव जानौ कवि इंद ॥८२॥

दोहा गाथादिकन कौ, लछन जुत विस्तार ।
मम कृत छद प्रबध में, सव जानहु निरधार ॥८३॥

×   ×   ×   ×   ॥९०॥

अथ ग्रंथ-कर्त्ता की वंसावली ।

॥ दोहा ॥

कुल देवी आसापुरा, लाखलों चहुवांण ।
ओसवाल लाखण हिंतें, भडारी कुल भाण ॥९१॥

॥ छप्पै ॥

लाखण रै मुत दूद, दुसासण सिद्ध सुदैवण ।
देव रिषी सुमणो सुसीतु, जस धवल सोढमण ।
वोहड लोहट जाण राय पालहि ।
जभण कहि वेला सू डावी लताहि समरा सुनरालहि ।
तोला[1] विजारु उदा वहुर वाघा गौरा जाणजै ।
मादूल भीव कल्याण रै कुसलचद वखाण जै ॥२॥

---

१ नाथा ।

टिप्पणी— पत्राङ्क ८२ पर छंदविभूषण ग्रन्थ समाप्त होने के वाद ग्रन्थ कर्त्ता की वशावली पत्राङ्क ८३ पर समाप्त की गई है। पत्राङ्क ८४ से ८६ पर छदानुक्रमणिका है। पत्राङ्क ८७ से १०५ पर 'अथ छद प्रवध' मेकौ अष्ट क्रम सक्षेपते' शीर्षक से लिखे गए हैं।

॥ दोहा ॥

चेन कुसलवत तें उदित, उतम उदै जुग भ्रात ।
भंडारी नृप के सचिव, ओसवाल वड ग्यात ॥३॥
दया दीप्त जिन धर्म मे, तपै गछ बुध सुध ।
सबतें समता सुजनता, काहुतें न विरुद्ध ॥४॥
उतम उग्र जुत जाहितें, उग्रवस ही होत ।
उदे पुत्र उघौत कर, उदित बंस उद्योत ॥५॥
लिखतं प्रोयत लालचंद ॥ जोधपुर मध्ये ॥

१६२२/१५२५८ (१) जस-आभूषन-चन्द्रिका

आरम्भ.— ॥दं०॥ श्रीगरणेसाय नमः । अथ जस आभूपरण चद्रका लिख्यते ।

। मंगला चरन ।

॥ कवित्त ॥

गनपत हरि सिभू सूरज सकत ताको,
    गौर स्यांम स्वेत लाल घन वपु वेस हैं ।
भू पक गुरुर वैल सप्तासहि सिंघासन,
    दामन सहाय के प्रकासन विसेस हैं ॥
सु कवि मनोहर जू पाचह सरूप जामैं ।
    पूरन विराजे वृ म कछु न अँदेस हैं ॥
सोई वृ म नाथ श्री जलधर को रूप धरें,
    अमित अनूप ताहि वदना हमेस हैं ।

अथ श्री माहाराज को वस वरनन ।

॥ छप्पय ॥

सूरज कुल कनवज, भये जयचद नरें गुर ।
जगविजई जग विदत्त, लई पदई दलपं गुर ॥
गह मोखे-सुलतांन, आन चि × [ह] चकवरताई ।
सेन भये खग × × ॥

× × × हा जवर आसथान धूहर भयौ ।
नृप रायपाल पढियार हन, थिर मडोवर गढ लयौ ॥२॥

निह कानर अरि काल, वहुर जालम अरु छाडा ।
तीडा सलखा तपे, वीर वीरम गुन गाडा ॥
चाडा से रिनमाल, जोधगढ जोव रचायौ ।
सूजा वाघरु गग माल जय जग कहायौ ॥
नृप उदैसिघ जाकै भये, उदैकोट नव जानियै ।
तिह पाट सूरसे तप वली, सूरसिघ वाखानियै ॥३॥

सूर सुतन गजसाह, राह दुय वीच महावल ।
जीते वावन जग, भग केते वैरी दल ॥
जाके मुत जसवंत, जगत जिनकौ जस जाहर ।
ताकै भये अजीत, करिय हींदू ध्रम वाहर ॥
नरनाह तोर तुरका ××, पातसाह ऊथप थपे ।
अव × × × गढ कैं तपे ॥४॥

ताकै वखत नरेस भये वड दखत प्रतापी ।
जाकै श्री जमाह, भये पूरन हरि जापी ॥
तिनके चक्र अदीठ, वक्र वैरिन सिरवहि कै ।
सुरवर की प्रज भई, मई सपत सुख लहि कै ॥
तिह नीत सतोजुग कलजुगहि, करयौ वित्त क्रम दुनन कौ ।
श्रुत सुनत सुहग दीसत भयौ, दीसत सो श्रुत सुनन कौ ॥५॥

ताके तनय गुमान, भये पुनवान सु जाके ।
पुनतै प्रगटे मान, भान सम प्रग ×× जाके ।
नाथ भक्त अत निपुन, ×× [भगत] गोपीचँद जैसै ।
गुन अन गि × [नत] × जहि, दीह कव वरनत कैसै ॥
× × × × × ×

॥ दोहा ॥

या भूपरा पै वहुर हे, भव भूपन भुव भोग ।
सुर भुव भूपन मान हैं, जस भूषन के जोग ॥७॥

यातै मान नरेस कौ । जस भूषन मौं लीन ।
कवि अनेक वरनन करत, हमहू मत जुत कीन ॥८॥

सँमत अठार गुनासिया, सिद्ध जोग सनवार ।
दिन अनत प्रभु के भयौ, यहै ग्रंथ अवतार ॥६॥

अलंकार नृप मान के, जस मय दये दिखाय ।
जस आभूषन चद्रका, नाम धरचौ इह भाय ॥१०॥

सेवग सोलह न्यात कै, जोधनगर के वास ।
××[मान] जमोलकृत रच्यौ, ग्रथ मनो×××[हर दास] ॥११॥

× × × ×

वडे कविन सौ वीनती, करत मनोहर ऐह ।
कठन अलकृत रचन कहु, चूक सुधारहि लेह ॥१५॥

× × × ×

।अथ अलकार लक्षरण ॥दोहा॥

सव्द अर्थ ह्वै काव्य मैं, सोभा के सरसान ।
सिरपेचहि मुक्ता दलौं, अलकार सो जान ॥१७॥

× × × ×

अन्त—

अथ सकर लक्षन

॥ दोहा ॥

ऐक काव्य मैं अलकृत, मिलै परसपर आन ।
पय जलकी-सी रीत सो, सकर कहौ वखान ॥४५७।

उदाहरन ॥कवित्त॥

उन्नत पहार पै पहार गत वक पूरौ,
जिनकू निहार सूरौ होत उरजन कौ ।
काहू कै न आवै तोल जंत्रन मढायो मानौं,
मत्रन पढायौ बली जोध गुरजन कौ ॥
सजल सधार भार सब ही समान भरचौ,
चारु कव चारु हैं उदार भुरजन कौ ।
जोधगढ हिंद ढाल मान महिपाल जू कै ।
रैत रिछपाल हैं जू साल दुरजन कौ ॥४५८॥

।।वार्त्ता।।

इहा पहिले चरन मे लाटानुप्रास अरु उल्लास, दूसरे चरन में छेकानुप्रास अरु उत्प्रेक्षा, तीसरे चरन में वृत्यानुप्रास अरु जमका, चौथे चरन में फेर वृत्यानुप्रास अरु उल्लेखं, असे द्वै-द्वै अलंकार च्यारों ही चरन में। पोपक सो तो अग हैं अरु च्यारों ही चरन कौ अगी जात्यालंकार है यातें सकर।

।। दोहा ।।

जस आभूषन चद्रका, मान नृपत जस लीन।
जो पढ हैं सो होहिगौ, अलकार परवीन ।।४५६।।

पुष्पिका— इति श्री राज राजेस्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री १०८ श्री श्री मानसिंघजी कौ जस ग्रथ जस आभूषन चद्रका नाम कवि **मनोहरदास** कृत सपूर्ण ।।श्रीरस्तु कल्याणमस्त ।। ।।श्री।। ।।श्री।। लिखत सेवग सिवकृष्ण, जोधपुर मध्ये ।।

१६२६/१३७८० (२) प्रस्तार प्रबन्ध-भाषा*

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नम । अथ प्रस्तार प्रवन्ध भापा ग्रन्थ लिख्यते ।

मंगलाचरन ।। दोहा ।।

वीतराग करुणा निलय, श्री जिनेद महावीर ।
उदैभाव जाको, भया, उदित सकल सुख सीर ।।१।।
श्री महावीर जिनेंद सो, पूछ्यो मुनि गगेव ।
सो प्रश्नोत्तर लिखत हौं, लै सहाय जिन देव ।।२।।
× × × × × × × ×

---

* पूरा गुटका उदैचद भण्डारी की कृतियो का है। प्रथम कृति 'छद प्रवन्ध' है। दूसरी कृति 'प्रस्तार प्रवन्ध' है। तीसरी कृति 'साहित्यसार' है जिसमे शब्दार्थ-चद्रिका, दूषनदर्पण, रसनिवास तथा छद विभूषन नाम से चार प्रकरण हैं। साहित्यसार का प्रारम्भ भी इसी के साथ दिया जा रहा है।

॥ ग्रन्थ-जन्म ॥

सत अठार गुणासियै, क्वार द्वितिय सित पक्ष ।
कुज द्वितिया परगट भयो, प्रसर प्रबध सुलक्ष ॥७॥

॥ नाम ॥

छद सुरादिक प्रसर के, बहु ग्र थन कौ ग्यान ।
याते नाम सु याहि कौ, प्रसर प्रबन्ध सुजान ॥८॥

॥ अथ गागेव प्रश्न ॥

जीव अमुक स्वर्गादिकां, थाना प्रत जे जाय ।
इक द्वै सजोग सो, फेर सार बहु भाय ॥९॥
सक्षा भेद समूह कह, लिखें सकल प्रस्तार ।
लिख्यौ रूप उदिष्ट कह, नष्ट लिखै निरधार ॥१०॥

अन — अथ देशाधिपति-वर्नन ।

॥ दोहा ॥

गुण एता केतक मनुष, मुरधर में-स प्रकास ।
अन्य देसा कलु काल वस, गुण अत तुछ अप्रकास ॥११॥
अवर भूप उडगन किते, कितेक चद समान ।
मान महीप दिनेस जग, जाहर हिंदुस्थान ॥१२॥
गुण समस्त सकलाग जुत, मान भूप अवतार ।
कलु छाया जीतक करत, राज काज सुविचार ॥१३॥
देशा मुरधर देशमण, मुरधर मणि जोधाण ।
भूपा मणि नृप मान जस, जाहर जग वाखाण ॥१४॥
उदैचद या देश मैं, वसत जोधपुर वास ।
दास भूप कौ यह रच्यौ, प्रसर प्रबन्ध प्रकास ॥१५॥
भूपत भाषा संस्कृत, अनभव सद अभ्यास ।
भूपत की मो पर मया, मम भूपहि विश्वास ॥१६॥

पुष्पिका— इति श्री प्रस्तार प्रबन्धे सूचनकादि अधिकार नाम षष्टम प्रबन्ध ॥

× × × × ×

१६५८/१३७८० (३) साहित्यसार सटीक

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नम । श्री सारदाय नम ।। श्री इष्टदेवाय नम. ।

।। दोहा ।।

सुमर गनेसरु मारदा, इष्ट सकल मुख धाम ।
ले सहाय ग्र थ सु लिखौं, माहितसार मुनाम ।।१।।
शव्द सिद्ध व्याकरण तें, अर्थ सिद्ध साहित्य ।
सप्रयोजन अर्थ सु लिखौं, साहित नौतन कृत्य ।।२।।
प्रकरण च्यार लिख्या जुदे, अपने अपने नाम ।
साहितसार सु एकठा, लिख्या नाम अभिराम ।।३।।

।। च्यारो प्रकरण तिनके नाम ।।

इक शव्दारथ चद्रका, दूपन दर्पन दोय ।
रसनिवास त्रय, चतुरथ सु छंदविभूपन जोय ।।४।।
च्यारहिं प्रकरण एकठा, साहित कौ सव सार ।
सो समुज्या साहित्य मैं, विद्वत ह्वै निरधार ।।५।।
लछन लछ प्राचीन लै, वहु कविमत प्राचीन ।
अभिप्राय इक ठौर हित, रचना रची नवीन ।।६।।

× × × ×

१६५०/१४२८० वाणीभूषण

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नम । अथ वानीभूषन लिख्यते ।

।। छन्द पद्धरी ।।

वर वारि चरन सिव गवरि अस । वरनत सुकवि कछवाह वस ।।
नृप उदयकरन आंवेर नाथ । पौरुष प्रसिद्ध जिमि पहोमि पाथ ।।१।।
मो उदयकरन कै ध्रम सुभाव । राजाधिराज वरसिंह राव ।।
वरसिंह राव कै वस दीप । महराज पुत्र उपज्यो महीप ।।२।।
महराज भूप कै द्युति दिनेस । नर नाह नरू प्रगट्यो नरेस ।।
वरवीर नरू कै वुधि विसाल । लहरी समद भौ राव लाल ।।३।।

धरु धीर लान ग्रह धर्म धाम । नृप उदयसिंह विख्यात नाम ।।
सुन उदयसिंह कै भो सुजान । लखहु वरीस नृप लाडखाँन ।।४।।
सर लाडखान सुत भो सरोज । फतमाल सकल शृ गार फोज ।।
महिपाल फना सुत वल अमान । कुल दीप कलाधारी कल्यान ।।५।।
भो नृप कल्यान कै पुत्र भूप । आनदसिंह आनन्द रूप ।।
आनन्दसिंह कै सुत उदार । भो तेजसिंह धर भुम्य भार ।।६।।
नृप तेजसिंह कै नर नरिंद । भो जोरावर भुवलोक इंद ।।
नृप जोरावर कै सुत अनूप । भो राव महोवत वस भूप ।।७।।
महोवत नरेस कै वल अमाप । प्रगट्यो सु राव राजा प्रताप ।।
परताप राव कै पहोमि पाल । वखतेस वस भूपनि विसाल ।।८।।
गिर अवर धर गिरजा गनेस । मुनि वचन जितै कायम महेस ।।
द्रढ वेद च्यारि रचना दईव । रहु जितै वखतसी चिरजीव ।।९।।
आनद पाइ सव सुख अखेद । आसीस सुकवि अखै उमेद ।।
वखतेस नृपति आग्यानुसार । मै रच्यो ग्रंथ मत अलकार ।।१०।।
मत चन्द्रालोक विचारी मान । किय भाषाभूषन की समान ।।
सिय जनकसुता सुर असुर सेवि । रघुनाथ प्रिया मम इष्ट देवि ।।११।।
वरन्यो तिह सीता वद्य पाय । वानीभूषन भाषा वनाय ।।
जाकी समता ते वडमि होय । उपमा कहत तिह सुकवि लोप ।।१२।।
जाको उपमा दीजियत नित्त । मानियो ताहि उपमेय मित्त ।।
उपमेय सु मुख ससि वोपमान । सो वाचक उज्जल धर्म जान ।।१३।।

× × ×

अत — येकसो साठि सव अलकार । अर्थ के कहे वुधानुसार ।।
वर सब्दालकृत वहोत हैं जु । ते अछिर के सजोग तें जु ।।९५।।
पट अनुप्रास वरने वखानि । जे जग मै भाषा जोग जानि ।।
करि अलकार को सुगम पथ । मै वानी भूषन रच्यौ ग्रथ ।।९६।।
वखतेस नृपति आग्यानुसार । वरन्यो उमेद करि वुधि विचार ।।
यह वानीभूषन पढै कोय । तिह अलकार को ग्यान होय ।।९७।।
कहू अर्थ सब्द की चूक होय । नैहै सुधारि जे सुकवि लोय ।।
इक पष्ट आठ पुनि येक ओर । सवत्सर जानहु सुकवि मोर ।।९८।।
आषाढ पचमी कृष्ण जानि । गुरवार ग्रथ पूरन समानि ।।
करि वास राजगढ नगर मध्य । मै रची ग्रथ रचना प्रसध्य ।।९९।

।। इति ।।

१७४३/१३०९४ निर्णयसिद्धान्त-भाषा

प्रारम्भ— अथ नीर्णसिंधू ग्रंथे भुक्रास्तनी वीचार कहे छै।
- पूर्वे शुक्र अस्त थाय ते वारे पेहला दिवश १० वृधि। पूर्वे उगे तीवारे दिवश ३ लगे वाल। पश्चिम शुक्र अस्त थाय तवारे दीवश १५ वृध। उगे तवारे पछी दिवश ×वाल। हवे शुक्रनो गूरु नो वक्र वृध, अस्त होय तेवारे कार्य कार्य कहे छे। चौलादि, विवाह कर्म। वास्तु पूजन, देव प्रतिष्ठा, प्रथम वधु प्रवेश, प्रथम उपाकर्म, प्रथम उत्सर्ग, माहादान अनारम्भ समाप्ती माहारुद्र एं कर्म न होय। हवे शुक्र सामो होय तवारे न जावू ते कहे छै। गर्भणी, प्रथम वालवती, राजा, नववधू, एणे शुक्र, मांहामो अथवा दक्षीण हाथे होय तवारे एक पद क्रम एणे जावू नहि। जेंनें जावू तेहनें कहे छे। एक ग्रामे दीवाहे जाता देश मार्गे दुर्भक्षे। एटले शुक्र शांमो दक्षीणे जावो नहि सर्वथा जावू वली भार्गव, वत्सस, कश्यप, भारद्वाज, आंगीरस, वशीष्ट, अत्री गोत्री नें शुक्र नो दोप नहि।

अंत— अथ नदि रजो दर्श काल। कर्क सक्रांती नें सिंह सक्रांती माहे सघली नदि रजस्वला होय। समुद्र गाविना शमुद्रगा दश दिवश रजस्वला। गगा, यमुना गोदावरी, नर्मदा, गोमती ए त्रण दिवश रजस्वला। भुमिस्थ नवोदक पण दश दिवश अस्पर्श,। उपाकर्मे, उत्सर्गे, प्रातस्नाने, चद्र-सूर्य ग्रहणे एटले गम्ये रजो दोप नहि। इती नदि रजो दर्शन। इती नीर्णसीवाते वतीका लेखन समाप्त।

श्लोक— सवन्नागाश्वशैलेन्दु मितेव्दे तपसज्ञिके।
पषे (पक्षे) सितेष्टम्या तीथि वारे गुरु भूजो ।।१।।
उदिच ज्ञातीविप्रेण जयरामात्मजेन च।
परोपत्न (क्र) तये तु (त) द्वद्रघुरामेण धीमता ।।२।।
द्विजाया (ना) धर्मकार्येपु सिद्धाते निर्णय कृत।

पुष्पिका— समाप्त ।।स० १९२४ ना अशाड शुदि ८ शनीवाशरे।
लपीतं पुरोहित ईछाराम स्वआत्मार्थे पठनार्थं ।।

टिप्पणी—ग्रन्थ धर्मशास्त्र का है। कर्त्ता द्वारा मूलत. निवन्ध ग्रन्थ का प्रणयन सस्कृत गद्य मे किया गया था। जिसके आधार पर 'महादेव' नामक

पडित ने ११७ श्लोको का एक ग्रन्थ 'कालनिर्णयसिद्धान्त' नामक ग्रन्थ बनाया और इस पद्य ग्रन्थ की पुन रघुराम ने सस्कृत मे टीका लिखी। ग्रन्थाङ्क १०,००३ की पुष्पिका से उक्त तथ्य ज्ञात होते हैं। पद्यग्रन्थ का रचना काल १७०६ वि० स० तथा सस्कृत की गद्य टीका का रचना काल १७१० वि० स० दिया गया है। सम्पादक

२०४१/१४६५६ कुमारपालरास

प्रारम्भ— ॥र्द०॥ श्रीसारदाइ नम ।

॥ दूहा ॥

पय पकय जस प्रणमता, पामीजइ सुर रिद्धि ।
त्रिशला नदन दु ख हरइ, नाम मत्र वहु सिद्धि ॥१॥

गज गति सरसति सगरता, लहीइ वचन रसाल ।
कवि कोटी सेवा करि, निर्मल यान मुराल ॥२॥

निज गुरु नाम हृदय धरी, विमलकुशल सु पवित्र ।
हीरकुशल कहइ कवि सुणु, कुमरपाल चरित्र ॥३॥

त्रिहुं भुवने यश तेहनु, सि कीधु तिणि काम ।
कहता कवि जन साभलु, नाम ठाम तस गाम ॥४॥

लाख योग्रण ते देव का, जबु द्वीप प्रवान ।
लवण समुद्र विटी रह्यउ, छिवणु तेहनु मान ॥५॥

रजत वर्ण वेग्रढ गिरी, तिणि ए कीधु जोड ।
भरतखेत्र सीमा करी, दख्यण उत्तर दोइ ॥६॥

दख्यण भरत माहे भलु, गुर्जर देश सु चग ।
रमता रमलि निरखीइ, निर्जर नर मन रगि ॥७॥

जिहा कमला घरि घरि घणी, रभा नइ रति प्रीति ।
इद्र ग्रनग छाडी करी, तिहा ते वसि विचित ॥८॥

भू भामिनि भालि भलु, भूपण लछि निधान ।
ग्रणहिलवाडु जाणीइ, पाटण प्रवर विमान ॥९॥

वापी कूप तटाक वन कदलीना ग्राराम ।
वप्र तणी शोभा घणी, चतुर पुरुष-ना ठाम ॥१०॥

धूज पताक अति लहलहइ, जिन मदिरनी ओलि ।
मूगिज रथ जातु खलि, एहवी ऊंछी पोलि ॥११॥
धनद समा रिद्धि सवे, लोक तणा वहू घाट ।
गज रथ घोडा पालखी, सोवन केरा पाट ॥१२॥

॥ चउपई ॥

विक्रम नृप थी जाणु खरु । संवत आठ नइ बीडोतरु ॥
पाटण नगर वसाव्य रुली । श्री वनराज चाउडइ मिली ॥१३॥
पाटण नगर नु पांनु पाल्यु राज । साठि वरस छत्रपति वनराज ॥
योगराज तस पाटि थयु । पांत्रीस वरस राज पद कह्यउ । १४॥
पचवास वरस क्षेम प्रतिपाल । ओगणत्रीस भूयड भूपाल ॥
पणवीस वरस वैरसिह राज । पनर वरस रत्नादित काज ॥१५॥
सामतसिंहि पाल्यु राज । सात वरस लगइ कीधु काज ॥
सात पाट ते थया चाउडा । रूपि मनमथनइ जेवड़ा ॥१६॥
सिर वालइ ते सगलांइ मिली । वरस थयां ते मुणज्यो वली ॥
एकसु छिनु वरसे थया । चाउडा पाट सात ते कह्या ॥१७॥
इहा थी गयु भागेजे राज । तेहनी उतपति सांभलउ आज ॥
सामतसिहनी भगनी सती । नामि लीलादे गुणवती ॥१८॥
तस नदन कहइ मूलराज । मामानु तिणि लीधु राज ॥
अखड प्रतापि पालइ मही । पचावन्न वरस ते सही ॥१९ ।
तेर वरस श्री चामुंडराय । षटम सवाडा वल्लभ थाय ॥
दुर्ल्लभराय वरस इग्यार । षटम सवाडा ऊपरि सार ॥२०॥
वरस बेतालीस भीम भूपाल । त्रीस वरसते कर्ण दयाल ॥
ओगणपचास वरस करि राज । जयसिहदेवि सारि काज । २१॥
इकत्रीस वरस ते कुमरपाल । त्रिणि वरस भत्रीजु अजयपाल ॥
बाल मूल दो वरस विचार । त्रेसठि भीमसेन उद्दार ॥२२॥
त्रिणसइ वरस माहि ए हूया । सोलिकी नामि जूजूआ ॥
पछइ वघल वीसलदेवात । एतु वाघेलानी जात ॥२३॥
कुमरपालना कहुं अवदात । जे हुउ तीन भुवनि विख्यात ॥
साभलयो तेहनी उतपति । उलट अगि आणी एकाति ॥२३॥

× × ×

अन्त— ।। राग धन्यासी ।।

असुर वधू कुमर नृपनि करि भामणा, तु भलि आवीउ अहमाई ईश।
कीर्ति रमणी रमइ भुवनि त्रिहु ताहरी, तुझ गुण गावइ निज मुखिसुरेश ।।८।।
।। असुर वधू० आकणी ।।

नाचती गावती हर्ष घणु पावती, ल्यावती देवध्वनि देवनारी ।
हाव नइ भाव हस्तक कला देखउइ, पेख रे नाह तुझ जाउ उवारी ।।९।।
।। असुर वधू० ।।

गम घमि रमझमि नेउरी, खलकती ढलकती मेखला कटि रसाल ।
तिलक भालि करी नयण काजल भरी, नृत्य करि देवमुरी अति विसाल ।।१०।।
।।असुर वधू० ।।

पुण्य तरू प्रवल त्रिहुँ भुवनि तिं वावीओ, तेहना फूल ए चाखि स्वामी ।
फल तु आगलि हस्यइ मुगति वधू सेजडी,हे जडी चडी सजव तिहातु धामी ।११।
।। असुर वधू० ।।

श्री सोमसुदर सीस वाचक वरू, तिणि करद्यु कुमरनृप नु चरित्र ।
तेह ऊपरि रच्यउ सवत सोलोतरइ, वर्ष च्यालीम अकिमपुरि पवित्र ।।१२।।
।। असुर वधू० ।।

प्रवर तपगछपति हीरविजय गुरु, जयविजय वत विजयसेन सूरी ।
जाणि सोहम्म जवू समा गणधरा, सेवता सकल सपत्ति पूरी ।।१३।।
।। असुर वधू० ।।

तस गछ माहिं तेजिकरी दीपतु, जीपतु काम पुशाल शुद्धो ।
विमल जस चिहु दिशि विमल कुशलाभिधो, विवुध पद मडली महिं प्रसिद्धो ।१४।
।। असुर वधू० ।।

सीस तस चरण कज रमइरी, भमइरी भमरा परि वाणीमकरद पीइ मनह रंगि ।
हीरकुशल कहइ नृप केरडउ, राम भणता होइ आणदि अगि १६ ।।[१५]
।।असुर वधू कुमर नृपनि करि भामणा।।

पुष्पिका— इति श्री कुमरपाल प्राकृत भापा प्रवंध सपूर्णमिति ।।सवत १६५९ वर्ष आ काती सुदि १ वुधे घूमा मध्ये लख्यत । छ । छ । छ । शुभ भवतु ।।

२१०३/१४५२७ नलदवदती-प्रबध

प्रारम्भ— ॥६०॥ श्रीगउडी पार्श्वनाथाय नम ॥श्रीगुरवे नम· ॥

॥ धूरि दूहा ॥

श्री शातीसर सोलमऊ, जगजीवन जगदानद ।
अचिरा ऊयरइँ हस लऊ, समरू निते सुखकद ॥१॥

जिणि ध्यानइँ संकट टलइँ भय भावठि सवि जाइ ।
वीछडीयाँ वाल्हाँ मिलइँ, पूजइ सपद थाइ ॥२॥

वे कर जोडी वीनती, मागु एतउ माँन ।
भगवति आपउ वचन रस, निरमल फुरतउ ध्यान (ज्ञान) ॥३॥

परगट महि माता हरऊ, जिम घनसार ऊदार ।
देजे रजन-नी कला, सारद मुझ मनुहार ॥४॥

सोभागी साचा सुगुरु, ते नमसिउ अप्रमादि ।
जेह थी सुघ मारग लहिऊ, साहिजदीउ वरसादि ॥५॥

ढाल पहिली चउपई · राग रामगिरी :

नयरि द्वारामती कृष्ण नरेस एह ढाल.—
जवूद्वीपि पट खड उछाहि । मेरू थी दक्षिण भारत माहि ॥
अगादिक जनपद अति भला । आय वित्तीइ नयरि कोसला ॥१॥
अवसरि वरसइ मेघ अपार । सुहणि नवि जाणि कातार ॥
सस्य तणी वहुली तिहां वृद्धि । लोक तणइ घरि एह रिद्धि ॥२॥

अन्त— : राग धन्यासी :

शाति जिन भामणइ जायु ए देसी —
नलदवदती चरित सुचगा, सुणता वाघइ रगावे ॥१॥
सीलिकरी दवदंती सोहि, भीमसुता मन मोहिवे ॥२ सी०॥
सती तणा गुण गाया प्रेमइ, लाभ लह्या मइ खेमइवे ॥३ सी०॥
ढाल अे पूरव नवनव घातइ, चतुर लहिसि उरस गातइवे, ॥४ सी०॥
चार खड चिहुं खडि प्रसिद्धी, चु पी घरी मइं कीधीवे ॥५ सी०॥

परिशिष्ट २

राजस्थानी–हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची—भाग 4

ग्रन्थ-कर्त्तानुक्रमणिका